स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य (1980-2000 तक)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, की डी0 फिल्0 (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
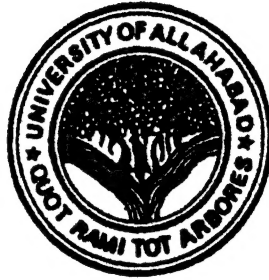
निर्देशक :
प्रो० मालती तिवारी
प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

प्रस्तोत्री :
रश्मि पाण्डेय
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
दिसम्बर 2002

ममतामयी मां

एवं

पूज्यनीय पिता जी

को सादर

समर्पित

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रारभिक–काल मे नारी की स्थिति अत्यधिक सम्मानजनक थी। किन्तु पुरूष की आक्रामक प्रवृत्ति तथा आगत परिस्थितियो के कारण उसकी स्थिति मे ह्रास आता गया। 19वी शदी उसके जीवन मे नवप्रभात लेकर आयी। समाज – सुधारको की उदारता एव सद्प्रयास से उसका जीवन स्तर प्रभावित हुआ। क्रमश उसकी स्थिति मे सुधार आता गया और सामाजिक बदलाव के कारण उसके मूल्यो मे भी परिवर्तन आने लगा।

1980–2000 तक का समय, समाज एव साहित्य दोनो स्तरो पर नारी जीवन के उत्तरोत्तर प्रगति का काल है। तत्कालीन उपन्यासकारो ने नारी जीवन के विविध पक्षो को अपने उपन्यास के माध्यम से उभारने का प्रयास किया।

नारी के अवमूल्यन मे प्राय दो ही कारण रहे है– उसकी शारीरिक दुर्बलता तथा आर्थिक परतत्रता। किन्तु भारत की स्वतत्रता के साथ ही उसने आर्थिक स्वतत्रता के महत्व को भी समझ लिया था इसलिये उसने अपने जीवन मे आत्मनिर्भरता को महत्वपूर्ण घटक के रूप मे मान्यता दिया और इस प्रकार आर्थिक स्वतत्रता उसके जीवन की प्राथमिक उद्देश्य बन गयी क्योकि आज तक अर्थ–सम्पन्नता के कारण ही पुरूष नारी पर धौस जमा रहा है। इसलिए आत्मनिर्भर होने के बाद नारी स्वय मे तो सबल हुई ही वह पुरूष की दृष्टि मे भी महत्वपूर्ण हो गयी। क्योकि उपभोक्ता–सस्कृति की प्रधानता के कारण दोनो द्वारा अर्थोपार्जन आवश्यक होता जा रहा है।

नारी ने चली आ रही, प्राचीन मान्यताओ एव जर्जर रूढियो से अलग हटकर स्वेच्छानुसार कुछ नवीन मान्यताओ और परम्पराओ की नीव डाली फलत उसके जीवन की 'रास' पुरूष के हाथ मे न होकर उसके हाथ मे आ गयी। उसने अपनी प्रतिभा को सँवारा और समाज मे अपने को प्रत्येक स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए आगे ही नही

बढी बल्कि अपनी योग्यता से लोगो को चमत्कृत करने मे भी सफल रही है।

किन्तु किसी भी प्रकार से अपनी महत्वाकाक्षा की पूर्ति की मानसिकता के कारण वह नकारात्मक दिशा की ओर भी उन्मुख हुई है। फिर भी उसकी उपलब्धियो के आगे इस तरह के नकारात्मक–पक्ष अत्यल्प है। इस दशक के उपन्यास मे नारी मे जितनी प्रगतिशीलता दिखायी देती है वह परवर्ती उपन्यासो मे उतनी नही इसलिए औपन्यासिक दृष्टि से यह काल नारी के समग्र परिवर्तन का काल है।

नारी होने के कारण नारी को जानने और समझने की जिज्ञासा दीर्घकाल से ही रही है। साहित्य–विधा मे विस्तार की दृष्टि से उपन्यास ही वह विधा है जिसमे मानव जीवन के विविध–पक्षो को विभिन्न दृष्टिकोणो के माध्यम से सहजता पूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है। यही कारण है कि मैने नारी के बदलते मूल्य के परिप्रेक्ष्य मे उपन्यास विधा को ही महत्व दिया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद की डी0फिल0 उपाधि के लिए प्रस्तुत इस शोध–प्रबन्ध मे "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य मे नारी के बदलते मूल्य – 1980–2000 तक" का ही विश्लेषण किया गया है और क्रमश नारी के बदलते मूल्य को रेखाकित करने के लिए इसे पॉच अध्यायो मे विभक्त किया गया है–

<u>प्रथम अध्याय</u>

"नारी शब्द की व्युत्पत्ति, तथा इसके विविध पर्याय। नारी की प्रारभिक अवस्था एव उसकी पतनशील स्थिति, उत्तरदायी कारण– नारी की शारीरिक सरचना एव उसकी आर्थिक निष्क्रियता " है।

इसमे "नारी" शब्द की व्याख्या की गई है और व्याकरणिक आचार्यो द्वारा इसके स्वरूप को ध्यान मे रखकर किए गए विविध पर्यायो का स्पष्टत उल्लेख किया गया है।

साथ ही इन पर्यायो मे अर्न्तनिहित विशेषताओ का उद्घाटन भी किया गया है। अपने आरभिक काल मे नारी की क्या स्थिति थी? उसकी स्थिति पतनोन्मुख कैसे हुई ? समाज मातृ सत्तात्मक परिवार से पितृ सत्तात्मक परिवार मे किस प्रकार परिवर्तित हुआ ? इसके लिए सभावित उत्तरदायी कारण कौन–कौन से है ?

द्वितीय अध्याय

"क्रमश नारी की बदलती हुई स्थिति, प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक। विश्वस्तर पर नारी के बदलते मूल्य और पाश्चात्य बुद्विजीवियो तथा समाज–सुधारको की भूमिका" है। इसमे नारी की वैदिक कालीन स्थिति को स्पष्ट किया गया है।महाभारत एव स्मृतिकाल तक उसकी स्थिति कैसी रही ? विशेष रूप से बौद्व–काल नारी जीवन के अवमूल्यन का कारक क्यो बना ? भारतीय नारी–जीवन के उत्थान मे महापुरूषो की क्या भूमिका रही ?

स्वतत्रता–आन्दोलन ने नारी के जीवन को किस सीमा तक आन्दोलित किया ? और इस आन्दोलन के बाद नारी जीवन मे किस प्रकार के मूल्यगत परिवर्तन हुए और वर्तमान समय मे उसकी क्या स्थिति है?

विश्वस्तर पर नारी के जीवन मूल्यो को प्रभावित करने मे पाश्चात्य बुद्वि जीवियो एव समाज सुधारको की क्या भूमिका रही ? इसको रेखाकित किया गया है।

तृतीय अध्याय :

(क) हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी जीवन की एक रूपरेखा;1882–1917
(ख) हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य; 1917–1936
(ग) हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य; 1936–1980

1882–1917 के मध्य समाज मे नारी की क्या स्थिति थी ? उपन्यासकारो ने आग्रह पूर्वक नारी के सनातन रूप को ही विवेचित करने का प्रयास क्यो किया ?

1917–1936 के मध्य उपन्यासकारो ने नारी–जीवन मे शुरू हो रहे मूल्यगत

परिवर्तनो को रेखाकित किया तथा उसके जीवन मे आने वाले सभावित परिवर्तनो की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है।

1936–1980 के उपन्यासो मे नारी जीवन मे परिवर्तित हो रहे मूल्यो की ओर सकेत किया गया है। अब तक नारी अपने अस्तित्व को लेकर जागरूक हो चुकी थी और स्वय को सामाजिक रूढियो से मुक्त करने के लिए सघर्ष करने लगी थी।

चतुर्थ अध्याय

तत्कालीन समाज मे नारी जीवन और 1980–2000 तक के उपन्यासो मे नारी का बदलता मूल्य है। अब तक नारी को लेकर विविध उपन्यासो का सृजन किया गया है। यह समय प्रमुख रूप से नारी लेखन का रहा है। इसमे नारी के विभिन्न रूपो मे आए मूल्यगत परिवर्तनो को रेखाकित किया गया है।

तत्कालीन उपन्यासो मे नारी को सामाजिक बधनो की पीडा के प्रति सघर्ष करते और अन्तत उससे मुक्त होते दिखाया गया है। नारी के जीवन को स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से आर्थिक–स्वतत्रता के महत्व को उद्घाटित किया गया है।

पंचम अध्याय

विभिन्न परिप्रेक्ष्य में समाज के बदलते मूल्य और नारी की असहज स्थिति, यातना और संघर्ष का द्वन्द्व है–

समाज के परिवर्तित दृष्टिकोण के कारण नारी सहज जीवन को छोड असहज जीवन जीने के लिए बाध्य हो रही है। वह यातना और सघर्ष के द्वन्द्व को झेलती हुई किस मन स्थिति से गुजर रही है ? तथा इन परिस्थितियो से स्वय को मुक्ति दिलाने के लिए किस प्रकार के कदम उठाने पर मजबूर हो रही इसे स्पष्ट किया गया है।

उपसंहार

के माध्यम से नारी जीवन मे आए उतार–चढाव को बताने का प्रयास किया गया है। और नारी ने अपने परिवर्तित मूल्यो के बदले मे क्या खोया है और क्या पाया है? इसका विश्लेषण भी किया गया है।

अन्त मे प्राक्कथन समाप्त करने से पूर्व, मै उन लोगो के प्रति यथोचित कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूँ जिन्होने शोध–प्रबन्ध को पूरा करने मे अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

प्रथमेव, मै श्रद्धेय 'गुरूमा' प्रो0 मालती तिवारी के चरणो मे स्नेह और श्रद्धा के पुष्प अर्पित करना चाहती हूँ। जिन्होने आवश्यकतानुसार मुझे मा का प्यार दिया और गुरू का मार्ग–दर्शन । उनके द्वारा दिए गए अकथनीय सहयोग का ही प्रतिफल है कि मै यह शोध–प्रबन्ध पूरा कर सकी। यदि प्रत्येक स्तर पर उनका अपरिमित सहयोग न मिलता तो मै इस शोध–प्रबन्ध को पूरा करने की कल्पना भी नही कर सकती थी। ऐसी 'गुरूमा' के प्रति सिर्फ कृतज्ञता ज्ञापित करके रह जाना औपचारिकता होगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उन्हे दीर्घजीवी और यशस्वी बनाए ताकि मेरे जैसे अल्पज्ञ शोधार्थियो का समुचित मार्ग–दर्शन हो सके।

मै डा0 सत्यप्रकाश मिश्र (हिन्दी विभाग–इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद) एव प्रो0 मैनेजर पाण्डेय (जे0 एन0 यू0) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होने मुझे अपना बहुमूल्य सुझाव प्रदान किया।

शोध–प्रबन्ध पूरा करते समय कभी–कभी ऐसे क्षण भी आते थे जब मै चिंतित हो उठती थी तब दुद्धि मामा मुझे प्रोत्साहित करते थे और यथा–सभव अपना सहयोग भी देते रहे । मै इनके प्रति आजीवन कृतज्ञ रहूँगी ।

स्वर्गीय पितामह शिव विभूति पाण्डेय एव स्वर्गीया पितामही भगवानी देवी ने सदैव उच्चशिक्षा प्राप्ति हेतु मुझे प्रोत्साहन दिया, इनके प्रति आभार ज्ञापन कैसे करूँ?

श्रद्धेय पिता श्री त्रिलोकी नाथ पाण्डेय एव ममतामयी मॉ श्रीमती नन्दा रानी पाण्डेय ने सिर्फ अपनी प्रथम सन्तति के रूप मे ही मेरी कामना नही की बल्कि मेरे जीवन को नयी दिशा देने मे समुचित मार्ग दर्शन भी प्रदान किया है। मै जीवन मे आगत असफलताओ के कारण जब निराश हो जाती थी तब इन्होने मेरा मनोबल ही नही बढाया बल्कि अपेक्षित सहयोग भी दिया है । इन्होने प्रत्येक स्तर पर मेरा पोषण किया। मै इनके प्रति श्रद्धानत हूँ, इनसे प्रार्थना है कि मुझे कभी भी, किसी भी स्थिति मे अपने भावनात्मक–सरक्षण से वचित न करे ।

अनुजा प्रियका पाण्डेय एव जया पाण्डेय ने सदैव मुझे मानसिक एव भावनात्मक सहयोग प्रदान किया है। जब भी मै अपने कर्त्तव्य के प्रति शिथिल हुई हूँ दोनो मुझे सावधान करती रही है। इसी प्रकार अनुज अनमोल रत्न पाण्डेय एव अनुराग रत्न पाण्डेय (बाबू) ने प्यार भरा अपेक्षित सहयोग दिया है।

आदरणीय भगिनी श्रीमती सुनीता त्रिपाठी ने मुझे अपना यथोचित स्नेह और सहयोग दिया है। इनकी कृतज्ञ हूँ।
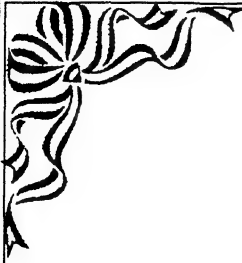
श्री भृगुनारायण मिश्रा (पिता जी) एव बन्धु श्याम नारायण मिश्रा ने सिर्फ प्रोत्साहन ही नही दिया बल्कि इनकी सद्भावनाएँ भी मेरे साथ रही है। अत इनकी आभारी हूँ ।

इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने मे राजकीय पुस्तकालय (जिला बस्ती), हिन्दी साहित्य–सम्मेलन (इलाहाबाद), विशेषकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय से मुझे अपेक्षित सहयोग मिला। पुस्तकालय के कर्मचारियो का व्यवहार यथोचित रहा, इनमे भी श्री यू0 एन0 द्विवेदी ने आवश्यक पाठ्य–सामग्री उपलब्ध कराने एव अध्ययन हेतु विशेष सहयोग दिया है। इन लोगो के प्रति यथोचित धन्यवाद।

दिनॉक

30 दिसम्बर 2002 ई0

रश्मि पाण्डेय

रश्मि पाण्डेय

प्रथम अध्याय

(क) 'नारी' शब्द की व्युत्पत्ति :
तथा इसके विविध पर्याय
(ख) नारी की प्रारंभिक अवस्था
एवं
उसकी पतनशील स्थिति
उत्तरदायी कारण-
नारी की शारीरिक
संरचना
एवं
उसकी आर्थिक निष्क्रियता

नारी शब्द की व्युत्पत्तिः तथा इसके विविध पर्याय

'नारी' एक ऐसा शब्द है जिसकी ध्वनि मात्र से ही सौन्दर्य एव कोमलता से युक्त एक अनुपम छवि मानस पटल पर स्वत उभर आती है। कुछ क्षणोपरान्त इसका चक्षुष प्रत्यक्ष भी आसानी से किया जा सकता है। यह शब्द अपने आप मे इतना महान है कि इसके माध्यम से 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का बोध सहजता से ही हो जाता है। इसलिए यह अपनी व्यापकता और विशालता के कारण अव्यक्त ही रह जाता है। फिर भी हमारे आचार्यो ने इसकी स्वरूपगत व्यापकता को व्याकरणो के माध्यम से बॉधने का प्रयत्न किया है– 'नृ' (मनुष्य) शब्दोत्पन्न स्त्रीत्व विवक्षा से ङीन् प्रत्यक्ष होकर नारी शब्द निष्पन्न हुआ है।[1] जिसका अर्थ हुआ – मानुषी (मनुष्यजातीय) स्त्री। व्युत्पत्तित स्त्री शब्द का प्रयोग 'गर्भधारण करने की योग्यता' *(स्त्यायति गर्भोऽस्यायिति)* के आधार पर किया जाता है। और वह मनुष्येतर प्राणियो मे भी उपलब्ध होता है। अतएव 'स्त्री' शब्द व्यापक हुआ जब कि 'नारी' शब्द व्याप्य। ब्याप्य–व्यापक सबन्ध होने पर भी 'स्त्री' शब्द को 'नारी' का पर्याय (रूढि के कारण) मान लिया गया हे। **अमर सिंह कृत–'अमर कोश'** (2,6,2) मे स्त्रीवाची अन्य शब्दो का सकलन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है–

" स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा।।

उपरोक्त समस्त नारी वाचक सज्ञाए नारी का ही पर्याय है, किन्तु इनमे स्वरूपगत अन्तर भी है। आचार्यो ने आवश्यकतानुसार नारी के बदलते हुए विभिन्न स्वरूपो के अनुसार विविध सज्ञाए भी बनायी है। इन समस्त सज्ञाओ के सूक्ष्म पर्यालोचन से नारी जीवन के विविध पहलुओ पर प्रकाश पडता हे। तथ्यत 'योषित्' एव 'योषा' शब्दो से स्त्री मे सेवा भाव की प्रधानता[2] 'वामा' तथा ' वनिता' से स्नेहाभाव की मुखरता [3], प्रतीपदर्शिनी' से चाचल्यपूर्ण आपाग निरीक्षण की मोहकता[4] 'वधू' शब्द से उसकी पितृगृह से पतिगमन की अनिवार्यता

[5] 'अबला' से (पुरूष की अपेक्षा) अल्पशारीरिक क्षमता [6] तथा 'सीमन्तिनी' एव महिला पदो से समाज मे उसको पूज्यनीय[7] होने का स्पष्ट सकेत मिलता है।

उपरोक्त समस्त स्त्रीवाची शब्द और उनमे अर्न्तनिहित विशेषतायें सिर्फ नारी के सामान्य गुणो की ओर सकेत करती है न कि उसकी विराटता की ओर । इस प्रकार स्नेहातिशय, सेवापरायणता एव शील नारी के सहज गुण है। सामान्यत इन्ही गुणो के कारण वह समाज मे प्रतिष्ठा अर्जित कर अपना विशिष्ट स्थान बनाती है। [8] पूरे कुल या समाज को एक सूत्र मे बॉधने वाली 'पुरन्ध्री' कहलाती है । [9] और उसके बिना लोकयात्रा निष्फल समझी जाती है।[10] नारी के महत्व कर प्रतिपादन करते हुए महाभारत मे लिखा गया है। कि –

'सुसरब्धोऽपि रामाणा न कुर्यादाप्रिय नर ।

रति प्रीति च धर्म च तास्वायत्तम वेक्ष्यहि।।

अर्थात् रति, प्रीति तथा धर्म पत्नी के ही अधीन है। ऐसा सोचकर पुरूष को चाहिये कि वह कुपित होने पर भी स्त्री के साथ कोई अप्रिय वर्ताव न करे ।''

नारी अपने भीतर अनेक स्वरूपो को छिपाए बाहर से जितनी सहज और सामान्य लगती है, उतनी है नही उसके स्वरूप एव स्वभाव को समझने के लिए सहृदयता की आवश्यकता है। उसे सिर्फ स्वरूपो के भीतर आवद्व करके नही समझा जा सकता है। क्योकि प्रकृति की स्वभावगत पवित्रता एव महानता को समझने तथा पहचानने के लिए समुचित पात्रता की आवश्यकता होती है। इसके अभाव मे उसे जान लेने का दभ तो भरा जा सकता है पर जाना नही जा सकता।

नारी की प्रारंभिक अवस्था एवं उसकी पतनशील स्थिति, उत्तरदायी कारण–

नारी की शारीरिक संरचना एवं उसकी आर्थिक – निष्क्रियता

आज की नारी जिस स्थिति से गुजर रही है वह इसके पूर्व ऐसी स्थिति मे नही थी। नारी अपने नारीत्व एव कर्मठता के कारण सम्मानीय थी। सृष्टि के आरभ मे अर्थात् पाषाण युग मे नारी, पुरूष के समान स्वतत्र और आत्म निर्भर थी। नारी के लिये किसी भी प्रकार की वर्जना और निषेध नही बने थे। मातृ–प्रधान समाज होने के कारण फैसला करने का अधिकार नारी के हाथ मे था। अत सब कुछ सहजता से चलता था। नारी अपने जीवन साथी का चयन स्वय करती थी पर चयन की प्रक्रिया मे कोई रिश्ता, कोई क्षेत्र, कोई धर्म का विभेद या आयु का फासला बाधक नही था। "इसलिए परिवार तथा समाज के अस्तित्वविहीन होने के कारण वह समस्त अकुशो और वर्जनाओ से मुक्त अपने आप मे एक परिपूर्ण इकाई थी।[11] चूँकि दुनियॉ परिवर्तन शील है, प्रत्येक क्षण यह वस्तु जगत किसी न किसी रूप मे परिवर्तित होता रहता है और परिवर्तन इसका सहज नियम है अत क्रमश समाज भी परिवर्तित होता रहा है। सामाजिक–परिवर्तन के कारण सस्कृति, परम्परा, नीति, नैतिकता, मूल्यबोध आदि धारणाए भी बदलती रहती है। इसी कारण समय के साथ नारी की स्थिति भी क्रमश बदलती गयी और उसके जीवन मूल्य भी बदलते गये। मातृ–प्रधान समाज की जगह पितृ–प्रधान समाज की अवधारणा की गयी। नारी को उसके समस्त अधिकारो से वचित कर दिया गया तथा पुरूष प्रधान समाज की नीव डाली गयी इसके साथ ही पुरूष स्वेच्छाचारी हो गया और नारी वन्दिनी। पुरूष के लिए सारा क्षितिज और आकाश खुला था किन्तु नारी के लिए एक सीमा–रेखा बना दी गयी। प्रश्न उठता है कि नारी ने पुरूष का प्रभुत्व इतनी सहजता से स्वीकार कैसे कर लिया ? उसने समस्त अधिकारो को कैसे छोड दिया ? वे कौन सी परिस्थितियॉ उत्पन्न हुयी जिनके कारण नारी को आश्रित एव सीमावद्ध बनकर रह जाना पडा? और किन परिस्थितियो के कारण पुरूष, समाज की "आधी आबादी " का भाग्य–नियन्ता बन बैठा?

मार्क्स–एगेल्स ने सर्वेक्षण करने के बाद निष्कर्ष दिया कि एक जमाने मे हमारा समाज नारी प्रधान था। उस समय कोई स्थायी सपत्ति नही थी, अत मनुष्य का जीवन पूर्णत प्रकृति पर निर्भर करता था । वह अपने जीवन मे प्रयुक्त होने वाली समस्त वस्तुओ का सग्रह प्रकृति से ही करता था। अत वैमनस्य नही था। किन्तु अग्नि के आविष्कार के बाद मानव की स्थिति मे काफी परिवर्तन आया। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिये नारी–पुरूष दोनो मिलकर सघर्षरत थे। 'खोज' की इस लडाई मे नर–नारी दोनो समानरूप से सहभागी बने। फिर भी, प्रजनन की विशिष्टता के कारण नारी का स्थान ऊँचा था। उस समय आदिमानव आज की तरह चितनशील एव जागरूक नही हुआ था, अत उसकी प्रवृत्ति काफी कुछ जानवर से मिलती थी। इसलिए नारी, प्रजनन की क्षमता के कारण उसे विशिष्ट नजर आती थी। उसकी धारणा थी कि नारियॉ सृष्टि चलाने मे सक्षम है। उन्ही के माध्यम से सतानोत्पत्ति की जा सकती है, अत वे पुरूष की अपेक्षा श्रेष्ठ है। प्रजनन की क्षमता को छोडकर बाकी सारे काम नारी –पुरूष मिलकर समानरूप से करते थे। सृजन की अर्पूव क्षमता के कारण समाज मे नारी को प्राथमिकता दी जाती थी। यही कारण था कि आदिम समाज मे मा के माध्यम से ही सतान का परिचय होता था। समाज पिता को लेकर कोई उधेड–बुन नही करता था। वह गर्भावस्था, प्रसूतिकाल तथा शिशुपालन जैसे गुरूतर दायित्व के निर्वहन हेतु पुरूष का आश्रय लेती थी, जो सहज एव स्वाभाविक भी था।[12] इसलिए शारीरिक–विभिन्नताओ के कारण दोनो के मध्य स्वत श्रम–विभाजन होता गया।

पुरूष अपने शिकार के लिये दूर–दूर तक भटकते थे और नारियॉ अपने निवास के समीप रहकर ही भोज्य सामग्री की व्यवस्था मे सलग्न रहा करती थी। किन्तु इस प्रकार के श्रम –विभाजन को हीनता एव श्रेष्ठता का भापदण्ड नही माना जाता था। बल्कि यह एक दूसरे की शारीरिक– विशेषताओ का द्योतक था, और इसको सहजता से लिया जाता था। पुरूष जानवरो का शिकार करके स्वादिष्टभोज्य– सामग्री के रूप मे मॉस लाता

था और नारी घर के समीप रहकर कृषि कार्य करते हुए समूह अथवा कबीले के लिये आवश्यक भोजन जुटाती थी।[13] इस प्रकार दोनो मिलकर काम करते थे । धीरे–धीरे पुरूष शिकार के लिए जगलो मे घूमने लगा। इसके परिणाम स्वरूप वह नई–नई वस्तुओ के सम्पर्क मे आने लगा। जबकि नारी अपने घर से बहुत दूर नही निकल पाती थी। धीरे–धीरे पुरूष नवीन खोज की ओर अग्रसर हुआ और उसने पशुओ को पालतू बनाकर सीधा किया। तदुपरात उसने धातु का अविष्कार करके क्रमश हल का निर्माण किया। इस प्रकार उसने पालतू पशुओ के सहयोग से हल द्वारा खेत को जोत कर कृषि कार्य सम्पन्न किया, जिससे पहले की अपेक्षा अधिक मात्रा मे फसल प्राप्त हुई। इस प्रकार उसने क्रमश कई उपलब्धियॉ आर्जित की– पशु, हल तथा अन्न। अभी तक उसके पास कुछ बचाने लायक था ही नही, अत वह मिल बॉट कर खाने मे सतुष्ट था। किन्तु अब स्थायी –सपत्ति प्राप्त होने के कारण मालिकत्व को लेकर आपस मे सघर्ष आरम्भ हो गया। कबीले के ताकतवर लोगो ने अन्य कमजोर लोगो को लाठी के बलबूते दबाकर अपना वर्चस्व कायम कर लिया। और इस प्रकार समाज मे वर्ग– विभाजन की प्रक्रिया का श्री गणेश हुआ, फलस्रूप नारी की स्थिति कमतर हो गयी।

यह सच है कि नवीन आविष्कारो के चलते नारियो को पहले की तरह अधिक श्रम नही करना पडता था किन्तु वह पहले की तरह स्वतत्र भी नही रह गयी और क्रमश पुरूष पर आश्रित होती गयी। अब जीविका का माध्यम कृषि हो गया इसलिए उस समय जमीन मे कठोर –श्रम करना पडता था। जबकि नरियॉ गर्भावस्था के समय तीन से लेकर छ महीने तक कठोर –श्रम के योग्य नही रहती थी। इसलिये वे पुरूषो के साथ स्पर्धा मे भी पीछे रह गयी, जबकि पुरूष अपनी शारीरिक प्रकृति के कारण सदैव श्रम करने की स्थिति मे रहते थे। "आर्थिक क्षेत्र मे पुरूष से पीछे रह जाना ही नारी की दशा को उत्तरोत्तर शोचनीय बनाता गया।"[14] पुरूष ने नारी की कायिक स्थिति का लाभ उठाते हुए उसे दबाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर दी। कालक्रम मे नारी का कार्य–प्रजनन

करना, पालन–पोषण तथा गाय, भेड, बकरी आदि जानवरो की देखरेख तक सीमित कर दिया गया। ज्यो–ज्यो पुरूष सभ्यता की ओर अग्रसर होता गया, वह परिवार और समाज की प्रमुख शक्ति बन गया और नारी गौण होकर उसपर पूर्णत आश्रित होती गई।

"आर्थिक दृष्टि से स्वतत्र एव सम्पन्न होने के कारण पुरूष ने 'मातृ–सत्तात्मक परिवार' को 'पितृ–सत्तात्मक परिवार' मे बदल दिया और अपने उत्तराधिकारियो के बारे मे निश्चित होने के लिए एक विवाह – प्रथा का प्रचलन किया। इस कारण नारी के पैरो मे नैतिक बधनो की बेडियॉ डाल दी गयी।" [15] एक प्रकार से इस तरह दास – प्रथा का आरभ हुआ। "इस प्रथा के प्रचलन के कारण गृहकार्यो तथा सभोग, दोनो ही क्षेत्रो मे पुरूष को नारियो का स्थानापन्न सरलता से मिलने लगे। परिणामत समाज के भीतर दोहरे नैतिक मूल्य उत्पन्न हुए।" [16] इतना ही नही नारी के प्रति पुरूष के मन मे जगी अधिकार की भावना ने कालान्तर मे यह प्रचारित किया कि– कोमलागी नारी का एक मात्र कार्य क्षेत्र घर है । उसे बाहरी दुनियॉ के सघर्ष से दूर रहकर घर को व्यवस्थित करना चाहिए और सिर्फ सृजन के कार्य मे ही मन लगाना चाहिए। घर चलाने के लिए दोनो की भूमिका निश्चित कर दी गयी– कमाकर लाना पुरूष का काम है और उसे आवश्यकतानुसार खर्च करना तथा सहेजना नारी का। सतानोत्पत्ति करना नारी की सार्थकता का पर्याय बन गया। काफी समय तक सघर्ष करने के बाद धीरे–धीरे नारी ने इस नियति को दबेमन से स्वीकार कर लिया । चूकि अधिकार की बलवती भावना के कारण पुरूष– समाज मे, आपसी वैमनस्य, द्वेष और कलह का जन्म हुआ इस कारण भी अन्य पुरूषो की कुदृष्टि से बचाने के लिए नारी को घर की चारदीवारी मे बेद करना आवश्यक हो गया ताकि किसी शत्रु की दृष्टि नारी पर न पड सके। "इस प्रकार आर्थिक एव सामाजिक दृष्टि से नारी, हीन होने के बाद घर मे बद कर दी गयी जिससे उसका मानसिक एव बौद्दिक विकास भी अवरूद्ध हो गया ।" [17]

इस प्रकार नारी की स्थिति मे ह्रास के कारणो को रेखाकित करते हुए कहा जा सकता है कि शारीरिक दृष्टि से दुर्बल होने तथा क्रमश आर्थिक क्षेत्र से कटते

चले जाने के कारण नारी के जीवन के समस्त सूत्र धीरे–धीरे पिता, पति तथा पुत्र के रूप मे, पुरूष के हाथ मे आ गए। इसलिए वह काफी हद तक अपनी पहचान खोकर पुरूष की पहचान की मुँहताज हो गयी। इस प्रकार पुरूष प्रधान समाज के अस्तित्व का उदय हुआ जो अबतक कायम है। दूसरे, नारी की पुरूष सापेक्ष स्थिति स्वीकार कर ली गयी जिसमे आज भी कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 'नृनरयोर्वृदिश्च' इति शार्ङ्गरवादि (4/1/63) गणे पाठान् ङीन्।

जाति लक्षणस्य (4/1/63) ङीषोऽपवाद ।

आकृति ग्रहणा जाति इति नृशब्दो जातिवाचक । अमरकोश*

2 'युष' सौत्र सेवायाम् । इति प्रत्यान्त (उणादि 1/97)

योषित् अच् प्रत्यान्त (3/3/124) ।

धञ्प्रत्यान्त (3/3/19)

वा 'योषा' शब्द । अमरकोश*

3 वमति स्नेहमिति वामा। यद्वा वाम कामोऽस्त्यस्या ।

'वनिता' जात रागस्त्री स्त्रियोस्त्री त्रिषु याचिते।

सेविते इति मेदिनी(65/150–51) अमरकोश**

4 प्रतीप द्रष्टु शीलभस्या

अपाङ्ग निरीक्षणात्। अमरकोश**

5 वहति उह्मते वेति वधू ।

'वहोधश्च' (उणा0 1/83) इत्यू । अमरकोश**

6 अल्प वलमस्या ।

अल्पार्थे नञ्। अमरकोश**

7 सम्निोऽन्त सीमन्त । सीमन्तो ऽस्त्यस्या ।

महति मह्मते वा।

महपूजायाम् इलच् (उणा0 1/54) = महिला। अमरकोश**

8 यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफल क्रिया ।। मनु स्मृति 3,56***

9 पुर स्वजन सहित कुल धारयति एक सूत्रे,

निबध्नाति स्वयोग्यतयेति। ***

10 नाना नारी निष्फला लोकयात्रा। गणरत्नमहोदधि***

11 वूमैने इन पास्ट, प्रेजेण्ट एण्ड फ्यूचर –ऑगस्ट बेवल, पृ0 2

12 वूमैने इन पास्ट, प्रेजेण्ट एण्ड फ्यूचर –ऑगस्ट बेवल, पृ0 2

13 द वूमैन्स मूवमैट– बारबरा डैकर्ड, पृ0 85

14 सोशल साइटिस्ट– (अक 4–5, न0 दिस0– 1975)एजिल्स, पृ0 80

15 सोशल साइटिस्ट– (अक 4–5, न0 दिस0– 1975)एजिल्स, पृ0 80

16 द वूमैन्स मूवमैट– बारबरा डैकर्ड, पृ0 181

17 वूमैने इन पास्ट,प्रेजेण्ट एण्ड फ्यूचर – ऑगस्ट बेवल, पृ0 5

---

* भारतीय संस्कृति– राम जी उपाध्याय, पृ0 20

** भारतीय संस्कृति– राम जी उपाध्याय, पृ0 21

*** भारतीय संस्कृति– राम जी उपाध्याय, पृ0 2
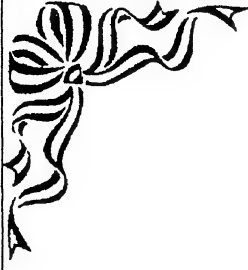
द्वितीय अध्याय

(क) क्रमशः नारी की बदलती हुई स्थिति:

प्राचीनकाल से लेकर

आधुनिक काल तक

(ख) विश्व स्तर पर नारी के बदलते मूल्य :

और पाश्चात्य बुद्धिजीवियों

तथा

समाज सुधारकों की भूमिका
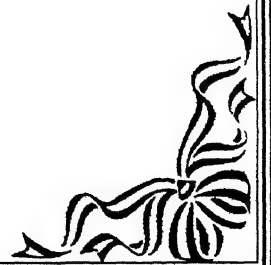
क्रमशः नारी की बदलती हुई स्थितिः प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक

यद्यपि पितृ–प्रधान समाज की स्थापना के साथ ही मातृ–प्रधान समाज खत्म हो गया किन्तु नारी यदि पहले की तरह प्रबल नही रही तो अति दयनीय भी नही हुयी थी। काफी कुछ परिवर्तन के बाद भी समाज मे उसकी पहचान अभी शेष थी। वह घर की 'साम्राज्ञी' थी। इस पर कोई प्रश्न–चिन्ह नही था। यही कारण है कि आधुनिक समय मे हम नारी के लिए जिस स्वतत्रता की बात कर रहे है या जिस स्वतत्रता को चाहते है वह स्वतत्रता एक सीमा तक प्राचीन काल की नारी को सहज ही प्राप्त थी। उसे अपने बहुमुखी – व्यक्तित्व के विकास के लिए स्वतत्रता थी। आज नारी और पुरूष मे जो स्वरूपगत भेद समझे जाते है, वे तब इस रूप मे नही लिये जाते थे।

स्वतत्रता की दृष्टि से वैदिक कालीन नारी और बीसवी शदी की नारी मे सिर्फ इतना ही अतर है कि आज की नारी स्वतत्रता– प्राप्ति के लिए सघर्ष कर रही है, फिर भी पुरूष–प्रधान समाज उसका अधिकार उसे देने को तैयार नही है जब कि प्राचीनकाल मे नारी इन अधिकारो से सम्पन्न थी। कुछ परिवर्तन के साथ, प्राचीन काल के आदर्श आज भी अपनाने लायक है क्योकि इस समय तक नारी कई दृष्टियो से पुरूष की अपेक्षा ऊँची स्थिति मे थी। आर्यो के हृदय मे नारी के लिए ऊँचा स्थान था, क्योकि वे नारी को समस्त भावो का कोश मानते थे। इसीलिए वे नारी मे 'शक्ति' की स्थापना करते थे क्योकि 'शक्ति' शब्द से दिव्य गुणो का स्मरण होता है। मा का स्थान सबसे ऊँचा था–

'मातृवत् परदारेषु' ।

वैदिक वाङमय को देखने से विदित होता है कि प्राचीन काल मे पिता विदुषी एव योग्य कन्याओ की प्राप्ति हेतु विशेष धार्मिक कृत्यो का अनुष्ठान करते थे–

अथ य इच्छेद दुहिता में पण्डिता जायेत सर्वमायुरियात्।

इसी प्रकार सतान की अभिलाषा करने वाली वैवस्वत मनु की पत्नी ने पुत्रेष्टि–यज्ञ के सुअवसर पर 'होता' से कन्या के लिये याचना करते हुए कहा–

'तत्र' श्रद्वा मनोः पत्नी होतारं समयाचत्।

दुहित्रर्थ मुपागम्य प्रणिपत्य पयोव्रता ।।'

पुत्रियो के भी उपनयन–सस्कार किये जाते थे। अथर्ववेद का एक पूरा सूक्त,'उपनय– सस्कार' से सबद्ध है।[1] सूत्र साहित्य मे भी सस्कार समान रूप से पुत्रो एव पुत्रियो के लिये सम्पन्न किये जाते थे। किन्तु कालान्तर मे मनु ने नारी के लिए विषाक्त वातावरण तैयार करने मे अह भूमिका निभाया। इसी क्रम मे उन्होने उपनयन–सस्कार को अनावश्यक बताया और पति सेवा को ही नारी के लिए 'सस्कार' माना। *'स्त्रीणा विवाह सस्कार ।'*

वैदिक काल मे शिक्षा पर सबका समानाधिकार था। अथर्ववेद मे स्पष्टत कहा गया है– *'ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम्'*। इसी प्रकार आवश्लायन श्रौत सूक्त मे भी *'समान ब्रह्मचर्यम्'* कहकर नारी शिक्षा पर प्रकाश डाला गया है। स्पष्ट कहा गया है कि 'केवल विवाह न करना ही ब्रह्मचर्य नही है अपितु ब्रह्मचारी वह है जो सयमपूर्वक वेदाध्ययन मे निरत रहे।' इतना ही नही नारी धार्मिक शिक्षा मे भी रूचि रखती थी।[4] इसके भी अनेक उदाहरण मिलते है। घोषा, गोधा, विश्ववारा,अपाला, रोमशा, लोपामुद्रा, प्रभृत्ति अनेक मत्र दृष्टा ऋषिकाए थी। 'शतपथ ब्राह्मण' मे 'याज्ञवल्वय' ऋषि की पत्नी 'मैत्रेयी' को 'ब्रह्मवादिनी' कहा गया है। स्त्री शिक्षिका गुरूपत्नी हेतु सस्कृत भाषा मे विशिष्ट शब्दो का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार पाणिनीय अष्टाध्यायी मे 'उपाध्याय'[6] तथा 'आचार्य' [7] जैसे आदर सूचक शब्दो का प्रयोग किया गया है। इनसे प्रतीत होता है कि वेद का अध्ययन – अध्यापन नारियो के द्वारा भी होता था।

'पत्युर्नो यज्ञ सयोगे' सूत्र से स्पष्ट है कि पत्नी का यज्ञ मे अधिकार था। नारी के लिए आत्मिक विकास की दृष्टि से भी यह काल श्रेष्ठ था। 'बृहदारण्यक उपनिषद्' मे

याज्ञवल्क्य मैत्रेयी सवाद का उल्लेख किया गया है। मैत्रेयी ने सवाद किया–

येनाहं नामृतास्यां किमहं तेन कुर्याम,।

यदेव भगवान वेद तदेव में ब्रूहि।।

पति–पत्नी के मध्य हुआ यह सवाद, भारतीय नारी की विरक्ति एव जिज्ञासा का अद्वितीय उदाहरण है। भारतीय नारी के ब्रह्म–विषयक ज्ञान का एक और उदाहरण है– विदेहराज–जनक की भरी सभा मे ब्रह्मवादी ऋषियो की भीड के मध्य ब्रह्म सबधी चर्चा याज्ञवल्क्य की परीक्षा और परीक्षक गार्गी । यानि पुरूषो के दरबार मे नारी का परीक्षक के रूप मे प्रवेश, ज्ञान का ही नही उसकी साहसिकता का भी श्रेष्ठ उदाहरण है।

वेदकालीन समाज नर–नारी सबधो को लेकर उदार था। ''ऋग्वेद'' की बहुसख्यक उपमाओ से ज्ञात होता है कि युवाजन एक–दूसरे से प्रणय–निवेदन भी करते थे।[8] अत स्पष्ट है कि युवतियॉ स्वतत्रतापूर्वक जीवन–यापन करती थी, और उन्हे युवको से मिलने जुलने की पूरी स्वतत्रता थी। विवाह का प्रस्ताव सिर्फ कन्या पक्ष की ओर से ही नही रखा जाता था बल्कि वर पक्ष भी विवाह का प्रस्ताव करता था। एक जगह कहा गया है कि– '' एक मन पसद वर, घर पर आकर कन्या के विवाह का प्रस्ताव रखे।'' नारी की उपयोगिता को रेखाकित करने एव पुरूष–नारी के सह–सबधो की अनिवार्यता पर प्रकाश डालने के लिये ''वृहदारण्यकोपनिषद्'' तथा 'मनुस्मृति' मे कहा गया है– ''नारी सृष्टि चक्र को चलाने के लिए अनिवार्य है इसीलिए एकाकी प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागो मे विभक्त कर डाला। जिसके कारण नारी और पुरूष का विभाजन हुआ''।[9] अत एक ही शरीर का द्विधा भाग– विभाग होने के कारण वे एक दूसरे के लिए परिपूरक है।[10] आगे चलकर इसी तथ्य को समाज मे सर्वग्राह्य बनाने के लिये भगवान शिव के 'अर्धनारीश्वर' स्वरूप की विधिवत प्रतिष्ठा की गयी।

इसी प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल से ही नारी, पुरूष का 'अर्धांग' मानी जाती रही है। अर्थात् *'अर्धांगिनी' (Equalhalf)* । *'दपति'* शब्द से भी इसी बात

की पुष्टि होती है कि नारी और पुरूष दोनो ही समान रूप से घर के 'पति' माने जाते थे। समाज मे नारी–पुरूष की समानता का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है? अपने आपको एक दूसरे का अर्धाग समझते हुए विवाह के समय वर कन्या से कहता है– "जो तुम्हारा हृदय है वह मेरा हृदय बन जाय, ओर जो मेरा हृदय है वह तुम्हारा हृदय हो जाय।" [11] पत्नी, पति का व्रत करे और पति, पत्नी का व्रत करे। [12] पुरूष जिस समय गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता है,उस समय देवता अग्नि और ऋत्विजो की साक्षी मे जाति–पचो के सामने प्रतिज्ञा करता है कि *'धर्म अर्थे च नाति–चरामि,* अर्थात् सबधी कोई काम पत्नी के बिना नही करूँगा । यदि पत्नी को 'लक्ष्मी स्वरूपा' कहा गया है तो उसे 'सखा' शब्द का सबोधन भी दिया गया है।

ऋग्वेद के दशम् मण्डल के पचासी सख्या वाले सूक्त मे कहा गया है– "हे वधूँ! तुम ससुराल मे जाकर अपने सदाचरण और अच्छे व्यवहार से सास, ससुर, ननद (देवरानी और जेठानी) के ऊपर आधिपत्य जमाकर सब की महारानी बनकर रहो।" [14] इस समय तक नारी के लिए पर्दा करना अनिवार्य नही था क्योकि विवाह के उत्तरार्द्ध मे पढे जाने वाले मत्र से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह परिवार वालो के सामने पर्दा नही करती थी– *'' यह परम कल्याणमयी वधू यहॉ बैठी है, गुरूजनो तथा देवताओ आप सब लोग यहॉ आवे, इसे कृपा दृष्टि से देखे तथा इसको सौभाग्य सूचक आशीर्वाद देकर अपने–अपने स्थान को पधारे।''* [15] मनुस्मृति मे भी अपवाद स्वरूप कहा गया है कि– *'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'*। सपत्ति मे पुत्र और पुत्री दोनो का अधिकार था। सपत्ति सबन्धी – विभाजन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि –" पुत्र अपनी ही आत्मा के समान होता है तथा पुत्री उस पुत्र के समान होती है, अत. आत्मा समान पुत्री के जीवित रहते हुए पिता के धन को कोई कैसे ले सकता है?" [16] 'नारद' ने कहा है कि –" पुत्र के समान ही पुत्री भी पिता के कुल को चलाने वाली होती है।" [17] 'वृहस्पति' ने भी पुत्र के अभाव मे पुत्री को ही 'दायाद' माना है।" [18]

सर्वप्रथम 'याज्ञवल्क्य' ने ही पुत्रहीन विधवा को मृत–पति की सपत्ति का अधिकारी घोषित किया था और 'बृहस्पति' ने उनकी बात को पुष्टि करते हुए अपना तर्क दिया। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि नारी को भी उसकी परिस्थिति के अनुसार कुछ विशेषाधिकार दिये गये थे। किन्तु यह स्थिति भी अधिक समय तक बनी नही रह सकी । परिस्थिति के अनुसार समाज ने इसमे भी परिवर्तन किया । पुरूष का अह कुछ मामलो मे अधिकार सम्पन्ना नारी को बर्दाश्त नही कर सका। अत उत्तर वैदिक काल तक स्त्रियो की स्थिति यथावत बनी रही। उसके बाद क्रमश नारी शिक्षा का स्तर गिरने लगा। कन्याओ को शिक्षा हेतु गुरूकुल मे भेजने की प्रथा खत्म कर दी गई, और उसे घर पर ही शिक्षा देने का समर्थन किया गया। शिक्षा देने का अधिकार भी सिर्फ पिता,भाई या चाचा आदि के ही पास सुरक्षित रहा। स्मृति – ग्रथो ने नारी की स्वतत्रता एव अधिकार को मात्र 'स्मृति' बनकर रह जाने पर मजबूर कर दिया। नारी के धार्मिक अधिकार कम होते गये। अशिक्षा के कारण उसका भविष्य –अधकारमय बन गया।

'ब्राह्मणग्रथो' मे कहा गया कि "नारी पुरूष की अपेक्षा दुर्बल एव भावुक मस्तिष्क की होती है, तथा वाह्य आकर्षणो के प्रति शीघ्रता से लुभा जाती है।" इसलिए नारी को सम्पूर्ण रूप से अधिकार विपन्ना बनाकर घर के भीतर रहने के लिए बाध्य किया। उसकी भावना एव सवेदना के चलते उसे दुर्बल साबित करने का प्रयास किया गया । उसे इस तरह की शिक्षा और परिवेश प्रदान किया गया कि वह अपने आपको पूर्णत पुरूष की मानसिकता के अनुसार परिचालित होने योग्य बना सके। चूकि कन्याओ को शिक्षा से वचित कर दिया गया इसलिए इसकी ' क्षतिपूर्ति' के लिये अल्पायु मे ही उन पर विवाह का गुरूतर दायित्व सौप कर अपने भविष्य के लिए कुछ सोचने–समझने का अवसर ही समाप्त कर दिया गया। शिक्षा के स्थान पर विवाह को मान्यता देने के कारण कन्याओ का उपनयन सस्कार बद कर दिया गया। नारी के लिए प्रथम और अतिम महत्वपूर्ण कार्य विवाह ही बन गया। इसलिए नारी के लिए वैदिक– मत्रो के उच्चारण का विधान भी सिर्फ वैवाहिक–सस्कार

तक ही सीमित कर दिया गया। इस प्रकार नारी की पूरी दुनियॉ पुरूष के पदतल के नीचे दब कर रह गयी–

'वैवाहिको– विधिः स्त्रीणां संस्कारों वैदिकोमतः।
पतिसेवा गुरौवासो गृहार्थोग्नि परिक्रिया।।" [19]

पुरूष– समाज को इससे भी सतुष्टि नही मिली तो उसने नारी की स्वतत्रता का अपहरण करने वाले ग्रथो का निर्माण किया, नियम बनाये गये और उन्हे विविध तर्को से परिपुष्ट करने के बाद नारी को उसी के अनुसार चलने का निर्देश दिया गया। शोषण की मानोवृत्ति के कारण ही नारी के विषय मे पुरूष ने हर तरीके से नारी पर अकुश रखने का प्रयत्न किया। नारी के विषय मे 'वशिष्ठ' ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि–" स्त्री – स्वतत्रता के योग्य नही है।" अन्य स्मृतिकारो के साथ 'मनु' ने भी इस मत का प्रबल समर्थन करते हुए कहा– *'पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।*
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।। [20]

यानि एक पुरूष द्वारा जो कदाचित कमी रह गयी थी उसे दूसरे पुरूष ने कुछ पक्तियॉ जोड कर पूरी कर दी। इस प्रकार नारी के लिए समाज के अनेकानेक नियम बनते गये और इन नियमो के कारण पुरूष का दप्र बढता ही चला गया। नारी की अपनी इच्छाए दबती चली गयी और नारी की स्थिति त्रासदीपूर्ण होती गयी। महाभारत–काल तक आते–आते मध्यम एव निम्नवर्ग की नारी की स्थिति बहुत अच्छी नही रह गयी थी। इसके उदाहरण स्वरूप साहित्यिक– ग्रथो को लिया जा सकता है जिनमे अवसर के अनुसार उच्चकुल की नारियो को ही वर्ण्य –विषय का आधार बनाया गया है। इसलिये यह ग्रथ केवल नारी के एक पक्ष का ही उद्घाटन करते है जबकि अन्य पक्ष दबा ही रह जाता है।

महाभारत के 'अनुशासन पर्व' मे बताया गया है कि–पुत्र की तरह लोग पुत्री की भी कामना करते थे। [21] महारानी गाधारी भी सौ पुत्रो के अतिरिक्त एक पुत्री के लिए इच्छुक थी। *"यदि सौ पुत्रो के अतिरिक्त एक छोटी कन्या हो जायेगी तो मेरे पति दौहित्र के पुण्य से प्राप्त होने वाले उत्तम लोको से भी वंचित नही रहेंगे।"* [22] 'राजा अश्वपति' को

कठोर तपस्या के बाद ही 'सावित्री' कन्या के रूप मे प्राप्त हुयी थी – *"सौम्य ! भगवान ब्रह्म जी के कृपाप्रसाद से तुम्हे शीघ्र ही इस पृथ्वी पर एक तेजस्विनी कन्या प्राप्त होगी।"* [23] सतानोत्पत्ति के बाद जो सस्कार सम्पन्न कराये जाते है, उनको "जात कर्म सस्कार" कहते है। महाभारत काल मे पुत्र के साथ ही पुत्री के भी 'जातकर्म सस्कार' कराये जाते थे। महर्षि भरद्वाज ने अपनी पुत्री श्रुतावती के समस्त सस्कारो को सपादित किया था–

तस्यास्तु जातकर्मादि कृत्वा सर्व तपोधनः।

नाम चास्याः स कृतवान भरद्वाजो महामुनिः।। [24]

'शुक्राचार्य' अपनी पुत्री 'देवयानी' से अधिक प्यार करते थे। अत 'कच' को 'शुक्राचार्य' से सजीवनी विद्या सीखने के लिये सर्वप्रथम 'देवयानी' को प्रसन्न करना पडा।[25] 'वकवध' की कथा प्रसग से भी ज्ञात होता है कि कन्या अपने पिता के लिये अत्यन्त प्रिय होती थी– *"जिस पर पुण्य लोक वश परम्परा और नित्य – सुख स्थित है, उस निष्पाप बालिका का परित्याग मै कैसे कर सकता हूँ?"* [26]

इस काल मे एक विशेष शब्द का प्रयोग होता था– 'पुत्रिका'। जिसका अर्थ होता है पुत्र के न रहने पर पुत्री को पुत्र मानना। [27] इसी प्रकार 'कुमारी' कन्याओ मे 'सुलभा' का नाम उल्लेखनीय है। उसे योग्य पति नही मिला इसलिये उन्होने विवाह नही किया – *"मेरा जन्म प्रधान – राजर्षि के महान कुल मे हुआ है, मैने योग्य पति के न मिलने पर मोक्षधर्म की शिक्षा ग्रहण की तथा मुनिव्रत धारण करके मै अकेली विचरती रहती हूँ।"*[28] इस समय भी यदा–कदा ही सही पर कन्या को अपनी योग्यता के आधार पर विवाह करने का अधिकार प्राप्त था। ऐसा होने पर वह स्वेच्छा के साथ मर्यादित जीवन जीने की अधिकारिणी थी, और समाज उस पर किसी भी प्रकार का प्रश्न चिन्ह नही लगाता था। 'राजा अश्वपति' ने अपनी पुत्री के विवाह योग्य हो जाने पर कहा– *"बेटी ! अब किसी वर के साथ तुम्हारा विवाह कर देने का समय आ गया है, परन्तु कोई भी तुमको मुझसे मॉग नही रहा है, इसलिये तुम स्वय ही ऐसे वर की खोज करो जो गुण मे तुम्हारे ही समान हो "* [29] ।

ध्यान रहे, वर के चयन का अधिकार देने के साथ 'अश्वपति' ने गुणी–पुरूष की बात कही है। जबकि आज के परिवेश मे सिर्फ प्रतिष्ठा (बनावटी) और झूठी सम्पन्नता, दिखाने वालो की मॉग ही सर्वत्र देखी जाती है, गुण का तो रूपयो के आगे कोई मूल्य नही । सच तो यह है कि आज वर की योग्यता का मूल्याकन उसके पद और सम्पन्नता के आधार पर किया जाता है। आन्तरिक– गुणो की ओर लोगो का ध्यान ही नही जाता । सस्कार की अहमियत क्या है? हमारा आधुनिक समाज इसे भूलता जा रहा है।

उस समय यदा– कदा तलाक भी होते थे क्योकि इससे सम्बद्व उद्धरण भी मिलते है। किन्तु उसका स्वरूप आज की तरह घिनौना और बदले की भावना से प्रेरित नही था। उदाहरणस्वरूप 'शान्तनु' और 'गगा' के विवाह को लिया जा सकता है जिनका विवाह कुछ शर्तो के साथ सपन्न हुआ था– *"राजन! मै भला या बुरा जो कुछ भी करूँ, उसके लिये आपको रोकना नही चाहिये और मुझसे अप्रिय वचन भी नही कहना चाहिए।"* [30] किन्तु शान्तनु, गगा की बात भूल गये और पुत्र मोह मे पड कर आठवी सतान के पैदा होने पर उसे गगा जल मे फेकने से मना कर दिया तथा गगा को इस तरह का अपराध न करने के लिए कठोर वचन भी कहा। इस पर गगा ने शान्तनु को अपनी शर्त की याद दिलाते हुये कहा– *"मै इस पुत्र को मारूँगी नही परन्तु अब मै यहाँ रहूँगी भी नही क्योकि मेरे रहने का समय समाप्त हो गया,है मै शर्त द्वारा पहले ही यह बात स्पष्ट कर चुकी थी।"* [31]

पति और पत्नी के स्वभाव के विषय मे कहा गया है कि – पति और पत्नी का स्वभाव एक–सा होना चाहिये यह गृहस्थ का धर्म है । [32] इसकी उपादेयता वर्तमान युग मे भी बनी हुई है। स्त्रिया श्राद्व एव तर्पण करने की अधिकारिणी थी। पाडवो ने द्रौपदी सहित वैतरणी नदी मे पितरो का तर्पण किया था।नारी के मातृरूप को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था–'नास्ति मातृ समो गुरू ।

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृ समा गतिः।
नास्ति मातृसमं ऋणं नास्ति मातृसमा प्रिया।। [33]

राजकुल की स्त्रिया दरबार मे उपस्थित हो सकती थी। राजा

धृतराष्ट्र ने विदुर को आज्ञा दिया कि गाधारी को राज दरबार मे बुला लाओ।[34] 'सुलभा' एक दार्शनिक नारी थी,उन्होने 'राजा जनक' के साथ समाधि और मोक्ष पर वाद–प्रतिवाद किया था। परन्तु साधारण–वर्ग की स्त्री नियम और वर्जनाओ के बीच ही जूझती रही। उसके जीवन की इससे बडी त्रासदी और क्या होगी ? कि वह जिस परिवेश मे जीती रही वह बुद्धिजीवियो के लिये भी एक पहेली बन कर रह गया। क्योकि उसके पास लिखने के लिये समृद्ध–अट्टालिकाओ की कहानियॉ थी। उसे गरीब की कुटिया की ओर देखने का समय ही नही था। पुरूष वर्ग का अह अभी सतुष्ट नही हो सका था । वह नारी के लिए एक के बाद एक कुचक्र रचता गया। एक ओर नारी की 'जिजीविषा–शक्ति' उसके पौरूष के लिये चुनौती बनकर खडी थी तो दूसरी ओर उसकी 'मेधा–शक्ति', वाद–प्रतिवाद करने मे दुस्साहस का परिचय दे रही थी। नारी समुदाय के लिए अपने अस्तित्व और अपनी योग्यता को प्रमाणित करने के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अवसर मिलने पर पुरूष को अपनी क्षमता से परिचित कराये। किन्तु पुरूष समाज उसके इस रूप को कभी सहजता से स्वीकार न कर सका,जिसका दुष्परिणाम नारी को झेलना पडा और बौद्धकाल तक आते–आते उसकी ह्रासोन्मुख–स्थिति के असदिग्ध प्रमाण मिलने लगे । वह साधना के मार्ग मे बाधक और जीवन के व्यापक क्षेत्र के लिये अक्षम समझी जाने लगी।

'चुल्लवग्ग जातक' से ज्ञात होता है कि तथागत ने अपने बौद्धधर्म मे स्त्रियो के प्रवेश को निषिद्ध कर रखा था। कहा जाता है कि उनका पालन–पोषण करने वाली 'गौतमी' ने सघ मे प्रवेश की इच्छा व्यक्त की तो बुद्ध ने अपने सिद्धान्त के अनुसार स्पष्टत अस्वीकार कर दिया। कितना हास्यास्पद प्रतीत होता है कि दु खो से मुक्ति का मार्ग बताने वाले बुद्ध भी, स्त्री पुरूष की भेद रहित बुद्धि से ऊपर नही उठ पाये थे। किन्तु गौतमी ने हार नही मानी, उन्होने अपनी दृढ इच्छा शक्ति का परिचय दिया और कुछ समयोपरान्त वह पुन मुक्ति की आशा लेकर वैशाली आयी, तथागत ने पुन अपने सिद्धान्त की दुहाई दी । किन्तु उनके प्रिय शिष्य 'आनन्द' ने गौतमी के संकल्प से द्रवित होकर उनको सघ मे प्रवेश

देने के लिए तथागत से विनय पूर्वक आग्रह किया। इस प्रकार एक पुरूष ने दूसरे पुरूष की बात मान ली। गौतमी को सघ मे प्रवेश और "पवज्जा' ग्रहण करने की अनुमति मिल गयी। किन्तु नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले बुद्ध ने सघ की स्थिरता के प्रश्न पर आनन्द से कहा – *"यदि मेरा धर्म स्त्री की अनुपस्थिति मे 5000 वर्ष तक कल्मष रहित रहता तो अब मात्र 500 वर्ष मे ही पतन की ओर प्रवृत्त हो जायेगा।"*

पुन कहा – *"जहॉ नारियॉ घर छोड कर सघ मे प्रवेश करने लगती है वहॉ धर्म स्थाई नही रह पाता।"* [35] बुद्ध ने स्त्रियो के लिये आचरण से सम्बद्ध अनेक कठोर नियम बनाये। क्योकि उनकी दृष्टि मे समाज मे व्याप्त सारे व्याभिचार की जड एक मात्र नारी ही थी। इसलिए सघ मे प्रवेश करने वाली नारियो के लिए अनेक नियम बनाये गये ताकि कम से कम नारियॉ सघ मे प्रवेश कर अपनी मुक्ति की बात सोच सके। 'बुद्धत्व' को प्राप्त करने के बाद भी गौतम 'नारी शक्ति' को पहचान नही सके थे। इसी कारण उनके नियमो के अनुसार, नये भिक्षु को भी पुरानी भिक्षुणी की अपेक्षा श्रेष्ठ स्थान दिया गया। किन्तु ध्यातव्य रहे, कि बुद्ध की समस्त शकाओ को निर्मूल करते हुये नारी ने भिक्षुणी के रूप मे तत्कालीन समाज के भीतर अपना आदर पूर्ण स्थान बनाया। कुछ विदुषी भिक्षुणीयो ने तो अत्यन्त सुन्दर कविताओ की रचना भी किया । उनकी रचनाओ का सकलन 'थेरीगाथा' नामक ग्रन्थ मे किया गया है। अन्तत बौद्धधर्म, को दबेमन से ही सही, पर स्वीकार करना पडा कि नारी भी निर्वाण – पद की अधिकारिणी है। 'सक्का' और 'खेमा' ने 'धम्मवादिनी' तथा 'भिक्षुणी' का पद प्राप्त किया तो आम्रपाली जैसी वारागना 'निर्वाण पद' की अधिकारिणी मानी गयी।

किन्तु धीरे–धीरे मनु कालीन *'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'* वाला सूत्र वाक्य बौद्ध कालीन विहारो के स्वच्छन्द जीवन द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया। अप्राकृतिक सयम की दुहाई देने वाले श्रमण, आश्रमो में व्याभिचार –वृद्धि के कारक बने किन्तु दोषी नारी को ठहराया गया। भिक्षुओ ने प्रज्ञा–पारमिता की सिद्धि के बहाने दुराचार

को प्रोत्साहित किया। भारत के अध पतन के मूल मे बौद्ध धर्म की इस विकृति को कदापि विस्मृत नही किया जा सकता। व्यवहारिक धर्म, गृहस्थ जीवन की उपेक्षा करते हुए, भिक्षुओं ने एकातिक साधना का उपदेश दिया किन्तु वे प्राकृतिक नियमो पर अपनी साधना का रग नही चढा सके । नारी से घृणा करने की शिक्षा देने वाले भिक्षुक स्वय वासना के दलदल मे फॅसे और नारी की सुचिता पर प्रश्न चिन्ह लगाते रहे। वह अपने इन्द्रियो का निग्रह नही कर सके फलत, बौद्ध–विहार अपनी मर्यादा से गिरते गये। बौद्धो ने स्वय को निग्रही साबित करने के लिए नारी को स्वभावत उच्छृखल बताया और इसके लिए अनेक दृष्टान्त भी दिये। इन्होने स्वय पर नियन्त्रण रखने के वजाय एकातिक साधना पर बल दिया। यह विचारधारा आगे चलकर भारतीय सतो के वैराग्य प्रधान मत मे परिवर्तित हो गई।

इस साधना ने मातृपूजा को दो तरह से आघात पहुॅचाया – इसने स्त्री के प्रति घृणा का बीज बोया। दूसरे *परकीया प्रेम जनित व्याभिचार* द्वारा समाज मे अनाचार फैलाया और इसका कारण भूत नारी को माना । फलत सत समाज एव वैरागियो के मध्य नारी की स्थिति घृणास्पद हो गयी। उत्तरोत्तर यह निन्दा की पात्र मानी गयी। सभी प्राणियो मे एक ही ईश्वर का अश मानने वाले समाज– सुधारक सत भी नारी के प्रति सहृदय नही हो सके। उन्होने भी नारी को पुरूष के विचलन का कारण मानकर उसे साधना के अयोग्य ठहराया।

भक्तिकालीन सत, समाज सुधारक तथा *'ऑखन देखी' की दुहाई देने वाले 'कबीर' को भी नारी 'ठगिनी' ही दिखाई पडी।* उनको भी नारी मे कहीं 'परमतत्व' के दर्शन नही हुए। यदि उसमे कुछ दिखा भी तो सिर्फ 'माया'। अपने जीवन भर समानता का राग अलापने वाले कबीर दास को भी नारी,पुरूष से हीन ही दिखाई पडी। आखिर वे भी तो थें उसी पुरूष समाज की ही उपज थे जिसने नारी को उपेक्षित करना अपना धर्म मान रखा है। अत कही न कही उनमे भी पुरूषत्व की श्रेष्ठता का बोध समाहित था। इसलिए उन्होने भी अपनी पूर्ण सत परम्परा का अनुसरण करते हुये कहा –

> ***"नारी की झांई पड़त अन्धा होत भुजंग।***
> ***कबिरा तिनकी कौन गति जे नित नारी संग।।"***

किन्तु *'माया महा ठगिनी हम जानी'* कहने वाले जब यही कबीर परमात्मा के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम और समप्रण को व्यक्त करना चाहते है तो नारी भाव का ही आश्रय ग्रहण करते है इसके अलावा और कोई विकल्प नही अपनाते। कविता मे ही सही पर पुरूष तत्व के प्रति अपने भावनामय मनोद्गारो को व्यक्त करने के लिए स्वय को नारी के रूप मे ही कल्पित करते है– *''राम मोर पिउँ मै राम की बहुरियाँ''*। ऐसा लगता है जैसे शरीर और समाज– रचना से प्राप्त पुरूषत्व का दर्प–आत्मा के निश्छल – प्रेम को वहन करने मे असमर्थ हो गया हो। यद्यपि पुरूष बाहुल्य समाज, नारी को उपेक्षित ही माना किन्तु कुछ सद्पुरूष ऐसे भी हुए है जिनकी दृष्टि सबके प्रति सम रही है। उन्होने प्रकृति–पुरूष की तरह ही नारी–पुरूष को अभिन्न माना है। इसी कारण विभिन्न ऐतिहासिक और सास्कृतिक साक्ष्यो के आधार पर भारतीय समाज मे आजतक कोई स्थाई मर्यादा या सर्वानुमति की अभेदता नही बन सकी। एक प्रकार से यह विचार धारा गतिशील समाज के लिये नितात आवश्यक भी है अन्यथा मर्यादा और नियमो की जडता समाज के विकास को अवरूद्ध कर देती। यही कारण है कि पृरूष–सत्ता द्वारा निर्मित घुटन भरी मर्यादाओ के भीतर ही तीखी बहस की प्रेरणाप्रद परम्परा भी चली आ रही है जो नैतिकताओ की जडता पर प्रहार करके उसे नवगति प्रदान करती रहती है।

इसी सदर्भ मे मीराबाई का नाम उल्लेखनीय है जिन्होने नारी होकर भी अपने कुल की झूठी 'कानि' को छोड कर अकुठ भाव से अपने व्यक्तित्व को रेखाकित करती हुई श्याम सुदर के विग्रह मे समाविष्ट हो गयी। उन्होने नारी के लिए बनायी गयी झूठी मर्यादा एव परम्परा को नकार दिया और यह दिखाया कि नारी भी भगवत्प्रेम की अधिकारिणी है। ईश्वर की दृष्टि मे वह नि पाप है।

मीरा की तरह आण्डाल ने भी अपने नैसर्गिक आवेगो को भक्ति मे रूपान्तरित कर नारीत्व की गरिमा को एक नया मूल्य प्रदान किया । इसी प्रकार सूर की गोपियाँ अपने सहज प्रेम के बल–बूते समाज निर्मित मर्यादा और परम्परा की धज्जियाँ उडाती हैं और शास्त्र – निपुण उद्धव के ज्ञान–गर्व को चूर कर, उन्हें प्रेमसिंक्त कर मथुरा भेजती है।

किन्तु पुरूष प्रधान समाज मे नारी द्वारा सपादित इस तरह के प्रसग अधिक नही देखने को मिलते बल्कि इनको सिर्फ उदाहरण के रूप मे ही लिया जा सकता है। परिणाम की दृष्टि से वह अपनी उपस्थिति दर्ज नही करा पायी क्योकि किसी परम्परा को सहसा नकारने की शक्ति सबमे नही आ पाती। यही कारण है कि जिन्होने परम्परा के विरूद्व नयी परम्परा की नीव डाली उनका अनुसरण नही हो पाया फलत समाज मे उसकी स्थिति बेहतर नही होने पायी। *पुरूष की दृष्टि मे नारी ' माया' और ' कुलटा' ही बनी रह गयी और उसका मार्दव तथा सौकुमार्य, अबलत्व का पर्याय बना रहा* इसमे कोई परिवर्तन नही हुआ। पुरूष की दृष्टि मे नारी का सौन्दर्य क्रमश रमणीय और अतत उपभोग्य बनकर ही रह गया। उसकी क्षमाशीलता और सहिष्णुता को उदारता न मानकर विवशता का बोधक मान लिया गया। व्यक्ति की दृष्टि मे वह नगण्य है उसका अस्तित्व पुरूष के सापेक्ष बनने मे है, इसलिये आदर्श नारी के गुणो मे प्राय वे ही तत्व शामिल किये गऐ है जिनसे वह पुरूष के लिये – सुशील, सुलक्षणो से सम्पन्न, लज्जावती और आज्ञाकारिणी सिद्ध हो।

मुस्लिम आक्राताओ के भारत मे प्रवेश करने के साथ ही नारी का बचा खुचा अस्तित्व भी समाप्त प्राय हो गया। अब तो वह मात्र शरीर बन कर रह गई । मध्यकाल भारतीय नारी के पतन का काल था। आक्रमण कारी भारत मे सिर्फ धन –सम्पत्ति ही लूट कर नही ले जाते थे, उनमे भी विशेष कर निशाना कुँवारी लडकियॉ होती थी। इस लिये नारी की रक्षा के विचार से समाज ने अनेक नियम बनाये, किन्तु कालान्तर मे इनसे अनेक कुरीतियो का जन्म हुआ।

मध्यकालीन शासकवर्ग के समाज मे पति जब चाहे तलाक दे सकता था। उसे एक साथ अनेक पत्नी रखने का अधिकार इस्लाम देता है। प्राय स्त्री को लेकर सघर्ष होने लगे । नारी क्रय–विक्रय की वस्तु बना दी गई और समाज के शक्तिशाली व्यक्ति उसके मालिक बन बैठे। मुगलों की बर्बरता से बचाने के लिये बाल विवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, बहु–विवाह, दहेज प्रथा आदि का आरभ हुआ। किन्तु कालान्तर मे इन नियमो एव वर्जनाओ

से समाज मे अनेक कुरीतियो को प्रश्रय मिला। लडकियो के अपहरण के भय से उनके वयस्क होने की प्रतीक्षा नही की जाती थी बल्कि शीघ्रातिशीघ्र उनका विवाह कर दिया जाता था। बालविवाह की यह स्थिति उत्पन्न हो गई कि गोद के बच्चो का भी विवाह होने लगा। राजस्थान आदि कुछ स्थानो पर तो 'गर्भस्थ शिशु' का भी विवाह निश्चित किया जाने लगा। बालविवाहो के दुष्परिणाम स्वरूप बहुत सी लडकियॉ अल्पायु मे ही विधवा हो जाती थी और विधवाओ का हिन्दू समाज मे कोई सम्मान नही रह गया था । वह उत्पीडित की जाती थी। ऐसी विषम– स्थिति मे कुछ तो नारकीय जीवन से मुक्ति हेतु अपने पति के साथ सती हो जाती थी और कुछ को समाज बाध्य कर देता था सती होने के लिये।प्राय राजा के पराजित हो जाने पर उसकी समस्त रानियॉ व दासिया भी अपहरण एव बलात्कार के भय से 'सामूहिक दाह' कर लेती थी जिसे 'जौहर' का नाम देकर महिमामडित किया जाता था।

हिन्दुओ ने मुगलो की कुदृष्टि से बचने के लिये स्त्रियो को पर्दे मे छिपा दिया ताकि सम्मान को जीवित रखा जा सके। यद्यपि जनसाधारण मे तो एक ही विवाह प्रचलन मे था, किन्तु विदेशी आक्रमणो के कारण बहुपत्नी–विवाह को प्रोत्साहन मिला। समर मे योद्धाओ की मृत्यु के बाद अपनी पुत्रियो की सुरक्षा हेतु योग्य वर पाने की आकाक्षा, एव शासक वर्ग से कूटनीतिक सबध बनाने हेतु बहुविवाह की प्रथा को बढावा मिला। युद्धो के परिणामस्वरूप पुरूषो की कमी तथा पुत्रियो को उपयुक्त वर के हाथ सौपने की प्रवृत्ति ने दहेज की घृणित परम्परा का पोषण किया। राजस्थान, जो राजपूतो का गढ था, वहॉ राजपूतो एव ठाकुरो के घर मे होने वाली 'कन्या शिशु' का गलाघोट कर, एव 'आक' का दूध (रस) पिलाकर मार दिया जाता था। ताकि सम्मान की रक्षा की जा सके और बेटी के विवाह के लिए किसी के आगे पगडी न उतारनी पडे ।किन्तु इतनी विषमताओ और उपेक्षाओ के बाद भी जब अवसर हाथ आया भारतीय नारियो ने अपने बुद्वि–चातुर्य और शक्ति का परिचय दिया। विशेष कर उन स्थितियों में जब उनके पति वीरगति को प्राप्त हो जाते या शत्रु द्वारा बदी बना लिये जाते थे। बुन्देलखण्ड के नरेश 'चम्पत राय' की पत्नी

वीरागना 'हाडी रानी' ने 'औरगजेब' से टक्कर ली थी। इसी प्रकार रानी 'सारन्धा' ने अपने पुत्र के छीने हुये अश्व को औरगजेब के सिपाहियो से छीनकर औरगजेब से कहा – " *मुझे मान बडा प्रिय है इस घोडे के लिये मै जागीर तक छोड सकती हूँ* ।" और घोडे के कारण दोनो के बीच युद्ध हुआ अन्तत यवन पराजित हुए।[36]

छत्रपति शिवाजी की पुत्रवधू और राजाराम की पत्नी 'वीरागना ताराबाई' , महाराष्ट्र के इतिहास की बहुत बडी शक्ति मानी गईं है। शिवाजी के देहावसान के बाद उन्होने उनकी सैन्य – शक्ति की कमान सभॉली। वह जीवन– पर्यन्त औरगजेब की सेना के साथ 'गुरिल्ला युद्ध' लडती रही। इतिहासकार सफीखॉ ने उनकी प्रशसा मे लिखा है – " *ताराबाई महाराष्ट्र के हृदय पर आधिपत्य कर बडे उत्साह व वीरता के साथ मुगल राज्य के प्रदेशो पर छापा मारने लगी। सैनिक उनके वीर वचन सुनकर मर – मिटने के लिये तैयार हो जाते थे। वह बडी बुद्धिमती, रणकुशल और कूटनीतिज्ञ थी। उनके राज्य प्रबन्ध और सैन्य–सचालन का ढग अनोखा था।* "[37] 'मलयबाई देसाई' ने तो महाराष्ट्र के वल्लारी दुर्ग की रक्षा के लिये शिवाजी से सत्ताइस दिन तक युद्ध किया। सुन्दर बाई, ताज कुवॉरि, देवल देवी, रूपाली, साहब कुवॅरि, कलावती आदि वीरागनाओ ने अपने साहस एव बुद्धिचातुर्य द्वारा यवनो से सघर्ष किया था।

भारत के स्वतत्रता आन्दोलन मे भारतीय नारी ने अदम्य साहस का परिचय दिया। 'अबला' कही जाने वाली नारी ने अपने बल और धैर्य से यह सिद्ध कर दिया कि वह 'अबला' नही बल्कि वास्तविक अर्थों मे 'सबला' है। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के 1889 मे बम्बई मे हुए राष्ट्रीय अधिवेशन मे दस नारियो ने हिस्सा लिया। यह सभी अग्रेजी सरकार से बचती बचाती कलकत्ता व मुम्बई से आयी थीं – स्वर्ण कुमारी देवी, कादम्बिनी गागुली, पडितरामा बाई, शेवन्ती बाई, त्रिम्बक, शाताबाई निकाम्बे, काशीबाई कानितकर, मानेकजी कुर्सेतजी, सरलादेवी चौधुरानी आदि। पंडित रामाबाई नें 'आर्य महिला समाज' की स्थापना करके नारी शिक्षा को प्रोत्साहित किया। कालान्तर मे रामाबाई ने तत्कालीन भारत सरकार को भी शिक्षा के क्षेत्र मे सहयोग प्रदान किया। इसी के आधार पर 'लेडी डफरिन' ने '*विमेस*

मेडिकल मूवमेट चलाया। रविन्द्र नाथ टैगोर की भगिनी 'स्वर्ण कुमारी देवी' ने 1886 मे '*सखी समिति* की स्थापना के माध्यम से नारी समुदाय को राष्ट्र जागरण की ओर उन्मुख करने का सद्प्रयास किया।

1905, बगाल–विभाजन के प्रश्न पर भारतीय नारी ने अपना आक्रोश व्यक्त करते हुये चूल्हा नही जलाया तथा इसके विरोध मे पुरूष क्रातिकारियो को अपना पूर्ण समर्थन दिया। नारियो ने अपनी सारी जमा पूँजी '*स्वदेश बान्धव समिति* मे दान कर दी। और अपनी जान को जोखिम मे डाल कर वे लोगो की नजर से बचकर क्रातिकारियो के पास महत्वपूर्ण सदेश एव कागजात आदि सामग्रिया पहुॅचाती थी।

नारी के अभूतपूर्व कृत्य को देखकर ही एनी बेसेन्ट ने कहा –" *भारत की प्रगति के लिये नारी मुक्ति अति –आवश्यक है। जब तक नारी सामाजिक रूढिवादिता से बाहर नही आयेगी तब तक देश का उत्थान असभव है।*' 1917 मे वह 'इडियन विमेस एसोसिएशन' की सस्थापिका एव अध्यक्षा बनी। इस एसोसिएशन के माध्यम से प्रथम बार नारियो के राजनीतिक अधिकारो पर बल देते हुये मतदान मे नारी की सहभागिता के प्रश्न को उठाया गया। इसके लिये आवश्यक था कि नारी अपने अधिकारो को समझे और इसका सदुपयोग करे। इस दिशा मे नारी को जागरूक बनाने के लिए ऐनीबेसेन्ट के साथ ही सरोजनी नायडू, डोरभी जिनाराज दास, मारग्रेट बहनो ने विशेष योगदान दिया।

1917 मे ऐनी बेसेन्ट भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्षा निर्वाचित की गयी। सरोजनी नायडू आदि के प्रयासो के बाद 1921–1930 के मध्य कई राज्यो ने नारियो को मताधिकार प्रदान किया। मुत्थूलक्ष्मी रेड्डी मद्रास विधानमडल की प्रथम महिला सदस्या चुनी गयी। किन्तु अभी तक पूर्णरूप से नारियो को मतदान का अधिकार नही मिल सका।

1920 के असहयोग आन्दोलन मे नारियो ने सक्रिय भूमिका निभाई, उन्होने अनेक स्थानो पर प्रदर्शन, जुलूस आदि आयोजित किये और खादी तथा चर्खे को भी प्रचारित किया । पति देशबधु चितरजन दास के साथ बसन्ती देवी

ने नारियो को असहयोग आदोलन के लिये प्रेरित किया। इसी क्रम मे 7 दिसबर 1921 को 'बसन्ती देवी' उर्मिला देवी व सुनीति देवी को खादी के कपडे बेचने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया।

नारियो के अदम्य साहस एव कर्तव्य परायणता को देखकर महात्मा गॉधी ने कहा–"*जब भारत की महिलाये जाग्रत हो गयी हे तो स्वतत्रता को कोई रोक नही सकता। स्वराज पाने मे भारत की औरतो का हिस्सा आदमियो के बराबर है, बल्कि इस शातिपूर्ण सघर्ष मे स्त्रिया कई मील आगे रही है।*[38]" कस्तूरबा ने अनेक सभाओ को सबोधित किया और सदैव नारियो को चरखा चलाने व खादी के कपडे पहनने के लिये प्रेरित करती रही। रामेश्वरी नेहरू ने लडकियो और औरतो को बोलने व वाद विवाद करने के लिए '*कुमारी सभा*' का गठन किया।

किन्तु नारियो को उस समय अत्यधिक चोट पहुॅची, जब गॉधी जी ने नमक सत्याग्रह के लिये आयोजित डॉडी यात्रा मे नारियो को भाग न लेने के लिए कहा– "*नमक आदोलन मे स्त्रिया नेपथ्य मे रहे और पिकेटिग चरखा कातने जैसे नारी सुलभ कार्य का दायित्व लेकर पुरुषो को सहयोग दे*"।[39] गॉधी की बात का प्रतिवाद करते हुए पहली बार भारतीय नारियो ने स्वतत्रता–सग्राम मे प्रत्यक्षत भाग लिया । 6 अप्रैल 1930 को हजारो की सख्या मे भारतीय नारिया समुद्र मे (बम्बई) नमक कानून तोडने के लिये उतरी । जब काग्रेस कार्यालय पर पुलिस ने छापा मारा तो जमुनाबेन, रत्नाबेन और अन्य नारियोने निर्भीकता पूर्वक उनका रास्ता रोक लिया। मारग्रेट बहने, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू आदि प्रबुद्ध महिलाओ ने भी गॉधी का मुखर होकर विरोध किया और अन्तत उन्होने सफलता पूर्वक 'सविनय अवज्ञा आदोलन' मे भाग लेकर अपनी साहसिकता का परचिय दिया।[40] इतना ही नही, सरोजिनी नायडू नें गॉधी तथा अन्य नेताओं के जेल जाने पर आदोलन को कुशल नेतृत्व प्रदान करते हुए सघर्ष को जारी रखा। इसी आदोलन मे सरोजिनी नायडू सहित 8000 महिलाए बन्दी बनाई गईं । नारी समुदाय के अप्रतिम

योगदान से प्रभावित होकर 1931 मे, काग्रेस के करॉची अधिवेशन मे स्वतत्र–भारत के सविधान पर विचार–विमर्श कर के स्त्री–पुरूष समानता के सिद्वात को सम्मिलित करने की बात उठाई गई। आगे चलकर नारियो का नेतृत्व करते हुए नलिनाक्षी सान्याल तथा कमला देवी चट्टोपाध्याय ने नारियो के आधारभूत अधिकारो की एक रूपरेखा बनाया जिसे 1949 मे भारतीय सविधान मे सम्मिलित कर लिया गया।

1934 मे 'अखिल भारतीय महिला परिषद्' की अध्यक्षा 'श्रीमती रेणुकाराय' ने आलइडिया लीग डिसएबीलिटीज ऑफ वुमैन डे' मनाया और नारी की कानूनी स्थिति मे सुधार लाने की आवश्यकता पर जोर दिया ।

1937 'देशमुख ऐक्ट' का विरोध नारियो ने सिर्फ इसलिये किया क्योकि इसमे विधवाओ को तो सम्पत्ति मे अधिकार दिया गया किन्तु पुत्रियो को इस अधिकार से वचित रखा गया। 1937 मे '*द आर्य मैरिज वैलीडिटी एक्ट*' के तहत अन्तर्जातीय विवाह की वैधता का स्वागत किया किन्तु इसकी कमियो को लेकर विरोध प्रदर्शन भी हुआ क्योकि इसमे न तो एक विवाह की शर्त रखी गयी थी और न ही पैतृक सपत्ति मे नारियो के अधिकार की बात को मान्यता दी गयी थी। [41]

1939–40 मे काग्रेस की राष्ट्रीय योजना समिति ने नेहरू जी के दिशा–निर्देशन मे स्वातत्रयोत्तर भारत के आर्थिक व सामाजिक विकास की रूपरेखा बनाने की योजना बनायी तो उसमे नारी सगठनो की महिलाओ लक्ष्मीबाई राजवाडे, सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पडित, हसामेहता तथा बेमग हमीदा अली को योजनाबद्व अर्थव्यवस्था मे महिलाओ का योगदान नामक विषय पर विचार व्यक्त करते हुए अपनी सिफारिशे देने को कहा गया। [42]

1946 मे जब भारतीय सविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए सलाहकार समिति का गठन किया गया तो उसमे 'अखिल भारतीय महिला परिषद्' की नेताओ ने प्रस्तावित सविधान मे नारी–विषयक सुधारो को सम्मिलित करने का प्रयास किया।

हसामेहता, अमृत कौर, लक्ष्मीमेनन की उपसमिति ने 'इडियन वूमैन्स चार्टर ऑफ ड्यूटीज एण्ड राइट्स' तैयार करके केन्द्रीय व प्रातीय सरकारो को भेज दिया। इनकी प्रमुख मॉगे इस प्रकार थी– एक विवाह प्रथा तथा तलाक को कानूनी स्वीकृति दी जाय, विवाह के लिये दोनो पक्षो की स्वीकृति आवश्यक हो, अर्न्तजातीय विवाह को मान्यता दी जाय, सरक्षकत्व मे समानाधिकार, सपत्ति मे स्त्री को बराबर का हिस्सा दिया जाय, कामकाजी महिलाओ को कुछ विशेष सुविधाए तथा परिवार नियोजन करने मे स्त्रियो को पूर्ण स्वतत्रता प्रदान की जाय।[43]

सयोग की बात यह थी कि हसा मेहता व लक्ष्मी मेनन सलाहकार समिति की सदस्या भी थी। अत उन्होने समिति की बैठको मे भाग लेकर दृढता के साथ देश–भर मे समान सिविल–कोड का समर्थन किया। किन्तु प्रबुद्ध–वर्ग के विरोध के कारण इस पर गभीरता से विचार नही किया गया। राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद, गृहमत्री वल्लभभाई पटेल तथा काग्रेस अध्यक्ष पुरूषोत्तम दास टण्डन ने इसका विरोध करते हुए आशय व्यक्त किया कि नारी को तलाक व सपत्ति मे अधिकार मिलने से पारिवारिक विघटन की आशका उत्पन्न हो सकती है फिर भी इसको पारित करवाने के लिए नारी सगठनो द्वारा प्रयास चलता रहा। अन्तत 1952 मे चुनावो के बाद प्रधानमत्री नेहरू ने '*हिन्दूकोड बिल* 'को पास कराने का सकल्प लिया और 1954–56 तक उसे पॉच भागो – {विवाह व तलाक, पैतृक सपत्ति मे समानाधिकार, गोद लेने का अधिकार व सरक्षण} मे विभक्त करके पारित करवा दिया । हिन्दू कोड बिल का समर्थन करते हुए प्रवुद्ध नारियो – रेणुका राय, सुचेता कृपलानी, जी0 दुर्गाबाई ने कहा था कि – *"आर्थिक व सामाजिक समानता के बिना राजनीतिक स्वतत्रता व्यर्थ है।'* [44] क्योकि सामाजिक समानता के बिना वह न तो परिवार व समाज मे सम्मान जनक स्थान पा सकती है और न ही आर्थिक समानता के बिना उसमे आत्मविश्वास व स्वतत्रता की भावना विकसित हो सकती है। इसलिए 1948 मे 'अखिल भारतीय महिला परिषद' द्वारा प्रस्तुत भारतीय महिलाओ के अधिकारो व कर्तव्यो के चार्टर में व्यवसाय संबधी कुछ मॉगे रखी गयी है कि–

(1) नौकरी देते समय विवाहित – अविवाहित स्त्रियो मे भेद न किया जाय।

(2) पुरूष कर्मचारियो के समान ही स्त्री कर्मचारियो को भी समान वेतन, अवकाश, चिकित्सकीय सुविधाए प्रदान की जाय।

(3) उन्हे पुरूषो से अलग, समय विशेष को दृष्टिगत रखते हुए कुछ विशेष सुविधाए भी दी जाय यथा–यथेष्ट प्रसूति कालीन अवकाश,कार्यस्थल के समीप शिशु–पालन गृहो की अनिवार्यता, गर्भवती व दूध पिलाने वाली माताओ के लिए विश्राम – गृह तथा दैनिककार्य – घण्टो के मध्य कुछ समय के लिए अवकाश। उनकी उपरोक्त मॉगे कुछ फेर–बदल के साथ स्वीकार कर ली गयी।

इस प्रकार स्वतत्रता आदोलन ने अनेक उपलब्धियो को अर्जित करके भारतीय नारी के व्यक्तित्व के विकास हेतु उचित मार्ग प्रशस्त किया। किन्तु स्मरणीय रहे, इन आदोलनात्मक उपलब्धियो से सिर्फ शहर मे रहने वाली शिक्षित नारी ही प्रभावित हुई तथा ग्रामीण नारिया प्राय अछूती ही रही। क्योकि शिक्षा, सम्पत्ति मे अधिकार, विधवा विवाह, विवाह–विच्छेद यह सब उपलब्धियॉ आज भी ग्रामीण नारियो तक अपने मौलिक रूप मे नही पहुॅच पायी है क्योकि ग्रामीण नारियो को अनेक अधिकारो के प्रति जागरूक बनाने का सार्थक कार्य न तो समाज सेवी सस्थाओ ने किया और न ही भारत–सरकार ने इसपर ध्यान देना आवश्यक समझा।

इसलिए कानून सिर्फ कागजो तथा फाइलो मे सीमित रह गया । वह अशिक्षित नारियो के उत्थान के लिए कोई ठोस धरातल नहीं तैयार कर सका। फिर भी इसके महत्व को पूर्णत अस्वीकृत नही किया जा सकता । क्योकि इसने समाज मे व्याप्त दीर्घकालीन जडता को हटाने का सद्प्रयास किया है। यद्यपि यह सच है कि इसका लाभ जिस तीव्रगति से नारी समाज को मिलना चाहिए था उस तरह से नही मिल पाया किन्तु धीरे–धीरे ही सही मध्य वर्गीय शिक्षित एव नगरीय नारी के आत्मविश्वास व जागृति की लहर ग्रामीण एव निम्न वर्गीय नारी तक भी पहुॅच रही है।

विश्व स्तर पर नारी के बदलते मूल्य और पाश्चात्य बुद्धिजीवियों एवं समाज सुधारकों की भूमिका

संयुक्त राष्ट्र सघ की (1980) रिर्पोट मे कहा गया है–"*महिलाए दुनियॉ की आबादी का आधा हिस्सा है, कुल काम का दो तिहाई हिस्सा वे करती है, लेकिन दुनियॉ की आमदनी का सिर्फ दसवॉ हिस्सा उन्हे मिलता है, और दुनियॉ की संपत्ति के सौवे हिस्से से भी कम सपत्ति महिलाओ के पास है।*"

आज नारी की स्वतत्रता के लिए, समस्त विश्व एक विचार मच पर खडा होकर अपने–अपने विचारो एव तर्को को प्रस्तुत कर रहा है। कुल मिलाकर सभी इस बात पर सहमत है कि नारी को भी अपना स्वतत्र व्यक्तित्व रखने का अधिकार है, उसे अपने तरीके से जिदगी जीने का पूरा हक है। यही कारण है कि नारी–उत्थान के नाम पर अनेकश योजनाऍ बनायी जा रही है। विभिन्न स्तरो पर विचार गोष्ठियो का आयोजन किया जा रहा है ताकि नारी समुदाय मे जागृति लायी जा सके।

वर्षो पूर्व नारी उत्थान के नाम पर बुद्विजीवियो एव समाज सुधारको द्वारा जो सद्प्रयास आरभ किये गये थे आज वह उत्तरोत्तर प्रगति की ओर गतिशील हो रहा है। नारी के वर्तमान सघर्षशील व्यक्तित्व एव बदलते हुए मूल्य के पीछे पाश्चात्य बुद्विजीवियो तथा समाज सुधारको की भी अहम् भूमिका रही है। नारी की कमोवेश एक सी ही स्थिति पूरे विश्व मे है, किसी न किसी रूप मे उसका शोषण जारी है, हॉ शोषण का स्वरूप अवश्य बदल गया है। शोषण कर्ता की भावनाऐ वही है जो वर्षो पूर्व थी। अत समस्त विश्व के उपन्यासो के नारी पात्र प्राय एक दूसरे से कही न कही सहानुभूति रखते हुये एक से ही प्रतीत होते है।उनकी परिस्थितियॉ भिन्न – भिन्न हो सकती है पर अनुभूतियॉ लगभग एक ही है।

नारी के बदलते हुए मूल्य को अपनी समग्रता के साथ विवेचित करते समय हम उसे किसी एक देश के साहित्य या किसी एक समाज के तहत नही बॉट सकते है।

इराके लिए आवश्यक है कि समस्त नारी समुदाय को आधार बनाकर एक सामान्य विचार कायम की जाय। पाषाण कालीन नारी की तरह यहॉ भी नारी और पुरूष आपसी सहयोग के पक्षधर थे। श्रेष्ठता एव लघुता की चिन्ताजनक स्थिति नही थी। सबकुछ समानता पर आधारित था। किन्तु ब्रिटेन की औद्योगिक क्राति की सफलता के साथ ही कृषि की प्रधानता समाप्त हो गयी।अब उद्योग, अर्थ व्यवस्था के प्रधानकारक तत्व बन गये इससे अन्य देशो के साथ ही परिवार नामक इकाई भी प्रभावित हुयी।

क्रमश नारी की दुनियॉ सिमटती चली गयी और इसके विपरीत पुरूष की दुनियॉ व्यापक होती गयी। नारी और पुरूष के मध्य वर्ग विभाजन की रेखा खीच दी गयी और इन दोनो के लिए पृथक–पृथक जीवन मूल्य निर्धारित किये गये। इस नये परिवर्तन के कारण पुरूष के विकास के लिए अनन्त आकाश था और नारी की सार्थकता का प्रतिपादन करने के लिए घर की चहरदीवारी बना दी गयी। पुरूष द्वारा बनाये गये साचे मे वह जड दी गई। अपनी धूर्तता के चलते उसने नारी के मध्य भी वर्ग विभाजन उत्पन्न किया। अब नारी भी दो भागो मे बॅट गयी–उच्चवर्गीय नारी तथा मध्यवर्गीय नारी। अब नारी और नारी के मध्य ही ऊॅच–नीच की दीवार खडी कर दी गयी, नारी की क्षीण होती हुयी शक्ति का पूरा लाभ उठाया पुरूष वर्ग ने। पुरूषो ने दोनो वर्ग की नारियो के लिए जीवन गत मूल्य अपने–अपने आधार पर निधारित किये, जिनका अनुपालन करना उनका कर्त्तव्य एव उनकी विवशता थी।

अत एक तरफ उच्च वर्गीय नारियॉ विलासिता की वस्तुओ के साथ पुरूष के आराम गाहो मे कैद हो गयी तो दूसरी ओर निम्नवर्गीय नारी (कुछ हिदायतो के साथ) जीविको–पार्जन हेतु श्रम के लिए घर से निकली। निम्न वर्गीय नारी घर और बाहर दोनो जगह काम करने के कारण इतना थक जाती थी कि कुछ सोचना उसके बस की बात नही थी। वह एक तरह से नियति के साथ समझौता कर बैठी।

कालान्तर मे उच्चवर्गीय पुरूष ने उदारता दिखाते हुए अपनी पत्नी को जनसेवा के लिए घर से बाहर निकलने की अनुमति प्रदान की। जब नारी जन–कल्याण

के कार्यो के माध्यम से समाज के बीच आयी तो उसे अपनी स्थिति का एहसास हुआ। दास प्रथा जैसे निकृष्ट कार्यो का विरोध करते समय उसे अपनी गुलामी का भी बोध हुआ। सच्चाई से अवगत हो जाने के बाद उनमे आक्रोश की भावना बलवती हो उठी और नारी मुक्ति की बात मस्तिष्क मे उभरने लगी । वह पुरूषो से अपना अधिकार मॉगने के लिए आगे बढी। इसी सदर्भ मे 'ग्रिमके बहनों' के नेतृत्व मे नारी ने अपने अस्तित्व के लिए सघर्ष आरभ किया। सराह ग्रिमके ने एक वक्तव्य मे कहा– " *जब तक नारी आर्थिक रूप से स्वतत्र होकर अपने विवेक से निर्णय नही लेगी तब तक वह समानता के अधिकार से वचित रहेगी।'* [46]

यद्यपि इसे पूर्ण सफलता नही मिल पायी किन्तु इस आदोलन ने नारी मुक्ति को नई दिशा प्रदान किया। छिट–फुट आदोलन चलता रहा। पहली बार एगेल्स ने नारी की समस्या को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर कहा कि –"*यह धारणा बिल्कुल निराधार है कि समाज के आदिकाल मे नारी पुरूष की दासी थी आधुनिक वैयक्तिक परिवार, नारी की प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष घरेलू दासता पर आधारित है स्त्रियो की मुक्ति की पहली शर्त है कि पूरी नारी जाति फिर से सार्वजनिक उद्योग मे प्रवेश करे और इसके लिए यह आवश्यक है कि समाज की आर्थिक इकाई होने का वैयक्तिक पारिवारिक गुण नष्ट कर दिया जाय।'*[47]

मेरी वालस्टान ने रूसो के विचारो का विरोध करते हुए कहा कि–''महिलाओ और पुरूषो के बीच का अतर उनकी निजी प्रकृति से नही बल्कि शिक्षा और महिलाओ को मिलने वाले सामाजिक परिवेश की वजह से है। इसलिए लडकियो को भी लडको की तरह शिक्षा दी जाय।'' [48] यदि पुरूष और महिलाए बुद्दि मे समान है तो उन्हे उसका प्रयोग करने के लिए समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए। स्त्रियॉ सिर्फ पुरूषो के भोग की वस्तु नही है, वह एक मानव भी है, जो बौद्धिक शिक्षा पाने मे समर्थ तथा उसकी अधिकारी भी है। [49]

सेट साईमन फुटियर तथा राबर्ट ओवेन ने कहा कि– ''वर्तमान व्यवस्था के

अर्न्तगत नारी–पुरूष को समानाधिकार नही मिल सकता, अत इस पूरी व्यवस्था को ही बदलना होगा। निजी सपत्ति को समाप्त करके नये समाज की रचना करनी होगी, जिससे नारी आर्थिक दृष्टि से तथा कानूनी दृष्टि से भी स्वतत्र हो सकेगी। स्त्री – पुरूष के बीच श्रम के पारम्परिक – विभाजन को समाप्त करना होगा तथा उत्पादन – कार्य मे महिलाओ की समान भागीदारी के साथ घरेलू–कार्यो मे पुरूषो द्वारा हाथ बटाने की जिम्मेदारी का वहन करना होगा।" [50] इस प्रकार नारी की मुक्ति को पूरे समाज का पर्याय बताया गया। जिस प्रकार औरत की गुलामी ने आदमी को अज्ञानता और निष्ठुरता के क्षेत्रो मे जकड रखा है उसी तरह उसकी मुक्ति से आदमी को ज्ञान, स्वतत्रता और सुख का पुरस्कार मिलेगा। [51]

इस तरह प्रवुद्ध–वर्ग एव समाज–सुधारक जनता को यह बात समझाने मे काफी हद तक सफल रहे कि नारी की प्रगति समाज के लिए अति आवश्यक है। क्योकि कोई भी समाज अपने आधे अग को उपेक्षित करके आगे नही बढ सकता । नारी का शिक्षित होना इसलिए भी आवश्यक है क्योकि वह सतति की उत्पत्ति के साथ उसके पालन–पोषण की भी भूमिका निभाती है। अत यदि वह अशिक्षित रहेगी तो इसका प्रभाव आने वाली पीढी पर भी पडेगा। इसलिए पुरूष ने नारी को आधुनिक शिक्षा से जोडा ताकि वे उज्जवल भविष्य देकर श्रेष्ठ समाज के निर्माण मे सहयोग करे। यद्यपि यह सोची–समझी रणनीति के तहत किया गया किन्तु अप्रत्यक्षत इसका सद् परिणाम नारी के मूल्यो के परिवर्तन के रूप मे आया।

गृह विज्ञान के साथ–साथ व्याकरण, गणित, विज्ञान जैसे विषयो को पढने के कारण, नारी की बद सोच के कपाट खुलने लगे। विज्ञान के अध्ययन से नारी को यह पता चला कि वह शारीरिक – सरचना मे पुरूष से दुर्बल अवश्य है किन्तु मानसिक और बौद्दिक स्तर पर बराबर है। अब वह पुरूष की कुत्सित मनोवृत्ति से पूर्णत भिज्ञ हो गयी और उसने अपने शोषण का विरोध करना शुरू किया। आधुनिक शिक्षा और परम्परागत सस्थाओ के मध

य तालमेल न होने के कारण उसने पारम्परिक भूमिका निभाने से अस्वीकार कर दिया। पुरूष द्वारा पत्नी के रूप मे स्वतत्रता न देने के कारण स्वतत्रता प्रेमी नारियो ने विवाह करने से अस्वीकार कर दिया। फलत अविवाहित रहने के कारण जीविकोपार्जन की आवश्यकता पडी और वे नौकरी की खोज मे बाहर निकली। पुरूषो के समान नौकरी के अधिक अवसर न उपलब्ध होने के कारण उन्हे कम वेतन पर काम करना पडा। इसलिए अन्याय के खिलाफ आत्मसम्मान की भावना जगी। और यह बात स्पष्ट हो गयी कि जब तक नारी को वैधानिक दृष्टि से पुरूष के समान नही समझा जाएगा तब तक वह समाज मे स्वतत्र नही हो सकती। नारीयो ने एक जुट होकर सघर्ष किया और वगावत पर उतर आयी। अत काफी प्रयासो के बाद 1848 मे अमरीकी नारी को सवैधानिक तरीके से परिवार की सम्पत्ति मे हिस्सा मिला। यह उसकी पहली जीत थी। उदारवादी वुद्दि जीवियो तथा समाज सुध ारको के प्रयासो के बाद 1887 मे ब्रिटिश नारी को भी परिवार की सपत्ति मे अधिकार मिला। तत्पश्चात् 1918 मे आशिक मत का अधिकार तथा 1928 मे वयस्क – मताधिकार भी मिला। जब कि 1920 मे अमेरिकी नारी को वयस्क – मताधिकार दिया गया।

19वी शताब्दी तक आते–आते अमेरिका एव ब्रिटेन मे नारी के लिए समान अधि ाकार की मॉग प्रमुख राजनीतिक प्रश्न बनकर उभरने लगी। शिक्षा, कानून, राजनीति आदि अनेक क्षेत्रो मे आदोलन सा छिड गया। "महिलाओं के लिये मतदान के अधिकार ने जन आदोलन का रूप ले लिया। इस प्रकार नारी की स्थिति मे सुखद परिवर्तन आया। वह सामाजिक, राजनीतिक एव धार्मिक दृष्टिकोण से उपेक्षणीय न रह सकी और रचनात्मक कार्यक्रमो मे भी भाग लेने लगी। निर्माण के दायित्व को उसी रूप मे ग्रहण करने लगी जिस रूप मे पुरूष वर्ग करता है।" [52]स्त्रियो ने अपने कृतित्व से प्राचीन धारणाओ को निर्मूल कर दिया–"*स्त्रियो के स्वभाव के बारे मे जो कुछ कहा जाता है वह एकदम बनावटी और गलत है, और जो कुछ कमी है वह बलात दमन या फिर कुछ क्षेत्रो मे अप्राकृतिक प्रोत्साहन का परिणाम।*" [53] समाज सुधारको के प्रयासो के कारण 1930 के दशक तक दुनियॉ भर मे

नारी वादी आदोलनो ने अपनी जड जमा लिया। अब नारी मुडकर देखने के लिए तैयार नही थी। उसे निरन्तर सफलता की ओर बढने का मार्ग मिल चुका था। क्योंकि वह यह बात समझ चुकी थी कि *"स्त्री पैदा नही होती बनायी जाती है।"* [54]

पाश्चात्य बुद्धि जीवियो एव समाज सुधारको के सद्प्रयास से पाश्चात्य नारी जगत् ही नही बल्कि विश्व–समुदाय की नारी भी प्रभावित हुयी। मार्क्स, एगेल्स, जान स्टुअर्ट मिल, सीमोन द बोउवार आदि ने नारी के भीतर स्वतत्रता की ललक पैदा की । किन्तु स्वतत्रता के नाम पर जहॉ नारी ने आर्थिक – स्वतत्रता प्राप्त की, वही उसने उन्मुक्त जीवन शैली को बढावा दिया। फलत अविवाहित मातृत्व, विवाहेत्तर सम्बध, तलाक, भ्रूण हत्या जैसे नकारात्मक – पक्षो को प्रोत्साहन मिला। भारतीय नारी इसे शीघ्रता के साथ ग्रहण नही कर पायी, किन्तु क्रमश उसने भी भारतीय – सस्कृति को नकार कर उन्मुक्त जीवन शैली को अगीकार कर लिया। तत्कालीन समय मे नारी नकारात्मक एव सकारात्मक दोनो पक्षो के बीच पिसती नजर आ रही है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 पुराकल्पे तु नारीणा मौञ्जी बन्धनामिष्यते।

अध्ययन च वेदाना सावित्री वाचन तथा।। गौतम स्मृति *

2 मनु स्मृति, कुल्लूटीका, सपा0–वासुदेव शर्मा,

3 स्वीकारोति यद वेद चरेद् वेद व्रतानिव।

ब्रह्मचारी भवे तावद् उर्ध्व स्त्रातोगृही भवेत्।। दक्ष स्मृति 1 711

ब्रह्म वेदस्तदध्ययनार्थ व्रत तदपि ब्रह्म, तच्चरतीति ब्रह्मचारी

काशिका 8 03 86

4 ते पाणौमुष्टि मध्ये गोप्य वस्तु वर्तत एतद् (देहि) तत।

सोमोऽपि प्रीत्यतिशयेन तस्यैत्रीन वेदान् प्रददो ।। तैत्तिरीय, 2 3 10

5 तयोर्ह मैत्रयी ब्रह्मवादिनी बभूव।

6 उपेत्याधीयतेऽस्या उपाध्याया। महाभाष्य

7 आचार्यस्य स्त्री आचार्यानी पुयोग

इत्येव आचार्या स्वय व्याख्यात्री –सिद्वात कौमुदी

8 यूने युवतयो नमन्त 10 30 6,

जार न कन्यानूषत 9 56 3

युवनेव कन्याना 8 35 5

मित्र न योषणा 5 52 14

जारो न योषणा 9 101 14

9 द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्धेन पुरूषोऽभवत्।

अर्धेन नारी तस्या सविराजमसृजत्प्रभु. ।। वृह 1 4 3, मनु 9 32

10 पुरूषो जाया कृत्वा कृत्स्त्रत रमिवात्मान मन्यते। ऐतरेय ब्राह्मण.1 25

11 यदेत ह्रदय तव तदस्तु ह्रदय मम।

यदेव ह्रयम मम तदस्तु ह्रदयं तव ।। सामविधान ब्राह्मण 1 3.9

12 भार्या पत्युर्व्रत कुर्याद् भार्यायाश्च पतिव्रतम्। निर्णयामृत

13 सखा ह जाया। ऐतरेय ब्राह्मण, 8 3 13

14 साम्रज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञीश्रुश्वा भव ।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु ।। ऋग्वेद, दशम् मण्डल, 92 14

15 सुमङ्गलीरिय वधूरिमा समेत पश्चत।

सौभाग्यमस्यै दत्वा यायास्त विपरेतन ।।

16 यथैवात्मा तथा पुत्र पुत्रेण दुहिता समा।

तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्या कथमन्यो धनहरेत्।। मनु, 10 2 6

17 पुत्राभावे तु दुहिता तुल्यसन्तान कारणात्। नारदस्मृति 16 13 **

18 दायभाग, वृहस्पति ***

19 मनुस्मृति, 17 2 7

20 मनुस्मृति, 14 21 43

याज्ञवल्क्य स्मृति, 1 85 861

वृहदारण्यकोपनिषद, 6 59 *

बौधायन, 2 50 52

विष्णु पुराण, 25 12 13

21 महाभारत, अनुशासन पर्व– 87 10

22 एका शताधिका बाला भविष्यति कनीयसी।

ततौ दौहित्रजाल्लोका दबाह्योऽसौ पतिर्मम ।।

महाभारत आदिपर्व, 115,11–131/2

---

* भारतीय सस्कृति – राम जी उपाध्याय, पृ0 30
** भारतीय सस्कृति – राम जी उपाध्याय, पृ0 44
*** भारतीय संस्कृति – वृहस्पति, पृ0 35

23 प्रसादाच्चैव तस्मात् ते स्वयम्भुविहिताद् भुवि।

कन्या तेजस्विनी सौम्य क्षिप्रमेव भविष्यति ।। महाभारत वनपर्व, 9 3 11

24 महाभारत शल्यपर्व, 56 14 16

25 महाभारत आदिपर्व, 76 15 16

26 यास्या लोका प्रसूतिश्च स्थिता नित्यमथोसुखम्।

अपापा तामह बाला कथमुत्स्त्रष्टुमुत्सेह।। महाभारत आदिपर्व, 156 35–38

27 महाभारत अनुशासन पर्व, 45 14

28 साह तस्मिन् कुले जाता भर्तर्यसति मद्विधे।

बिनीता मोक्षधर्मसु चराम्येका मुनिव्रतम्।। महाभारत शातिपर्व, 32 186

29 पुत्रि प्रदान कालस्ते न च कश्चिद् वृणोति माम्।

स्वयमन्विच्छ भर्तार गुणै सदृशमात्मन ।।महाभारत वनपर्व, 293,32–33

30 महाभारत आदिपर्व, 98 3

31 महाभारत आदिपर्व, 98 17

32 दम्पत्यो समशीलत्व धर्म स्याद् गृहमेधिन ।

महाभारत अनुशासन पर्व, 146,49

33 महाभारत आदिपर्व, 266 26–31

34 महाभारत . उद्योगपर्व, 129 2

35 प्राचीन भारत का इतिहास तथा सस्कृति –कृष्ण चद्र श्रीवास्तव

36 कल्याण नारी अक, पृ0 598

37 कल्याण नारी अक, पृ0 651

38 यग इण्डिया– 15 दिसम्बर, 1921 । महात्मा गॉधी

39 इण्डियन वूमैन्स वैटल फॉर फ्रीडम–पृ0 107 । कमला देवी चट्टोपाध्याय

40 इण्डियन वूमैन्स वैटल फॉर फ्रीडम–पृ0 107 । कमला देवी चट्टोपाध्याय

41 इण्डियन वूमैन्स वैटल फॉर फ्रीडम–पृ0 109–110 ।कमला देवी चट्टोपाध्याय

42 वूमैन एण्ड सोशल चेज इन इडिया* –पृ0150 । जॉन मैटसन एवटेट

43 इण्डियन वूमैन**– पृ0 202 हसा मेहता

44 वूमैन एण्ड सोशल चेज इन इण्डिया**–पृ0 172 । जॉन मैटसन एवरेट

45 इण्डियन वूमैन**– पृ0 202 । हसा मेहता

46 वूमैन एण्ड इक्वालिटी**–पृ0 25 । चेफ

47 मार्क्स एगल्स सकलित रचनाए♣, भाग–तीन, 226–227

48 विन्डीकेशन आफ दी राइट्स ऑफ वूमैन♣ मेरी वालस्टान

49 विन्डीकेशन आफ दी राइट्स ऑफ वूमैन♣ मेरी वालस्टान

50 women in political Theory♣D cole

51 "Appeal of one half of the human race.Women, against prefeusions of the other half Men to retain them in political & hence civil and domestic slavery " ♣

52 हिन्दी उपन्यासो मे नायिका की परिकल्पना––पृ015 । सुरेश सिन्हा

53 ऑन द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन – जॉन स्टुअर्ट मिल

54 स्त्री उपेक्षिता –पृ0 180 सीमोन द बोउवार

सभार – नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी, पृ0 16

♣ भारतीय संस्कृति – राम जी उपाध्याय, पृ0 48–50
* नारी प्रश्न– सरला माहेश्वरी, पृ0 10
** संभार नारी प्रश्न – सरला माहेश्वरी, पृ0 14
✯ नारी प्रश्न– सरला माहेश्वरी, पृ0 –10
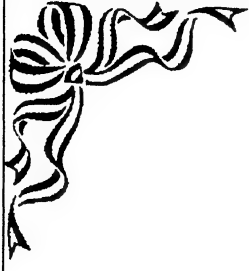
तृतीय अध्याय

(क)हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी जीवन की
एक रूपरेखा : १८८२-१९१७

(ख)हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य:
१९१७-१९३६

(ग)हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य :
१९३६-१९८०
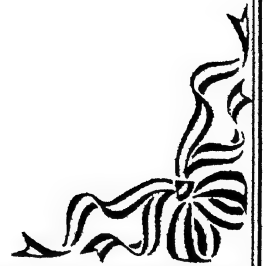
हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी जीवन की एक रूपरेखा

1882-1917

उन्नीसवी शताव्दी के अत और वीसवी शताव्दी के प्रारभ मे समाज-सुधारको द्वारा नारी की दयनीय स्थिति मे सुधार लाने के लिए अथक प्रयास किये गये। इन लोगो ने रुढियो से ग्रस्त नारी को एक नया मार्ग दिखाया। किन्तु समाज मे समाज-सुधारको के साथ ही रुढिवादी परम्परा-पोषक लाग भी रहते है। यही कारण है कि तत्कालीन उपन्यास-साहित्य पर उदारवादी-विचारधारा का प्रभाव अत्यल्प दिखायी पडता है। जवकि रुढिवादी उपन्यासकार छाए हुए है। *इस समय के उपन्यासो मे नारी के चले आ रहे सनातन रूप को ही प्रतिष्ठित किया गया। उपन्यासकारो ने नारी के वाह्य रूपो-मा भगिनी, प्रेयसी, पत्नी आदि को तो रेखाकित किया पर उसके आतरिक पक्ष अर्थात् ह्दय मे स्पदित होने वाले अनन्त भावावेगो को उकेरने मे असफल रहे।* सच कहा जाय तो इन्होने नारी के मनोभावो को समझने का प्रयास ही नही किया। पुरुष प्रधान मानसिकता वाले समाज के कारण नारी परतत्र ही रही फलत अलग से उसके व्यक्तित्व का निर्माण ही नही हो पाया। पुरुषवर्ग किसी भी नियम का तोड-मरोड कर अपने पक्ष मे करने के लिए स्वतत्र रहा जबकि नारी गलित-परम्परा का विरोध करने मे भी साहस का परिचय नही दे सकी। उसके उचित प्रतिवाद को भी, पुरुष समाज द्वारा ही वैधता या अवैधता का प्रमाण-पत्र दिया जाता रहा।

इस युग का साहित्य प्राचीनता की परिधि का अतिक्रमण करने की अपेक्षा उसका परिसीमन करता है। सर्वत्र विधवा विवाह का निषेध, सतीप्रथा एव विधवा जीवन को प्रोत्साहन, बहुपत्नी परपरा का पोषण दिखायी पडता है। एक ओर समाज वेश्याओ को तिरस्कृत करता है तो दूसरी आर अपनी अपनी दमित वासना की पूर्ति के लिए वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित भी करता है। किसी न किसी रूप मे समाज-सुधारको के सद्कृत्यो से समाज प्रभावित हुआ किन्तु यह भी एक तथ्य है कि तत्कालीन उपन्यासकार इनके विचारो से अप्रभावित रहे -कम से कम साहित्य-सृजन के स्तर पर अवश्य ही। इस बात से भी अस्वीकार नही किया जा सकता कि परम्परा-पोषण के भी अपने कारण हो सकते है क्योकि कोई परम्परा अचानक समाप्त नही होती और न ही नयी परम्परा का आरभ अकस्मात सभव होता है। इन दोनो स्थितियो के आगमन के लिए क्रमश परिवर्तन की स्थिति समाज

मे पैदा होती है तभी एक नवीन परम्परा की नीव पडती है।

इस युग के उपन्यासकारो मे साहस का अभाव परिलक्षित होता है, क्योकि कोई भी समाज अकस्मात नारी के मूल्यो मे आए परिवर्तन को सहजता के साथ स्वीकार करने के लिए तैयार नही हो पाता फलत समाज दो भागो मे विभक्त हो गया-एकपक्ष परिवर्तन का पक्षधर था तो दूसरा परम्परा को यथावत् बनाये रखने के लिये सकल्पबद्ध। चूकि दूसरा पक्ष अपनी सख्या वहुलता के साथ आक्रामक प्रवृत्ति का था, अत उपन्यासकार अपनी लेखनी के माध्यम से साहस के साथ उनका विरोध करने की अपेक्षा अपनी रोजी-रोटी को बनाये रखने के लिए समझौतावादी बन गये। जीविकोपार्जन के लिए यह उनकी मजवूरी हो सकती है। किन्तु इससे वे सनातन परम्परा का पोषण करने की वजाय समाज को कुछ भी नया नही दे पाये और समाज मे नारी उत्थान के अवरोधक के रूप मे उभरे। इस समय एक तरफ समाज-सुधारक सती-प्रथा का अत एव विधवा-विवाह को कानूनी एव सामाजिक मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्नशील थे तो दूसरी तरफ उपन्यासकार तथा रुढिवादी-जन, सती प्रथा को बनाए रखने और विधवा विवाह का विरोध करने के लिए सकल्प वद्ध थे। और अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए अनेक तरह की कहानियॅा बना रहे थे।

'मेहता लज्जाराम शर्मा' कृत उपन्यास ''आदर्श हिन्दू'' मे एक वृद्धनारी अपने पति की मृत्यु को सह नही पाती और उसके वियोग मे प्राणात कर देती है। लेखक ने उसे सती का दर्जा देते हुए उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है -*''लोग कहा करते है कि उसकी समझ मोटी है, परन्तु आज उसने दिखला दिया कि पढी-लिखी औरतो से वह हजार दर्जो अच्छी निकली। दोनो की बैकुण्ठिया साथ निकली, दोनो एक ही चिता पर जलाये गये वास्तव मे ऐसे लोगो का जन्म सार्थक है - भारत मे ऐसे सज्जनो की आवश्यकता है । ''* [1]

''ठेठ हिन्दी का ठाठ" मे 'देवबाला' और 'देवनदन' एक-दूसरे से प्यार करते है किन्तु सामाजिक रुढिवादिता के कारण उसका विवाह एक व्याभिचारी व्यक्ति रमानाथ से कर दिया जाता है। जिसके कारण उसका जीवन नारकीय हो जाता है और वह अन्तत घुटन भरी जिदगी जीती हुई अपनी इहलीला समाप्त करने पर विवश हो जाती है। परस्त्री से सम्पर्क रखने वाला रमानाथ अपनी

विवाहिता पत्नी के मनोभावो को समझ नही पाता और अपनी जिदगी अपनी इच्छानुसार व्यतीत करता है। जवकि देववाला प्रेम मे टूटकर विखर जाती है, और पति से उपेक्षित होकर समय से पहले ही दम तोड देती है। [2]

'प0 किशोरी लाल शर्मा' कृत उपन्यास ''कनक कुसुम वा मस्तानी" मे बहुविवाह का समर्थन किया गया है। नायिका 'काशीवाई' अपने पति 'वाजीराव' का विवाह 'मस्तानी' के साथ सम्पन्न करवाने के लिए सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर देती है। वह असमजस की स्थिति मे पडे हुए अपने पति को तनाव मुक्त करते हुए विचार इस प्रकार व्यक्त करती है -*''लीजिये अब व्यर्थ के सोच-विचारो को छोडिये और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस गुणवती देवी समान सुशीला यवनकुल वाला को ग्रहण कीजिये।''* [3]

''सुशीला विधवा" उपन्यास मे, लेखक ने नारी के विषय मे मनुवादी परम्परा का पोषण करते हुए अपनी नायिका को सनातन मूल्यो की पोषिका के रूप मे चित्रित किया है - *''वह कभी किसी पुरुष के समक्ष बात नही करती थी   वह सदा सवको यही उपदेश दिया करती थी कि स्त्रियो को बचपन मे माता-पिता के वश मे रहना चाहिये, विवाह होने पर पति की दासी होकर उसकी आज्ञा के बिना कोई काम न करना चाहिये और दुर्भाग्य से पति न रहे तो पुत्र या भाई को बडा मानकर उसके कथन के अनुसार चलना चाहिये।''* [4] यानि नारी को प्रत्येक वय मे किसी न किसी रूप मे पुरुष के अधीनस्थ रहकर अपनी जिदगी व्यतीत कर देनी चाहिए।

''पुर्नजन्म वा सैतिया डाह'' के नायक 'सज्जन सिह' और 'सुन्दरी', पूर्व-जन्म मे एक-दूसरे से प्रेम करते थे और इस जन्म मे भी उन्हे अपने पूर्व सबधो की स्मृति बनी रहती है। अत इस जन्म मे भी वे एक-दूसरे के प्रति अनुरक्त रहते है। सज्जनसिह के विवाह के प्रसग को जानने के बाद भी सुन्दरी किसी अन्य पुरुष से विवाह करने के लिए तैयार नही होती है क्योकि वह इस जन्म मे भी सज्जन सिह से ही पुन विवाह करने की इच्छुक है। सज्जनसिह की पत्नी दोनो के सवधो से भिज्ञ होने के बाद सुन्दरी के प्रति ईर्ष्या भाव से भर उठती है फिर भी पति की प्रसन्नता के लिए सौत लाने को तैयार हो जाती है और अपने पत्नी धर्म को व्यक्त करते हुए धर्मशास्त्र की दुहाई देती है - *''धर्मशास्त्र*

मे स्त्री के लिए केवल एक ही विवाह का विधान है पर पुरुष असख्य विवाह कर सकता हैं। अतएव अव मैने यह वात जानी कि तुम दोनो निष्कलक हो, तव मुझे क्या उज्र हो सकता था कि मै तुम्हारे सुख मे व्यर्थ कॉटे बोती। सुनो तो प्यारे। क्या वहिन-वहिन दो सौतने कभी आपस मे मिलकर नही रही है। '[5]

प्रियवदा के माध्यम से लेखक ने विधवा विवाह पर अपनी मन स्थिति व्यक्त करते हुए इन शव्दो मे लिखा है - *''जो हिन्दू, समाज मे विधवा विवाह अथवा तलाक का प्रचार करना चाहते है। वे दपति के प्रेम पर जन्म-जन्मान्तर के साथ पर वज्र मारना चाहते है।*[6]

''लक्ष्मी देवी'' उपन्यास मे, पर्दाप्रथा की नवीन व्याख्या एव उसकी उपयोगिता को अकित करते हुए इस प्रकार लिखा गया है -''पर्दे का यथार्थ मतलब तो यही है कि जहॉ तक सभव हो न तो सूरत दिखायी जॉये और न आवाज सुनाई जाये और इसी प्रकार यथासभव न पर पुरुष का मुख देखा जाय न शव्द सुना जाय। ''[7]

इसी प्रकार एक उपन्यास मे नारी को मृत पति के नाम पर आजीवन अकेले रहने का उपदेश देते हुए विधवा की प्रशसा मे लेखक ने लिखा है - *''धन्य सुशीला। तु धन्य है। तेरे माता-पिता धन्य है, जिन्होने तुझे ऐसे सॉचे मे ढाला।* सुशीला वास्तव मे सुशीला निकली। उसने धोरतम कष्ट सहने पर भी ससार को दिखादिया कि सनातम धर्म के तत्वो पर विचार किये बिना जो लोग विधवाओ को खसम करने की सलाह देते है, वह झक मारते है। सुशीला का चरित्र आजकल के विधवाओ के लिए नकल करने का नमूना है। जो विधवा सुशीला के चरित्र के अनुसार चलेगी वह कभी दु ख नही पायेगी। सदा ही उसकी कीर्ति होगी, ईश्वर उससे प्रसन्न होगा और अत मे उसका विधवापन से सदा के लिए छुटकारा होकर परलोक मे अपनी पति को पायेगी और फिर कभी उससे वियोग न होगा। '' [8]

''अगूॅठी का नगीना'' की नायिका इस जन्म के साथ ही साथ अगले जन्म मे भी अपने पति की दासी बनने की आभिलाषा करती है। पति के सुखमय जीवन की खातिर वह उन्हे दूसरा विवाह करने के लिए अपनी सौगध देती है। उसकी धारणा है कि विवाह के बाद पति का जीवन सुख

से व्यतीत होगा जिसके कारण वह भी परलोक मे सुख का बोध कर सकेगी। अपनी इसी भावना को अभिव्यक्ति देती हुयी वह कहती है-*''आज मेरे लिये बडे ही आनन्द का दिन है कि तुम्हारे चरणो का दर्शन करके मरती हूँ। अब तुम मुझे ऐसी शिक्षा दो जिससे दूसरे जन्म मे तुम्हारी चरण-सेवा अधिकारिणी होकर चिटकाल तक इन चरणो मे स्थान पाऊँ और तुम्हे सच्चे जी से शपथ दिलाकर कहती हूँ कि तुम दूसरा विवाह करके अवश्य सुखी होना, यदि ऐसा तुम करोगे तो तुम्हारा सुख देखकर मै परलोक मे सुख पाउँगी।''* [9]

नारी के कई रूपो मे उसका एक विकृत रूप वेश्या का भी है। जिसके मूल मे समाज के अनेक वर्बर कारण होते है -अनमेल विवाह, विधवा जीवन, सामाजिक उपेक्षा, अर्थाभाव आदि। इस युग के अधिकाश उपन्यासकारो ने वेश्याओ के प्रति उदारता पूर्ण व्यवहार की अपेक्षा अनुदारता पूर्ण विचारधारा को प्रोत्साहन दिया है। उनके लिए वेश्याए समाज के मनोरजन का साधन मात्र है यही कारण है कि समाज मे उनके प्रति घृणा पैदा करने एव उन्हे अपमानित करने का प्रयास किया गया है।

उपन्यास कार प0 लज्जाराम शर्मा - एक तरफ समाज के मनोरजन के लिए वेश्याओ की उपस्थिति को अनिवार्य मानते है दूसरी ओर इनके प्रति घृणा भी प्रकट करते है। इस प्रकार वे एक साथ दो-दो विचारधाराओ का वहन करते हुए पुरुष प्रधान समाज की कुत्सित मनोवृत्ति का परिचय देते है -''वेशक रडियॉ समाज मे एक बला है- परन्तु इससे आप यह न समझ लीजिये कि ये समाज से निकाल देने लायक है, फिजूल है और इन्हे बद कर देना चाहिए, नही, इनकी भी समाज के लिए दो कारणो से आवश्यकता है, एक यह कि जब गाने बजाने और नाचने का पेशा करने वाले हमारी सोसाइटी मे न रहेगी तब कुल-वधूएँ इस काम को ग्रहण करेगी। और दूसरे जैसे बडे नगरो मे सडक के निकट जगह-जगह पनाले बने हुए है यदि न बनाये जायँ तो चित्तवृत्ति को शरीर के विकार को न रोक सकने पर लोग बाजार और गलियो को खराब कर डाले उसी तरह *यदि वेश्याएँ हमारे समाज से उठाली जायँ तो घर की बहू-बेटियॉ बिगडेगी।* ''[10]। कितना हास्यास्पद है समाज के बुद्धि जीवी वर्ग से सम्बद्ध उपन्यासकार का उपरोक्त विचार। समाज मे सफाई रखने के लिए वेश्याओं को

आवश्यक भी मानते है और उनके प्रति कुत्सित विचार भी रखते है। *''यानी गुड खाय गुलगुला से परहेज। ''*

'हरिऔध' ने ''अधखिला फूल'' उपन्यास के माध्यम से नारी के प्रति समाज के परिवर्तित मूल्यो का क्षणिक सकेत अवश्य दिया है। यद्यपि यह कोई सार्थक पहल नही है फिर भी एक सार्थक दिशा सकेत अवश्य है। इसमे विधवा नारी के लिए ''विधवा आश्रम'' खोलने की वात कही गयी है किन्तु विना किसी निष्कर्ष पर पहुँचे ही उस प्रकरण का पटा क्षेप कर दिया गया है।[11]

चूकि उस समय नारी के समस्त रूपो मे रूप विधवा के रूप को नारी-जीवन का अभिशाप समझा जाता था अत तत्कालीन उपन्यासकारो ने उसे अपने उपन्यास के केन्द्र बिन्दु मे रखकर उसके माध्यम से अपनी सनातनी बिचार धारा को समाज के सामने अभिव्यक्ति प्रदान किया। ताकि लोग उनके विचारामृत से लाभान्वित हो सके। आश्चर्य की बात यह है कि *इन लेखको ने अपने विचारो को थोपते समय एक बार भी यह नही सोचा कि उनके आस-पास सिमटा नारी-समाज अब गलित मूल्यो के प्रति आग्रह खोता जा रहा है* और भारत की स्वतत्रता की तरह अपनी मुक्ति यानि रुढियो से छुटकारा पाने के लिए स्वय को तैयार कर रहा है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य
1917-1936

समाज सुधारको द्वारा किये गये प्रयासो के कारण भारतीय नारी की स्थिति मे सुधार होने लगा। यद्यपि गति धीमी थी, फिर भी नारी के सुनहरे भविष्य की रूपरेखा स्पष्ट होने लगी। अत सामाजिक परिवर्तन से साहित्य भी अछूता नही रह सका विशेषकर उपन्यास विधा इससे अधिक प्रभावित हुआ।

प्रेमचद पूर्व युग के हिन्दी उपन्यास अपने प्रारभिक काल मे होने के कारण अधिकाशत मोलिक न होकर अनुदित है। वे उपन्यास अग्रेजी, सस्कृत, उर्दू, बगला आदि भाषाओ से लिए गये। इनके अलावा जो मौलिक उपन्यास लिखे गये इनमे शिक्षा उपदेश, नीति, मनोरजन, जिज्ञासा आदि को ही स्थान मिला। इसलिए वे जीवन की अनन्त गहराइयो को स्पर्श करने से वाचित रह गये। देश परतत्रता की वेडियो मे जकडा हुआ था और समाज मे कुरीतिओ का बोलबाला था इन कुरितियो से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए भारतीय सपूत लगे हुए थे। अत 1917 के बाद उपन्यासकारो ने अपने समय की कुरीतियो एव विषमताओ को साहित्य सृजन का केन्द्र बिन्दु मानकर उपन्यासो का सृजन किया इस प्रकार - *औपन्यासिक कृतियो मे परिवर्तन का आरभ प्रेमचद के आगमन के साथ ही आरभ हुआ।* इसके पूर्व के उपन्यासकार केवल परम्परा पोषक ही बने रहे।

प्रेमचद ने उपन्यास विधा को कल्पना एव कोरी समाज-सुधार की भावना के स्थान पर क्रमश यथार्थ की ओर अग्रसर किया। इन उपन्यासो मे सस्ते मनोरजन की बजाय समस्याओ को रेखाकित किया जाने गला। उपन्यास सम्राट मुशी प्रेमचद ने कहा कि - *''हम साहित्य को मनोरजन और विलासिता की बस्तु नही समझते, बल्कि हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतारेगा जिसमे चितन हो, स्वाधीनता का प्रभाव हो, जो हममे गति, सघर्ष और वेचैनी पैदा करे सुलाये नही।*[12] उन्होने साहित्य के माध्यम से जनता के भीतर पैठी जड़ता को निर्मूल करने का प्रयास किया। जर्जर परम्पराओ के स्थान पर स्वस्थ एव आवश्यक परम्पराओं को प्रोत्साहित किया। इसके माध्यम से समाज मे प्रेमचद युगीन उपन्यास, कालान्तर की औपन्यासिक कृतियो के मध्य महत्वपूर्ण स्थान रखते

है। प्रत्येक स्तर पर वदलाव की भूमिका वनती है, सामतशाही टूटकर बिखरती है और पूजीवादी समाज की रुपरेखा बनती है। नये-नये यात्रिक मशीनो के आगमन के साथ ही गॉव के लोग रोजी-रोटी की खोज मे शहर की ओर पलायन करते है। सब परिवर्तनो को दर्शाने मे उपन्यास महती भूमिका अदा करते है। *इस प्रकार प्रेमचदयुगीन उपन्यास मनुष्यो के वाह्य-क्रियाकलापो के साथ-साथ उनके विचारो एव अनुभूतियो को भी प्रकट करते है।*

प्रेमचद कृत उपन्यास वरदान, प्रतिज्ञा, तथा प्रेमाश्रय की मूलकथा वस्तु, विधवाओ के जीवन पर ही आधारित है। प्रेमचद अपने प्रारभिक उपन्यासो मे आदर्श का पल्ला नही छोडते किन्तु अन्तत कोरे आदर्शवाद से उनका भी मोह भग हो ही जाता है। 'गोदान' की सोना एव मालती इसकी प्रमाण है।'गवन' की वेश्या जोहरा का हृदय जालपा के त्याग और देशभक्ति पूर्ण कार्यो को देखकर परिवर्तित हो जाता है अपने नारकीय जीवन के प्रति उसे वितृष्णा हो जाती है वह मर्यादित जीवन की चाह मे नायक से प्रेम करने लगती है।

'निर्मला' के पिता अपनी पुत्री का विवाह भुवन नामक लडके के साथ तय कर देते है किन्तु उनकी मृत्यु के बाद वह रिश्ता दहेज के कारण टूट जाता है। दहेज की विभीषिका के कारण निर्मला का विवाह पितृतुल्य तोताराम से होता है। भुवन की पत्नी को जब सारी बात पता चलती है तो वह दहेज प्रथा का विरोध करते हुए अपने पति को धिक्कारती है ''मगर यह वर का धर्म है कि यदि वह स्वार्थ के हाथो बिल्कुल बिक नही गया है तो अपने आत्मबल का परिचय दे अगर वह ऐसा नही करता तो कहूँगी कि वह लोभी है और कायर भी।''[13] इस प्रकार सुधा एक बदलते हुए मूल्यो वाली पत्नी है जो पति द्वारा किये गये बुरे कृत्य का विरोध करती है और समाज मे व्याप्त दहेज प्रथा की भर्त्सना करने से नही चुकती।

हिन्दी उपन्यासो मे ''गोदान'' प्रत्येक दृष्टि से अपना एक अलग महत्व रखता है। इसमे समाज की कई ज्वलत समस्याए उठायी गयी है और उनमे भविष्यागत सभावनाओ के बीज भी समावेशित किये गए है। अभी तक समाज मे नारी शिक्षा का विशेष महत्व स्थापित नही हो पाया था इसीलिए रुढिवादियो द्वारा शिक्षा को भारतीय संस्कृति के लिए पतन का कारण माना जा रहा था

क्योकि वह जानते थे कि शिक्षित होने के वाद नारी अच्छे-बुरे का निर्णय लेने मे समर्थ हो जाएगी। नारी की निर्णयात्मक क्षमता पुरुष प्रधान समाज के लिए असहनीय था। 'गोदान' की मालती मे अनेक विरोधाभास परिलक्षित होते है। वे अपने आधुनिक विचारो के कारण पुरुष के लिए आश्चर्य एव उपहास का पात्र है तो दूसरी ओर श्रद्धा एव प्रेम की मूर्ति है। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि प्रेमचद आधुनिक शिक्षा से सम्पन्न युवती को भी नारीत्व एव मातृत्व के गुणो से परिपूर्ण कर प्रस्तुत करते है और समाज को यह सुअवसर देते है कि वह मिसमालती की आन्तिक विशेषताओं को देखे। पुरुष वर्ग उसके विषय मे कहता है ''वह जो है मालती बहत्तर घाट का पानी पीकर भी मिस बनी है, तितली सी चचल, लुभाने और रिझाने की कला मे निपुण। - 'वही गोबर के बीमार वच्चे मगल की देख भाल मे तत्पर मालती को देखकर, मेहता की अनुभूति इस प्रकार व्यक्त किया गया है- *''मेहता की ऑखे सजल हो गई। मन मे ऐसा पुलक उठा कि अन्दर जाकर मालती के चरणो को हृदय से लगाले''* '[14] अन्तत मेहता द्वारा प्रणय याचना और विवाह की बात पर मालती का आधुनिक दृष्टिकोण सामने आता है - *''नही मेहता, मै महीनो से इस प्रश्न पर विचार कर रही हूँ और अत मे मैने तय किया कि मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कही बेहतर है।* '[15] इस प्रकार यह उपन्यास मिस मालती के माध्यम से समाज को स्पष्टत सकेत देता है कि नारी के मूल्य बदल रहे है वह नारी सवधो की उपयोगिता और अनुपयोगिता का मूल्याकन अपनी दृष्टि से करेगी। अब वह परम्परागत सबधो को सहजता से स्वीकार करने की अपेक्षा पहले उस पर आत्ममथन करेगी तब कोई निर्णय लेगी। इस प्रकार यह उपन्यास नारी पुरुष सबधो को नये रूप मे प्रस्तुत करने के कारण आने वाले युग के लिए मील का पत्थर बन गया।

जैनेन्द्र प्रथम उपन्यास कार है जो किसी भी समस्या को सामाजिक आधार पर नही बल्कि वैयक्तिक आधार पर प्रस्तुत करते है। 'परख' मे उन्होने अपने समय के उपन्यासकारो से नितात भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। बाल विधवा 'कट्टो' किशोरावस्था आने पर अपने मास्टर जी से प्रेम करने लगती है किन्तु उनके विश्वास घात के कारण वह टूट जाती है। और उसे प्रथम बार इस सच्चाई का बोध होता है कि वह विधवा हो गयी है। उपन्यास मे विशेष बात यह है कि नायिका

अपने विधवा पन का बोध वैयक्तिक आधार पर करती है न कि समाज की जड परम्पराओ के कारण। पुन वह विहारी के सम्पर्क मे आती है और दोनो दाम्पत्य-जीवन मे बँध जाते है। कट्टो अपने वैधव्य तथा विवाह दोनो की प्रतिज्ञा को स्पष्ट करके कहती है - *''हम दोनो वैधव्य यज्ञ की प्रतिज्ञा मे एक दूसरे का हाथ लेकर आजन्म वधते है। हम एक होगे एक प्राण दो वदन।*[16] विहारी भी उसके वाक्याश को शव्दश दुहराता है। इस प्रकार जैनेन्द्र विधवा कट्टो को नवीन जीवन प्रदान करते है किन्तु पुर्नविवाह को 'वैधव्य यज्ञ' का नाम देने से उनका तात्पर्य क्या है? यह नही समझ मे आता है। वह अपनी नायिकाओं के माधयम से नारी के बदलते मूल्यो का सकेत देना चाहते है किन्तु उनकी नायिकाओ के विचार इतने उलझे हुए होते है कि उनका कथन किसी निश्चित दृष्टि का सकेत नही दे पाता।

''धनिया'' आत्म सम्मान से परिपूर्ण नारी है, वह अपने अस्तित्व को समझती है और उसके साथ किसी भी कीमत पर समझौता नही करना चाहती। हीरा द्वारा मारने की धमकी सुनकर वह चुपचाप घर के भीतर नही चली जाती बल्कि नागिन की तरह फुफकार उठती है। धनिया जमीन पर बैठ गयी और आर्तस्वर मे बोली -'' अब तो इसके जूते खाके जाऊँगी। जरा इसकी मरदूमी देख लूँ, कहॉ है गोबर? अब किस दिन काम आएगा? तू देख रहा है बेटा, तेरी मॉ को जूते मारे जा रहे है?'' उसकी क्रोध भरी बात सुनकर हीरा घर के अन्दर जाने लगता है तो पुन वह क्रोधित सिहनी की भाति दहाड कर उठती है और उसे धक्का देकर गिरा देती है - *''कहॉ जाता है, जूते मार, मार जूते देखूँ तेरी मरदूमी।''*[17] धनिया आशीक्षित होकर भी अपने आत्मसम्मान के प्रति सावधान है वह चुप रहकर अपमानित होने को तैयार नही है बल्कि विरोध करती है। पति अपने सामर्थ्य का झूठा प्रदर्शन करने के कारण गलत काम करके धनोपार्जन करने लगता है और उपार्जित धन से पत्नी के लिए आभूषण आदि लाता है एकदिन पत्नी इस सच्चाई से अवगत हो जाती है तो वह महसूस करने लगती है और अपनी भावना को व्यक्त करते हुए पति से कहती है -''जब तुम्हारी आमदनी इतनी कम थी तो गहने लिये ही क्यो? मैने तो कभी जिद् न की थी और मान लो मै ही चार बार कहती तो तुम्हे समझ-बूझ कर काम करना चाहिए था. आदमी सारी दुनियॉ से पर्दा रखता है, लेकिन अपनी स्त्री से परदा नही

रखता। अगर मै जानती तुम्हारी आमदनी इतनी थोडी है तो मुझे क्या शौक चर्राया था कि मुहल्ले भर की स्त्रियो को तागेपर बैठा-वैठा कर सैर कराने ले जाती मै क्या जानती थी कि मुझसे छल कर रहे हो। *कोई वेश्या तो थी नही कि तुम्हे नोच- खसोट कर अपना घर भरना मेरा काम होता। मै तो भले-बुरे दोनो की साथिन हूँ।''*[18] सच है कि कोई भी स्वाभिमानी नारी यह नही वर्दाश्त कर पायेगी कि उसका पति गलत काम करके उसकी आवश्यकताओ की पूर्ति करे।

'गोविदी' सस्कारित धर्म-परायणा नारी है, ऊपर से सबको प्रसन्नवदन दिखने वाली यह नारी कुमार्गी पति के कारण भीतर से वहुत दु खी है। वह जानती है कि उसका पति आधुनिक बालाओं के प्रति आकर्षित है फिर भी वह अपने सस्कारो को ही प्रधानता देती है। उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है -''वाह्य आकर्षण क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न हो सकता है इसका उसने कभी विचार नही किया क्यो कि वह आतरिक सौन्दर्य की पक्षपातिनी है। *वह पुरुष का खिलौना नही, न उसके उपयोग की वस्तु फिर क्यो आकर्षक बनने की चेष्टा करे। अगर पुरुष उसका असली सौदर्य देखने के लिये ऑखे नही रखता तो वह उसका दुर्भाग्य है।''* [19]

यानि नारी सिर्फ पुरुष को लुभाने के लिए तितली बनने को तैयार नही है वह सिर्फ वाह्य आकर्षण के कारण पुरुष द्वारा सम्मानित नही होना चाहती बल्कि वह अपने सद्‌गुणो के कारण पूजित होने मे विश्वास रखती है यदि ऐसा सभव नही हो पाता है तो वह पुरुष की आकाक्षा के अनुरूप स्वय को बदलने को तैयार नही है।

'माधुरी' का पति उसका परित्याग कर अन्य नारी के साथ रहने लगता है तो उसकी असहाय स्थिति देखकर उसकी मा व्यथित हो उठती है। प्रथमेव वह परित्यक्ता वेटी को घर मे वही स्थान देती है जो विवाह पूर्व उसे प्राप्त था, वह पूरे घर की मालकिन बनकर रहती है। फिर भी, वेटी के भविष्य की अपने जीवन मे ही सुरक्षित कर देने की अभिलाषा के कारण 'श्याम दुलारी' ने अपनी सपत्ति को बेटी के नाम लिख देने का निर्णय ले लिया -*''मेरी बेटी का दु ख से भरा भविष्य है और उसके लिए मुझे कोई उपाय करना ही होगा। वह इस तरह रह सकेगी। मैने अपने नाम की जमीदारी माधुरी को देने का निश्चय कर लिया है।''* [20]

विवाह कर देने के वाद वेटी के सुख-दु ख के प्रति अपने दायित्व की इति मानने वाले अभिभावको के लिए यह प्रसग एक उदाहरण है इसकी प्रासागिकता जितनी अपने समय मे थी उतनी ही आज भी है। परिव्यक्ता बेटी के भविष्य को सुरक्षित करमे के लिए 'दुलारी' द्वारा उठाया गया यह कदम नारी के बदलते मूल्यो का ही परिणाम है कि वह विवाह के बाद भी अपनी वेटी के दु ख से विचलित ही जाती है और उसे कोसने की वजाय उसके प्रति ममत्व तथा कर्तव्यबोध से भर उठती है।

'भोला' ने अपनी गलतियो को छुपाते हुए सारा दोष एकमात्र 'नोहरी' पर ही डाल दिया, किन्तु 'धनिया' ने उसकी पत्नी नोहरी का बचाव पक्ष लेकर सचाई का उद्घाटन कर दिया। साथ ही पत्नी से ही सारी अपेक्षाए रखने वाले पुरुष वर्ग का भी उनके दायित्व के प्रति सतर्क किया। क्योकि धनिया जानती है कि भारतीय नारी एक सीमा तक कष्ट सहकर भी अपने पति का साथ नही छोडती बल्कि विषम स्थितियो मे भी अपने मधुर सबधो को यथावत् बनाये रखने का पूरा प्रयास करती है। बहुत मजबूर होकर ही वह पति के घर से पलायन करने की बात सोच पाती है - *" जब औरत को घर मे रखने का बूता न था, तो सगाई क्यो की थी? क्या सोचते थे वह आकर तुम्हारे पॉव दबायेगी, तुम्हे चिलम भर-भर पिलायेगी और जब तुम बीमार पडोगे तो तुम्हारी सेवा करेगी, तो ऐसा वही औरत कर सकती है जिसने तुम्हारे साथ जवानी का सुख उठाया हो।"* [21]

एक कडवा सच मह भी है कि अब नारी अपने बदलते मूल्यो के चलते सिर्फ अग्नि के सात फेरो के कारण किसी के साथ जिदगी गुजारने को तैयारी नही है बल्कि उसे भी अपने पति से कुछ अपेक्षाए रहती है उसकी भी अपनी कुछ आकाक्षाए है।

एक सीमा के बाद अहकार औरो के लिए तो कष्ट कर होता ही है स्वय अहकारी व्यक्ति का जीवन भी सकटमय हो जाता है। और व्यक्ति जब तक इसके परिणाम तक पहुँचता है तब तक बहुत विलम्ब हो चुका होता है। इसी के वशीभूत होकर कुमुद अपने आपको बहुत ऊँचा और दूसरो को नीचा समझती है। वह एक सम्पन्न घर की बेटी है और आधुनिक तौर तरीके से पालित्-पोषित् की गयी है जिसके कारण उनके नखरे भी बहुत है। अपने-आप से औरो को निम्न समझने की मानसिकता

के चलते वह विवाह के बाद ससुराल वालो के साथ समजस्य स्थापित नही कर पाती, यहॉ तक कि अपने पति को भी नही समझ पाती, वात-वात मे प्रतिस्पर्धात्मक व्यवहार अपनाती है। उसके स्वभाव का पता इस कथन से चल जाता है जहॉ वह कहती है - *''क्या देखकर वावू ने मेरा यहॉ विवाह किया। खाने का भी तो ठिकाना नही। लोगो ने मुझे कोई गॅवार घर की समझ रखा है। ग्रेजुएट नही हूँ तो क्या, अडरग्रेजुएट तो हूँ। उनसे किस वात मे कम हूँ। दो ही चार दर्जो का तो अन्तर है।* ''[22] प्रेमचद युग से ही नारी ने समझौतावादी दृष्टिकोण को नकार ना आरभ कर दिया था वह अपने अनुकूल जीवन की आकाक्षी रही न कि लोगो के अनुकूल स्वय को ढालने मे। उसने चले आ रहे नारी के सहनशील एव समझौतावादी गुणो की जगह प्रतिकूल मूल्यो को स्थापित करना आरभ कर दिया था।

'प्रसाद जी' उदार वादी दृष्टिकोण से सम्पन्न उपन्यासकार है इसलिए अपने समय से आगे की सोच रखते है। उन्होने आवश्यकतानुसार परम्परा पोषित रुढियो एव सामाजिक मान्यताओ को अस्वीकार कर दिया है। 'प्रेम' उनकी दृष्टि मे वरेण्य है अत वह दो प्रेम करने वाले प्रेमियो के मध्य दीवार बनने वालो का विरोध करते है और प्रेम की उदात्त परिणति विवाह मे मानते है। इसके सम्पादन के लिए वहकुल, धन-सपत्ति और प्रतिष्ठा को अस्वीकृति कर देने मे भी नही हिचकते। जमीदार 'इन्द्रदेव', 'तितली' के रूप पर मुग्ध हो उसके साथ विवाह करने के लिए प्रस्ताव भेजा है। किन्तु गुरु रामनाथ बिना भय के तितली एव मधुबन के बाल्यकाल से चले आ रहे प्रेम को महत्व देते हुए उनका विवाह सम्पन्न करा देते है। गुरुरामनाथ के माध्यम से इस तथ्य को प्रतिपादित किया गया है कि सच्चा प्रेम किसी जमीदार की इच्छा और उसके सम्मान का मुहताज नही होता बल्कि यह तो सिर्फ प्रेम के हाथो विकता है उसे धन से नही खरीदा जा सकता क्योकि वह कोई वस्तु नही है जिसका मूल्य लगाया जा सके वह एक भाव है। 'तितली' और 'मधुबन' के प्रेम-विवाह के माध्यम से समाज के ठेकेदारो को एक सदेश भी दे दिया गया है कि आज की युवापीढी के साथ ही पुराने लोगो मे भी मूल्यगत परिवर्तन की अपेक्षा है।[23]

इस समय अनमेल विवाह का प्रचलन जोरो पर था, नारी की भावनाओं का कोई मूल्य नही था, गाय की तरह उसे जहॉ इच्छा होती थी पुरुष रूपी खूॅटे से बॉध दिया जाता था और वह

मुँह वद किये घुटन भरी जिदगी जीती हुई एक दिन मर जाती थी। 'निर्मला' के माध्यम से दहेज एव अनमेल विवाह की बुराइयो पर समाज की दृष्टि केन्द्रित करने का प्रयास किया गया है। निर्मला कई वच्चो के पिता तोताराम के गले वॉध दी जाती है। प्रौढ तोताराम निर्मला की अल्पवयस्कता के सामने स्वय को कुठित महसूस करता है यही कारण है कि वह अपनी दुर्बलताओ को छिपाने के लिए उसके चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। उनकी सोच इस स्तर तक गिर जाती है की वे अपने वडे बेटे के साथ निर्मला का सबध जोड देते है। निर्मला किसी तरह अपनी अभिशापित जिदगी काटती है और सत्रास मे जीती हुई अतत मरणासन्न अवस्था को प्राप्त हो जाती है इस स्थिति मे वह अपनी भावनाए व्यक्त कर पति से प्रार्थना करती है और पति द्वारा अधिक उम्र मे किए गए विवाह के अनौचित्य पर अप्रत्यक्षत प्रश्न चिन्ह लगाती है - *'' बच्ची को आपकी गोदी मे छोडे जाती हूँ। अगर जीती जागती रहे तो किसी अच्छे कुल मे विवाह कर दीजिएगा - चाहे क्वारी रखिएगा, चाहे विष देकर मार डालिगा पर कुपात्र के गले मे गढिएगा, इतनी ही आपसे विनय है।''*[24] प्रेमचद ने निर्मला के मुख से उसकी व्यथा को कहलवा कर नारी को बोझ समझ कर कही भी फेक देने वाले समाज को अप्रत्यक्षत यह सुझाव दिया है कि वह सिर्फ हाडमास से निर्मित शरीर ही नही है बल्कि उसके भीतर भी पुरुष की तरह अनेक भावनाए तरगित होती रहती है इसलिए सडी-गली परम्परा के पालने हेतु उसकी बलि नही दी जानी चाहिए।

भारतीय समाज मे विधवा जीवन को बहुत कष्टप्रद माना गया है क्योकि पति के मरते ही समाज विधवा नारी को अभिशाप समझ लेता है। पुरुष बहुल समाज मे नारी का अपना कोई जीवन नही होता, वह सिर्फ मास का पिण्ड होती है पति ही उसमे स्पदन भरता है। अत उसकी मृत्यु के साथ ही वह भी मरी हुई मान ली जाती है। जबकि तथ्य यह है कि वह भी जीना चाहती है। उसमे भी स्पदन का सचालन होता है। 'वृन्दावन लाल' ने साहस का परिचय देते हुए 'सगम' उपन्यास की नायिका को पति के नाम पर जिदगी भर रोने के लिए नहीं छोडा है बल्कि उसकी भावनाओ का सम्मान करते हुए उसे भी जीने का मौलिक अधिकार प्रदान किया है। समाज की गलित रुढियो को अस्वीकार करके उसका पुर्नविवाह 'रामचरण' से करवा दिया है। इस प्रकार इस उपन्यास मे गलत परम्परा का विरोध

करके एक स्वस्थ मानवीय मूल्य की स्थापना का सद्प्रयास किया गया है जो सराहनीय होने के साथ ही नारी के वदलते मूल्यो के कारण अपेक्षित भी है।[25]

नारी के जीवन की धुरी उसके पति और बच्चो तक सीमित रहती है। न वह पति के बिना पूर्ण मानी जाती है और न ही सतान के बिना। क्योकि वाल्यकाल से ही समाज उसके मन मे इन दोनो के लिए ललक पैदा करने का प्रयास करता है वह बचपन से मिले विचारो का ही वह जीवन पर्यन्त पोषण करती रहती है। यही कारण है कि इन दोनो के बिना वह अपने जीवन को सार्थक हीन समझती है और इसी सार्थकता को पाने की तलाश मे वह कभी-कभी अपने चरित्र से भी समझौता करने को तैयार हो जाती है। 'ककाल उपन्यास की नायिका 'किशोरी' एक पति-परायण नारी है किन्तु सतान ही न होने के कारण वह दुखित रहती है अनेक उपायो के बाद भी जब उसे मातृत्व-लाभ नही मिल पाता। तो वह एक ब्रहमचारी के बहकावे मे आकर अपना चरित्र-अपनी एकनिष्ठता के साथ समझौता कर उसके प्रति समर्पित हो जाती है - ''अतीत की स्मृतियॉ, वर्तमान की कामनाऍ किशोरी को भुलावा देने लगी। माथे से पसीना बहने लगा। दुर्बल ह्दय किशोरी को चक्कर आने लगा। उसने ब्रह्मचारी के चौडे वक्षपर अपना सिर टिका दिया।''[26] नारी का इस प्रकार से चारित्रिक-स्खलन की ओर उन्मुख होना, इस बात का प्रमाण है कि समाज सतान विहीन नारी के प्रति कितना क्रूर है उसके लिए बध्या नारी कोई अस्तित्व नही रखती। यही कारण है कि वह अपनी उपेक्षाओ से धबरा कर अपनी अस्मिता से भी समझौता करने के लिए बाध्य हो जाती है।

नारी पति सयुक्त होने पर सौभाग्यशालिनी मानी जाती है और पति की मृत्यु के वाद उपेक्षा एव घृणा की पात्र। समाज ने विधवा नारी एव विधुर पुरुष के लिए दोहरे मापदण्ड क्यो वना रखे है? जबकि दोनो ही सहानुभूति के अधिकारी होते है। प्राय देखने मे आता है कि पत्नी की मृत्यु के बाद समाज को पुरुष के एकाकी जीवन के प्रति सहानुभूति हो जाती है और परिणामस्वरूप उसके पुर्वविवाह की तैयारी आरभ कर दी जाती है। जबकि पति के मरते ही नारी को उपेक्षित एव दुर्भाग्यशाली समझकर काल-कोठरी के हवाले कर दिया जाता है। किन्तु साहित्यकारो ने इस दोहरी मानसिकता का विरोध किया और पुरुष की तरह नारी के पुर्नविवाह को भी उचित माना है। प्रेमचद

ने नारी के अनेक स्वरूपो के साथ ही उसके वैधव्य रूप पर भी प्रकाश डाला है किन्तु अन्य उपन्यासकारो की भॉति वह इस समस्या का निदान पुर्नविवाह द्वारा प्रस्तुत नही कर पाते। वल्कि सामाजिक भय से वह इसका समाधान 'विधवा आश्रम' मे खोजते है। वह नारी के जीवन से विधवापन को समाप्त करने के लिए वैधब्य के कारणो का लेखा जोखा प्रस्तुत करते है पर समाज मे कोई नया मूल्य स्थापित नही कर पाते।

'प्रेमचद', 'वरदान' की विधवा 'निरजन' का पुर्नविवाह कराने की अपेक्षा अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न हुई उसकी दयनीय स्थिति पर समाज की दृष्टि केन्द्रित करना चाहते है, उसके जीवन को एक सार्थक दिशा देने का प्रयत्न नही करते [27]

इसी प्रकार 'प्रेमाश्रम' मे भी विधवा समस्या को उठाया गया है किन्तु इसके माध्यम से नारी के बदलते मूल्य का कोई सकेत नही मिलता। जबकि पाठक उनसे सार्थक परिवर्तन की अपेक्षा रखते है। किन्तु वह निष्कर्ष पाठको के स्वविवेक पर छोड कर कथा का समापन आदर्शात्मक तरीके से करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते है। [28] यद्यपि यह भी सच है कि प्रेमचद स्वभावत उदारवादी दृष्टिकोण रखते है वह विधवा नायिकाओ के प्रति पूर्ण सहानुभूति रखते है और उनका पूर्नविवाह भी चाहते है किन्तु सामाजिक दबाव के कारण वह इतना बडा दुस्साहस नही कर पाते। 'डॉ0 रामदरश' मिश्र के शब्दो मे कहा जा सकता है - *''वे उपन्यासो के अत मे समस्याओ का जो सुखद समाधान उपस्थित करते है वह पीडित मानवता के प्रति उनके मन की पीडा तथा उसका समाधान खोजने की आकुलता का परिचायक हो सकता है। किन्तु यथार्थ की दृष्टि से हल्का लगता है। यथार्थ का इतना गहरा चित्र उपस्थित करने के पश्चात् जब उपन्यासकार पात्रो के हृदयो की वदलकर सारी समस्याओ को एक कल्पनिक समाधान के आश्रय मे विठा देता है तो लगता है कि कुछ अवास्तविक हो गया है।''*[29]

'चित्रलेखा' के माध्यम से उपन्यासकार ने नारी के बदलते मूल्योकी ओर इगित किया है। वह पुरुष की दोहरी मानसिकता का प्रतिवाद करती है और किसी भी तरह से की गयी नारी की उपेक्षा को वह सहन नही करती। वह स्पष्ट कहती है कि नारी को द्वितीय ठहराने की जो चाल चली जा रही है वह प्रकृति-प्रदत्त हो कर पुरूष की अपनी दुर्बलताओं का दुष्परिणाम है। क्यो कि नारी सृष्टि

और विनाश दोनो का कारक है यह पुरुष पर निर्भर करता है कि वह उसके किस गुण से लाभान्वित होना चाहता है। नारी अपने आप मे पूर्ण है इसलिए उसमे अपूर्णता का कारण खोजना पुरुष की अपनी मानसिक विकृति का परिणाम है-''तुम समझते हो कि जो स्त्री तुम्हारे सामने खडी है वह अधकार है माया है। तुम्हे मेरे विकृत सिद्धान्तो से भय होता है, पर यह तुम्हारी धारणा निर्मूल है   और रही स्त्री के अधकार तथा माया होने की वात योगी, वहॉ तुम भी भूलते हो। स्त्री शक्ति है। वह सृष्टि है, यदि उसे सचालित करने वाला व्यक्ति योग्य है। वह विनाश है यदि उसे सचालित करने वाला व्यक्ति आयोग्य है इसलिए *जो मनुष्य स्त्री से भय खाता है वह या तो अयोग्य है या कायर है। अयोग्य और कायर दोनो ही व्यक्ति अपूर्ण है।* ''[30]

नारी अपनी गलतियो को वडी सहजता के साथ स्वीकार कर लेती है। वह पुरुष की तरह प्राय दुराग्रही नही होती। 'किशोरी' का अपने पति पर अपार प्रेम है किन्तु मातृत्व लोभ मे वह अपने पथ से विचलित हो जाती है और अपना चारित्रिक-पतन कर डालती है। जब उसे अपनी गलती का एहसास होता है तो वह ग्लनि से भर उठती है और पति-मिलन की इच्छा से ओत-प्रोत। अन्तत उसकी कामना पूरी होती है और उसका अपने पति से आमना-सामना होता है वह पश्चाताप करती है दोनो के मध्य हुए चूँकि वर्तालाप से उनके भावात्मक सबधो की गहराई का पता चलता है -''हम लोग क्या इतनी दूर है कि मिलन असभव है? असभव तो नही है नही तो मै आता कैसे? उसने दीनता से कहा -''तो अपराध क्षमा नही हो सकता।'' [31] इस प्रकार प्रसाद ने नारी के बदलते मूल्यो की ओर सकेत दिया है। किशोरी अपने पूर्व नायिकाओं की तरह विषपान नही करती न ही पति परमेश्वर की माला जपची हुई एकातिक जीवन व्यतीत करती है। बल्कि अपनी गलती को एक मानवीय दुर्बलता मानकर उसे दूर कर पुन दाम्पत्य सुख की अभिलाषा करती है। वह अपने जीवन से पलायन करने की अपेक्षा उसको जीना चाहती है। इस प्रकार वह अपनी प्रगतिशील विचारधारा के कारण घुटनभरी जिदगी जीने से वच जाती है।

इस समय तक नारी प्रेम की अनुभूति के विषय मे भी अपना दृष्टिकोण रखने लगी थी। चूंकि साहित्यकारो की दृष्टि मे नारी-पुरुष दोनो ही, प्रेम के सवध मे, बराबर के अधिकारी है। अत

नारी को भी अपने मूल्यो के आधार पर प्रेम करने की स्वतत्रता है - ''प्रेम भक्ति नही है इसलिए एक ओर से नही होता, प्रेमसबध। वह दोनो ओर से होता है। प्रेम आत्मा के पवित्र सबध को कहते है। प्रेम मे कपन होता है पिपासा होती है, आत्म-विस्मरण होता है। वहॉ तृप्ति का कोई स्थान नही है। *प्रेम मे आत्मबलिदान होता है, पर वह एक ओर से नही दोनो ओर से।* ''[32] नारी प्रेम को सिर्फ देने मे ही विश्वास नही रखती है बल्कि वह उसका प्रतिदान भी मॉगती है यानि प्रेम मे नारी पुरुष दोनो की बराबर की सहभागिता अपेक्षित है। नारी अपने इन्ही नवीन जीवन के कारण प्राचीन मूल्यो से टकराती है।

'प्रभा' एक आधुनिक नारी है। वह विवाह के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह लगाती है और प्रेम की परिणति विवाह मे न मानकर अपने स्वतत्र जीवन को प्रश्रय देती है। वह एक प्रतिष्ठित एडवोकेट कृपाशकर की सुपुत्री है और अपने साथ पढने वाले 'रमेश' से प्रेम करती है। किन्तु उसकी निर्धनता के कारण वह उससे विवाह नही करना चाहती। वह विवाह के सबध मे अपना दृष्टिकोण व्यक्त करती हुई कहती है - ''हम दोनो एक दूसरे से प्रेम करते है। इतना ही काफी है और सदा ही करते रहेगे। विवाह की क्या आवश्यकता है। '' [33] इस तरह स्पष्ट है कि नारी विवाह एव प्रेम दोनो को अलग-अलग खानो मे बॉट रही है, यानि जिससे प्रेम किया जायॅ उससे विवाह करना आवश्यक नही है। किन्तु यह कुविचारधारा समाज को विकृति की ओर ले जाने के अतिरिक्त और कुछ नही दे सकती।

प्रसाद ने 'ककाल' मे वेश्याओ के प्रति मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनका विचार है कि वेश्याओ को प्रताडित करके उन्हे उछृखल दिखलाया जाता है। यदि उन्हे भी विकास का उचित अवसर दिया जायॅ तो वे भी कुलवधुओं से किसी भी मामले मे कम नही निकलेगी। [34]

शिक्षित और आत्मसम्मान से दीप्त नारी, पुरुष के झूठे अह को सहने के लिए तैयार नही है। वह उसकी कुत्सित क्रिया-कलापो का प्रतिवाद करती है। इस प्रकार मीनाक्षी सभ्रात घर की उच्च शिक्षित नारी है। वह अपने अधिकारो एव अस्तित्व को लेकर पूर्णत जागरूक है और अपने नारीत्व के साथ कही भी समझौता करने को तैयार नहीं दिखती। वह पुरुष द्वारा शासित नही होना चाहती इसलिए उसके अत्याचारो को सिर झुकाकर सहने की अपेक्षा बलपूर्वक उनका प्रतिकार करती

है। वह *'शठेशाठ्यसमाचरेत्'* को अपने जीवन का आधार वाक्य मानकर उसी के अनुरूप दिग्विजय सिह के साथ व्यवहार करती है। इस प्रकार मीनाक्षी अत्याचारी और कुमार्गी दिग्विजय सिह का उसी की भाषा मे जवाब देती है- ''एकदिन मीनाक्षी क्रोध मे आकर हटर लिये दिग्विजय सिह के बगले पर पहुॅची, शोहदे जमाये और वेश्या का नाच हो रहा था, उनसे रणचण्डी की भॉति पिशाचो की इस चडाल चौकडी मे पहुॅचकर तहलका मचा दिया। हटर खाकर लोग भागने लगे। जब दिग्विजय सिह अकेला रह गया तो उसने उस पर सडा-सड हटर जमाने शुरु किये, इतना मारा कि कुवर साहब वेदम हो गये। '' [35]

प्रेमचद के पूर्व उपन्यासो मे नारी का इस प्रकार प्रतिशोधात्मक रूप नही मिलता। वह प्रतिकार करना तो दूर की बात है प्रतिवाद भी नही कर पाती। किन्तु यहॉ नारी अपने मानसिक विरोध के साथ ही बल का भी प्रयोग करती है। जो अब तक के हिन्दी उपन्यास मे सभवत अकेला उदाहरण है। पुरुष अपने शारीरिक बल के आधार पर नारी के साथ जोर-जबरदस्ती करता है और वह अपनी कायिक दुर्बलता के कारण उसके सामने सहम कर आत्मसमर्पण कर देती है। किन्तु सभी नारियॉ पुरूष से भयाक्रात नही होती, जो उसकी दुर्बलता को पहचानती है वह उसका डटकर सामना करती है और उनकी कामुक प्रवृत्ति का विरोध करने मे नही हिचकती।

'कुमार गिरि' ने 'चित्रलेखा' को दीक्षित करने बाद उस पर अपना अधिकार प्रदर्शित करते हुए अपनी वासना का शिकार बनाना चाहा। उसकी कुत्सित मानसिकता से भिज्ञ होने के वाद चित्रलेखा ने निर्भयता के साथ उसका विरोध करते हुए क्रोधित हो कर कहा। - '' चित्रलेखा डरी नही, झिझकी नही, उसी दृढता के साथ उसने कहा -''योगी, अपने को भूलो मत तुम्हारे सामने जो स्त्री खडी है वह इतनी असहाय नही है कि उस पर शासन कर सको। तुम समझते हो कि तुमने मुझे दीक्षा दी है, यह तुम्हारा भ्रम है, नही, यहॉ पर तुम अपने को ही धोखा दे रहे हो। तुम किसे आज्ञा दे रहे हो? क्या तुम यह नही जानते हो कि जिसपर तुम शासन करना चाहते हो, तुमने अपने को उसका दास बना लिया है। '' [36] जब कोई पुरुष नारी के प्रति कामातुर होकर प्रेम के लिए गिड़गिडाता है तो वह उपहास का पात्र तो बनता ही है नारी की दृष्टि मे प्रेम करने योग्य भी नही रह

जाता क्योकि प्रेम मॉगने से नही मिलता वल्कि जिसके प्रति वह जागृत होता है उसकी अनुभूति प्रेमी को स्वय ही हो जाती है और वह स्वय प्रतिदान देने के लिए उत्सुक हो उठता है।'' पर मै तो तुमसे प्रेम नही करती। एक क्षण के लिए मेरी इच्छा तुम पर आधिपत्य जमाने की हुई थी, और मैने इसका प्रयत्न भी किया। मै सफल भी हुई पुन कहती है - ''स्त्री का क्षेत्र है, आत्मसमर्पण। अपने अस्तित्व को अपने प्रेमी के अस्तित्व मे मिला देना, इसीलिए स्त्री उसी मनुष्य से प्रेम कर सकती है, जो उस पर आधिपत्य जमा सके। यही पर विषमता है। पुरुष का प्रेम आधिपत्य जमाना है, स्त्री का प्रेम अपने को पुरुष के हाथ मे सौप देना है। यहॉ बात दूसरी है, यहॉ मै स्वामिनी हूॅ तुम दास हो। मैने तुम पर आधिपत्य जमा लिया है, तुमने आत्म-समर्पण कर दिया है। किस बल पर तुम मेरा प्रेम चाहते हो? ''[37]

'धनिया', चारित्रिक एव वैचारिक दोनो दृष्टियो से सम्पन्न है। वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का बिरोध करने मे विश्वास रखती है और हर हालत मे सच का साथ देती है, झूठ को नकारती है। वह गलत कामो के प्रति पर अपना आक्रोश व्यक्त करने से नही डरती, न ही पुरुष के शारीरिक बल के आगे घुटने टेकती है। पति, 'होरी' द्वारा मार खाकर वह बैठती नही बल्कि अपना विरोध प्रदर्शित करती है। उसके माध्यम से लेखक ने इस सच्चाई से समाज को अवगत कराया है कि आधुनिक भारतीय नारी मर्यादा एव परम्पराओं के नाम पर पिटने को तैयार नही है। अब वह नारी की चली आ रही स्थिति को स्वीकार नही करेगी बल्कि आत्मसम्मान एव अधिकारो की प्राप्ति के लिए समाज सेसघर्ष करेगी और समय-समय पर अपने अस्तित्व का पुरुष-समाज को बोध कराएगी। जब होरी धनिया को मारता है तो वह क्रोध से विफरती हुई कहती है ''और मार ले। जा तू अपने बाप का बेटा होगा तो आज मुझे मार कर तब पानी पीयेगा। पापी ने मारते-मारते मेरा भुरकस निकाल दिया फिर भी इसका जी नही भरा। मुझे मारकर समझता है मै बडा वीर हूॅ। ''[38] 'धनिया' के माध्यम से प्रेमचद ने एक नवीन नारी का उद्भव किया है जो पति के बुरे कृत्यो पर आक्रोश व्यक्त करती है। और परम्परागत नारी की जगह नारी के बदलते मूल्य का संकेत देती है।

आज की तरह पहले समाज मे वेश्याओं के अमानवीय जीवन के प्रति सघर्ष करने के

लिए स्वय सेवी सस्थाए नही थी। नारी के विधवा रूप की तरह उसका यह रूप भी समाज द्वारा तिरस्कृत था। जबकि उसको यह रूप अपनाने के लिए समाज ही वाध्य करता था। प्राय नारी का वेश्या रूप उसके विधवापन के कारण निर्मित होता था। 'नन्दा' असमय ही विधवा हो जाती है और असहिष्णु प्रवृत्ति के कारण समाज उसके प्रति अपनी सदाशयता खो बैठता है क्यो कि उसकी आकाक्षाए पति के शव के साथ भस्मीभूत मान ली जाती है। जबकि यथार्थत ऐसा होता नही है, क्योकि जब तक मनुष्य का स्वय देहात नही होता उसके भीतर समस्त आकाक्षाए एव भावनाए सुप्त पडी रहती है जो समय विशेष पाकर उद्भूत हो जाती है। विधवा नन्दा के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है वह अपने देवर से प्रेम करने लगती है। परिणामत गर्भवती हो जाती है। किन्तु कायर देवर, समाज के सामने उसे पत्नी रूप मे स्वीकार नही कर पाता और वह भी लोकलज्जा के कारण सबके सामने अपने सबध को स्वीकृति नही दे पाती। जिसके कारण उसे सामाजिक लाक्षन झेलना पडता है और वह अन्त मे वेश्यावृत्ति की ओर अग्रसर हो जाती है। यह कितना बडा सामाजिक अन्याय है कि गलती दोनो ने की पर सजा सिर्फ नारी को मिली। इसी कुत्सित सामाजिक परम्परा के प्रति वर्मा जी ने प्रश्न उठाया है। '' [39]

सामाजिक परम्पराओ के चलते 'मृणाल' अनमेल विवाह का शिकार हो जाती है, चितन के स्तर पर वह इतनी प्रगतिशील है। कि इक्कीसवी शदी मे भी उसकी बराबरी शायद ही कोई कर पाए। सभव है नारी और पुरुष के सबधो को लेकर बनाये गये दोहरे मापदण्ड, उसमे विचलन पैदा करते है। किन्तु लेखकीय कुठा के कारण उसका कोई स्पष्ट स्वरूप नही बनने पाता। वह नारी के बदलते मूल्यो की वाहिका बनने के चक्कर मे उपहास का पात्र बनकर रह जाती है। उसके मूल्य दिशाहीनता की ओर सकेत देकर उसी के साथ खत्म हो जाते है। [40]

किन्तु सर्वत्र नारी के बदलते मूल्य दिशाहीन नही है, अव तक नारी प्रेम के विषय मे खुलकर अपना अभिमत रखने लगी थी। वह इसका मूल्याकन दूसरो की अनुभूति एव परम्परा-पोषित रुढियो के आधार पर करने की बजाय अपने अनुभवो को ज्यादा महत्वपूर्ण मानती है। वर्मा जी के नारी पात्र, प्रेम के प्रति जिस प्रकार का उद्‌गार व्यक्त करते है वह समय सीमा का अतिक्रमण कर

सर्वकालिक बन जाते है- ''इस वार उसने प्रेम की मादकता को देखा। इसवार प्रेम के साथ उसने ऐश्वर्य तथा भोग-विलास के रूप को देखा एक नई बात और देखी, जीवन मे केवल प्रेम नही है, न प्रेम जीवन का एक मात्र आधार है। प्रेम के साथ अन्य उद्‌गार भी होते है। उसने यह देखा कि स्वय प्रेम केवल कुछ दिनो तक के सुख का आधार हो सकता है। उसके सुख को स्थायी बनाने के लिए आत्म-विस्मरण होना आवश्यक है, पर आत्म-विस्मरण प्रकृति से असभव है। इसलिए आत्म-विस्मरण को उत्पन्न करने के लिए मदिरा की आवश्यकता होती है। ''[41]

यद्यपि नारी विचारो के स्तर पर बदलने लगी है किन्तु वैवाहिक-सबधो को लेकर वह आज भी भावनात्मक एव सस्कारगत दोनो स्तरो पर जुडी हुई है कुछ मामलो मे उसकी मानसिकता पूर्व परपराओ की पोषिका है जो सर्वथा उचित भी है। धनिया पति द्वारा अपमानित एव मार खाने के बाद भी अपने प्रतिवादस्वरूप उस पर हाथ नही उठाती। जब सारी स्थिति सामान्य हो जाती है और पति की भावनाएँ भी अनुकूल हो जाती है तो वह बडी आत्मीयता से पति के प्रति अपनी उदात्त भावनाएँ व्यक्त करती हुई कहती है - *''तुम्हे इतना गुस्सा कैसे आ गया, मुझे तो तुम्हारे ऊपर कितना ही गुस्सा आये मगर हाथ न उठाऊँगी। ''* [42]

'निर्मला' दहेज के कारण अनमेल विवाह का अभिशप्त जीवन भोगती है। परम्परागत रूढियॉ उसके जीवन मे हलचल मचा देती है और वह सामान्य जीवन नही जी पाती।

किन्तु विडम्बना यह है, कि वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का मुखर होकर विरोध भी नही कर पाती। वह अपने जीवन की त्रासदी को इस प्रकार व्यक्त करती है -'' हृदय रोता रहता था, पर मुख पर हॅसी का रग भरना पडता था, जिसका मुँह देखने को जी नही चाहता था, उसके सामने हॅस-हॅस कर बाते करनी पडती थी। जिस देह का स्पर्श उसे सर्प के स्पर्श के समान लगता था उससे आलिगित होकर उसे जितनी घृणा जितनी मर्मवेदना होती थी उसे कौन जान सकता है? उस समय उसकी यही इच्छा होती थी कि धरती फट जायॅ और मै उसमे समा जाऊँ। '' [43] अनमेल विवाह नारी को कितना निरीह बना देता है निर्मला इसका एक उदाहरण है, फिर भी भारतीय परम्पराओं के पोषक इसकी जडता पर प्रहार करने से हिचकते है।

आत्मसम्मान की पक्षधर नारी पति द्वारा घर से निष्कासित होने पर उसका घर छोड देती है किन्तु उसका स्वाभिमान पता नही किस विचारो का पोषक है कि वह आगे चलकर रूप के लोभी, कामुक व्यक्ति के प्रति जानवूझकर समर्पित हो जाती है और वह व्यक्ति उसका भोग करने के बाद उसे छोड कर किसी और की टोह मे चल देता है। मृणाल के विचारो की तरह उसकी भावनाएँ भी उलझी हुई है। वह एक नयी दिशा बनाने की चाह मे भटकी हुई नारी जिसे नारी के अस्तित्व और उसकी अस्मिता का भी समुचित ज्ञान नही है वह अपने उद्गार व्यक्त कर कहती है -''मेरे रूप का लोभ उसपर चढता गया मुझे उस समय उस पर बडी करुणा आयी।'' [44] नारी के घृणित करुणा का यह अनन्यतम उदाहरण है। जहॉ उसकी करुणा के लिए कारुणिक आधार की आवश्यकता नही है बल्कि वह कभी भी, कही भी, किसी को भी अपनी कृपा का प्रसाद बॉट सकती है। 'जैनेन्द्र' द्वारा सृजित यह उपन्यास अपने अस्पष्ट विचारो के कारण, नारी के प्रति किसी बदलते मूल्य का सकेत न करके उसपर प्रश्नचिन्ह ही लगाता है। पाठक यह समझ ही नही पाता कि लेखक, मृणाल द्वारा इस अनपेक्षित समर्पण के माध्यम से दिखाना क्या चाहता है? क्या उनकी दृष्टि मे नारी सिर्फ एक भोग्या ही है, जो पुरुष की कामुकता से भिज्ञ होकर स्वय ही उस के सामने जाकर समर्पित हो जाती है और इसे करूणा जैसे उदात्त भाव का नाम देकर स्वय को महिमामडित एव त्यागमयी सिद्ध करना चाहती है। करुणा का यह नया रूप जैनेन्द्र की कुठित मानसिकता है या पुरुष की प्राशविक-प्रवृति को और अधिक उदीप्त करने की चाह मे उठाया गया घृणित कदम। जहॉ नारी अपने शोषण का विरोध करने की बजाय स्वय ही भोग की वस्तु बनने को तैयार है।

भारतीय सस्कृति के अनुसार सतीत्व का सारा दायित्व नारी के ऊपर रहा है। पति-परायणा नारी हर स्थिति मे पति के साथ समझौता करती रही है किन्तु समय के साथ उसके विचार बदलने लगे है वह पति द्वारा उपेक्षित होकर उसके सामने हाथ जोडकर गिडगिडाती नही बल्कि अपने 'स्व' की रक्षा के लिए पति का घर छोडकर अपनी अलग जिदगी शुरू करना चाहती है। वह सनातन पातिव्रता धर्म के निर्वाह की अपेक्षा अपने नारी धर्म को मान्यता देती है -''मै स्त्री धर्म को पतिव्रता धर्म ही मानती हूँ। . *क्या पतिव्रता को यह चाहिये कि पति उसे नहीं चाहता तब भी वह*

अपना भार उस पर डाले रहे? उन्होने कहा -" मै तेरा पति नही हूँ। तब मै किस अधिकार से अपने को उन पर डाले रहती ? "[45] आज की नारी पतिव्रता धर्म की व्याख्या समय-सापेक्ष करने लगी है उसके लिए नारी का स्वाभिमान ही पतिव्रता का धर्म है और वही उसका नारी-धर्म भी है।

स्वाभिमानी 'कुसुम' अपने पति से सामजस्य न स्थापित कर पाने के कारण उसका घर छोडकर हमेशा-हमेशा के लिए अपने पिता के घर चली आती है। और तलाक के विषय मे सोचने लगती है। इस पर उसकी वाल्यसखी 'चपला' उसे समझाती है -"पति के पास जाने मे लज्जा, भय, अपमान का ध्यान न रखना चाहिए, पिता और भाई को भी त्याग देना चाहिए। स्वामी, स्त्री का इस जन्म और पर जन्म का साथी है। स्वामी स्त्री की लाज है और लाज स्त्री का आभूषण। इस समय लज्जा-विहीन हो, क्यो कि स्वामी से दूर हो। "[46] *यानि नारी, एक तरफ पति को लेकर आधुनिक विचारो की वाहिका है तो दूसरी ओर सनातन परम्परा की पोषिका उसके दोनो रूप आज भी विद्यमान है और आगे भी रहेगे। यही गतिशील समाज की विशेषता है जहा नकारात्मक एव सकारात्मक दोनो विचार एक साथ चलते रहते है।*

'मृणाल' परम्परागत नारी के स्वरूप का विरोध करती है और नारी के वदलते मूल्यो का प्रतिपादन करती है। उसके लिए सतीनारी, का तात्पर्य है कि नारी को अपने तन और मन दोनो को सार्वजनिक कर देना चाहिए यानि नारी भोग करने के लिए ही बनी है, जब जिसकी इच्छा हो आए उसको भोगे और चला जायॅ -" तन देने की जरूरत मै समझती हूँ तन दे सकूँगी। शायद यह अनिवार्य हो। पर लेना कैसे? दान स्त्री का धर्म है। नही तो उसका और क्या धर्म है? उससे मन मॉग जाएगा, तन भी मॉगा जाएगा। सती का आदर्श और क्या है? "[47] यहॉ नारी ने अपने के वस्तु माना है जिसकी सार्थकता है सब के काम आना। उसका अपना कोई अस्तित्व नही है कोई आकाक्षा नही है उसकी चाह सिर्फ दूसरो पर न्यौछावर हो जाना है। पुरुष की वासना की पूर्ति करना ही उसका एक मात्र ध्येय है। मनुष्य होकर भी वह जानवरो से गई-गुजरी है जो अनिच्छा होने पर कम से कम अपना प्रतिवाद तो करते है। यह तो सवेदना शून्य मास का मात्र पिण्ड है जो पुरुषो की वासना पूर्ति के लिए ही बनी है। उसकी कोई अपनी इच्छा-अनिच्छा नही है। यानि वह सासारिक होते हुए भी ससार से

विरत हो गयी, यानि 'परमहस' हो गयी है। मृणाल समाज मे किस मूल्य की स्थापना करना चाहती है यह विवाद का विषय है।

किन्तु मृणाल को छोडकर अन्य सभी उपन्यासो के नारी पात्र प्राय किसी न किसी मूल्य को लेकर जीते है। प्रेमचद युगीन साहित्य मे नारी अपने सनातन एव आधुनिक दोनो रूपो मे विद्यमान है। जहॉ कही वह इनसे पृथक होकर अपना जीवन मूल्य निर्धारित करती है वहॉ कुछ अशो मे मृणाल बनकर रह जाती है। जो किसी भी युग मे रह तो सकती है पर अपनी उपस्थिति नही दर्ज करा सकती और न ही किसी मर्यादित मूल्य वाली नारी का आदर्श बन सकती है।

प्रेमचद ने यथा सभव नारी के स्वस्थ्य मूल्यो को प्रश्रय दिया है किन्तु वह अपने प्रारम्भिक उपन्यासो मे पारम्परिक -मूल्यो को नकार नही पाए है। बल्कि वीच का समझौतावादी रास्ता अपनाते रहे है। किन्तु गोदान तक आते-आते उनकी दृष्टि यथार्थ पर आकर टिक गयी है। यद्यपि यहॉ भी वह पूर्णत यथार्थवादी नही बन पाते है किन्तु आदर्शात्मक यथार्थ को भी नही छोडते, जिसके कारण उनके नारी पात्र कुछ को छोडकर प्राय सभी सर्वकालिक बन गये है। प्रेमचद के उपन्यास मे वर्णित नारीपात्र किसी एक स्वरूप तक सिमट कर नही रह गए है बल्कि उनके अनेक रूपो को उद्घाटित किया गया है। जबकि अन्य उपन्यासकारो के उपन्यासो मे नारी के विविध रूपो मे आए मूल्यगत परिवर्तन नही दिखलायी पडते है। क्योकि उन्होने नारी के कुछ विशेष रूपो को ही लेकर उपन्यास लिखा है इसलिए विधवा, पत्नी, प्रेमिका, मा आदि रूप ही उभर कर सामने आ पाते है। *प्रेमचद युग नारी के परिवर्तित मूल्यो की पीठिका है जिसपर स्वातत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासो मे नारी के बदलते मूल्य, विकास की ओर अग्रसर हो रहे है ।*

हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य 1936–1980

प्रेमचद के समय से ही नारी के मूल्यो मे अनेकानेक परिवर्तन होने शुरू हो गए थे। नारी अपने अस्तित्व और अधिकारो के प्रति पूर्णत जागरूक होने लगी थी। उसके मूल्य सभी स्तरो यथा-सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक आदि पर परिवर्तित होने लगे थे इसका प्रभाव साहित्य पर भी पडा। उपन्यासकारो के चितन एव लेखन मे भी बदलाव आने लगा। अब नारी पुरुष के लिए सिर्फ पत्नी और प्रेयसी नही रही बल्कि जीवन-साथी और सहकर्मी आदि रूपो मे भी देखी जाने लगी। नारी, ने पुरुष के साथ अपने सवधो को सामाजिक आधार के साथ ही मनोवैज्ञानिक तथा मानसिक परिपक्वता के आधार पर स्थापित करना शुरू किया। *वह परम्परागत जीवन शैली की जगह अपनी रूचि तथा अपने पैटर्न के आधार पर जिदगी जीने की ओर उन्मुख हुई। इस कारण यह काल खण्ड अनेक मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का सृजन करने मे सफल हुआ। अत इसे जागरणयुग या मनोवैज्ञानिक-युग भी कहा जा सकता है।* इस काल के उपन्यासकारो ने नारी के वाह्य रूपो की अपेक्षा उसके अर्न्तमन को टटोलने का प्रयास किया फलत उसकी प्रगति के साथ ही उसमे व्याप्त कुठा तथा सत्रास का भी बेबाकी के साथ चित्रण किया गया।

जैनेन्द्र ने प्राय मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का ही सृजन किया है। अत लगभग उनके समस्त नारी पात्र अपने व्यक्तित्व के प्रति मोहग्रस्त और एकनिष्ठ है। 'कल्याणी' पाश्चात्य सस्कृति और शिक्षा मे पली-बढी होने के कारण आधुनिक विचारो वाली नारी है। वह दुराग्रही प्रवृत्ति की नही है, परिस्थिति के अनुकूल अपने को परिवर्तित करने मे निपुण है। किन्तु, पति द्वारा शका किये जाने के कारण उसका वैवाहिक जीवन त्रासदीपूर्ण हो जाता है। विवाह के पक्ष-विपक्ष को लेकर उसके भीतर जो द्वन्द्व चलता है उसे इस प्रकार व्यक्त किया गया है - ''विवाह के पहले मै खुश थी। विवाह बिना मै रह सकती थी। मेरा बोझ मुझसे उठ सकता था। फिर भी मै विवाहित नही रही। चाहे तो कह दीजिए नही रह सकती थी। क्योकि वही होता है जो होने वाला होता है। पर मै अकेली अपने को भारी नहीं थी - खैर विवाह हुआ। विवाह से स्त्री पत्नी बनती है। पत्नी यानि गृहिणी। पत्नी से पहले स्त्री कुछ

नही होती, वस वह कन्या होती है। पर मै कुछ थी। निरा कन्या न थी, डॉक्टर थी। अब सवाल है मेरी शादी और मेरी डॉक्टरी मेरा पत्नीत्व और निजत्व ये परस्पर कैसे निभे। ''48 नारी, दोहरी भूमिका निभाने के कारण सशयात्मक जीवन जी रही है एक ओर आत्मनिर्भर होने के कारण वह किसी की मुँह ताज नही है दूसरी ओर घर परिवार सँभालने के कारण उसे अपनी तरह से जिदगी जीने के लिए समय नही है।

'सन्यासी' की नायिका 'जयन्ती' से 'नन्द किशोर' का विवाह हो जाता है विवाहो परात जयन्ती यह महसूस करती है कि उसका पति शकालु प्रवृत्ति का व्यक्ति है। पति की मनोविकृत्तियो के कारण उसका जीवन कष्टप्रद हो जाता है। एक दिन वह स्पष्ट शब्दो मे कहती है - ''आपने वैवाहिक सुख और शान्ति के इरादे से मुझसे विवाह कभी नही किया, बल्कि अपने सामाजिक अधिकार के पूरे प्रयोग से मुझे कलुषित और दलित करके एक हिसात्मक सुख प्राप्त करने का उद्देश्य आपका आरभ से ही रहा है। विवाह के पूर्व से ही आपके मन मे जान मे या अनजान मे मेरे चरित्र के प्रति सदेह और साथ ही एक स्वाभाविक ईर्ष्या का भाव घर किये था। '' 49

'राजवीवी' अपने पति 'कैप्टन डॉ0 खन्ना' की मृत्यु के वाद काफी दिनो तक शोक सतप्त रहती है अतन्त वह राजनीतिज्ञ वद्रीबाबू से विवाह कर अपना नया जीवन शुरु करती है। अचानक नाटकीय मोड आता है और कैप्टन खन्ना जीवित वापस आ जाते है। और कुछ दिनो बीमार हो जाने पर वह राजवीवी के घर पर रूकने की इच्छा व्यक्त करते है। राजवीवी उन्हे एकरात के लिए भी अपने घ- रूकने नही देती वह अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहती है -''मै अपने पाप के लिए जान दूँ? पर कही प्रसाद के लिए कलक कैसे लगा लूँ? एक के जीते जी, दूसरा पाप कैसे लाद दूँ। ''50 नारी अपनी अस्मिता के साथ किसी भी तरह का समझौता नही करना चाहती है इसके लिए वह इन्सानियत से भी गिरने को तैयार है।

'महालक्ष्मी' एक सती नारी है जिसके चरित्र मे आदर्श ही आदर्श भरा हुआ है। वह नारी की सनातन परम्परा की वाहिका है। स्वसुख को पतिसुख मे विलीन कर जीने वाली भारतीय नारी है। उसका पति दूसरी नारी से प्रेम करता है और उसे अपने साथ रखना चाहता है। वह पति की इच्छा

को सम्मान देते हुए कहती है - ''मुझे उसमे सुख है, जिसमे आपको मै आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मै उसकी सेवा करूँगी, पूजा करूँगी। '' [51]

'जयन्ती' का पति घमण्डी प्रवृत्ति का है उसका अहकार विकृति की हद पार कर देता है जिसके कारण जयन्ती का जीवन दु खमय हो जाता है। वह मानसिक यत्रणा की शिकार होने के कारण अन्तत क्षुब्ध हो आत्महत्या कर लेती है। एक जगह वह कहती है - ''आप मे अभिमान तो है ही पर अहभाव भी हद दर्जे का है। इस अहभाव की तृप्ति के लिए आप चाहते है कि जिस स्त्री से आपका सबध हो वह पूर्ण रूप से आपकी होकर रहे, उसका कुछ भी स्वतत्र न हो। '' [52]

'कनक' नारी स्वतत्रता की पक्षधर है, वह पुरुष के वर्चस्व को एक सीमा के वाद अस्वीकार कर देती है। घुटन भरी जिदगी जीने की अपेक्षा वह तलाक लेना पसद करती है पति-पत्नी के बीच हुए वार्तालाप का एक अश इस प्रकार है-

'' स्वतत्रता चाहिये?

तुम मेरी पत्नी हो।

''आपकी पत्नी नही हूँ। आपने स्वय पति का अधिकार छोड दिया है। '' [53]

समाज और राजनीति दोनो मे सक्रियता निभाने वाली 'शैला', प्रगतिशील विचारो वाली नारी है। परम्परापोषित प्रेम विषयक धारणा को नकार कर वह अपना अलग मूल्य स्थापित करती है। वह नारी की स्वतत्रता को प्राथमिकता देती है इसलिए नारी पुरुष सबधो मे भी आजादी चाहती है नारी का किसी एक पुरुष का होकर रह जाना उसे गुलामी लगता है वह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है -''यदि स्त्री को किसी की बनकर ही रहना है तो उसकी स्वतत्रता का अर्थ ही क्या हुआ?स्वतत्रता शायद इसी बात की है कि स्त्री एक दफे अपना मालिक चुने ले परन्तु गुलाम उसे जरूर बनना है। पुन कहती है - *'' जब स्त्री को एक आदमी से बध जाना है और सामाजिक अवस्थाओं के अनुसार उसके अधीन रहना है उस संबंध को चाहे जो नाम दिया जाय, वह है स्त्री की गुलामी ही। ''* [54]

'नन्दिनी' का मानसिक-स्तर अपने पति से भिन्न है वह साधारण नारी न होकर

असाधारण व्यक्तित्व से मडित है इसीलिए धन लोलुप एव नपुसक पति को पाकर वह सतप्त हो उठती है और विद्रोह कर बैठती है -"जीवन के कटु अनुभव प्राप्त कर वह पुरुष मात्र से घृणा करने लगती है। नारी शासन तो चाहती है, किन्तु ऐसे पुरुष का शासन चाहती है जो पूरी तरह से उसके मनोनुकूल हो। जब उसका नर-पिशाच पति भुजोरिया उसे किसी पर पुरुष के साथ देखता है तो उनको अपमानित करते हुए करके कहता है -" यह स्त्री नही राक्षसनी है।"इस पर वह उत्तर देती है और तुम पूरुष नही नपुसक हो।'[55] आज की नारी पुरुष के अत्याचार को सहने वाली नही है बल्कि जहॉ तक सभव हो सकता है वह अपनी तरफ से विरोध ही करती है।

'भुवन' के घनिष्ठ साहचर्य एव स्नेह के परिणाम स्वरूप 'रेखा' पूर्णत समर्पित हो जाती है। परिणामत वह गर्भवती हो जाती है वह मानसिक तनाव की स्थिति से गुजरती है। क्योकि कि वह भुवन को अपना प्रेमी तो मानती है पर पति नही। इसलिए वह उसके भविष्य को बधक बनाकर नही रखना चाहती। वह उसे स्वतत्र कर देने मे विश्वास रखती है -"मै भुवन तुम्हे क्लेश पहुँचाना नही चाहती थी। अविश्वास मैने नही किया पर यह असम्भव है। मैने तुमसे प्यार मागा था, तुम्हारा भविष्य नही मागा था, न मै वह लूगी। "[56]

साधना मे नारी के बदलते हुए मूल्य दिखलायी पडते है। वह पति द्वारा उपेक्षित होकर जीना नही चाहती इसलिए उससे अलग होकर रहने मे विश्वास रखती है -"मै नही वर्दास्त कर सकती थी, कि एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो अपनी नीच प्रवृति की इतनी स्पष्ट अभिव्यक्ति कर चुका है, रहूॅ, ही नही उसे प्यार करूॅ, उसके लिये उसके साथ, जब उसका हुक्म हो तो, उसकी वासना तृप्ति के लिये सोऊ। "[57] वह ऐसे व्यक्ति का ससर्ग नही चाहती जो मानवीय मूल्यो से रहित है।

"घरौदे" की वेश्या नादान है किन्तु शिक्षित होने के कारण वह परिवर्तित विचारो वाली नारी है। इस लिए वह वेश्याओं के भविष्य को लेकर चिन्तित रहती है। समाज द्वारा किये जा रहे आत्याचारो के प्रति उसका मन बगावत करता है, वह अपने एक ग्राहक से कहती है -"रण्डी किसी की रिश्तेदार नही होती है। वह तुम्हारी लडकी नही होगी। वह सिर्फ मॉ को जान सकेगी। पद्रह साल की ही तो बात है आना, फिर तुम्हारी लड़की भी जवान हो जायेगी। "[58] "उग्रतारा" का 'कामेश्वर',

'उगनी' से विवाह करना चाहता है सामाजिक कुचक्रो के कारण दोनो को जेल हो जाती है, वहॉ उगनी के साथ पुलिस वाले बलात्कार करते है। कामेश्वर जेल से छूटकर आता है और उगनी से विवाह कर लेता है। उगनी सोचती है - *''प्रथम वार आज एक पुरुष ने गर्भिणी नारी के सीमात मे सिन्दूर भरा है। धोखे मे नही जान बूझकर। ''*[59]

''दिव्या'' मे मारिश नारी की सार्थकता के विषय मे बताता है - ''भद्रे! नारी सृष्टि का साधन है, सृष्टि की आदिशक्ति का क्षेत्र और समाज तथा कुल का केन्द्र है। पुरुष उसके चारो और धूमता है जैसे कोल्हू का बैल। इस पर नर्तकी अशुमाला प्रत्युत्तर देती है -'' आर्य वह सव नारी की सार्थकता अवश्य है परन्तु सार्थकता को नारी पा सकती है केवल अपने अस्तित्व के मूल्य मे, केवल पुरुष की भोग्या बनकर। स्वय दूसरे के लिए भोग्य बन कर कोई क्या सार्थकता पायेगा आर्य। ''[60] अब नारी 'अपने होने' की सार्थकता तलाशने लगी थी

'ऋतु चक्र' के माध्यम से नारी पुरुष सबधो को नई दिशा प्रदान करते हुए लेखक ने समाज मे नारी के बदलते हुए मूल्य को प्रस्तुत करने का अभिनव एव सार्थक प्रयास किया है। परिवर्तित दृष्टिकोण वाली प्रतिमा, विवाह के सबध मे स्वय मान्यताए निर्मित करती है। वह नारी पुरुष के सहज सबधो को ही प्राथमिकता देती है परम्परागत मूल्यो को नही। उसके शब्दो मे - ''इस सवध मे कैसे चलना चाहिये और कैसे नही यह मै किसी से पूछकर तय नही करूँगी मै तो सीधे-सीधे अपनी भावनाओं अनुभूतियो के अनुसार चलूँगी। फिर चाहे युग के साथ उसकी कैसी ही सगति क्यो न बैठे?''[61] वह नकुलेश के व्यवहार से चिढकर दादा से कहती है ''मेरे साथ इस तरह का व्यवहार करने लगा है जैसे वह मदारी हो और मै उसकी खरीदी हुई दासी। मेरी निजी स्वतत्रता का कोई अस्तित्व ही वह जैसे नही स्वीकार करना चाहता था। ''[62] वह ऐसे लोगो को देखना तक पसद नही करती जो मानव अस्तित्व को अहमियत नही देते। अन्तत अपनी स्वतत्रता की रक्षा करते हुए मर जाती है।

''पथ की खोज'' की 'साधना' आधुनिक विचारो वाली नारी है वह पुरुष के शोषण का विरोध करती है। विवाहोपरान्त अपनी स्वतंत्रता पर आघात होते देख वह सोचती है - ''किसी अपराध

से मेरी स्वतत्रता पर यह आघात हो रहा है, आखिर मै किसी की खरीदी हुई दासी तो नही हूँ।"
पति-पत्नी के वीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण वह परम्परा एव रुढि को त्यागकर 'चन्द्रनाथ' के पास चली जाती है, क्योकि कि वह पति द्वारा पुन शोषित नही होना चाहती, उसे पति से विमुक्त होने के बाद घुट-घुट कर एकाकी जीवन जीना स्वीकार्य नही है। वह पूर्णता के साथ अपने जीवन को जीना चाहती है - *"मै ही क्यो सहन करूँ, मुझे ही शिक्षा क्यो इसकी दी जायँ जव कि दूसरो के लिए कोई प्रतिवन्ध या वधन नही।"*[63] इसी दृष्टिकोण के कारण वह चन्द्रनाथ द्वारा उपदेश दिये जाने पर उसे फटकारती है।

'गर्मराख' के माध्यम से भी सामाजिक रुढियो का विरोध किया गया है। और नारी पुरुष के सबधो को नवीन प्रसग के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सत्या और हरीश इसी मानसिकता का पोषण करने वाले है - *" जब भी हम पूर्णरूप से स्वतत्र होगे नर-नारी के परस्पर सवधो मे भी स्वतत्रता आयेगी नारी योनि मात्र न रहकर सहचरी और सगिनी बनेगी तथा समाज के विकास मे अपना पूरी योग देगा।"*[64]

'जैनेन्द्र' ने अपने स्वातत्र्योत्तर उपन्यासो मे नारी-पुरुष सबधो मे नये मूल्यो को रेखाकित किया है। यद्यपि इसके पूर्व के भी उपन्यासो मे यह अवधारणा प्राप्त होती है किन्तु वाद के उपन्यासो मे और बेबाकी आ गयी है। 'मुक्तिबोध' की 'नीला' आधुनिक विचारो से सम्पन्न नारी है। वह परम्परा की जडता पर प्रहार करती है और अपने प्रेमी 'सहाय' के सामने अपने मानसिक उद्‌गारो को व्यक्त करती है -"आप कीजिए विचार, नियम और सयम मे मुझे आकाश पसद है, जो खुला है, दिशाए पसद है जो बुलाती है, चारो तरफ से किसी तरफ से रोकती नही। मै नही रहना चाहती कमरो मे दडबो मे, आदर्शो मे। मै अनन्त मे रहना चाहती हूँ।"[65]

'बाहर भीतर' की नायिका परम्परागत रुढियो से पीडित है अपने दुखद दाम्पत्य जीवन से परेशान होकर वह राजेन्द्र के विचारो व सहानुभूति से प्रभावित हो उसकी तरफ उन्मुख होती है। वह परम्परागत मूल्यो के स्थान पर आधुनिक मूल्यो को प्राथमिकता देती है और स्वतत्र प्रेम की पक्षधर है। यह राजेन्द्र को अपने साथ भगकर कहीं और चलने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहती

है - ''मै विद्रोह की सभावना से नही डरती और पाप-पुण्य की प्रचलित धारणाओ की भी कायल नही हूँ, दूसरे जन्म मे विश्वास न रखते हुए भी मै मानती हूँ कि जीवन बर्वाद करने या होने के लिए नही है।'' [66] इस प्रकार 'सुमित्रा' अपने तरह से जीवन जीने की बात समाज के सामने उठाती है।

'अजय की डायरी' की 'हेमा' भी स्वतत्र विचारो वाली नारी है। वह अजय के विचारो से प्रभावित होकर उसकी ओर झुकती है किन्तु नारी स्वातत्रय को महत्व देती हुई कहती है - ''मुझे यह भावना वडी खराव लगती है कि मै किसी पर निर्भर रहा हूँ, मुझे किसी का दवाव सहना या एहसान लेना वुरा लगता है।'' [67] दीपिका भी अपने अस्तित्व को लेकर चैतन्य है, वह अपने साथ कोई समझौता नही करती। वह अपने ऊपर गर्व करती है और अजय से कहती है - ''आप चाहते है कि सबलोग एक ढर्रे के हो, किसी का अलग अस्तित्व न हो। इसके विपरीत मै मानती हूँ कि मुझे दूसरो से भिन्न होने का पूरा अधिकार है। ''[68]

'ज्ञानवती' एक क्लीव पुरुष से प्यार करती है, और उसी से विवाह करती है। उसके लिए प्रेम का सबध आत्मा से है न कि शरीर से। शरीर सिर्फ दो व्यक्तियो को पास लाने का मध्यम है, अत शारीरिक सबध उसके लिए गौण है - ''मैने शिवेन्द्र को बडे यत्न से पाया है, और मै उसे किसी भी हालत मे खोना नही चाहती। मै शिवेन्द्र को एक मात्र अपना बनाकर रखना चाहती हूँ। इसीलिए तो मै उससे विवाह कर रही हूँ, क्योकि विवाह एक ऐसा बधन है जिससे छूटना उसके लिए तब तक सभव नही है जबतक मै न चाहूँ।'' [69]

ज्ञानवती प्रेम मे वासना की उपस्थिति को अस्वीकार करती है और अपनी बात की पुष्टि मे उदान्त तर्क देती है - *''इसमे ताज्जुब की क्या बात है? क्या प्रेम मे वासना का होना अनिवार्य है? माता अपने बच्चे से प्यार करती है वहन अपने भाई से प्यार करती है, यहॉ तो वासना नही है। रेखा, मै तुमसे कहती हूँ कि प्यार मे वासना का होना अनिवार्य नही है। . तुम तो शिवेन्द्र से विवाह कर रही हो?''* हॉ, मै शिवेन्द्र से विवाह कर रही हूँ क्योकि कि बिना शिवेन्द्र से विवाह किए अगर मै शिवेन्द्र के साथ एक ही मकान मे रहूँ तो लोग मेरी ओर उगलियॅा उठायेगे, मुझे बदनाम करेगे। और रेखा, तुम नही जानती मै रात दिन शिवेन्द्र की छाया बनकर उसके साथ रहना चाहती हूँ, मै

उसके व्यक्तित्व मे अपने अस्तित्व को लय कर देना चाहती हूँ। ''[70]

'रेखा' विवाहित होकर भी कई पुरुषो से अपने शारीरिक सबध स्थापित करती हैं। उसके लिए शारीरिक भूख और उसकी सतुष्टि मायने रखती है इसके लिए वह कई पुरुषो से सवध रखने मे भी कोई बुराई नही समझती वल्कि इसे आवश्यक मानती है। इसी मानसिकता के कारण वह सोमेश्वर के साथ सबध स्थापित करती है और गर्भवती हो जाती है - ''उसके पेट मे सोमेश्वर का गर्भ है, उस सोमेश्वर का जो पागल खाने मे बद है और उस पागल आदमी के गर्भ को धारण करने के लिए उसे अभी छह महीने तक और यातना सहनी पडेगी। एक भूल एक पागलपन! इसका इतना बडा दण्ड मिलेगा उसे। इस गर्भ को नष्ट करना होगा। ''[71] रेखा कुठित मानसिकता वाली कामुक नारी है जिसे मन और आत्मा से कोई मतलब नही है। वह मर्यादा विहीन, और अनैतिकता को बढावा देने वाली पत्नी है -''चुप रहो, भूख-भूख है वह दबाने के लिए नही होती, वह शात करने के लिए होती है। भूख प्रकृति है, उसे दबाना प्रकृति के साथ अन्याय करना होता है। बुद्धि इतना जानती है। उपवास करना, अपने को प्रताडित करना, यह सब अन्धविश्वास की परम्परा है, वैज्ञानिक और स्वस्थ बुद्धि के स्तर से अलग की चीज। ''[72]

'नन्दिता' एक वेश्या होने के बाद भी मर्यादित जीवन जीना चाहती है किन्तु दुर्भाग्य वस उसे अर्थ-लोलुप पति मिलता है, वह धन के लिए अपनी पत्नी को बेचने से भी नही चूकता। उसके इस प्रकार के अमानवीय कृत्यो से वह अभिशप्त जीवन के लिए मजबूर हो जाती है। नैतिकता पूर्ण जीवन जीने की आकाक्षा लेकर वह अन्य पुरुष के साथ प्रेम-सबध बनाती है इस पर उसका पति मुजोरिया कहता है - ''वह स्त्री नही !'' वह उत्तर देती है - ''और तुम पुरुष नही हो। इसबात की गवाह हूँ मै, गवाह तुम्हारी नौकरानी जो तुम्हारे पुरुषत्व के लिये नही, बल्कि तुम्हारे पैसौ के लिये तुम्हे चाहती है। ''[73]

'चमेली' एक युवक से प्रेम करती है किन्तु धनाभाव के कारण उसका अनमेल विवाह हो जाता है, समाज उसकी स्थिति का फायदा उठाना चाहता है किन्तु वह अपनी अस्मिता को बचाती फिरती है क्योकि उसे प्रत्येक पुरुष की निगाह मे वासना दिखलायी पडती है - *''हर आदमी की*

निगाह किसी भूखे ती तरह मेरे ऊपर पडती है। हर आदमी मेरे चाहने पर मुझे भोगने को तैयार है। यदि उन्हे मेरी हिम्मत मेरी ताकत, मेरी मार, मेरी फटकार का पता न हो तो रात को मकान से मुझे उठाकर वे जाएँ, लोग मास के टुकडे पर शिकारी कुत्ते की तरह मुझे ललचाई ऑखो से देखते है। ''[74]

'शेफाली' का विवाह वाल्यावस्था मे हो जाता है किन्तु बडी और शिक्षित होनेपर वह 'प्राणनाथ' से प्यार करने लगती है। किन्तु सामाजिक परम्पराओ का निर्वाह करने के कारण वह पुर्नविवाह नही कर पाती - '' न जाने किस घडी मे मेरा विवाह हुआ था, निष्काम व्यर्थ क्यो मै उसको तोड नही सकती जो व्यर्थ एक दिखावे की तरह हुआ है? तोड दूँ और प्राणनाथ से विवाह कर लूँ? ''[75]

'नरेश मेहता' के उपन्यासो मे भी नारी-पुरुष सबधो के बदलते हुए मूल्य को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

''प्रथम फाल्गुन '' की 'गोपा' किसी अनाम व्यक्ति की-कृति है समाज से तिरस्कृत हो वह 'महिम' से प्यार करती है। वह महिम के सहयोग से स्त्रियो की स्थिति मे क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की इच्छुक है। किन्तु जब महिम उसके विचारो से विचलित हो जाता है तो वह उससे सबध विच्छेद कर लेने के बाद कहती है ''मैने अधिकार चाहा था, भिक्षा नही। लोगो को भीख देने की बुरी आदत पड गयी है जिसके कारण आपसी सबध भी दुर्गन्ध देने लगते है।''[76] गोपा जर्जरित हो चुकी परम्परा का विरोध करती है जो अपनी अर्थवत्ता खोने के बाद भी व्यक्ति के अस्तित्व को घेरना चाहती है।

''बूँद और समुद्र'' की 'शीला स्विग' भी नारी-पुरुष के स्वतत्र सबधो की पक्षधर है वह परम्परागत मान्यताओं से ऊपर उठकर 'महिपाल' से प्रेम करती है और विवाह का विरोध करते हुए कहती है -'' *मै भी इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि शादी का रिवाज इन्सानो मे धोखा-धडी झूठ और अत्याचारो को जगाता है। इसे हटा दीजिये, फिर देखिये औरत मर्द के रिश्ते कितनी जल्दी नार्मल हो जायेगे।* ''[77] अपने ही विचारो वाले प्रेमी महिपाल से सबधो के सदर्भ की व्याख्या करते हुए शीला कहती है -''तुम जिस अधिकार हरण की बात कर रहे हो, मै उसे अहमियत नही देती, हम एक दूसरे

की रुहानी जरूरतो को पूरा करते है। उन्हे पूरा करने का हक, हर एक का पैदाइशी हक है, मै तुम्हारे अपने नाते को पाप नही मानती। ''[78] यह विचार धारा पूर्णत परम्परापोषित मूल्य का विरोध करती है।

'यशपाल' के उपन्यासो मे भी नारियो का शोषण करने वाले तत्वो का विरोध मुखर होकर किया गया है। नारी को परम्परा पोषित सकीर्णता से बाहर निकाल कर उन्हे अपने अस्तित्व के साथ प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है। अन्य भौतिक आवश्यकताओ की तरह ही यौन-सवधो को भी एक महत्वपूर्ण घटक माना है। उन्होने पुरुष की तरह नारी के लिए भी पूर्ण स्वतत्रता एव आत्मनिर्णय की अधिकार की आवश्यकता को मान्यता दी है। ''झूठासच'' की 'डॉ0 श्यामा' एक विवाहित पुरुष 'डे' से सबध स्थापित करती है और इसके औचित्य को पुष्ट करते हुए तर्क देती है - ''स्त्री को बॉध कर रखना है तो उसका व्यक्तित्व जगाने, उसे आत्मनिर्भरता सिखाने की क्या जरुरत है। ''[79] इसी प्रकार वह 'शीला' एव 'रतन' के सबधो को भी जायज ठहराते हुए वे दोनो को एक करने का प्रयास करती है। और स्वसबध मे प्राचीन मान्यताओ का प्रतिकार करती हुई 'सिस्टर मर्सी' से कहती है - *''यह लोग क्यो समझते है कि बिन ब्याही औरत आवार होती है, उसे किसी न किसी खूटे से बॉध ही देना चाहिए, किसी न किसी को उसका मालिक बन ही जाना चाहिए। उन्हे उनसभी बातो से घृणा है जो नारी को अस्तित्व विहीन एव असहाय बनाना चाहते है। ''* [80]

'अधेरे बद कमरे' के पात्र महानगरीय परिवेश की उत्पत्ति है। जहॉ अलगाव और अजनवीपन एक नासूर की तरह लोगो को खोखला करता जा रहा है। इसके पात्र या तो सिर्फ अतीत मे जीते है या सिर्फ भविष्य मे। यानि सतुलन बनाकर जीना इनकी आदत मे शामिल नही है। 'हरबश' और 'नीलिमा' की त्रासदी यह है कि वे एक दूसरे से अलग होकर भी रह नही रह पाते और एक साथ भी नही रह पाते। नीलिमा कहती है - ''मै जानती हूॅ हरवश मेरे बिना नही रह सकता उसी तरह जैसे वह दोनो वक्त खाना खाये बिना नही रह सकता। उसके लिए यह सिर्फ भूख का सवाल है और कुछ नही। पर मै सिर्फ उसकी भूख का सामान बनकर नही रहना चाहती। '' [81]

अब नारी पुरुष के लिए सिर्फ प्रयोग का सामान बनकर नही जीना चाहती वह पुरुष से मानवीय

व्यवहार की भी अपेक्षा करती है ऐसा न होने पर अलगाव की स्थिति को स्वीकार कर लेती है।

'एक इच मुस्कॉन' की 'अमला' सबधो की नई समस्या को उपस्थित करती है। वह उद्योगपति की सुपुत्री है और परित्यक्ता भी। परित्यक्ता होने की पीडा उसे पुरुषो के प्रति प्रतिशोध की भावना से भर देती है। वह अपने बिचार व्यक्त करती हुई कहती है - ''पति के घर से आने के वाद से ही एक बात मेरे मन मे धीरे-धीरे घर करती जा रही है कि मुझे सब प्रकार की सीमाओ को तोडना है, सव प्रकार के बधनो से मुक्त होना है। पति और परिवार ही नारी का सवसे वडा बधन होता है। जब वही टूट गया तो और किसी वधन मे मै अपने आपको क्यो बधने दूँ, मुझे सामान्य से विशिष्ट बनना है। ''[82]

अमला, नौकरी करने वाली ऐसी औरत है जो प्रेम तो करती है किन्तु विवाह करने मे विश्वास नही रखती। जब उसका प्रेमी कैलाश उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है तो वह अस्वीकार कर देती है। क्योकि वह पुरुष मित्र चाहती है लेकिन स्वतत्रता मे बाधा पहुँचाने वाला पति नही। पुरुष द्वारा नारी मित्र और नारी द्वारा परुष मित्र बनाने की प्रवृत्ति एक ऐसी कुप्रवृत्ति है जो नर एव नारी दोनो को अनैतिकता की ओर ले जाती है तथा समाज मे भी गलत परम्परा का बीजारोपण करती है। 'अमला' की रिक्तता और अतृप्त भावनाएँ, लगातार उसके अभिजात्य अह से टकराती रहती है। इसी कारण वह 'कैलाश' एव 'अमर' दोनो के निकट रहकर भी आश्वासन या निश्चितता का अनुभव नही करती। किन्तु एक बार वह ऐसी स्थिति से गुजरती है जब अह से बाहर निकल कर विचार करती है - '' शायद मेरा दु ख किसी व्यक्ति विशेष से बॅधा हुआ नही है पर आजकल मै अपने जीवन मे पुरुष का आभाव महसूस करती हूँ   एक ऐसे पुरुष का जो वहशियो की तरह मुझे प्यार करे, सब चीजो से अलग करके मुझे प्यार करे, केवल मुझे, मेरे शरीर को, मन को, आत्मा को। ''[83] वह अपनी आरोपित महत्वाकाक्षाओं और अकेलेपन के भीतर घुटती रहती है उनसे बाहर नही निकल पाती और अन्तत वह विक्षिप्त हो जाती है। प्रेम आज भी अपने सामान्य, सहज तथा सतुलित रूप मे जीवन की सबसे बडी कसौटी है।

''दो एकात'' की 'वनीरा' आधुनिक विचारो से सम्पन्न नारी है। उसका पति 'विवेक'

अपने व्यवसाय मे अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उसे समय नही दे पाता। इस कमी को वनीरा वडी गहराई से महसूस करती है - "एक अगम्य सिन्धु हमारे दो एकान्तो के वीच आ खडा हुआ है।"[84] वह अपनी रिक्तता की पूर्ति हेतु विवाहेत्तर सवध बनाती है। 'आनन्द' गर्भवती वनीरा को अकेला छोडकर चला जाता है। 'विवेक' उसे सहारा देने के लिये आगे आता है। किन्तु वह प्रतिवाद करती है क्योकि उसे किसी की दया की आवश्यकता नही है वह अपने आपको सभालने के लिए सक्षम है - " मैने कभी नही चाहा कि बहुमूल्य शीशा जो टूट गया है, परन्तु फ्रेम मे जडे होने के कारण विखर नही जाता, उसे फेका न जाये।[85] वह अपने तरीके से अपना जीवन जीना चाहती है उसके जीवन मे वही पुरुष प्रवेश पा सकता है जिसे वह स्वीकृति दे। आज की आधुनिक नारी 'पतिव्रत धर्म' को नकार रही है क्यो कि वह पुरुष से समानता के व्यवहार की अपेक्षा करती है।

" बद अधेरे कमरे" की 'सुषमा' समाज मे सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त करने तथा पुरुष के समान कार्य मे दक्षता प्राप्ति के लिए पैतिस वर्ष तक अविवाहित रहती है। उसके मन मे दाम्पत्य जीवन को लेकर काफी उधेड बुन चलती है और वह हीनभावना से ग्रस्त हो जाती है -"परिवार मे रहकर स्त्री सामाजिक प्रतिष्ठा नही प्राप्त कर सकती।"[86] आज की नारी अपने बलबूते सब कुछ पाने मे विश्वास रखती है यह विश्वास उसके कद को तो ऊँचा करता है किन्तु प्राय भावनाएँ झुलस जाती है। 'वानी' चचल प्रवृत्ति की नारी है, वह मनोज की ओर आकर्षित होती है क्योकि उसकी पत्नी ने उसके व्यवहार से तग आकर उसका परित्याग कर दिया है। वह अपनी कुठित मानसिकता का परिचय इस प्रकार देती है -" मै हमेशा उस तरह खुलकर अपने को स्वीकार नही कर पाती जिस तरह करना चाहती हूँ। जहॉ तक शरीर की नैतिकता का सबध है, उसे लेकर मेरे मन मे कोई कुठा नही रही। मै तुम्हारे सामने यह भी स्वीकार कर सकती हूँ कि कई एक लोगो के साथ मेरा शारीरिक सबध भी रहा है, हालाकि हर एक के साथ एक सा नही। दिल मे सोचा था कि कुछ देर टहलने के बाद तुम मुझे अपने साथ घर चलने के लिए कहोगे और मै चलकर तुमसे प्यार करती हुई तुम्हारी पत्नी का जिक्र छेड कर तुम्हे थोडा खिजाऊगी। मुझे अच्छा लगता है, प्यार करते समय साथ के आदमी को खिजाना। इससे उस आदमी को कैसा लग रहा है, यह मै नही सोचती। पर हर आदमी के साथ अन्त

मे मेरी अनवन हो जाती है। ऐसा शायद मेरी ही वजह से होता है या मै जानबूझकर होने देती हूँ, क्योकि मै किसी के साथ भावनात्मक उलझन मे नही पडता चाहती। मै इसे एक विशेष परिस्थिति मे रो पडने जैसी कमजोरी ही समझती हूँ जो कि मेरी सम्मान-भावना को ठेस पहुँचाती है। *मै नही चाहती कि किसी भी आदमी का मुझ पर इतना अधिकार हो कि मै उसके बिना जी न सकूँ।* '[87]

'शोभा' अपने दूसरे पति के कटु व्यवहार से तग आकर अन्यत्र चली जाती है। वह क्षुब्ध होकर पति को पत्र लिखती जिससे उसकी मन स्थिति का पता चलता है -''अव तो जीने के लिये मेरे पास कुछ भी नही है न साधन, न सवध न मान। तुम्हारे साथ अपने को जोडकर मैने हर चीज से अपने को वचित कर लिया है।''[88]

''बलचनमा'' उपन्यास की नायिका 'रेवती' अपने मुखियॉ के यहॉ काम करने जाती है। तो काम करते समय मुखिया उसकी स्थिति का लाभ उठाकर उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है। इस पर वह उसका भरपूर विरोध करती है और अपनी सुरक्षा के लिए ''अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग कर मुखियॉ के कुकृत्य के प्रयास को विफल कर देती है।''[89]
कभी भी कोई स्वाभिमानिनी नारी आसानी से किसी को अपनी अस्मिता के साथ खेलने नही देती। बिना सघर्ष किये अपने आपको किसी भी कीमत पर गिरने नही देना चाहती। वह तब तक उसका प्रतिकार करती है जब तक उसकी हिम्मत उसका साथ नही छोड देती। पुरुषो द्वारा नारी के शोषण को केन्द्र बिन्दु मे रखकर 'शोले' उपन्यास का सृजन किया गया है। शोषण का प्रतिरोध करते हुए उपन्यासकार ने यौन-सबधो की दृष्टि से नारी को पुरुष के समान अधिकार दिलाने का प्रयास किया है। वह वडी बेवाकी के साथ अपने विचारो की अभिव्यक्ति करते हुए कहता है -''*एक ही क्रिया कर पुरुष जहॉ पवित्र बना रहता है, वही नारी कलकित क्यो ठहरा दी जाती है। नारी के छत अग और गर्भ की बात लेकर उसे कलकित करने का अधिकार किसी को कैसे प्राप्त हो जाता है।*''[90] इस तरह भैरव प्रसाद गुप्त ने समाज के सामने बहुत व्यवहारिक और आवश्यक प्रश्न उठाया है, पुरुष समाज अपनी दोहरी मानसिकता को कब खत्म करेगा? यह तो भविष्य का प्रश्न है। किन्तु पुरुष समाज मे भी जो प्रवुद्ध पुरुष वर्ग है उन्हे दोहरी मानसिकता वाली बाते अन्दर तक झकझोरती है। अत इस बात

की सभावना नजर आती है कि भविष्य मे समाज नारी के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण अपना सकता है।

''उधडे हुए लोग'' की 'माया देवी' के अपने पति से स्वस्थ सबध नही है अत वह विवाहेत्तर सवध रखती है और अपने अवैध सबध को वैध बनाने के लिए नारी स्वतत्रता के नाम पर अपने समाजिक-पति को विषपान करा देती है। नारी कभी-कभी अपनी स्वतत्रता और सामर्थ्य का नकारात्मक प्रयोग इस स्तर तक जाकर करती है कि बदलते हुए सकारात्मक मूल्यो के साथ घृणित नकारात्मक मूल्य भी दिखाई पडते है। जो समाज सरचना को भी प्रभावित करते है। ''[91]

''डूबते मस्तूल'' की 'रजना' पुरुष के शोषण का शिकार हो जाती है जिसके कारण वह परम्परा और पुरुष के प्रति वितृष्णा से भर उठती है। वह अपनी बेवसी पर विक्षुब्धा हो उठती है - ''नारी जब भी तुम्हारी बनाई परम्परा को तोड तुम्हारे इस माध्यम आवरण को नही मानना चाहती, तब उसे जीवन चलाने के लिए शरीर, जॉघे, बॉहे, सब शरीर का एक-एक अग अपने आपको पूरा का पूरा नीलाम करना पडता है। चार आने पैसे तक की कीमत पर नारी समझौता करती है। ''[92] 'रजना' के माध्यम से लेखक ने भारतीय नारी की वास्तविक मनोव्यथा को अभिव्यजित किया है जो सदियो से लेकर आज तक अपने उत्पीडन एव शोषण से ऊबर नही सकी है। पुरुष को जव भी अवसर मिला उसने मौका गवाये बिना नारी की अस्मिता को छेडा है।

'रजना' एम0 ए0 पास है किन्तु उसे अपनी योग्यता के अनुसार नौकरी नही मिल पाती है। उसकी परिवारिक स्थिति ऐसी है कि बिना अर्थोपार्जन के परिवार का पोषण नही हो सकता। वह अपनी विवशता पर खीझ कर कहती है -''मै किसी शौक को पूरा करने के लिए या फैशन पूरा करने के लिए नौकरी नही करती। मै काम इसलिए करती हूँ कि घर की आवश्यकताए पूरी हो जायॅ। ''[93]

''राधिका'' मध्यवर्गीय युवती है। यह अपने अस्तित्व एव स्वतत्रता की तलाश मे इधर से उधर भटकती रहती है। पिता पुर्नविवाह कर लेते है इस कारण वह व्यथित हो उठती है। उसे लगता है कि अब उसके हिस्से का प्यार बॅट जाएगा क्यो कि पिता अब विमाता विद्या को भी अपना प्यार देगे। इसलिए वह विमाता के प्रति ईर्ष्यालु हो जाती है। वहअपनी स्वतत्रता एवं अस्तित्व का बोध कराती हुई पिता से कहती है- ''जो आप चाहते है वही हमेशा क्यो हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नही

है? मै आपकी बेटी हूँ पर अव मै वडी हो चुकी हुं। और मै जो चाहूँगी वही करूँगी''[94] इस प्रकार नारी के वदलते हुए व्यक्तित्व को लेखक ने राधिका नाम दिया है।

अपनी विद्रोहिणी प्रवृत्ति के कारण 'साधना', लोभी पति को छोडकर अलग रहने लगती है। कुछ दिनो बाद एकाकीपन के कारण विक्षिप्तावस्था तक पहुँच जाती है और चद्रनाथ द्वारा उसकी जैविक आवश्यकता के प्रति उपेक्षा दिखाने पर वह कहती है -'' एक काम करो, तो अहसान हो, अभी बाजार खुला होगा, जाकर मुझे थोडा सा जहर लाकर दे दो। ऐसा जहर जो थोडा ही पूरा काम करे विश्वविद्यालय बद न होता तो मै, ही प्रबध कर लेती।''[95] साधना का यह व्यवहार उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाता है और उसे एक कुठित नारी के रूप मे प्रस्तुत करता है।

'रजना' आधुनिक विचारो वाली नारी है, पिता उसका विवाह उसकी इच्छा के विपरीत रूपयो का लोभ देकर कपूर साहब के पागल पुत्र जगदीश से कर देते है। और बाद मे जब वह ससुराल जाती है तब उसे दहेज प्रथा का दुष्परिणाम भोगना पडता है वह अपनी स्थिति व्यक्त करती हुई कहती है - ''मेरे पागल पति की पैसे की वाछाये भी बढने लगी थी। प्यार, चुबन और आलिगन के बदले अब रोज मार पडती थी। पतिदेव की माग थी कि दहेज मे पैतीस हजार के बदले सिर्फ तीस हजार मिले है, शेष यदि शीघ्र नही दिया जायेगा तो मुझे वह मार-मारकर जिदा दफना देगे।''[96]

पति की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण नारी तो निराश्रित होती है परिवार की आय का स्त्रोत भी समाप्त हो जाता है। 'श्यामा' कुछ दिनो के वैवाहिक जीवन जीने के बाद वैधव्य को प्राप्त हो जाती है। वह अपना तथा पति के परिवार का दायित्व उठाने मे सक्षम नही है फिर भी, वह पति को दिये गये वचन के कारण ट्रेनिग करने के बाद नौकरी करने लगती है - ''श्यामा देव के न होते हुए भी स्वय देव की स्मृतियो के साथ जीती है वह न स्वय को देव के स्मृतिपाश से मुक्त कर पा रही है और न देव के उस वचन से जो उसने मरते समय श्यामा से लिया था कि वह उसकी मॉ एव बहन का पूरा ध्यान रखेगी।''[97]

आधुनिक विचारो वाली शैल उच्चवर्गीय नारी है। वह यौन-सबध तथा विवाह के विषय मे अस्थिर एव विद्रोही दृष्टिकोण रखती है। उसके इस व्यवहार के मूल मे पुरुष का बर्वरतापूर्ण व्यवहार

है। वह नारी के प्रति पुरुषो के एक भी दृष्टिकोण और एकाधिकार की भावना को वर्दास्त नही कर पाती। यही कारण है कि वह आजीवन किसी एक पुरुष के साथ जीवन व्यतीत करना नही चाहती, न ही उसकी अधीनता स्वीकार कर पाती है। ''जब स्त्री को एक आदमी से वॅध जाना है और सामाजिक व्यवस्थाओ के अनुसार उसके अधीन रहना है, उस सबध को चाहे जो नाम दिया जाय वह है स्त्री की गुलामी ही। अच्छे साथी तो एक व्यक्ति के कई हो सकते है।'' वह पुन कहती है - *''पुरुष कभी स्त्री के दृष्टिकोण से समस्या को देख नही सकता। स्त्री की सबसे वडी समस्या तो यह है कि उसे सन्तान पैदा करनी है। इसीलिए पुरुष जमीन के टुकडे की तरह उप पर अधिकार जमाने के लिए व्याकुल रहता है।* ''98

'रजना' कर्नल टॉमस से सबध विच्छेद करने के बाद 'डॉक्टरजॉसटीन' के सम्पर्क मे आती है। जीवन की रिक्तता दोनो को परस्पर आकर्षित करती है। रजना पुनर्विवाह का निर्णय लेती है और सुखद भविष्य की कल्पना करते हुए कहती है - ''मै घर बसाकर रहूँगी और यह व्यक्ति मेरे घावो पर मलहम-पट्टी कर सकेगा। जबकि मै इसके बमो से नष्ट घर की ईटो को फिर से जोड सजोकर इसका ड्राइग रूम सजा दूगी और जहॉ मै 'एक फ्लावर पाट' की तरह रह सकूँ। यदि मै एक बार भी ऐसा कर सकी तो मुझे सन्तोष होगा मेरा पति होगा, मेरे बच्चे होगे और मै पत्नी तथा मॉ रहूँगी। ''99

'नीलिमा' विधवा अध्यापिका मॉ की सहायता के लिए नौकरी करने का निश्चय करती है अत विशेष प्राशिक्षण से सम्पन्न होकर वह मॉ के ही स्कूल मे अध्यापन कार्य करने लगती है। इस नौकरी के माध्यम से इसमे आत्मविश्वास पनपता है और उसे आत्माभिव्यक्ति का अवसर भी मिलता है। इस कारण वह नौकरी मे ही अपने भविष्य को तलाशने लगती है और कैरियर को ही प्राथमिकता देने के कारण वह विवाह के प्रति शुष्क हो जाती है -''मैने एम0 एड0 करके शिक्षाशास्त्र मे पी0 एच0 डी0 करने का निश्चय किया है, फिर अपनी सस्था की ओर से ट्रेनिग के लिए विदेश जाऊगी लौटकर प्रबधको की योजना के अनुसार सस्था को नई शिक्षा पद्धति के मॉडल के रूप मे गठित करना होगा। ''100

''विमल'' की असफलता के कारण, मजबूर होकर इरा को बतरा के यहाँ टेलीफोन कॉल अटेण्ड करनेवालो की नौकरी करनी पडती है। एकदिन बतरा की निरीहता से द्रवित होकर वह उसके सामने समर्पण पर देती है -''मै विवाहित जीवन तो व्यतीत कर रही थी, पर उसकी सामाजिक सनद न मैने ली थी और न वतरा ने ही लेने की सोची थी। एक दूसरे के प्रति समर्पित हो जाने के बाद यह बहुत छोटी सी चीज लगती थी। ''[101] बदलते मूल्यो के नाम पर, नारी अनैतिक एव अमर्यादित जीवन जीने मे भी नही सकोच करती। उसका स्वसुख इतना प्रधान हो जाता है कि वह मर्यादाविहीन हो जाती है।

'नदी के द्वीप' नारी पुरुष सबधो की जटिलता को उभारता है। वैज्ञानिक 'भुवन' रसायन-शास्त्र मे शोध करता है। वह भारतीय सस्कृति का पोषक है और बहुमुखी प्रतिभा से युक्त व्यक्ति है। विदुषी 'रेखा', तर्क और ज्ञान से पूर्ण होने के साथ ही पति द्वारा परित्यक्ता नारी है। और अध्यापिका के पद पर कार्यरत है। भुवन और रेखा का परिचय कुछ दिनो बाद अन्तरगता मे बदल जाता है। दोनो एक-दूसरे को विविध विषयो द्वारा तर्क की कसौटी पर कसते है। एक दूसरे को अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते है और अन्तत एक दूसरे के प्रति पूर्णत समर्पित हो जाते है। रेखा गर्भवती हो जाती है, भुवन इस समाचार से प्रसन्न नही होता, रेखा को इस बात से दु ख हता है। जब वह विवाह का प्रस्ताव रखता है तो रेखा उसके साथ विवाह करने से अस्वीकार कर देती है वह उसे समझाता है -''उस बीनकाट सर्जन का तो सोचो, उसका क्या होगा? वह आवेश मे आकर अपनी मनोभावनाए व्यक्त कर देती है -'' उसकी बात सोचना है न इसलिए बात को नही सोच सकती। यह बात मै तभी सोच सकती थी जब यह स्वतत्र और एकमात्र बनकर मेरे सामने आती। ''[102] *रेखा द्वारा उठाया गया यह कदम नारी के बदलते मूल्यो का ही एक पडाव है। अब नारी अविवाहित रहकर भी सतानोत्पत्ति करने और उसके पालन-पोषण का गुरुतर दायित्व उठाने के लिए स्वय को तैयार कर रही है।* वह पूर्व की नारियो की तरह समाज की नजरो से बचना नहीं चाहती। जिस बात को स्वीकार करने मे उसका मन सकोच नही करता उसे सार्वाजनिक करने मे उसे कदापि लज्ञा महसूस नही होती। रेखा दृढ़ता भरे आत्मविश्वास के साथ अपने प्रेम के अनुभव को महत्व देती है। उसे अपने

कृत्य पर उसे कभी कोई पश्चाताप नही होता वल्कि नारी पुरुष सबधो के बाद वह इस परिणति को सहजता से स्वीकार करती है। *रेखा का परम्पराओ पर प्रहार करते हुए नवीन मूल्यो की ओर वढना नि सन्देह साहित्य-जगत के लिए रोचक प्रसग हो सकता है किन्तु समाज के लिए यह प्रश्नचिन्ह पैदा करता है।*

'लीला' स्वच्छन्द विचारो वाली युवती है और विश्व विद्यालय की फैशन परस्त छात्रा है। वह परम्परा निषेध के साथ ही माता-पिता के प्रति भी अवमानना का दृष्टिकोण रखती है। नारी के किसी भी वधन को,चाहे वह विवाह ही क्यो न हो अस्वीकार करती है। और नारी के मा स्वरूप के प्रति अपनी विकृत मानसिकता का परिचय देती है - '' मा कहकर नारी का गला घोटा गया है। मैने महाभारत मे पढा है, किसी समय स्त्रियॉ गायो की तरह स्वतत्र थी। ''[103]

आज की आधुनिक नारी अपना जीवन स्वतत्र रूप से जीना चाहती है इसके मूल मे आत्माभिव्यक्ति की भावना है। 'नीलिमा' ऐसी ही नारी है जो नृत्य-कला मे प्रवीण है और नृत्यागना के रूप मे अपने व्यक्तित्व को स्थापित करना चाहती है। वह अपनी महत्वाकाक्षा के साथ समझौता नही करती क्योकि वह इसे अपने जीवन का लक्ष्य मानती है और कहती है - ''मै इस रास्ते पर इतना बढ आई हूॅ कि अब लौटकर उस तरह की गृहस्थन नही बन सकती जैसी कि तुम मुझे देखना चाहोगे। ''[104]

'शीरी' समलैगिकता को बुरा नही मानती बल्कि वह इसकी जोर दार वकालत करती है। विवाहिता होने के वाद भी वह वासना की तृप्ति के लिए समलैगिक ससर्ग को मान्यता देती है, ''प्रिया की सहानुभूति चाहती है, सहानुभूति के बाद अपनत्व, अपनत्व के बाद स्नेह, स्नेह के बाद शारीरिक सम्पर्क। ''[105] भारतीय नारी, पाश्चात्य सस्कृति का अधानुकरण करने के कारण यह भी विस्मृत करती जा रही है कि वह जो कर रही है कितना प्रकृति है और कितना अप्राकृतिक। कुछ नया करने की चाह मे विकृति को बढावा देना अनुचित ही नही स्वय के प्रति अन्याय भी है।

'सुखदा' मध्य वर्गीय समाज मे उत्पन्न एक महत्वाकाक्षी नारी है। जो विवाह के पूर्व पति को लेकर अनेकानेक सपने बुनती है। विवाह के बाद स्थिति इससे भिन्न होती है, वह अपने पति के

साथ सामजस्य नही स्थापित कर पाती। फलत परपुरुष 'लाल' की ओर खिचती है। और क्रान्तिदल मे शामिल हो जाती है, दोनो अविवाहित रहकर भी पत्नी-पति के रूप मे रहते है। आज की नारी अविवाहित रहकर पति-पत्नी सबधो को सहजता के साथ स्वीकार करने लगी उसकी यह स्वीका-रोक्ति विवाह सस्था के प्रति प्रश्नचिन्ह लगाता है।[106]

'नीलिमा' न तो 'हरिवश' के साथ रह पाती है और नही उसके बिना। दोनो स्थितियो मे घुटती रहती है, साथ रहकर भी वह दूरी का अनुभव करती है। अपने पति की वासना पूर्ति का माध्यम बनने की अपेक्षा वह घर छोड कर कही चले जाना बेहतर समझती है क्योकि वह सबधो को जवरदस्ती बनाये रखने मे विश्वास नही रखती। महत्वाकाक्षी नीलिमा कहती है -'' पति-पत्नी के वीच जो चीज होती है, जो चीज होनी चाहिये वह हममे कब की समाप्त हो चुकी है, अगर मै ठीक से कहूँ तो वह चीज कभी थी ही नही। अब तो मै सोचती हूँ कि उस चीज को लाने की कोशिश करना ही बेकार है। ''[107]

'अर्चना', आधुनिक विचारो वाली तर्कशील नारी है जो पति-पत्नी के सहज सबध को स्वीकृति देती है। किन्तु पति के अत्याचारो को सहती नही है। उसकी मान्यता है कि जो पति,पत्नी को सरक्षण देने की बजाय उसको पीडित करने मे विश्वास रखता है ऐसे बर्वर पति का विरोध करना चाहिए, आदर देने की तो बात ही दूर है -''अगर मेरा हाथ बदबू करने लगे तो दवा करने के वदले उस अश को साफ कर देना ही श्रेयस्कर होगा। '' वह पुन कहती है - ''यह न समझे कि मुझमे सती-साध्वी नारी के पवित्र, पतिव्रता धर्म का सर्वथा लोप हो गया है, उसका समस्त कोष, हृदय मे अब भी सुरक्षित है। पर है वह केवल उसी प्राणी केलिये जो मेरे लिए सच्चा और एक निष्ठ है। ''[108]

'इरा' के जीवन मे कई पुरुष आते है। वह उनके साथ अपने अन्तरग सबध सथापित करती है पर यह किसी के साथ जीवन निर्वाह करने की नही सोचती। वह कई पुरुषो के अपने सबध को अनैतिक नही मानती और अपने जीवन मे किसी भी आने वाले पुरुष से यह नही कहती कि वह उसके जीवन मे पदार्पण करने वाला प्रथम पुरुष है। क्योकि वह विवाह को दो प्राणियो का मिलन नही मानती -''शादी से आत्मा का कोई सबध नही है अगर आत्मिक मिलन की ही बात होती हो शादियॉ

करने की उम्र पचास के बाद होती। ''[109] वह भारतीय दाम्पत्य सबध को नकार कर अपना नया सिद्धान्त स्थापित करती है और उसके अनुसार जीवन जीती है।

'तृप्ता' और 'मनोज' मानसिक आधार पर एक-दूसरे से विपरीत है, वह अपने का मार्क्स से प्रभावित बताता है, सभ्यता की वाते करता है किन्तु पत्नी से इसके विपरीत आचरण करता है। जबकि तृप्ता आधुनिक विचारो की समानता मे विश्वास रखने वाली नारी है उसके लिए नारी की स्वातत्रता महत्वपूर्ण है, वह पुरुष की अनाधिकार चेष्टा को सहन नही करती। अपने स्वाभिमान के कारण वह पुरुष पर आश्रित भी नही होनी चाहती है न ही अपने जीवन मे उसके अनावश्यक धौस या हस्तक्षेप को सहन करती है -''अपने पैरो पर खडी होकर कमा-धमा सकती हूँ किसी की मोहताज नही हूँ। ''[110]

'राजी' का पति 'अजय' सिम्मी से प्यार करने लगता है। इस बात को लेकर राजी पति से उलझने की बजाय अपने भाई के घर चली जाती है। कुछ दिनो तक वह तनाव की स्थिति झेलती रहती है। इसी बीच एक दिन उसे पता चलता है कि वह मनोज के प्रति आकर्षित हो रही है। वह अपने इन सबधो को सहजता के साथ लेती है किन्तु पति अजय को यह पसद नही कि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष से सबध बनाए जबकि वह स्वय यही काम करता है। किन्तु पत्नी को समाज और मर्यादा की दुहाई देकर ऐसा करने से मना करता है रोकना चाहता है। राजी उसके द्वारा दी गयी पीडा को याद करती है -'' *सब बेकार बात है। हमारा कोई समाज नही है। जो है, वह हम खुद है। हमे नई मान्यताओ को समझना चाहिए, अजय। नये जीवन दर्शन ने हमे व्यापक और मुक्त ढग से सोचने-समझने के रास्ते खोल दिए है। हमे पुरानी लकीरो से लिपटे न रहकर नये और आधुनिक के बारे मे सोचना चाहिए।* '[111] अन्तत वह विवाह कर लेती है और पुन कहती है -'' राजी ऐसे उथले आदमी को नगा कर देगी, सबके सामने। उसकी आत्मा का हर गलीज, गड्ढा समाज के सामने होगा। वह निर्णय करेगा कि राजी सही थी या गलत। ''[112]

'बंदिता' को ससुराल वाले दहेज के कारण प्रताडित करते है, उसे तरह-तरह से परेशान किया जाता है। उसका पति चुपचाप सबकुछ देखता रहता है, कोई प्रतिवाद नही करता क्योकि वह

व्यक्तित्व विहीन और कायर व्यक्ति है,।जो अपनी पत्नी की रक्षा करने मे असमर्थ है। अन्तत उसके त्रासदीय जीवन की परिणति स्टोव से जल जाने मे होती है। जिसके परिणाम स्वरूप वह भयभीत हो जाती है और वैवाहिक सवध के प्रति नकारात्मक धारणा बना लेती है क्योकि इन्ही पवित्र सवधो के कारण उसे असमय मृत्यु का साक्षात्कार करना पडता है। स्वस्थ हो जाने के बाद परिवार वालो को इस कुकृत्य के लिए क्षमादान तो दे देती है किन्तु उनके घर चलने के अग्रह को अस्वीकार कर देती है। इन सवधो के कारण ही उसने अनेक स्तरो पर झझावातो को झेला है वह उन्हे भूल नही पाती -'' शादी की कीमत देकर उसने जो आत्मबल पाया है, वही उसके भविष्य का आधार है ।''[113] अत पति से अलग रहकर स्वतत्र ढग से जीवन जीने का सकल्प लेती है।

'शिरी' का उद्देश्य सौन्दर्य और यौवन को यथावत बनाए रखना है। वह विवाहिता होकर भी पत्नी की मर्यादा का पालन नही करती बल्कि अनैतिक कृत्यो को बढावा देती है। वह पति का साथ जीवन भर निभाने मे विश्वास नही रखती यही कारण है कि वह अपने पति 'मिस्टर मेहता' को वृद्धावस्था मे छोडकर अन्य पुरुष के पास चली जाती है वह अपनी मानसिकता व्यक्त करती हुई कहती है - ''अभी अगर रोशनी की हल्की सी भी किरण बाकी है तो वह जीलो।''[114] इस तरह के मनोविकृत मूल्य समाज मे गदगी फैलाने के सिवाय और क्या कर सकते है?

'मदालसा' 'श्रीधर' से प्रेम करती है और उसके बच्चे की मा बनने वाली होती है, श्रीधर उसके साथ विश्वासघात करता है और अपने बच्चे को स्वीकार करने की बजाय समाज के सामने मदालसा को लाक्षित करता है। वह बडे धैर्य से काम लेती है। अपने भीतर पल बच्चे को असमय मारने की अपेक्षा उसे जन्म देने का निर्णय लेती है। समाजिक परम्पराओ को नकार देती है- जहॉ विवाहिता ही मातृत्व सुख लेने का अधिकार रखती है। वह अपने साथ हुए अन्याय का बदला लेना चाहती है और उपयुक्त समय आने पर समाज के सामने श्रीधर की वास्तविकता को प्रकट करने के लिए सकल्प लेती है - '' वह नारी के बदलते मूल्य का एक उदाहरण है जो प्रेमी के कुकृत्यो को भूलकर नया जीवन जीने की बजाय उससे बदला लेने की इच्छा रखती है। वह नारी होने के कारण समाज के सामने सच कहने डरती नही बल्कि निर्भय होकर सच को उजागर करना चाहती है -'' मुझे लज्जा

नही आती रत्तीभर भी। लज्जा उसे आनी चाहिए जो झूठ बोला, ऐसा नीचा गन्दा झूठ। कलाकार वनता है पहले आदमी तो बन -'' मै जरूर जी लूँगी, मॅरूगी नही और न यह बच्चा मरेगा। वह उसी तरह पैदा होगा जैसे सब बच्चे पैदा होते है, और वडा होगा जैसे सब बच्चे बडे होते है और उसका नाक-नक्शा वोलेगा, मै उसको साथ लेकर चलूँगी और खासकर वहाँ, जहाँ श्रीकात होगा, उसके दोस्त होगे उसकी प्रेमिकाए होगी। मै मुँह से कुछ नही कहूँगी और फिर सब कुछ कह दूँगी। फिर देखूँगी किसे शर्म आती है और कौन भागता है। अगर शर्मनाक काम मैने किया होगा तो मै शर्माऊँगी, मगर उसने किया होगा तो वह शर्मायेगा। जहाँ शर्म को ढोऊँगी वहाँ इस नफरत को भी ढोऊँगी।''[115]
मदालसा एक निर्भिक नारी है, जो किसी के भय से अपने अधिकारो को छोडने वाली नही है। अपने अधिकारो की लडाई वह स्वय लडना चाहती है। वह पुरुष की स्वेच्छा चारिता का विरोध करती है। *मातृत्व सुख विवाह का मुँहताज नही है। क्योकि नारी बच्चे के भरण-पोशण के लिए पुरुष की आश्रिता नही रही है। अमृतराय ने बडी वेवाकी के साथ नारी के बदलते स्वरूप को अपने उपन्यास का केन्द्रबिन्दु वनाया है। अविवाहित होकर भी बच्चे को जन्म देना और दुश्चरित्र प्रेमी से टकराने के लिए सोचना किसी नारी के लिए बडे दुस्साहस का काम है।*

पत्नी, पति के समान ही बराबरी का अधिकार चाहती है। वह अपना स्वतत्र व्यक्तित्व रखना चाहती है, अपने जीवन मे पति का हस्तक्षेप बर्दाश्त नही होता। यदि पति उसके सम्मान की रक्षा नही कर सकता तो वह भी उसे सम्मानीय नही मानती। सदैव से पुरुष किसी गलती के लिए नारी को सार्वजनिक स्थान पर अपमानित या उपेक्षित करना अपना जन्मजात अधिकार समझता है पर आज की नारी उसके इस प्रकार के दुर्व्यवहार को सहने के लिए प्रस्तुत नही है। 'उषा' उच्च शिक्षा से सम्पन्न एक स्वाभिमानी नारी है, जो लोगो के सामने पति द्वारा अपमानित होने पर आवेश मे आ जाती है -'' *आपने दूसरो के सामने डाट कर हमारा अपमान क्यो किया? आपकी वाइफ की इसल्ट आपकी इसल्ट नही? हमारी गलती समझी तो अकेले मे जो चाहे कहते, डाट लेते।* ''[116] ऊषा द्वारा व्यक्त की गयी यह प्रतिक्रिया नि सन्देह नारी पर अपना वर्चस्व समझने वाले पुरुष के लिए एक चुनौती है।

'तृप्ता' अपनी स्वतत्रता के कारण दिल्ली मे पति से अलग रहकर नौकरी करती है और

बच्चो को हॉस्टल मे डालकर अपनी तरह से जिदगी गुजारती है। किन्तु समाजिक भय के कारण वह अपना जीवन नि सकोच रह कर जी नही पाती। अकेले रहने वाली नारी पुरुषो की कुदृष्टि से नही वच सकती, इतना ही नही समाज उस पर झूठा लाक्षन लगाने से भी नही चूकता। इन सब विषमताओ को झेलने के कारण उसे लगता है कि नारी आत्मनिर्भर होने के बाद भी स्वतत्र नही रह सकती -'' आधुनिकता की रौ मे आकर हम निजता, स्वतत्रता और समानता की बाते करते है, पर वह सव छलावा है। '' पुन वह नारी के लिए पति एव परिवार की आवश्यकता को रेखाकित करते हुए कहती है - ''हम परिवार और पति के प्रति पूर्ण निष्ठावान होकर भी अपनी निजता और स्वतत्र की रक्षा कर सकते है। '[117]

नारी अब सिर्फ पत्नी बनकर रहने को तैयार नही है बल्कि पति के साथ अपने कई रिश्ते जोडना चाहती है। समय विशेष के अनुसार वह कभी उसकी सहचारी तो कभी प्रेयसी और कभी मित्र बनकर जीना चाहती है -''आज स्त्रियॉ न पुरुषो की सपत्ति है, न भोग सामग्री, न दासी । वे उनकी जीवन साथी है और उनके अधूरे व्यक्तित्व की पूरक। ''[118]

मा की इच्छा एव समाज के दबाव मे आकर शाशि विवाह कर लेती है किन्तु वह इस रिश्ते को कभी सहजता के साथ स्वीकार नही कर पाती अत इस रिश्ते के प्रति उसके समर्पित होने का प्रश्न ही नही उठता। उसका पति रामेश्वर क्रूर और शकालु प्रवृत्ति का है। वह उस पर सदैव शका करता है। दोनो के मध्य आए दिन टकराव होता है, वह एक दिन उसे अपने घर से निकाल देता है। शाशि उसकी क्रिया का कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही करती और शेखर के पास चली आती है। वह शेखर के जीवन को नयी दिशा देने मे ही अपनी सार्थकता समझती है -''स्त्री हमेशा से अपने को मिटाती आई है मेरी भूल हो सकती है, पर मै उसे अपमान नही समझती किसी सम्पूर्णता की ओर पुरुष की प्रगति मे स्त्री माध्यम है और वही एक माध्यम क्या हुआ, अगर उसके लिए सृजन पुलक, उन्माद नही, क्लेश और वेदना है। ''[119]

'इरा' चचल प्रवृत्ति की नारी का उदाहरण है। वह एक के बाद एक कई पुरुषो के सपर्क मे आती है, उसे इसतरह के जीवन मे कोई बुराई नही नजर आती बल्कि इससे उसे सतोष मिलता

है। वह पुरुष से प्रेम कम उन पर दया ज्यादा दिखाती रहती है। वह एक वेबाक नारी के रूप मे हमारे सामने आती है, तिलक द्वारा शादी का प्रस्ताव रखने पर उसे अस्वीकार कर देती है क्यो कि वह उससे यह नही कह सकती कि इसके पूर्व उसकी जिदगी मे कोई पुरुष आया ही नही था। सबधो की स्वीकृति के अर्थ मे वह एक ईमानदार और निर्भीक नारी है -'' तिलक तुम्हारी दुनिया वहुत कमीनी है। यहॉ औरत वगैर मर्द के रह ही नही सकती। चाहे उसके साथ उसका पति हो या भाई या वाप। कोई नही तो नौकर ही हो, पर आदमी की छाया जरूर चाहिए। इसीलिए हर लडकी कवच ढूॅढती है, वह चाहे पति का हो, भाई का बाप का या किसी झूठे रिश्तेदार का। इस कवच के नीचे वह अच्छा या बुरा हर तरह का जीवन बिता सकती है। ''[120] कमलेश्वर ने समाज मे नारी के लिए पुरुष की उपयोगिता क्यो है? इस प्रश्न पर सच्चाई के साथ प्रकाश डाला है।

'सुधा' विवाह के बाद पहली बार ससुराल से अपने मायके आती है उसका प्रेमी 'चन्दर' जो कभी सामाजिक दबाव के कारण उसे अपना नही पाता उसके साथ जोर-जवरदस्ती करना चाहता है। पहले की तरह वह विवाहिता सुधा पर अपना अधिकार प्रदर्शित करना चाहता है। जबकि सुधा इसके विपरीत मानसिकता रखती है। वह शादी के बाद भी चन्दर से ही प्रेम करती है किन्तु सामाजिक परम्परा के अनुसार विवाहिता होने के कारण वह शारीरिक रूप से अपने पति के प्रति ही समर्पण का भाव रखती है। वह अपनी मन स्थिति से चन्दर को अवगत कराना चाहती है किन्तु वह उस पर विश्वासघात का आरोप लगाता है। चन्दर द्वारा अनर्गल बाते करने पर सुधा उसके ऊपर क्रोधित होती है। किन्तु उसके द्वारा किये गए दुर्व्यवहार को बुरा नही मानती उसने सोचा उसके प्यार मे कही कोई कमी रह गयी थी जिसके कारण चन्दर की यह मनोदशा है अत वह चन्दर की विकृतियो को दूर करना अपना कर्तव्य समझती है - '' *चन्दर! तुम जानवर हो गये हो मै अपने को दण्ड दूॅगी चन्दर। मै मर जाऊॅगी, लेकिन तुम्हे इसान बनना पडेगा चन्दर।* ''[121] इस प्रकार सुधा ने उदात्त प्रेम की पराकाष्ठा को अपनी एकनिष्ठ भावना के माध्यम से व्यक्त किया है।

'शशि' के जीवन का एक दर्शन है वह अजीवन उसी के भीतर जीवित रहती है। उसके जीवन का केन्द्र बिन्दु 'आत्मवेदना' है। वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का विरोध करने की अपेक्षा उसे सहन करने मे विश्वास रखती है। वह दु:ख को बॉटना नही चाहती क्योकि उसे वह

व्यक्तिगत समझती है- ''दु ख उस आत्मा को शुद्ध करता है जो उसे शुद्ध करने की कोशिश करता है। शुद्धि दूसरे के साथ दु खी होने मे नही दूसरे के स्थान पर दु खी होने मे है। ''[122] इसप्रकार शशि जिस त्रासदी से गुजरती है उसकी छाया भी दूसरो पर नही पडने देना चाहती है। वह आत्मपीडित भारतीय नारी का एक उदाहरण है। जो सिर्फ सहने मे विश्वास रखती है कहने मे नही - ''अज्ञेय ने शशि के माध्यम से भारतीय दर्शन एव अध्यात्म के चितन को प्रस्तुत किया है। वैसे भी सारे *धर्म और दर्शनो मे जो सहने की शिक्षा दी गई है वह एकमात्र नारी के लिए ही बनायी गयी है। नारी को चुपचाप सब कुछ सहने की शिक्षा देकर ही तो पुरुष आजतक उसके साथ मनमानी करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। वचपन से ही इसी परिवेश मे पलने के कारण वह चुपचाप इसे अपना विशिष्ट गुण और अपनी नियति मानकर जीती रही है।*

'सुलोचना' का पति के साथ स्वस्थ सबध नही है अत वह अलग रहती है और अपने बलबूते अपनी जिदगी जाती है। उसमे आत्म सजगता एव गौरव की भावना भरी हुई है। लेकिन उसके मन मे कही न कही पति को लेकर पत्नी-धर्म की भावना है। यही कारण है कि जीवन भर उससे अलग रह कर भी वह पति के प्रति अपनी कोमल भावना का अत नही कर पाती और पति की मृत्यु के बाद स्वय उसका दाह-सस्कार करके पश्चाताप करती है - ''अपनी अनन्त यात्रा पर जाने से पहले उससे बूँद भर पानी की याचना कर रहा है। उसके स्नेह की अमृत -मय बूँद जिसे पाकर वह तृप्त हो उठेगा। इस क्रिया के द्वारा ही उसने अपना पत्नी धर्म निभाया। ''[123] प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के पूर्व तक कोई पत्नी-पति का मुखाग्नि सस्कार करने के लिए सोच भी नही सकती थी करने की तो बात ही दूर है। किन्तु शिक्षा के कारण सकीर्णताओ से विलग रहने वाली आज की नारी के मूल्यो मे निरन्तर बदलाव आ रहा है। वह परम्परा गत रुढियो का अनुकरण न करके अपने विचारो एव भावनाओं को महत्व देने लगी है। सुलोचना इसका उदाहरण है।

भारतीय पुरुष नारी पर आधिपत्य जमाना और शका करना अपना अधिकार समझता है वह यह बात नही समझ पाता कि उसकी इस प्रकर की मनोविकृतियो के कारण नारी की भावनाए आहत होती है, क्योकि वह भी इसान है उसकी भी अपनी भावनाए है। उसे भी स्वतत्र जीवन जीने

का अधिकार है। आज की नारी आत्म-निर्भर एव महत्वाकाक्षी होने के कारण पुरुष की अनाधिकार चेष्टा का विरोध कर रही है - ''तुम्हारे लिए मै सिर्फ औरत का शरीर हूँ, तुम्हारी वासना पूर्ति का साधन और तुम यह बर्दाश्त नही कर सकते कि मै इससे ज्यादा कुछ बन सकूँ।'' पुन कहती है - '' मै जीवन मे किसी भी परिस्थिति का समाना करने से नही डरती। मगर झूँठा सदेह मुझे एक ऐसे नश्तर की तरह लगता है जो घाव नही करता मगर हर समय चुभता रहता है।''[124]

अविवाहित 'राजेश्वरी' गर्भवती हो जाती है प्रेमी द्वारा बच्चे को न अपनाने एव अपने सबधो के साथ विश्वासघात करने पर वह निराश हो जाती है समाज के लाक्षनो से बचने के लिए मृत्यु का वरण करना चाहती है। उसकी इस दुर्बलता का मालती विरोध करती है, क्योकि वह चाहती है कि राजेश्वरी अपने हक की लडाई लडे और अपने उत्पीडन का बदला ले। समाज के सामने प्रेमी की धिनौनी हरकतो को वेनकाब करे, मरने की बजाय जीने के लिए सघर्ष करे। मालती का यह विचारधारा प्रशसनीय एव अनुकरणीय है -'' मै नही चाहती राजी तुम मरो, तुम्हारा मरना महेन्द्र जैसे सॉप-विच्छुओ की जीत होगी, तुम्हे चाहिए कि तुम हिम्मत करके जियो, जिल्लत के ऑसू पीकर जियो और शराफत के उस नकाब को, चीरो जो महेन्द्र ने पहन रखी है।''[125]

रेखा, भुवन से प्रेम करती है किन्तु विवाह किसी अन्य पुरुष से करना चाहती है। वह उससे विवाह भी नही करना चाहती और उसके प्रति पूर्ण समर्पिता तथा आस्थावान भी बनी रहना चाहती है। उसकी विचारधारा और भावना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नारी दोहरा जीवन जीने के लिए तैयार है। किसी विवशता या अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए नारी, शरीर से किसी अन्य पुरुष की होकर भी अपने प्रेमी के प्रति पूर्णत समर्पित रह सकती है। यानि विवाह सामाजिक बधन है तो प्रेम आत्मा का गठबधन - '' यह क्या है भुवन? वरसो अब अगले महीने से श्रीमती रमेश चन्द्र कहलाऊँगी उसके भी क्या अर्थ है? कुछ अर्थ तो होगे, अपने से कहती हूँ, मै इतना ही सोच पाती हूँ कि मेरे लिये यह समूचा श्रीमतीत्व मिथ्या है, कि मै तुम्हारी हूँ, केवल तुम्हारी, तुम्हारी ही हुई हूँ और किसी की भी नही न कभी हो सकती हूँ, . ये पार्थिवता के बंधन, ये आकार, ये सूने ककाल महाराज मेरे त्रिभुवन के महाराज किस सास में तुम आये मेरे हृदय पुर मे और कैसे

तुम चले गये, मेरा गर्व तोडकर, भूमि मे लुटाकर   पर नही भुवन, तोडकर नही, तुम्ही मेरे गर्व हो।
''[126]

'शोभा' विधवा होने के वाद पुन विवाह कर लेती है। किन्तु कुछ दिनो के वाद महसूस करती है कि अहकारी पति के चलते वह अपने जीवन के प्रति निराश होने लगी है तथा क्रमश अवसाद की ओर बढ रही है। एक व्यक्ति के कारण वह सबसे कटती जा रही है। उसके भीतर अकेलापन घर करता जा रहा है। स्वाभिमानी शोभा अपने पिता के घर न जाकर अपने पूर्व दिवगत पति के घर जाकर रहने का सकल्प लेती है और अपनी मन स्थिति व्यक्त कर कहती हुई अपने पति को पत्र लिखती है -'' एक ऐसे आदमी के साथ मैने अपनी जिदगी को उलझ जाने दिया है जिसके पास मुझे दे सकने के लिये कुछ नही था। कभी तुमने सोचा है कि तुम अपनी जगह कितने स्वार्थी, कितने हठी आदमी हो। क्या तुम्हारे जैसे आदमी को कभी किसी भी लडकी की जिदगी को अपने साथ उलझाना चाहिए था।   अकेलेपन की जिदगी ही तुम्हारे लिए एकमात्र जिदगी हो सकती है। ''[127]

नारी आर्थिक रूप से स्वय पर निर्भर होने के कारण अपने स्वाभिमान के साथ जीना चाहती है। वह पति के दुर्व्यवहारो के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है और उसके द्वारा किये जा रहे अमानवीय कृत्यो को झेलने से अस्वीकार कर देती है। उसके पास भी कानून से सरक्षण प्राप्त करने का अधिकार है वह भी दूसरा विवाह कर सकती है। इसलिए पुरुष अपनी मानसिकता को बदले, क्योकि वह अब मार खाने को तैयार नही है। शारदा पति से मार खाकर कहती है - *'' आजकल कोई जमाना है मार खाने का? हम आजकल की औरते है, उस जमाने की नही   आजकल औरते भी चाहे तो दूसरी शादी कर सकती है। सरकार ने इसके लिए कानून ऐसे ही नही बनाया। ''*[128]

'रत्ना' विवाहिता नारी है जिसके एक पुत्री है और उसकी सगाई होने वाली है। रेखा को छोडने के लिए वह उसके घर पर जाती है वही पर प्रभाशकर से उसका पहली बार आमना-सामना होता है। उसके बाद यह कामुक नारी वासना के दलदल मे फसती चली जाती है। प्रभाशकर और रत्ना होटल मे जाते है, प्रभाशकर शराब पीते समय कहता है - ''आज कितने दिन बाद पी रहा हूँ।   आप सामने हो तो पीने मे लुत्फ आयेगा मिसेज चावला। '' रत्ना ने माथे पर बल डालते हुए

कहा -''मुझे मिसेज चावला नही रत्ना कहिए। आप मुझे क्यो याद दिला रहे है कि मै विवाहिता हूँ, मै किसी दूसरे से वधी हुई हूँ? -''और रत्ना के मुख पर एक अजीव भडकीली सी मुस्कान आयी, -''रूप और जवानी तव तक कायम रह सकते है जब तक वे बधन न स्वीकार करे। ''[129]

'मालती' एक सम्पन्न पति की पत्नी है उसके पास समस्त लौकिक सुख है किन्तु वह इससे प्रसन्न नही है। क्योकि उसका पति उसकी भावनाओ एव इच्छाओ का सम्मान नही करता। उसके लिए धन ही सब कुछ है। इन्सानियत उसके लिए कोई अर्थ नही रखती वह अपनी व्यथा इस प्रकार व्यक्त करती है - ''न जाने पुरुष की यह मनोकामना नारी की ऑखो मे ऑसू देखकर पुरुष के एक प्रकार की तुष्टि क्यो मिलती है। ''[130]

'वीणा' अपने पति से अपरिमित प्यार करती है किन्तु सतानहीन होने के कारण वह सदैव व्याकुल रहती है। मातृत्व की चाह उसे दिलीप से शारीरिक सबध बनाने के लिए वाध्य करती है। वह नारी को सृजन का कारक मानती है इसके बिना नारी अधूरी और अतृप्त रहती है। वह मातृत्व के प्रति अपनी विचार धारा व्यक्त कर कहती है -'' लक्ष-लक्ष वर्षो से यह सृजन प्रक्रिया चली आ रही है, यही जीवन को शाश्वत और अमर्त्य बनाए रखती है, और न जाने क्यो आज उसे लगता है कि उसके बाद भी लक्ष-लक्ष वर्षो तक सृष्टि के अन्त तक यह प्रक्रिया चलती रहेगी, और उसकी पूर्ति मे उसका भी सहयोग होगा। आज उसने अपना सर्वस्व दान कर ही दिया है और प्रतिदान मे वह पा लिया है जो उसकी युग-युगान्तर की वाछित मनोकामना थी। ''[131]

पुरुष की आक्रामक एव आधिपत्य जमाने की प्रवृत्ति उसे भले ही सतोष देती है किन्तु नारी उसके अमानवीय व्यवहार से तिलमिला कर रह जाती है। वह यदि बोलती नही है तो इसका मतलब यह नही कि उसके भीतर विरोध नही उपजता है। वह पुरुष की मानसिकता को स्पष्ट करती हुई अपने विचार व्यक्त करती है - '' *यदि पुरुष का वश चले तो एक बार फिर सामत शाही परम्परा आरभ कर दे, जिसमे नारी बाहर का सारा जीवन भूलकर केवल घर की ही होकर रह जाये। फुरसत पाये तो पति का मुख-चन्द निहार ले।* ''[132]

'नीलम' का विवाह 'योगेश' से हो जाता है। कुछ दिनो दोनो के सबध, एक भारतीय

पति-पत्नी की तरह मधुर रहते है। अचानक योगेश के जीवन मे ''सीमा'' नाम की युवती का प्रवेश होता है और दोनो के मध्य दूरिया तथा खिचाव बढने लगता है। नीलम इन सबधो को लेकर कोई टकराव नही पैदा करती न ही पति को किसी तरह की उलाहना देती है बल्कि उन दोनो के सबधो को सहजतापूर्वक स्वीकार कर लेती है। स्वाभिमान से युक्त नीलम कहती है -'' योगेश जिस दिन तुम्हे ऐसा लगने लगे कि तुम सीमा के विना नही रह सकोगे। मुझे नि सकोच बता देना। मै एक क्षण का भी विलम्व नही करूँगी चुपचाप रास्ते से हट जाऊँगी। ''[133] नारी के बदलते हुए मूल्यो ने उसमे आत्मसम्मान की भावना के प्रोत्साहित किया है।

आज की नारी अपने प्रेमी द्वारा किसी अन्य युवती से विवाह कर लेने पर वह उस पर अधिकार दिखाने की वजाय अपना सबध ही समाप्त कर देती है। उसे लगता है कि अब भी यदि वह उससे प्रेम करेगी या प्रतिदान चाहेगी तो इससे उसकी पत्नी का जीवन दु खमय हो जाएगा। अत वह किसी नारी के अधिकार क्षेत्र मे अनाधिकार प्रवेश करने की अपेक्षा वहॉ से हट जाना बेहतर समझती है -'' प्रेमी के अधिकार क्षेत्र मे घुसपैठ वह नही करेगी। क्योकि ऐसा करना उसकी पत्नी के अधिकारो को छीनना होगा। पुन ''किसी से छीनी हुई चीज कभी अपनी नही होती। ''[134]

'साध्वी' विवाहेत्तर सवध को उचित मानने वाली नारी है, वह पति के जीवित रहते हुए अपने जेठ विक्रम से प्यार करती है और कुछ दिनो बाद वह उसके बच्चे की मा बनने की स्थिति मे आ जाती है। अभी तक दोनो के सबध से लोग बेखबर थे किन्तु अब छुपाना मुश्किल था। साध्वी अपने सबधो को बिना किसी सकोच या ग्लानि के अपने पति से बता देती है वह इसके परिणाम से भी नही डरती। उसका पति साध्वी के सबधो को सहजता से नही ले पाता और इसे अनैतिक मानता है तो साध्वी अपने प्रेम और होने वाले शिशु के प्रति अपने विचार व्यक्त करती हुई इस प्रकार अपने पति से कहती है -'' मुझे अपने किए पर कोई लाज नहीं है। कही भी उसके लिए पश्चाताप नही है। जो भी मैने किया उसे तुम नही समझ पाओंगे क्योकि तुम नही जानते कि प्रेम क्या होता है? और प्रेम की पूर्णता तक पहुँचने के लिए कोई भी बाधा, रूकावट नही बनती चाहे वह अपनी शादी का बधन क्यों न हो? प्रेम को पूरी तरह पा लेने पर जो सुख मिलता है वह अमूल्य है, अपूर्व है, उस सुख

को पा लेने पर कोई दुनियावी दु ख नही रह जाता।'' [135]

'शुभ्रा' जिस व्यक्ति से प्रेम करती है उसी से विवाह भी करना चाहती है किन्तु 'नीलकात' उसके अलावा किसी अन्य लडकी से शादी कर लेता है और अपनी दुनियॉ मे खो जाता है। शुभ्रा पहले तो परेशान होती है किन्तु बाद मे धीरे-धीरे स्वय को सभॉल लेती है। नीलकात के प्रति उसके मन मे घृणा उत्पन्न हो जाती है। वह आजीवन उसके नाम पर रोने की बजाय विग्रेडियर कोहली से शादी करके सामान्य जिदगी जीने लगती है। एक समरोह मे नीलकात से उसकी मुलाकात हो जाती है। वह उसे कोहली की पत्नी के रूप मे देखकर क्षुब्ध हो उठता है क्योकि वह शुभ्रा के जिस जीवन की कामना करता है वह उसके विपरीत हसती- खिलखिलाती अपने पति के साथ पार्टी का आनन्द लती हुई मिलती है। जब कि उसकी धारणा थी कि शुभ्रा, उससे अलग होने के बाद भी उसके प्रति ही अनुरक्त रहेगी और आत्म-निर्भर का रास्ता चुनकर अकेले रहकर जीवन गुजार देगी। वह उसके सुखीजीवन से चिढकर उसके वैवाहिक जीवन पर व्यग्य करता है। उसकी मन स्थिति समझकर शुभ्रा कहती है -'' *मै एम0 एस0 सी0 थी। इज्जत की जिदगी चुन सकती थी आत्मनिर्भर हो सकती थी कोई नौकरी करती, चप्पले चटकाती तुम्हारे नाम की माला जप सकती थी। तब मेरी तुम्हारी ऑखो मे समायी तस्वीर परफेक्ट हो जाती क्यो? और भी गम है जमाने मे मोहब्बत के सिवा तुम पर हावी हो सकता था, तो मुझपर क्यो नही?* '[136]

'रोजी' आधुनिक विचारो वाली प्रगतिशील नारी है वह प्रेम को आपसी सामजस्य का सबध मानती है। यदि प्रेमी-प्रेमिका के मध्य टकराव की स्थिति आ जाती है तो वह इन सबधो को बनाए रखना उचित नही मानती। प्रेम करने वालो के मध्य मनमानी को वह बलात्कार मानती है -'' जब दो आदमी मिलकर जमाने के मना किये हुए रास्तो पर चलते है, तब इश्क होता है, जब आपसी तकरार बढने लगे और इश्क करने वाले दोनो बदो मे से एक, दूसरे के साथ मनमानी पर उतर आए, तब इश्क बलात्कार हो जाता है। ''[137]

जिसके साथ बलात्कार किया जाता है, समाज उसे ही लाक्षित करता है। बलात्कृत नारी की पीडा समझने की बजाय लोग मौन बने रहते है और उसको लेकर तरह-तरह की अटकले

लगाते रहते है। जबकि बलात्कार करने वाला समाज मे शान के साथ धूमता है, लगता है जैसे उसने कितना महान कार्य कर दिया है। किन्तु नारी के बदलते हुए मूल्यो के कारण बलात्कार के प्रति भी उसका दृष्टिकोण बदला है। वह अव वलात्कृत नारी को दोषी मानने के लिए तैयार नही है क्योकि जिसने कुछ किया ही नही बल्कि पुरुष की यातना को सहा है वह अपराधिन कैसे हो सकती है? - '' सीमा का कुवारापन यदि बलात्कार से लूटा गया तो उसकी दोषी सीमा तो नही थी। और यदि लूटनेवाला खुश था तो लुटने की दुखभरी अभिव्यक्ति जिदगी देकर ही तो नही की जानी चाहिए? अपना कोई परिचित यदि शरीर पर घाव कर दे, तो पीडा होती है, दर्द रहता है बिक्षुब्धता बढती है। परन्तु धाव के कारण कोई आत्महत्या तो नही करता। ''[138]

'शहाना' मातृ-पितृ विहीन युवती है, उसकी सरक्षिका उसकी मौसी है। एकदिन उसकी मौसी भी ईश्वर को प्यारी हो जाती है, अब शहाना दुनियॉ मे एकाकी रह जाती है। दुनियॉ मे उसका ऐसा कोई नही है जिसके कधे पर वह सिर रख कर अपना गम बॉट सके। फिर भी वह परेशानियो एव अकेलेपन से घवराने वाली नारी नही है बल्कि साहसी और कर्मठ है। वह अपनी आर्थिक-स्थिति को मजबूत आधार देने के लिए 'फ्रीलान्सर' का काम करने लगती है वह अपनी वस्तु-स्थिति को स्पष्ट करती हुई कहती है - *'' मेरी किस्मत मेरी अपनी मेहनत, मेरा अपना पुरुषार्थ है। '*[139] इस प्रकार वह लोगो की सदाशयता पर जीने की बजाय अपने आपको आत्मनिर्भर बनाती है।

'सुधा', अति आधुनिक नारी है जो परम्पराओं को तोडकर नयी परम्परा बनाने मे विश्वास रखती है एक सीमा तक उसका जीवन वर्जना-विहीन भी है। वह प्रेम के परम्परागत रूप को मान्यता न देकर अपने विचारो के आधार पर उसे नयी परिभाषा मे आबद्ध करती है -'' मेरे विचारो मे तो प्रेम का होना और दॉत मे दर्द का होना एक ही बात है। जब होता है तो मनुष्य उसे छोडकर ससार भर से वैरागी हो जाता है। फिर जब वह चुक जाता है तो सब सामान्य हो जाता है स्मृति की कसक भर शेष रह जाती है। ''[140]

गीता राजश्री का अनमेल विवाह हो जाता है उसका पति कम शिक्षित है इसलिए उसके पति का अह बात-बात पर चोटिल हो जाता है। गीता अपने पति की मन स्थिति से भिज्ञ है। वह अपने

सवधो को कटु वनाने की अपेक्षा उसे मधुर वनाए रखने मे विश्वास करती है। अत अपनी उच्च शिक्षा को लेकर वह कभी भी पति के साथ किसी भी तरह का दुर्व्यवहार नही करती बल्कि उसके साथ एक भारतीय पत्नी की तरह विनम्र व्यवहार करती है। राज भारतीय पति की तरह उस पर रोब झाडता रहता है और वह उसे सहजता-पूर्वक स्वीकार कर उसकी पसद नापसद का ध्यान रखती है। इस प्रकार वह दोनो की जिदगी को घुटन से वचा लेती है। [141]

समय के साथ ही नारी का पुरुष के प्रति दृष्टिकोण भी बदल गया है। कभी एक निष्ठता को चरित्र की दृढता के अर्न्तगत रखा था पर आज इस तरह के विचार अपना मूल्य खोते जा रहे है। अव नारी का पुरुष के प्यार के प्रति नजरिया बदल रहा है। वह उस पुरुष से प्रेम करना चाहती है जो उससे हर मामले मे श्रेष्ठ हो। वह अपने से श्रेष्ठ के प्रति ही समर्पण-भाव भी रखना चाहती है। इस प्रकार की मन स्थितियो के विपरीत पुरुष के प्रति समर्पण को वह सिर्फ आपसी समझौता समझती है, प्रेम नही -" जिसके प्रति प्यार किया जाय, जिसके प्रति समर्पित हुआ जायँ उसके गुण-अवगुण उसकी क्षमता अपने से कुछ ज्यादा हो, बराबर या अपने से कम के साथ समझौता हो सकता है, समर्पण का सौदा नही। "[142]

राज अत्यधिक खुबसूरत नारी है किन्तु उसका विवाह बदसूरत व्यक्ति से हो जाता है। उसके पति के मन मे सदैव यह डर बना रहता कि कही वह उसे नापसद न कर दे। वह अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता है किन्तु अपनी वदसूरती को लेकर कुण्ठित रहता है। राज उसकी स्थिति को भीतर ही भीतर समझती है किन्तु पति के सामने कुछ व्यक्त नही करती है। वह अपने सुखद्-जीवन के विषय मे अपनी मित्र से बात करते हुए कहती है -" *बदसूरत पति की पत्नी होने मे जो सुख है, वह तू कभी नही समझ सकती कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी। हाथ को हथेली मे पति ऐसे उठाकर रखता है, जैसे काँच की गुडियाँ हूँ।* " [143]

आधुनिक नारी अपनी महत्वाकाक्षा एव अस्तित्व को बनाये रखने के लिए सघर्षमय दौर से गुजर रही है पुरुष समाज उसकी बदलती स्थिति को सहजता के साथ स्वीकार नही कर पा रहा है इसलिए उसे स्वयं को स्थापित करने के लिए अनेक झझावातो से गुजरना पड रहा है ऐसी

विषम स्थिति मे 'अनिता' जैविक (सैक्स) आवश्यकताओ के विषय मे कैसे सोच सकती है जबकि उसे अपने जीवन मे बहुत कुछ पाने की अभिलाषा है और जिसकी प्राप्ति के लिए वह सघर्षरत भी है -" माफ कीजिएगा मै उस मिट्‌टी की भी नही बनी हूँ कि शरीर पुरुष और मै के अलावा दूसरा कुछ ख्याल ना रहे। "[144]

'तुषार' अन्य लोगो की भॉति प्रेम को सेक्स का पर्याय नही मानती वल्कि वह प्रेम की अतिम परिणति सेक्स को मानती है। किन्तु विना प्रेम के सेक्स उनकी दृष्टि मे घृणास्पद है - *"प्रेम जैसे विशाल भाव का एक बहुत छोटा सा हिस्सा है सेक्स तो, लेकिन वाकई प्रेम शब्द को सुनते ही कई लोग क्या की क्या कल्पनाए करने लगते है और हकीकत यह है कि बिना ऊँचे दर्जे के प्रेम के, सेक्स भी एक उबकाई लाने वाली चीज है।"*[145] यद्यपि प्रेमचद युग से ही नारी के मूल्यो मे परिवर्तन का आरभ हो जाता है किन्तु यह गति उस समय तक अपने आरभिक अवस्था मे होने के कारण धीमी रहती है। किन्तु प्रेमचदोत्तर युग तक आते-आते इसमे क्रमश काफी परिविर्तन आता गया। यद्यपि नारी के जीवन मे पूर्णत परिवर्तन तो नही आया किन्तु वह परिवर्तन आशिक भी नही रहा इस समय तक नारी का मिला-जुला रूप दिखाई पडता है। एक बात विचारणीय है कि इस समय नारी या तो अपने सनातन रूप मे समाने आती है या पूर्णत आधुनिक रूप मे। अब तक वह पाश्चात्य परम्पराओ को आत्मसात कर भारतीय रुढियो को नकार कर आगे बढने लगी है। वह मध्यमार्गीय-जीवन नही जीना चाहती। सदियो से पुरुष-उत्पीडन का शिकार रही नारी अब और प्रताडित नही होना चाहती है। बॉध बनाकर रोकी गयी नदी की भॉति वह बहुत कुछ अपने भीतर झेलती रही है अब उस बॉध को तोड कर उन्मुक्त हो जाने के लिए सघर्ष करने लगी है। वह हर-हालत मे समाज के भीतर रह अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। अत वह सौकुमार्य का बाना पहनकर नही जीना चाहती बल्कि प्रत्येक स्तर पर अपने अस्तित्व को सुदृढ करने के लिए स्वय को तैयार करने लगी है।

संदर्भ ग्रंथ . सूची

	पुस्तक	लेखक	पृ0 सख्या
1.	आदर्श हिन्दू	मेहता लज्जाराम शर्मा	170-
2.	ठेठ हिन्दी का ठाठ	अयोध्या सिह 'हरिऔध'	---
3.	कनक कुसुम वा मस्तानी	प0 किशोरी लाल शर्मा	81
4.	सुशीला विधवा	लज्जाराम शर्मा	153
5.	पुर्नजन्म वा सौतियाडाह	प0 किशोरीलाल शर्मा	100
6.	आदर्श हिन्दू, भाग एक	मेहता लज्जाराम शर्मा	100
7.	लक्ष्मी देवी	---	---
8.	सुशीला विधवा	मेहता लज्जाराम शर्मा	183
9.	अँगूठी का नगीना	---	---
10.	आदर्श हिन्दू, भाग तीन	लज्जाराम शर्मा	228-
11.	अधखिला फूल	अयोध्या सिह हरिऔध	---
12.	कुछ विचार	मुशी प्रेमचद	32
13.	निर्मला	प्रेमचद	137
14.	गोदान	प्रेमचद	321
15.	गोदान	प्रेमचद	324
16.	परख	जैनेन्द्र	76-
17.	गोदान	प्रेमचद	45
18.	गबन	प्रेमचद	149
19.	गोदान	प्रेमचद	192
20.	तितली	प्रसाद	119
21.	गोदान	प्रेमचद	298
22.	विदा	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	42
23.	तितली	प्रसाद	---
24.	निर्मला	प्रेमचद	189
25.	सगम	वृन्दावन लाल वर्मा	---
26.	ककाल	प्रसाद	17

27.	वरदान	प्रेमचद	---
28.	प्रेमाश्रम	प्रेमचद	---
29.	हिन्दी उपन्यास एक अर्तयात्रा डॉ0 रामदरश मिश्र		431
30.	चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा	43
31.	ककाल	प्रसाद	159
32.	चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा	72
33.	तीनवर्ष	भगवती चरण वर्मा	131-32
34.	ककाल	प्रसाद	---
35.	गोदान	प्रेमचद	328
36.	चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा	113
37.	चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा	114
38.	गोदान	प्रेमचद	113
39.	पतिता की साधना	भगवती चरण वर्मा	113
40.	त्यागपत्र	जैनेन्द्र	---
41.	चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा	72
42.	गोदान	प्रेमचद	121
43.	निर्मला	प्रेमचद	115
44.	त्यागपत्र	जैनेन्द्र	58
45.	त्यागपत्र	जैनेन्द्र	64
46.	विदा	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	42
47.	त्यागपत्र	जैनेन्द्र	80
48.	कल्याणी	जैनेन्द्र	65
49.	सन्यासी	इलाचद जोशी	423
50.	देशद्रोही	यशपाल	184
51.	टेढे-मेढे रास्ते	भगवती चरण वर्मा	200
52.	सन्यासी	इलाचद जोशी	85
53.	झूठ-सच	यशपाल	45
54.	दादा कामरेड	यशपाल	---
55.	---	इलाचद्र जोशी	---

56.	नदी के द्वीप	अज्ञेय	---
57.	पथ की खोज	डॉ0 देवराज	243
58.	धरौदे	रागेय राघव	298
59.	उग्रतारा	नागार्जुन	98
60.	दिव्या	यशपाल	157-58
61.	ऋतुचक्र	इलाचद जोशी	496
62.	ऋतुचक्र	इलाचद जोशी	384
63.	पथ की खोज भाग दो	डॉ0 देवराज	218-371
64.	गर्मराख	उपेन्द्र नाथ अश्क	438
65.	मुक्तिबोध	जैनेन्द्र	34
66.	बाहर भीतर	डॉ0 देवराज	108
67.	अजय की डायरी	डॉ0 देवराज	110
68.	अजय की डायरी	डॉ0 देवराज	114
69.	रेखा	भगवती चरण वर्मा	194
70.	रेखा	भगवती चरण वर्मा	192
71.	रेखा	भगवती चरण वर्मा	110
72.	रेखा	भगवती चरण वर्मा	92
73.	प्रेत और छाया	इलाचद जोशी	310
74.	लोक परलोक	उदयशकर भट्ट	104
75.	नये मोड	उदय शकर भट्ट	305
76.	प्रथम फाल्गुन	नरेश मेहता	44
77.	बूँद और समुद्र	अमृतापाल नागर	83
78.	बूँद और समुद्र	अमृतापाल नागर	310
79.	झूठ सच	यश पाल	509
80.	झूठ सच	यश पाल	400
81.	बद अधेरे कमरे	मोहन राकेश	43
82.	एक इच मुस्कान	राजेन्द्र यादव मन्नू भडारी	601
83.	एक इंच मुस्कान	राजेन्द्र यादव मन्नू भडारी	75
84.	दो एकात	नरेश मेहता	59
85.	दो एकात	नरेश मेहता	99

86.	बद अधेरे कमरे	मोहन राकेश	508
87.	न आने वाला कल	मोहन राकेश	200
88.	न आने वाला कल	मोहन राकेश	49
89.	बलचनमा	नागार्जुन	170
90.	शोले	भैरव प्रसाद गुप्त	150
91.	उधडे हुए लोग	---	---
92.	डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	95
93.	दो लडकियॉ	रजनी पनिक्कर	14
94.	रूकोगी नही राधिका	ऊषा प्रियवदा	49
95.	पथ की खोज	डॉ0 देवराज	350
96.	डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	47
97.	अन्तरॉल	मोहन राकेश	74
98.	दादा कामरेड	यशपाल	44-50
99.	डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	69
100.	अपने पराए	शशिभूषण सिघल	200
101.	डॉक बगला	कमलेश्वर	80
102.	नदी के द्वीप	अज्ञेय	200
103.	घरौदे	रागेय राघव	39
104.	अधेरे बद कमरे	मोहन राकेश	300
105.	मछली मरी हुई	राजकमल चौधरी	36
106.	सुरवदा	जैनेन्द्र	---
107.	अधेरे बद कमरे	मोहन राकेश	501
108.	चलते-चलते	भगवती प्रसाद बाजपेयी	100
109.	डॉक बगला	कमलेश्वर	65
110.	पत्थरो का शहर	सुरेश सिन्हा	250
111.	गले-गले पानी	राजकुमार भ्रमर	200
112.	गले-गले पानी	राजकुमार भ्रमर	208
113.	अपने पराए	शशि भूषण सिघल	175
114.	मछली मरी हुई	राजमकल चौधरी	80
115.	नागफनी का देश	अमृतराय	42-53

116.	मेरी तेरी उसकी वात	यशपाल	495
117.	पत्थरो का शहर	सुरेश सिन्हा	320-334
118.	पत्थर युग के दो वुत	आचार्य चतुर सेन	98
119.	शेखर एक जीवनी	अज्ञेय	45
120.	डॉक बगला	कमलेश्वर	55
121.	गुनाहो का देवता	धर्मवीर भारतीय	270
122.	शेखर एक जीवनी	अज्ञेय	65
123.	सागर पारवी	बिन्दु सिन्हा	89
124.	अधेरे बद कमरे	मोहन राकेश	184
125.	बीज	अमृतराय	310
126.	नदी के द्वीप	अज्ञेय	290
127.	न आने वाला कल	मोहन राकेश	168
128.	न जाने वाला कल	मोहन राकेश	190
129.	रेखा	भगवती चरण वर्मा	135
130.	जाडे की धूप	रजनी पनिक्कर	20
131.	इन्द्र धनुष	अनन्त गोपाल शेलाडे	100
132.	जाडे की धूप	रजनी पनिक्कर	110
133.	सहधर्मिणी	---	34
134.	तदैव	---	180
135.	उसकी पचवटी	कुसुम भसल	110
136.	प्रति ध्वनियॉ	दीप्ति खडेलवाल	80
137.	फ्रीलान्सर	शुभा वर्मा	201
138.	कुमारिकाये	कृष्णा अग्निहोत्री	73
139.	फ्रीलान्सर	शुभा वर्मा	100
140.	तदैव	---	---
141.	समर्पण का सुख	मालती जोशी	80
142.	मेरे सधिपत्र	सूर्यवाला	110
143.	गैड़ा	शिवानी	170
144.	तदैव	---	180
145.	दहकन के पार	निरूपमा सेवती	120
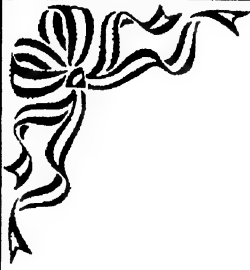
चतुर्थ अध्याय

तत्कालीन समाज में नारी जीवन : और १९८०-२००० तक के उपन्यासों में नारी का बदलता मूल्य :

(क) नारी का स्थायी रूप :

विभिन्न संबंधों के संदर्भ से

(ख) नारी का अस्थायी रूप :

बंधन की पीड़ा और मुक्ति की तलाश परम्परागत धारणा का विरोध

(ग)आर्थिक स्वतंत्रता और नारी :

- श्रमजीवी
- नौकरी
- व्यवसाय
- मॉडलिंग
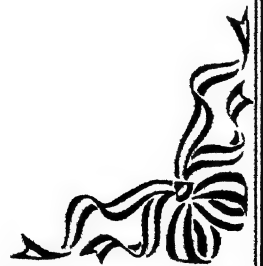
1980–2000 तक के हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी का बदलता मूल्य

यद्यपि समाज अनेक स्तरो पर बदल रहा है किन्तु नारी के प्रति उसके दृष्टिकोण मे कोई विशेष बदलाव नही आया है। आज भी समाज के भीतर नारी पुरूष को लेकर विभेद की स्थिति बनी हुई है। नारी अब भी उसके लिये घर के चौखट के भीतर की 'चीज' है क्योकि परम्परागत कार्य–विभाजन के आधार पर उसका कार्य, प्रजनन और परिवार के पालन–पोषण तक ही सीमित है। यही कारण है कि वह सदियो से इसी कार्य मे कुटती, पिसती, घुटती, मरती जा रही है। और पुरूष उसकी दबी–कुचली स्थिति के प्रति सहानुभूति रखने के बजाय यह कह कर टालता रहा है कि – *'औरतों का तो काम ही घर – गृहस्थी सँभालना है।* इस मानसिकता के कारण वह नारी के अस्तित्व को ही नही बल्कि उसके जी–तोड परिश्रम को भी नकारता रहा है। आर्थिक रूप से परावलम्बी नारी, परिवार मे 'बधुवा मजदूर' बनकर रह जाती है। अर्थोपार्जन के नाम पर घर से बाहर निकलकर काम करने वाला पुरूष, अपने दिन भर के परिश्रम के बदले रूपये लाता है, तथा रोव दिखाता हुआ उन रूपयो को पत्नी के हाथ पर रख देता है। उसकी प्रतिक्रया देखकर लगता है मानो वह धन–अर्जन के कारण बडा विशिष्ट और सार्मथ्यवान व्यक्ति है। इस धनोपार्जन के बदले वह स्वतत्रता–पूर्वक जीवन जीता है और परिवार मे मुखिया का स्थान प्राप्त करता है, जबकि सुबह से लेकर रात तक खटने वाली नारी सिकुड़ी – सिमटी घर के एक कोने मे पडी रहती है। घरेलू कामो के बदले न तो उसे इज्जत मिलती है और न ही उसका जीवन–स्तर सुधर पाता है।

अर्थशास्त्रीयो ने नारी के इस प्रकार के शोषण पर। एक निष्कर्ष देते हुए कहा है कि - *''किसी भी देश के समाज मे गृहस्थी से जुडी स्त्रियॉ कुल राष्ट्रीय-उत्पादन का कम से कम एक चौथाई उत्पादन करती है। पर इस उत्पादक-श्रम का किसी तरह का पारिश्रमिक उन्हे नही मिलता*

8/ (मुद्रा राक्षस, कथाक्रम, जुलाइ-सितम्बर 2002, पृ0 35)

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि नारी की दयनीय-स्थिति का प्रमुख कारण उसकी आर्थिक-निष्क्रियता है।

किन्तु आज की नारी अपने परिश्रम के मूल्य को समझने लगी है। आवश्यकता पडने पर अब उसे भी घर के भीतर यह कहते सुना जा सकता है कि - ''दिन भर मै भी तो काम करती हूँ कोई बैठी नही रहती।'' नारी अपनी दवी-कुचली स्थिति से निकलना चाहती है। वह भी दिन भर के काम के बदले यदि पारिश्रमिक नही मॉगती तो कम से कम सहानुभूति तो चाहती ही है। परिस्थिति बस भले ही कुछ न कह पाए किन्तु उसके मन मे अपनी निजता और सार्थकता को लेकर अधड चलता ही रहता है। ऐसा नही कि पुरुष उसकी मन स्थिति से भिज्ञ नही होता बल्कि वह अनभिज्ञ होने का नाटक करता है। क्योकि वह जानता है यदि नारी यह बात जान गई कि वह एक सोची-समझी रणनीति के तहत उसके अस्तित्व को नकार रहा है तो वह चुप नही बैठेगी। कुछ न कुछ तोड-फोड अवश्य करेगी। इसलिए वह यथा अवसर कुछ उपहार देकर या उसकी इच्छाये पूरी करके उसे खुश कर देता है। यदि नारी उसकी चालाकी समझकर भी चुप रह जाती है, उसके दिखावे और भुलावे मे आकर सारे गिले-शिकवे भूल जाती है तो वह पुरुष की दृष्टि मे महान हो जाती है, देवी हो जाती है। यदि नही कुछ हो पाती तो सिर्फ-इसान।

पुरुष, नारी की सामाजिक उपयोगिता को समझने मे असमर्थ रहा है सिर्फ इसलिए, 'क्योकि उसकी दृष्टि नारी के आन्तरिक गुणो पर जाकर ठहरने की बजाय उसके शरीर पर ही केन्द्रित होकर रह जाती है। और यदि नारी उसके प्रतिमानो मे खरी उतर गई तो उसे 'साध्वी', 'पूज्या', 'पतिव्रता', 'सुभगा' आदि बनते देर नही लगती। यदि इसके विपरीत घटित हो गया तो वह 'प्रमदा', 'कर्कशा', 'कुलटा' और न जाने क्या-क्या बन कर रह जाती है।

ऐसा नही कि निम्न या मध्यवर्गीय नारियॉ ही पुरुष के शोषण का शिकार है, उन नारियो की भी स्थिति इससे बेहतर नही है जो प्रतिष्ठित और समृद्ध घरो की 'धरोहर' है। खानदान की श्रेष्ठता अपनी जगह है और नारी की स्थिति अपनी जगह। इसीलिए नारी चाहे किसी भी वर्ग, जॉति या

जिसकी दुहाई लेकर समाज मे वहुत कुछ होता है वह भी उसका साथ नही देता क्योकि उसका सृजनहार भी तो पुरुष ही है! रहा सविधान, वह समाज मे लिखित रूप से समानता का दस्तावेज प्रस्तुत करता है और उसके नाम पर राजनीति करने वाले राजनीतिज्ञ नारी की सौदे-वाजी को अपना कर्त्तव्य समझते है। फलत वह अकेली पड जाती है, -खुद से भी लडतीं है और समाज से भी। किन्तु वह इस दमघोटू, वातावरण से निकलना चाहती है इसके लिए प्रयास भी कर रही है। कुछ नारियॉ अपने सघर्ष मे सफल भी हुई है जो आज नारी सम्मान की मानक बन चुकी है- *किरन बेदी, मल्लेश्वरी, पी0 टी0 ऊषा, जस्टिस फातिमा बीवी, मृणाल पाण्डेय, मेनका गॉधी, सुषमा स्वराज, मेधा पाटेकर, लता मगेशकर, आशा भोसले, कल्पना चावला, मैत्रेयी पुष्पा,प्रभा खेतान, आदि।*किन्तु इनकी सख्या गिनी-चुनी है जो सख्या की दृष्टि से समाज का प्रतिनिधित्व नही कर सकती, हॉ अपनी योग्यता के बल पर विश्व को नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता से सम्पन्न है। यह समाज की *'आधी आवादी'* का आदर्श तो बन सकती है किन्तु परिमाण की दृष्टि से *'आधी आवादी'* नही वन सकती।

यही कारण है कि नारी के बदलते मूल्य समाज को एकाएक बदलने की स्थिति मे नही है, इसमे काफी समय लगेगा, पर यह स्पष्ट है कि मूल्यो मे बदलाव की जो प्रक्रिया आरभ हुई है वह भविष्य मे सार्थक दिशा तय करेगी। उसने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि वह सती सीता-वनकर अपनी अग्नि-परीक्षा नही देना चाहती, वह सामाजिक रुढियो से दब कर नही मरना चाहती बल्कि सही अर्थो मे इसान बनकर जीना चाहती है। अब वह देवालयो की शोभा बनकर घुटना नही चाहती, खुली छत के नीचे सास लेना चाहती है। समाज का प्रवुद्ध-वर्ग, जो समतापरक दृष्टि लेकर चलता है वह नारी के स्वभावगत् परिवर्तन से तटस्थ कैसे रह सकता है? अत यह स्वाभाविक ही है कि जो समाज मे घटित हो रहा है उसे साहित्य मे आकार दिया जाय। साहित्य की समृद्ध विधा उपन्यास, इस परिवर्तन को सूक्ष्मता के साथ जॉच-परख रही है। बुद्धिजीवी उपन्यासकारो ने अपना मौन तोडा है, वह नारी के बदलते मूल्यो की हिमायत करने के लिए मुखर हुए है। यही कारण है कि नारी की सोच और उसके बिचार उपन्यासो मे समाहित किए जा रहे है। *उपन्यासकारो ने खुली ऑखो से नारी के परिवर्तन को*

मूल्याकन भी करने लगे है।

आज के उपन्यासो मे नारी के परम्परागत् रूप की अपेक्षा अपारम्परिक रूप को अधिक महत्व दिया जा रहा है। सच भी है, यदि यथार्थ परक-लेखन को महत्व देना है तो समाज के भीतर घुस-पैठ करनी ही पडेगी। क्योकि तथ्यो की जॉच-पडताल किए बिना उसकी प्रस्तुति सदेहपरक परिवेश बनाएगी। अत यह कहा जा सकता है कि *1980-2000 तक के मध्य लिखे जाने वाले नारी-विषयक उपन्यास समग्रता के साथ नारी की मन स्थिति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते है।*

उपन्यासो की विषय-वस्तु के केन्द्र मे नारी को रखकर उसके विभिन्न स्वरूपगत विवेचन-विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि यदि उसे आगे बढने का अवसर दिया जाय तो वह अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकती है। और यदि समाज उसे समझने को तैयार नही है तो वह समाज की नियमावलियो से अलग हटकर अपना व्यक्तित्व निर्मित करने के लिए सकल्पबद्ध है। वह सघर्ष करेगी, लहुलूहान होगी किन्तु हार नही मानेगी। अपने अस्तित्व की तलाश मे वह कॉटो-भरी राह चल सकती है किन्तु थक कर बैठ नही सकती। अब तक वह घुटन-भरी जिदगी जीते-जीते तग आ चुकी है, अत परम्परा की वोडियो को तोडना चाहती है, रुढियो से मुक्त होना चाहती है।

उपन्यासकारो ने नारी की दुखती रग को पहचान लिया है, वह बडी वेवाकी के साथ उसमे आ रहे परिवर्तन और आने वाले परिवर्तन को लक्षित कर रहे है। 'मुझे चॉद चाहिए' की 'वषा', 'उन्माद' की 'रजना', 'ऑवा' की 'नमिता', 'अर्न्तवशी' की 'वाना,' 'पीली ऑधी' की 'सोमा', 'छिन्न मस्ता' की 'प्रिया', 'इदन्नमम्' की 'मन्दाकिनी', 'अल्माकवूतरी' की 'अल्मा', ये सभी नारी-पात्र, अपनी-अपनी विषमताओं से, अपने तरीके से जूझते है, टूटते है पर विखरते नही। अन्धकार मय वर्तमान से प्रकाशमय भविष्य की दूरी तय करते है। बीच-बीच मे आने वाले व्यवधानो के चलते मानसिक उथल-पुथल की स्थिति से गुजरते तो है, पर थक कर बैठते नही बल्कि रुक कर दम लेते है, और पुन जोश के साथ आगे बढ जाते है।

'वर्षा', अपने भविष्य को बनाने के लिए खानदानी परम्परा को तोडती है और खानदान

'रजना', स्वसुख को ठुकराकर वेटी होने के बाद भी वेटे का दायित्व निभाती है, सामाजिक वर्जनाओ से टक्कर लेती है और जीवन-पर्यन्त पिता की सेवा करने के बाद पिता के मृतक-शरीर को मुखाग्नि देती है। (उन्माद् - भगवान सिह)

'नमिता', आर्थिक विपन्नता के कारण असमय ही घर की बडी बुढी नारी बन जाती है जो घर को मजबूती प्रदान करने के लिए सघर्ष भरे अनेक पडावो से गुजरती है। और पिता की दृष्टि मे *'बेटे का दर्जा'* हासिल करती है। (ऑवा - चित्रामुद्गल)

'वाना', सारिका की प्रेरणा पाकर अपनी योग्यता को पहचानती है और अपनी दवी हुई महत्वाकाक्षा को पूरा कर अपनी तरह अपना जीवन जीती है। अर्न्तवशी -ऊषा प्रियवदा)

'सोमा', पति के 'क्लीवत्व' व अमानवीय व्यवहार से तग आकर परम्परा और खानदानी विरासत के विपरीत जीवन चुनती है। वह इच्छित पुरुष के बच्चे की मा वनती है और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होती है। (पीली ऑधी - प्रभा खेतान)

'मदाकिनी', प्रेमी के विछोह की कसक और बलात्कार के दश को लकर ग्रामीणोत्थान मे लग जाती है। वह अपनी पूरी जिदगी, मजदूरो के अधिकार की लडाई लडने और समाज-शोषको को उनकी गलती का अहसास करने मे ही खत्म कर देती है। (इदन्नमम् - मैत्रेयी पुष्पा)

'अल्मा', एक बेहतर जिदगी जीना चाहती है किन्तु सामाजिक विकृतिया उसे असहज जीवन की ओर अग्रसर करती है। वह अनेक पुरुषो के हाथ लगती है पर किसी के हाथ नही आती। वह राणा के प्रेम मे पगी अनेक कठिनाईयो का सामना करती है पर अपनी जिजीविषा को नही छाडती। बचपन से ही उसका दामन कॉटो मे उलझता रहता है किन्तु वह उन्हे झटक कर आगे का सफर तय करती रहती है। (अल्मा कबूतरी - मैत्रेयी पुष्पा)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तत्कालीन समाज मे जो कुछ हो रहा है या जो सभावित है, उपन्यासकारो ने उन्हे बडी मेहनत से 'व्यक्तित्व' प्रदान किया है। अत समाज मे नारी जीवन और उपन्यासो मे नारी का बदलता मूल्य दोनो का तादात्म्य स्वयमेव प्रकट हो जाता है।

सभ्यता के विकास-क्रम के साथ ही परिवार नामक ईकाई का प्रादुर्भाव हुआ। अत स्वस्थ-परम्परा के पोषण के लिए मर्यादा और नैतिकता की अवश्यकता महसूस की गयी ताकि उसके आवरण मे परस्पर मानवो के मध्य ऐसा सह-सबध विकसित किया जाय जो परिवार को भावनात्मकता-दृढता प्रदान करने के साथ ही परस्पर-सबधो को भी आधार-भूमि दे सके। फलत आदर्श-समाज की स्थापना के लिए स्थायी-सवधो का जन्म हुआ। इन सवधो के आधार पर समाज प्रगति की ओर बढा। किन्तु कालान्तर मे समाज-परिवार और सबध एक-दूसरे के परिपूरक होते गए। एक के अस्तित्व मे होने का मतलब है दूसरे का भी निशान मौजूद होना, किन्तु उत्तरोत्तर मानवीय-विकास के साथ ही सबधो मे भी विभाजन की आवश्यकता महसूस की गई फलत उन्हे- स्थायी और अस्थायी सबध कह कर अलग कर दिया गया।

स्थायी सबंध - वह सबध कहलाया, जिसका मौलिक स्वरूप कभी खत्म नही होता। हॉ परिस्थितियो के चलते आपसी ताल-मेल न होने के कारण उनमे प्रेम या घृणा का भाव तो आ सकता है किन्तु उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह नही लगाया जा सकता। इन सबधो की दृढता इसी बात स समझी जा सकती है कि मृत्यु के बाद भी इनका महत्व खत्म नही हो पाता। इस प्रकार स्थायी सबधो के अर्न्तगत - *मा-पुत्री, पत्नी-पति, भाभी-ननद, सास-बहू* आदि को मान्यता दी गई है।

अस्थायी संबंध - जिन सम्बन्धो मे समयानुसार परिवर्तन की सभावना वनी, उन्हे इसके अर्न्तगत रखा गया। नारी के अस्थायी सबधो मे - *प्रेमिका, विधवा और परित्यक्ता* का ही रूप प्रमुख रहा।

समाज ने, इन सबधो को प्राय सम्मान नहीं दिया, न ही इन सबधो को स्थायित्व ही प्राप्त हो सका। यही कारण है कि इन सबधो को भोगनेवाली नारी की स्थिति सशयात्मक रही है। एक पुरुष, एक साथ ही, किसी का पति भी हो सकता है और किसी का प्रेमी भी। समाज उसके दोहरे-जीवन पर प्रश्नचिन्ह नही लगाता। किन्तु, नारी न तो प्रेमिका के रूप मे ही सर्वमान्य रही और न ही विधवा या परित्यक्ता के रूप मे ही। वह प्रेमिका के रूप मे असहजता महसूस करती है तो विधवा या

विहीन होते ही वह निन्दनीय हो जाती है, सर्वत्यज्य हो जाती है।

ध्यान रहे, *कि सवधो के स्थायी और अस्थायी रूप के मूल मे नारी की 'घेरेवन्दी' करने की प्रवृत्ति ही रही है* ताकि वह सवधो की पवित्रता की गठरी सिर पर लादे आजीवन दवी रहे, कभी प्रतिवाद करने की कोशिश न करे। सबधो की मर्यादा-पुरुष के लिए अनिवार्य नही है। क्योकि वही मर्यादा और नैतिकता का नियामक है अत स्वेच्छाचारिता की छूट उसके हिस्से मे आती है। पर अव समय बदल रहा है, नारी इन सवधो की वर्जनाओ को तोड रही है वह आवश्यकतानुसार इन्हे पुन परिभाषित करने का जोखिम उठा रही है। भले ही ऐसी दुस्साहसी-नारियो की सख्या अभी अत्यल्प है किन्तु भविष्य मे यह सख्या बढेगी इससे इनकार नही किया जा सकता। अब वह अमानुषिक पीडा से मुक्ति चाहती है, इसलिए चली आ रही परम्परागत्-धारणा का विरोध करने लगी है। वह विधवा और परित्यक्ता के रूप मे तिरस्कृत होने को तैयार नही दिखती न ही मरे हुए पति के नाम पर पूरी जिदगी रो-रोकर काटने को तैयार है अब *वह 'कुसुमा' (इदनन्नमम्) की तरह (पति द्वारा दूसरा विवाह करने पर) अन्य पुरुष का हाथ थामने को तत्पर है* - 'प्रेम' (इदन्नमम्) की तरह (खानदान की दुहाई देने पर भी) अपने जीवन का निर्णय स्वय लेने की दृढ-इच्छाशक्ति से सम्पन्न हो चुकी है। 'अपने-अपने कोर्णाक' की 'कुनी' की तरह पति और प्रेमी दोनो मे सामजस्य बिठाना चाहती है एक को पाने के लिए दूसरे को खोना उसे स्वीकार्य नही।

$ $ $ $ $

पुरुष ने आर्थिक सुदृढता प्राप्त कर, नारी को द्वितीयक बना कर छोड दिया था। वह सारे मान-अपमानो को सहकर भी चुप रहती थी, कुछ बोलती नही थी। जिन्दा थी पर जिदगी नही थी। वह अपनी परिस्थिति से समझौता कर चुकी थी। पर स्वतत्र-भारत की स्वतत्र-लहर ने उसे भी स्वतत्र जीवन का रास्ता दिखाया। वह क्रमश सघर्ष करती हुई आज आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर होने लगी है। अब उसके पॉवो मे बेडिया तो डाली जा सकती है पर उन्हे टूटकर विखरने की सम्भावना अधिक हो चुकी है। सामाजिक प्रतिरोधो के चलते वह कुछ समय ठहर तो सकती है पर

बर्दास्त करना नही चाहती। क्योकि वह जानती है- *''इतिहास साक्षी है कि पुरुष ने स्त्री को जिन दो प्रमुख मोर्चो पर लगातार कुचला है, उनमे एक है अर्थ और दूसरा सेक्स।''*(कथा और नारी सन्दर्भ डॉ0 निर्मला जैन - हस - जुलाई 1994, पृ0 41)

अत उसे प्रलोभन देकर या प्रताडित करके गुमराह नही किया जा सकता है। क्योकि वह अब आत्मनिर्भरता का आनन्द लेने लगी है। उसे यह बात समझ मे आ गयी है कि - वह आर्थिक स्वतत्रता के बल पर ही वास्तव मे जिदगी जी सकती है अन्यथा उसे पशुओ की तरह अपने मालिक की दया पर ही आश्रित रहना पडेगा।

वह आर्थिक-स्वतत्रता प्राप्ति के लिए स्वेच्छानुसार रास्ता चुनना चाहती है, किसी के दबाव मे आकर घुटने नही टेकना चाहती। हॉ उसे अपनी परिस्थितियॉ किसी सीमा तक प्रभावित कर सकती है किन्तु वह प्राय अपनी इच्छा को ही प्रथमिकता देती है। अब वह सिर्फ नौकरी ही नही बल्कि श्रमजीविता, व्यवसाय, और मॉडलिग के क्षेत्र को भी अपना रही है।

-''मुझे चॉद चाहिए' की वर्षा वशिष्ठ, स्वेच्छया फिल्म- व्यवसाय से जुडती है और उसमे सफलता प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करती है। अन्तत पारिवारिक एव सामाजिक अवरोधो का सामना करती हुई सफलता प्राप्त करती है। ''उन्माद्'' की 'रजना', आर्थिक- स्वतत्रता को प्रथमिकता देती है और विवाह के प्रश्न पर पिता से स्पष्ट कहती है कि वह नौकरी के बाद ही इस प्रस्ताव पर विचार करेगी। इसी प्रकार ''ऑवा'' की नमिता, अपने मॉडलिग के व्यवसाय को प्राथमिकता देती है और मा द्वारा बार-बार विवाह के प्रस्ताव रखने पर प्रत्युत्तर देती है कि - ''वह पहले अपना कैरियर पाना चाहती है फिर विवाह के विषय मे सोचेगी। यदि भविष्य मे विवाह हो जाएगा तो ठीक है अन्यथा उसे कोई जरूरत नही है। ''अपने-अपने कोणार्क'' की कुनी, दहेज के कारण पिता की अपमान-जनक स्थिति देखकर, विवाह करने से इनकार कर देती है और स्पष्ट शब्दो मे कहती है कि -''वह विवाह की खातिर अपने पिता का सिर नही झुकने देगी।''

पुत्री मा का ही अश होती है, अत दोनो के आत्मीय सबध निर्विवादित है। आज भी इन सवधो को किसी पहचान की आवश्यकता नही होती है क्योकि ये अपने आप मे स्वय एक पहचान है। आज भी यह धारणा विद्यमान है कि *'यदि किसी लडकी के विषय मे कुछ जानना हो तो पहले उसकी मा से मिल लो'*। यानि वेटी प्राय मा का ही प्रतिरूप होती है। दोनो एक दूसरे के दु ख-सुख की सहभागी होती है। पुत्री के भविष्य को बनाने के लिये यदि समाज से भी बगावत करनी पडे तो मा नही डरती और यदि मा के सुख के लिए अपनो से भी (भाई-भाभी, पति आदि) कट कर रह जाना पडे तो पुत्री सकोच नही करती। किन्तु आधुनिक युग ने हर सबधो की तरह इन सबधो को भी प्रभावित किया है। कभी-कभी देखने मे आता है कि मा-पुत्री के मध्य कटुता पैदा हो जाती है और दोनो एक दूसरे को देखना तक पसद नही करती। यद्यपि पुत्री मे इस तरह की भावनाए बहुत कम पायी जाती है पर इस तरह के सबधो की सभावनाए बनने लगी है। कभी-कभी मा के विकृत रूप भी दिखायी पडते है जो अपनी कुठा को बेटी पर थोपते समय सकोच नही करती।

'नमिता' अपने घर के सभी भाई-वहनो मे सबसे बडी है पिता की बीमारी के कारण घर सभॉलना उसकी मजबूरी हो जाती है। इसलिए वह शीघ्र विवाह नही करना चाहती। पति को लेकर उसने अभी तक कोई सोच नही बनायी है। सुबह से शाम तक मेहनत करने के बाद वह घर लौटती है और घर के कामो मे व्यस्त हो जाती है। पर उसकी मा को अपनी बेटी से कोई सहानुभूति नही रखती है, वह नामिता से चिढती है और उससे किसी तरह मुक्ति पाना चाहती है। इसलिए उसकी शीघ्र शादी कर देना चाहती है। एक दिन वह उसके विवाह के लिए, फिटर के पद पर कार्यरत लडके के विषय मे बात करने लगती है तो वह चिढ जाती है और आक्रोश मे आकर कहती है -' *'मेरे तर्पण की खातिर मौसी को कोई और ईट-गारा ढोने वाला मजदूर नहीं मिला।''* इस पर उसकी मा व्यग्य करती हुई कहती है- *''मजदूर आदमी नही होते? मरणासन्न पडे हुए बाप की औंकात है तेरे लिए कलेक्टर कमिश्नर खोजने की? पीछे कौन बैठा है? छाती पर सिल-सी जवान-जहील बेटी जो बैठाए*

हुए हूँ।" कोई निष्कर्ष न निकलता देखकर नमिता ने कहा -" अभी मुझे शादी व्याह नही करना। पॉच साल तक मेरे लिए दूल्हा खोजने मे अपनी एडियॉ न रगडे। छोटे भाई-वहनो को अधर मे छोड मै अपना बैडवाजा वजवाने बैठ जाऊँ? '[1] किन्तु उसकी मा नमिता की भावनाओ का सम्मान नही, करती और नही पारिवारिक-स्थिति के सच का सामना करना चहती है। फलत मा-वेटी मे अक्सर नोक-झोक होती रहती है। शुरुआत मा की तरफ से होती है जिसके जवाब मे नमिता को भी बोलना पडता है। उपन्यास के आरभ से लेकर अत तक दोनो मे सहज-सबध नही बनने पाते।

*उपन्यासो मे व्यक्त किए गए मा-बेटी के सबधो मे कटुता का मुख्य कारण-बेटी का महत्वाकाक्षी होना और समाज की परम्पराओ से आगे निकलकर कुछ बनने, कुछ करने की भावना की प्रबलता है।*जिसे परम्परा पोषित मा सहजता से स्वीकार नही कर पाती और बेटी को ताने देना शुरू करती है। फलत दोनो के मध्य दूरियॉ बढती जाती है ।

'वर्षा', अपने कैरियर के सिलसिले मे लखनऊ जाना चाहती है इसलिए वह अपनी अनुपस्थिति मे घर का काम-काज करने के लिए नौकरानी रख देती है। जिससे, अस्वस्थ मा को उसकी अनुपस्थिति मे कोई परेशानी न हो। किन्तु उसकी मा उसकी इच्छा को नही समझती और उसे अपशब्द तक कहने मे सकोच नही करती - *" देखो तो कुलच्छिनी को अब बुढापे मे मुझे कुजात के हाथ का ठुसाएगी। अरे नासपीटी, भले है तेरे बाप कोई और होता तो दुरमुस से कूट के रख देता मेरे भाग फूटे, जो नही रही वितोबुआ नही तो पैदा होते ही टेटुआ दबावा देती ।'*[2] वर्षा, बिना कोई प्रतिवाद किए लखनऊ चली जाती है जब वहॉ से घर लौटती है तो मा देखते ही चिल्ला पडती है " मा का कर्कश स्वर ऑगन मे छा गया, "जा के मर वही जहॉ महीना भर काटा है, बडे इसकी चुटिया पकड के ढकेल दो सडक पर पाप कटे।"[3] वर्षा अपने खानदान की पहली लडकी है जो पढ-लिख कर आत्म-निर्भर बनना चाहती है। किन्तु उसकी मा उसकी सोच के विपरीत खानदान मे सदियो से चली आ रही परम्परा का निर्वाह करना चाहती है। उनकी पहली प्राथमिकता है उसका अविलम्ब विवाह कर, उसे बडी बेटी की तरह ससुराल भेज देना करना इसलिए वह विवाह के पक्ष मे दलील देती है और उसकी अस्वीकृति पर क्रोध करती है। वर्षा को विवाह की

बात पर क्रोध आया फिर भी उसने मौन नही तोडा किन्तु उसकी मा लगातार कटु शब्द वोलती रही -" मडबे मे विठा दो इसे हाथ-पॉव वॉध के जान तो छूटे, "[4] इस प्रकार दोनो मा-बेटी के मध्य प्रारभ से लेकर अत तक कटुता ही व्याप्त रहती है। किन्तु वर्षा बीच-बीच मे मा के प्रति सहृदय हा जाती है, उसे लगता कि है मा परिस्थितियो के कारण इतनी विषाक्त हो गयी है अत वह अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहती है । " वर्षा को पुस्तकालय का काम करते दो ही दिन हुए थे कि उन्होंने बिस्तर पकड लिया। रक्त-चाप, दमा और दुर्बलता पहले से थी, अब यह रहस्यमय किस्म का बुखार आ गया था। जिस घर के जीवन मे कोई तर्क शीलता नही, वहॉ अगर गृह-स्वामिनी के ज्वर का तापमान अतार्किक ढग से ऊपर नीचे जाये, तो ताज्जुब नही होना चाहिए। वर्षा को नही हुआ और उसने चुपचाप रसोई का उत्तरदायित्व भी सॅभाल लिया। वह पॉच बजे उठ जाती। मा की चाय, दवाइयॉ और पथ्य देती। आठ बजे खाना तैयार करती फिर नहा-धोकर टॉफियो के एक पुराने डिब्बे मे दो पराठे -तरकारी रख कॉलेज को निकल जाती। "[5] इतना परिश्रम करने वाली पुत्री के प्रति भी उनका हृदय वज्रवत् ही बना रहता है। वह वर्षा को कभी भी स्वीकार नही कर पाती।

भाई के छोटे होने के कारण, 'नमिता' सोचती है कि वह यदि मृत-पिता का सस्कार करेगा तो, डर जाएगा इसलिए वह स्वय दाह सस्कार करने की इच्छा व्यक्त कर ती है। इस पर उसकी मा समाज के प्रतिरोध करने के पूर्व ही, ताल ठोक कर प्रतिवाद करने के लिए आगे बढी और पुत्रवती होने का गौरवगान करती हुई, परम्परा की दुहाई दो कर उसे अपशब्द कहने लगी - *" दिमाग तो नही चलगया तेरा नागिन, जो वैठे-ठाले अलाय-बलाय बकने लगी? न मै बॉझ हूँ न छूछी! कुलदीपक बेटा जना है मैने, बेटा! जना है तो भला किस दिन के लिए जना है? बोल? " नमिता ने उनकी बात का विरोध करते हुए कहॉ -" छुन्नू नही बैठेगा, कह दिया ना, मै बैठूगी। बाबू जी जिदा थे तो अकसर कहा करते थे मरने पर तू ही मेरा क्रिया-कर्म करेगी। तू मेरी समर्थ बेटी है। दस बेटो के बराबर "*। उसकी मा ने पुन लोगो के सामने आकर कहना शुरू किया -" समझाइए इस कुलबोरन को। क्यो खराब कर रही है अपने बाप की मिट्टी? नाटक-नौटकी का है यह समय?"[6] मा-बेटी के भावनात्मक रिश्तो को भी, वदलते हुए मूल्यो ने काफी हदतक प्रभावित किया है। आजकल

की अशिक्षित तथा रूढिवादी माए,पिता-पुत्री के मध्य आत्मीय एव मित्रवत-सवधो को देखकर जल-भुन जाती है। पुत्री के प्रति, नकारात्मक सोच को बढावा देने के कारण उनका नज़रिया वदल जाता है। उनके मन मे बेटी के प्रति प्यार नही बल्कि घृणा पैदा हो जाती है। एक तरीके से वह बेटी को अपनी सौत मानने लगती है। नमिता की मा अपनी बहन से कहती है -'' नमी बडी क्या हुई कि तेरे जीजा जी से गाहे -बगाहे होने वाले सलाह-मशविरे को भी आग लग गई। जीवन भर की मूरख ठहरी, यही साबित कर दिया बाप-बेटी ने। उसी हाथ की छगुनिया-सी यह मुनिया भी बहन के दाहिने निकलेगी। छुन्नू ही बुढापे की लाठी है, कुती। ''[7] परस्पर कटु-सबधो के कारण मा अपनी वेटी के दु ख को भी नही समझ पाती और अन्तत नमिता घर छोडकर चली जाती है। सघर्षशील एव कर्तव्य परायण बेटी के प्रति मा का प्यार नही उमडता वह उसके प्रति नफरत की आग मे ही जलती रहती है।

वही एक तरफ 'नीलिमा' की मा है जो अपनी बेटी के भविष्य को बनाने के लिए पूरे खानदान से टकरा जाती है और घर के बडो का प्रतिरोध करने से भी नही डरती - *'' नीलिमा को पढाया। पूरे खानदान के विरोध के वावजूद पढाया। उसके ताऊ ने तो बहुत सर मारा था कि गॉव के स्कूल से दसवी पास करली है। अब शादी कर दो। ना उनकी बेटी खूब पढेगी। तव जमाना और था। लेकिन अब वह जमाना नही रहा। बेटी को खानदानी परम्परा की दु खद -धरोहर क्यो कर सौपती। नीलिमा घर से बाहर आई। हॉस्टल मे रही और पढी। जितना दिल-चाहे पढो वेटी। शादी की क्या जल्दी है? जब लिखा होगा तो हो जाएगी शादी। ''* 8 इस प्रकार मा के सहयोग के कारण नीलिमा ने अपनी पढाई पूरी की और भविष्य मे लेक्चरर बन गयी। नीलिमा आगे चलकर प्रेम-विवाह करती है और अपने अह के कारण पति से अलग रहने का निर्णय ले लेती है। जब उसकी मा को सारी बात पता चलती है तो वह उसके मन की गलत धारणाओं को दूर करके उसे पुन दाम्पत्य-जीवन की ओर अग्रसर करती है। इस प्रकार मा की सूझ-बूझ के कारण उसका जीवन नष्ट होने से बच जाता है - *''क्या नही था तुम्हारे पास। लायक पति। पद-सम्मान। अधिकार और प्रतिष्ठा। सबसे बडी बात कि अपने पति के हृदय की सम्पूर्ण स्वामिनी भी तुम।* जैसे-चाहो काम करने की आजादी,

एक छत्र तुम्हारा राज्य था। और क्या चाहिए वेटी इस दुनियॉ मे। और खानदान? किस खानदान की बात करती हो शराबी जुआरी और ऐयाशो के खानदान की? जहॉ औंरते अपने आदमी की शक्ल बरसो ठीक से नही देख पाती थी।   अव तो हालात बहुत बदल गए है बेटी! तू तो पढी लिखी हें नए जमाने की ही। ''[9]

इस प्रकार 'रूपा' की मा स्वय अशिक्षित होते हुए भी अपनी बेटी को पढाना चाहती है और उसका विवाह आत्मनिर्भर बनने के वाद ही करना चाहती है। वह रूपा के होने वाले ससुर के पास विवाह का प्रस्ताव लेकर जाती है तो स्पष्ट शब्दो मे अपनी बात कहती है - *''शादी-ब्याह की वात तो अभी हो नही सकती। पढ-लिखकर दोनो अपने पैरो पर खडे हो जायेगे, तव देखी जायेगी। फिलहाल आप इजाजत दे तो 'वाग्दान' कर लेते . / ''*[10]

मा-बेटी के सबध आपसी विश्वास और ताल-मेल पर टिके होते है। यदि दोनो मे से कोई भी एक दूसरे के प्रति गलत धारणा रखता है,तो इन सबधो की आत्मीयता को आघात लगता है 'शारदा' को अपनी बेटी पर पूरा विश्वास था वह जानती थी कि उन्होने जो शिक्षा और सस्कार अपनी बेटी को घुट्टी मे पिलाया था वे व्यर्थ नही गए है। 'जूही' के पिता जब भी कहते, कि वे जूही को अधिक लाड-प्यार देकर बिगाड रही है तो वह बडे आत्मविश्वास से भर कर कहती -'' जूही की कभी कोई आदत नही बिगड सकती। मैने उसे नौ महीने गर्भ मे रखकर पोषण दिया था, उसी तरह आजतक उसके तन-मन को पोषण देती आयी हूँ। उसका रोम-रोम जानती हूँ। ''

जूही माता-पिता के बीच होने वाले वार्तालाप को सुनती है और मा के प्रति, अपने इस सकल्प को बार-बार दुहराती है कि वह मा के विश्वास को कभी नही टूटने देगी। उनके विचारो और भावनाओ का ही प्रतिरूप बनने की कोशिश करेगी। वह उसी सॉचे मे ढल जायेगी जैसे मा चाहती है -'' मै मम्मी के विश्वास को कभी भग नही करूँगी। उस दिन के बाद से वह मा के पीछे छाया की तरह लगी रहती- छोटे मोटे वर्तन,कपडे धोने से लेकर धूल झाडने का काम अपने अपटु हाथो से करती। ''[11]

'मन्दा', समाज-सेवा करने वाली नारी है। वह अपने पिता द्वारा अधूरे छोडे गए

अस्पताल के काम को पूरा करनी चाहती है। उसे अधिक रुपयो की आवश्यकता पडती है किन्तु वह अपनी मा से नही कहती। जव उसकी मा को गॉववालो के माध्यम से यह समाचार मिलता है तो उसे लगता है कि उसकी बेटी नेक-काम कर रही है जिसमे उसे भी सहयोग करना चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर, वह पचास हजार रुपये लेकर, उसके पास आती है - ''वेटा, जे धरो तुम। पूरे पचास हजार है। तुम्हारे है, तुम्हारे पिता के। अपनी मरजी से खर्च कर लेना। सुनी है, कि तुम जे अस्पताल को चलावे की सोच रही हो। नेक काम है बेटा! बाप अधूरा छोड गये है, तुम पूरा करवे की कोसिस करो। बस हमे माफी दे देना। मदा मा की छाती से लगी तो सम्पूर्ण तन शीलत-छाव मे उतरने लगा।'' मा के स्नेहिल-स्पर्श से उसका रोम-रोम तृप्त हो उठता है। दादी द्वारा मा के साथ दुर्व्यवहार करने पर मदा मा के प्रति अपनी भावनाए व्यक्त कर कहती है -''मै क्या करूँ बऊ? *खाना भी कैसे खाऊँ? बुरी है, अच्छी है ऊँच है, नीच है, मेरी तो वह मॉ है। यह नाता तो उचित अनुचित, मान मर्यादा, अमीरी-गरीबी, रूप-कुरुप और हानि-लाभ के परे होता है।* '[12]

इसी प्रकार 'सुगना' की मा के कोई बडा बेटा नही है किन्तु सुगना इस कमी को महसूस नही होने देती वह व्याभिचारी पिता के दुर्व्यवहार से मा को बचाती है और एक जिम्मेदार पुत्र की तरह घर के सारे दायित्व निभाती है। सुगना की मा अपनी बेटी की प्रशसा करते हुए भावुक होकर कहती है- *''मदा, आज जो हमारा इतना बडा बेटा होता तो लो इतेक ख्याल करता भी कि नही? नीचट करे जा की है हमारे बिटिया! हिम्मतवर! धीर बॅधाती है हमारी। समझाती है कि अम्मा, अव हम वडे हो गये है तुम फिकर न करियो।* '[13] इस प्रकार पति के आतक एव गैर-जिम्मेदारी से पीडित मा, अपनी बेटी की हिम्मत के कारण सामान्य जीवन जीने मे सफल हो जाती है।

निष्कर्षत यह कहा जासकता है कि नारी के स्वभावगत बदलते हुए मूल्यो ने जहॉ एक ओर मा-पुत्री के सबध को और दृढता प्रदान किया है,-आत्मनिर्भर होने के कारण पुत्री मा को आर्थिक सरक्षण देने मे सफल हो रही है वही दूसरी ओर मा द्वारा परम्परागत रुढियो को मान्यता देने के कारण उनके मध्य ईर्ष्या और घृणा का जन्म हुआ है।

पुरुष स्वेच्छा चारी प्रवृत्ति का होता है उसके सयम के लिए कोई नियम-कानून नही है। उसकी इच्छा ही सर्वोपरि होती है। कभी-कभी इन प्रवृत्तियो के कारण पति-पत्नी के बीच तनाव पैदा हो जाता है। जब पति सिर्फ अपने सुख-सतोष के विषय मे ही सोचता है और पत्नी के विषय मे लापरवाह हो जाता है, तो पत्नी सत्रास की स्थिति से गुजरती है। वाना, भावना प्रधान नारी है, वह चाहती है कि उसका पति 'शिवेश' उसकी भावनाओ को समझ कर ही कोई काम करे, किन्तु होता इसके विपरीत है। दिन भर काम करने के बाद जब वह रात मे विस्तर पर जाती है तो वहाँ भी उसे अपनी इच्छानुसार आराम करने नही मिलता। 'शिवेश' अपनी इच्छाओ की पूर्ति के लिए उसकी शारीरिक एव मानसिक-स्थिति की अनदेखी करता है। इस सवेदनाशून्य होने के कारण उसके भीतर आक्रोश पनपने लगता है किन्तु वह टकराव की स्थिति से बचने के लिए समर्पण कर देती है पर अपनी असहायता पर उसे खीझ भी होती है। वह स्वय को बिल्कुल अकेला महसूस करती है -"

"वह लहरो को पत्थर की दीवार से आ-आकर टकराते हुए सुनती है। यह सब आए दिन - जव भी शिवेश की इच्छा हो तब! चाहे वह थकी हो, सिर दुख रहा हो। अब मुझसे यह सब बर्दाश्त नही होता। पर आगे कोई रास्ता नही है। नदी मे डूबकर मर जाने का समय नही है। वाना उठकर बैठ गई। घुटनो को वाहो से घेरे मन ही मन अपने जीवन के सुख को दोहराती है।'[14] इस तरह से पत्नी - पति के बीच उत्पन्न असामन्जस्य की स्थिति उनके सबधो को सामान्य नही रहने देती।

प्राय पत्नी-पति के मध्य तनाव का कारण पुरुष का अह होता है परन्तु यदा-कदा पत्नी भी अह का शिकार हो जाती है। 'नीलिमा' ऐसी ही एक पत्नी है वह अपने खानदान एव जॉति-पॉति के संस्कारो मे जकडी एक अहकारी नारी है जब विवाहोपरान्त उसे पता चलता है कि उसने जिस व्यक्ति से प्रेम-विवाह किया है वह हरिजन जाति का है तो उसका राजपूत-रक्त उबल पडता है। प्यार की मदहोशी मे उसने इशू के व्यक्तित्व एव पद को देखकर विवाह कर लिया था। किन्तु वास्तविकता जानने के बाद वह उसके प्रति घृणा से भर उठती है। और उसकी समस्त योग्यताओं एव

उसके पवित्र प्यार को नकार कर सिर्फ जाति को महत्व देती है। 'इशू' उसे बहुत समझाता है किन्तु वह अपनी जॉतिगत श्रेष्ठता के अह मे, उसकी भावनाओ एव सातफेरो की पवित्रता को ठुकरा देती है और उसके साथ सवध विच्छेद भी कर लेती है। वह उससे अलग हो कर अर्थोपार्जन करती है और अकेले रह कर अपनी जिदगी जीने का निर्णय लेती है। इस प्रकार सिर्फ अह के कारण बना बनाया घर वीरान हो जाता है। कभी साथ जीने-मरने की हद तक एक-दूसरे को प्यार करने वाले दोनो पति-पत्नी, कभी भी एक दूसरे का मुँह न देखने की कसमे ले लेते है। उनके इस जीवन से दु खी होकर, नीलिमा की मा उसे समझाकर कहती है -'' क्या नही था तुम्हारे पास। लायक पति! पद-सम्मान! अधिकार और प्रतिष्ठा! और क्या चाहिए वेटी इस दुनियॉ मे। उसकी सारी अच्छाइयॉ खत्म करके तराजू पर सिर्फ उसकी जॉति रख दी। ''[15] नीलिमा मा की बात से प्रभावित होती है और अपने पति के प्रति सहृदय हो जाती है।

जब पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनाओं को समझकर कोई काम करते है तो उनमे सामजस्य भी बना रहता है और सबधो मे पारदर्शिता भी। किन्तु जब पति अपनी एकतरफा इच्छाए पत्नी पर थोपने लगता है तो वह छिपाव का रास्ता अपनाती है और यही से दोनो के मध्य दरार पडनी आरभ हो जाती है। 'वाना' दो बच्चो की मा है, वह तीसरा बच्चा नही चाहती। जबकि उसका पति शिवेश हर वर्ष एक बच्चे के आगमन की इच्छा रखता है। अत वाना उससे छुपकर 'सारिका' द्वारा लायी गयी 'गर्भ निरोधक' गोलियो का प्रयोग करती है - ''कैसा बडा लालच। शिवेश के खिलाफ कदम या अनचाहा बच्चा। उसने गोलियॉ रसोई मे छिपा दी है। अब वह रोज गोली खायेगी - *''वाना सोचती है कितनी आसान है शिवेश से चोरी। वह तो प्रसन्न है कि वाना अब उतना ना-नू नही करती, जब भी खीचो बिना प्रतिवाद किये झुक जाती है। ''*[16]

'नमिता' अपने माता-पिता के कटुतापूर्ण सबधो के कारण विवाह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपना लेती है। पत्नी के मन मे पति के लिए कोई कोमल-भावनाए नही है इसलिए अपने असमर्थ पति के प्रति उसे कोई सहानुभूति भी नही है। पति को 'सेरीब्रेल अटैक', पड़ जाता है वह उसे तुरन्त अस्पताल ले जाने की बजाय रूपयो की चिता करने लगती है। और बेटी द्वारा, पिता को

अविलम्ब अस्पताल पहुँचाने की बात पर कहती है - *''टैक्सी काहे बुलवा रही ? वेमतलव पच्चीस तीस ठुक जाएगे। घडी-खाड मे कुती पहुँच जाएगी गाडी लेकर।* '[17] इतना ही नही, जब वह जान जाती है कि उसके पति की मृत्यु निश्चित है उसके वचने की कोई उम्मीद नही है, तो वह दवा के लिए रूपयो की व्यवस्था करने के वजाय, अपनी वहन से जेवरो को बेचकर उसका निवेश करने के लिए कहती है। जबकि आर्थिक-स्थिति अच्छी न होने को कारण, बेटी दवाइयो की व्यवस्था के लिए इधर-उधर से रुपये उधार लेने पर मजबूर हो रही है। किन्तु उसे इस बात की कोई चिन्ता नही है बल्कि वह अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए प्रयत्नशील है। यह पत्नी की सवेदनाशून्यता का एक उदाहरण है जिसके साथ उसने कभी अपनी युवावस्था व्यतीत की और खुशियाँ बाँटी, उसके बीमार होते ही, उसकी असमर्थता का बोध होते ही, उसे जीवन से इस तरह काट कर फेक दिया जैसे वह व्यक्ति, उसके लिए कभी कोई मायने नही रखता था। आजकल दापत्य-जीवन मे इस तरह के बिखराव के अनेक उदाहरण सामने आने लगे है। जो समाज की स्वस्थ परम्परा को पतन की ओर अग्रसर कर रहे है। साथ-साथ रहने और एक दूसरे के दु ख -सुख बाँटने का वायदा करके गृहस्थ-जीवन मे प्रवेश करने वाले पत्नी-पति अब अपने फायदे-नुकसान के अनुसार इस सबध को महत्व देने लगे है।

पति द्वारा अपनी इच्छा थोपे जाने पर जब 'सोमा' ने प्रतिवाद किया तो, बलशाली भारतीय पुरुष ने उस पर अपने बल का प्रदर्शन कर, उसे लहु-लुहान कर दिया। सोमा अपनी असहाय-स्थिति पर क्षुब्ध हो उठी और उसे अपने एकाकी पन का एहसास हुआ। -''सोमा ने खिडकी के ऊपर टगे हुए आकाश को देखा, मई की गरम रात उफन रही थी। कोई कुछ नही बोलता। न कही कोई प्रश्न है और नही उत्तर। न कोई सुनने वाला है। आखिर मै इतनी अकेली क्यो हूँ? और वह भी उतने बडे घर मे। इतने सारे लोगो के बीच? अकेलापन बहुत-बहुत टीसता है। ''[18] वह अपने पति के दुर्व्यवहार के कारण उससे ही नही पूरे घर के लोगो से कटती चली जाती है।

नारी-पुरुष की स्वेच्छाचारिता ने पति-पत्नी के मधुर सबधो को कटु बनाकर रख दिया है। आजकल तथाकथित उच्चवर्ग के पति-पत्नी किसी सस्कारवस या सरक्षण की दृष्टि से इस सबध

को स्थापित नही करते बल्कि इसके माध्यम से वे उच्छृखल जीवन जीते है। दोनो का सबध, पति-पत्नी का सबध न होकर एक अनुबध मात्र होता है जिसके तहत वे एक-दूसरे के जीवन मे कोई हस्तक्षेप नही करते। उनकी अपनी अलग-अलग तरीके की जिदगी होती है। वह एक साथ, एक छत के नीचे रहते है पर उनकी भावनाए और इच्छाए कही और जुडी होती है। पुरुष तो उच्छृखल सदेव से ही रहा है। किन्तु आज की नारी 'वाजारू सस्कृति' को अपनाने के कारण बाजारू ही बनकर रह गयी है। उसके लिए यह सबध भी खरीद-फरोख्त तक ही सिमित रह गया है। वह पति को अपनी इच्छा के अनुसार प्रयोग मे लाती है अधुनिक पति भी, इस जीवन को सहजता से स्वीकार लेने मे कोई बुराई नही समझता। इसी प्रकार 'गौतमी ' एक चरित्रहीन और महत्वाकाक्षी नारी है। एक प्रकार से चरित्रहीनता उसकी महत्वाकाक्षा का ही परिणाम है। वह अपने आपको समाज मे प्रतिष्ठित करने के लिए अनैतिक कार्य करने से परहेज नही करती। उसके लिए पति घर की आवश्यक वस्तुओ से ज्यादा महत्व नही रखता। वह 'नामिता' से अपने स्वतत्र जीवन के विषय मे बताते हुए कहती है - *''मा के अलावा घर मे मेरे एक अदद पति है - नाम है अशोक। ठीक उसी तरह जिस तरह घर मे आलमारी है, फ्रिज है, वाशिग मशीन है, डिशवासर है।जितना वो मेरे काम आती है, बदले मे मै उनकी देखभाल करती हूँ - अशोक के साथ भी मेरा यही रिश्ता है। शेष मै क्या हूँ, कहॉ जाती हूँ किस के साथ सोती हूँ, सोना चाहती हूँ, सोती भी हूँ या ही सोती हूँ कोई मतलब नही उससे। घर मेरा है -''* अशोक को रहना है, रहे, न रहना हो, छोड कर चला जाए।''–[19] आधुनिक नारी स्तत्रता के नाम पर दुराचार और मर्यादा विहीनता को बढावा देकर, नारी स्वतत्रता पर प्रश्नचिन्ह लगा रही है। - यह भोगेच्छा, नारी को पतनगामी बनाने के सिवाय और क्या कर सकती है?

'शिवेश' ने 'वाना' को सदैव कायिक-स्तर तक ही समझा है वह उसके मन के भीतर कभी झॉक नही पाया, न ही, उसने उसे समझने की कोशिश की। अस्वस्थ वाना से जब वह चिडचिडेपन का कारण पूछता है तो वाना अपनी व्यथा उससे न कहकर मन-ही मन कहती है - *''तुम नही समझोगे - मेरे जिन सपनो और आशाओ के साथ तुम मुझे व्याह कर लाए थे, वह बिना पूरे हुए ही मिटकर विलीन हो गया।*मै चाहती थी औरो की तरह बडा-सा घर, नई मोटर गाडी बॉह भर सोने

की चूडियॉं, समाज मे इज़्ज़त और मिला क्या, मुफ्त के हरे कॉच के बर्तन, एक के ऊपर दो वच्चे - तुम रौदते रहे मुझे। अपनी भूख, अपनी लालसा के वश, और मै एक बार भी न कहपाई, ''मुझे यहॉ छुओ शिवेश मुझे अच्छा लगेगा। और तुम्हारे दिमाग मे आया तक नही कि वाना की अपनी सोच, अपना सुख हो सकता है। '' [20] अन्तत दोनो का वैवाहिक जीवन विघटित हो जाता है।

पति-पत्नी जब दोनो एक ही व्यावसाय से जुडे रहते है तो प्राय उनमे प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा हो जाती है। यदि यह प्रतिस्पर्धा स्वस्थ हो तो बुरी नही किन्तु उल्टी दिशा होने पर दोनो के मध्य एक दूसरे को नीचा सावित करने की प्रवृत्ति पनपने लगती है। जो पति-पत्नी के सबधो की मधुरता तथा आत्मीयता को खत्म कर देती है। 'निर्मला कनोई' और 'सजय कनोई' दोनो पति-पत्नी है, ये आभूषणो के व्यवसाय से जुडे हुए है। पति की अपेक्षा पत्नी का व्यवसाय ज्यादा व्यापक है और उसी के अनुपात मे उसका व्यक्तित्व भी। ये दोनो अपना-अपना अलग व्यवसाय करते है। दोनो समय-समय पर एक-दूसरे की उपेक्षा एव अपमान करने से नही चूकते। किन्तु व्यावसायिक स्तर पर आवश्यकता पडने पर समाज के समाने अभिन्न होने का नाटक जरूर करते है। अन्यथा दोनो *'अपनी डफली अपना राग'* अलापते रहते है। पति जब उससे यौन-सबध की इच्छा व्यक्त करता है, वह उसे अपमानित करने के लिए तुरन्त, अपनी मनोभावनाए व्यक्त कर कहती है - ''पुरुषो की अपेक्षा काम-कला मे स्त्रिया मुझे अधिक निपुण लगती है कभी ओबेराय के ब्यूटीपार्लर 'मार्टिना' गए हो? वहॉ वडी गजब की चीनी लडकियॉ है। काम-सतुष्टि के लिए वे हस्त कौशल से काम नही अलबत्ता फीस तगडी जरूर है उनकी, सौदा घाटे का नही। इच्छा हो तो कभी तुम भी वहॉ चले जाओ, मुझे कोई आपत्ति नही होगी। ''[21] इस प्रकार निर्मला कनोई अपने अस्तित्व को प्रतिष्ठित करने के साथ ही, इस मनोविकृति को अपना लेती है जिसके कारण व्यावसायिक स्पर्धा के साथ ही उनके असली सबधो मे भी मनमुटाव पैदा हो जाता है।

'सारिका' ने 'वाना' को जिदगी जीने का रास्ता बताया था। वह उसकी ऐसी सहेली वन गई थी जिसके आगे वह मन खोल कर रख देती थी। उसकी, आकस्मिक मृत्यु ने वाना को विक्षिप्त सा कर दिया, शिवेश उसकी मन स्थिति नही समझ सका। उसे भावात्मक प्यार क़ी शारीरिक देखभाल

की, जरुरत थी जबकि वह सिर्फ डॉक्टरो से ही उसका इलाज करता रहा। कुछ दिन वाना की देखभाल करने के बाद, अजी जाने लगी और वाना से अपना घर सभालने के लिए वोली, तो वह पति के ऊपर विफर पडी - *''कहॉ है वह, मेरी नैया के कर्णधार, मेरे पति वह कुछ क्यो नही करते? दो दिन घर नही सॅभाल सकते ? कुछ कर नही सकते। बस डॉ0 को बुला-बुला कर इजेक्शन कोचवाते रहते है। '*[22]

पति-पत्नी के मध्य कभी-कभी कटुता का कारण विवाहेत्तर सबध भी बनते है। यदि पुरुष-नारी के विवाहेत्तर सबध को स्वीकार नही कर पाता तो आधुनिक नारी भी इसे बर्दाश्त करने को तैयार नही है। वह पूर्व पत्नियो की तरह समझौता नही करती कि *'मेरे भाग्य मे यही लिखा था'*। बल्कि मुखर होकर विरोध करती है। बडी बहू को जब यह बात पता चलती है कि उसके पति 'जत्तन मिया' किसी अन्य नारी पर आसक्त है तो वह उनके प्रति आक्रोश से भर उठती है - '' *बडी बहू के दिल मे उस आदमी के लिए नफरत का तूफान खडा हो गया, जिससे उन्हे प्यार करना चाहिए था, जो उनका खाविद था।* लेकिन जत्तन मियॉ उन्हे लडने तक का मौका न देते थे। अगर बडी बहू कोई ऐसी बात करती थी जिससे लडाई का इमकान हो तो उठकर बाहर चले जाते थे। ''[23]

दूसरी तरफ 'बसुधा' है, जिसका दापत्य-जीवन इतना मधुर और आत्मीय रहा है कि वह पति की आकस्मिक निधन के बाद स्वय को असहाय समझने लगती है। और पुर्नविवाह के प्रस्ताव पर उसकी भावनाए आहत होने लगती है। निखिल मर कर भी, उसकी आत्मा, उसके रोम-रोम मे समा गया है। वह महसूस करती है कि उसका पति मरा नही है, बल्कि उसका हिस्सा बन गया है। वह उसकी स्मृतियो को सजोती है और उसके साथ बिताए जीवन को याद कर द्रवित हो उठती है। भाई, जब शादी के लिए उसे समझाता है तो वह व्यथित होकर सोचती है - *''उन्हे क्या पता कितनी छोटी-छोटी बातो पर बधक पडी है जिदगी, निखिल को आम खाने का शौक था तो आम देखने तक की इच्छा नही होती स्वतत्रता उसे नही है. . अपने आपसे नही . अपने भीतर से नही है। '*[24]

'वाना' महत्वाकाक्षी नारी है, जो समय के साथ कदम मिलाकर चलना चाहती है। जबकि उसका पति शिवेश परम आलसी और जो मिल जाय उसी मे खुश रह लेने वाला है। उसकी

कोई महत्वाकाक्षा नही सिवाय पत्नी और एक अदद बच्चो के। उसकी इस तरह की प्रकृति से वाना कुढती रहती है। वह उसके साथ, भावना के स्तर पर कभी जुड नही पाती सिर्फ सामाजिक सस्कारो के कारण उसके साथ दिन काटती है। वह चाह कर उसे न तो उगल पाती है और नही निगल पाती है -'' *ढाले बैठे-बैठे शिवेश की मौज-मस्ती सूझा करती है, बस यही बात है। वह शिवेश की ओर वक्त-बेवक्त ताकती रहती है,* पर शिवेश वही के वही। सपाट चिकना चेहरा निश्चित ,शरीर की मासल परते, गोल- मटोल, नाटे लगता ही नही कि यह इन्सान बेकाम-काज घर मे ठलुआ बैठा है। ''25

जब पति समलैगिकता को अपना चुका हो, और अपनी पत्नी की खोज-खबर सिर्फ अपनी ईच्छानुसार लेता हो तो, पत्नी-पति के प्रति अनुरक्त कैसे रह सकती है? 'सोमा' के मन मे भी पति के लिए बहुत से अरमान थे। किन्तु चरित्रहीन और कुसस्कारी पति को पाकर वह जीवन के प्रति निराश हो जाती है। उसकी जिदगी यत्रवत बनकर रह जाती है। सबके सामने प्रसन्नता का नाटक करती है जबकि अकेले मे रोती रहती है। पति 'गौतम' के लिए उसके मन मे कोई सवेदना नही है सिर्फ घृणा है, इसलिए वह उससे कटती रहती है किन्तु रात्रि की नीरवता उन्हे एक कमरे मे बद होने के लिए अभिशप्त करती है। पति-पत्नी के बीच वार्तालाप का एक प्रसग उनके आपसी सबधो को उद्घाटित करने के लिए पर्याप्त है - ''गौतम पूछता है - *''सोमा! तुम इतनी निढाल क्यो लगती हो? तुमको मेरे मे कोई रुचि नही? तुम मेरे बारे मे कुछ नही जानना चाहती? ''नही]'*

''सच मे ?''

''हाँ। सच मे -'' सोमा, गौतम से कुछ नही जानना चाहती थी। सोमा के प्रश्नो का उत्तर गौतम के पास नही था। *मगर मेरा यौवन? मेरे सपने? मै भविष्य देखना चाहती हूँ। लेकिन कौन-सा भविष्य? आखिर एक गृहस्थिन का भविष्य क्या हो सकता है? पति का सुख सतान की प्राप्ति, लेकिन शादी के इतने साल हो गए और अभी तक सोमा की गोद नही भरी थी। '*26

इसी प्रकार पति द्वारा अपमानित होने पर 'कुसुमा' सोचती है कि नारी-पुरुष के सबधो को किसने बनाया है? इन दोनो मे जमीन आसमान का अतर है - *''एक तो खूँटे बधाँ पॉगुर दूसरा*

सरग मे उडता पछी। ढोर और पक्षी सहचर नही हो सकते मदा '[27] *अब नारी पति का दासत्व स्वीकार करना नही चाहती बल्कि वह भी, बराबरी के स्तर पर जीने का अधिकार चाहती है।* उपरोक्त उदाहरणो से स्पष्ट हो चुका है कि पत्नी प्राचीन काल से चले आ रहे स्वरूप को यथावत बनाए रखने के लिए तैयार नही है, बल्कि वह सही मायने मे पति का अर्धांग बनकर रहना चाहती है।

यह सबध अपने आरभ से ही कटुता और मिठास दोनो लिए रहा है। आज भी इसमे कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है। भाभी के लिए ननद कभी सौत की तरह कष्ट दायी रही है तो कभी बेटी की तरह सुखदायी। इनके मध्य कभी-कभी मित्रवत् सबध भी देखने को मिलते है। कुल मिलाकर यह सबध अपने आप मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। घर मे आने वाली नयी नवेली बहू, सास ननद के सद्व्यवहार के बल पर ही घर मे अपनी जगह बना पाती है। और वही, अच्छी बहू के कारण ही, घर मे सास-ननद का महत्व भी बना रहता है। यदि दोनो मे से कोई भी नकारात्मक विचार रखता है तो कलह की स्थिति बनते देर नही लगती।

'कुसुमा' उदार दृष्टि कोण की नारी है, वह अपनी ननद के प्रति पुत्रीवत् प्रेम का भाव रखती है दोनो के सबध मा-बेटी और सखियो जैसे है। वे अपनी समस्त भावनाए एक दूसरे के साथ बॉटती है। उनके आपसी संबधो मे दुख-छिपाव के लिए कही भी कोई गुजाइश नही है। एक बार दोनो अपनी रिश्तेदारी मे जाती है, कुसुमा किसी काम से घर के बाहर चली जाती है। 'मदा', बुखार होने के कारण सुस्त पडी बिस्तर पर लेटी रहती है। उसे घर मे अकेली पाकर, रिश्ते मे मामा कहलाने वाला कैलाश उसके साथ बलात्कार करके भाग जाता है। जब कुसुमा को यह बात पता चलती है तो वह आग बबूला हो जाती है- *"हओ बिटिया नही रहेगे यहॉ। अभी जाते है भारत के पास। पूछे तो सही हिजडा की औलाद से कि जई साके पर राख रहे हो तुम हमे! इन नकटो के लिए ही विश्वास दिया था दादा को। "* [28] मन्दा द्वारा रोने और खुद को अपराधी समझने पर वह उसे समझाती है और मातृवत सलाह देती है- *"इतनी बडी जिन्दगानी मे अच्छा-बुरा घट जाता है बिटिया उसके कारन मन मे गॉठ लगाने से क्या फायदा? जो तुमने किया ही नहीं उसके लिए अपने को दोषी क्यो मानना? उस कुकरम की भागीदार मन्दा, तुम तो बिल्कुल नही! तनक देर पहले और आ जाते हम तो, खसिया बना देते नासपिटो को। "* [29]

इसी प्रकार - 'बसुधा' के पति की मृत्यु हो जाती है। वह ससुराल वालो के दुर्व्यवहार

से तग आकर अपने मायके चली आती है। भाई-और भाभी उसकी युवा उम्र को देखते हुए, उसका पुर्नविवाह कर देना चाहते है। जबकि वसुधा विवाह करना नही चाहती। उसकी मा भी उसकी इच्छा का समर्थन करती है किन्तु उसकी भाभी उसके भविष्य को लेकर चितित हो जाती है क्योकि, वह नही चाहती कि 'वसुधा' 'निखिल' के नाम, पूरी जिदगी रोते हुए बरबाद कर दे, वह अपनी सास को - समझते हुए कहती है - *''अम्मा जरा सोचकर तो देखो किसी की औरत मर जाए तो मसान मे ही रिश्ते आने लग जाते है, मरदो के और औंरते / जमाने गए जब चूल्हा झोकते कट जाती थी सारी जिदगी। आजकल की तरह मरदो की दुनिया मे रहना पडता तो पता चलता की भेडियो के बीच रहना कैसा होता है? हरवक्त नोचने को तैयार बैठे रहते है। कहॉ तक अपने को बचाते फिरो- तुम्हे कुछ लगता है तो लगे। मै तो कहूँगी, तुम्हारे भगवान की दुनिया मे इसाफ नही है कोई। दो धर्म है दो जातिया है और दोनो के लिए अलग-अलग तरह के नियम। '*[30]

कुछ भाभियॉ ऐसी भी होती है जो अपनी ननद की उपस्थिति बर्दाश्त नही कर पाती। भले ही ननद, कितनी भी अच्छी क्यो न हो? वे कुठा-वस अपनी ननद के साथ भी वैसा ही व्यवहार करती है जैसा कि उनके साथ हुआ रहता है। 'कुनी' लेक्चरर के पदपर कार्यरत है, भाई-बहनो के भविष्य को बनाने के चक्कर मे उसने अपनी शादी के विषय मे कभी सोचा ही नही। उसकी छोटी भाभी 'कावेरी' सदैव उसके पीछे पडी रहती है कि किसी भी तरह, वह शादी करके घर से चली जायॅ। छोटी होने के कारण, वह घर की बडी और आत्मनिर्भर लडकी कुनी के सामने प्रत्यक्षत तो कुछ नही कहती किन्तु अप्रत्यक्ष-रूप से बिष ही उगलती रहती है। कुनी अपने विषय मे भाभी के विचार व्यक्त करती हुई कहती है -'' मदा से बतियाती वह बार-बार प्रत्यक्ष-परोक्षरूप से मेरा ही प्रसग उठाती है, -' ' *मेरे वप्पा ने तो मेरे बीस साल पूरे करते ही मेरे लिए वर ढुढॉई शुरू कर दी। मैने जिद् की कि मै पढाई पूरीकर लूँगी तो मान गए। मै और एकाध साल कुँवारी रहती तो बोऊ पता नही क्या करती? . दीदी, तुम बोऊ से कहती क्यो नही? तुम बडी बहू हो, तुम्हारी बात मान लेगी। नानी को अब शादी कर ही लेनी चाहिए। बाद मे तो कोई दुहाजू भी नही मिलेगा। '*[31]

'वर्षा' एक महत्वाकाक्षी नारी है, जो आत्मनिर्भर बनने के बाद ही विवाह के विषय मे

सोचना चाहती है। किन्तु निम्न मध्यवर्गीय परिवार की होने के कारण, घर वाले उसका किसी तरह विवाह सम्पन्न कर देना चाहते है। जबकि वह अपनी पढाई पूरी करना चाहती है ताकि भविष्य मे नौकरी कर सके। भाई और माता-पिता दोनो उसको पढाने और नौकरी करने के पक्ष मे नही है वे किसी तरह अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते है। उसकी बडी भाभी 'मोहिनी' उसका पक्ष लेने की बजाय, घर के सभी सदस्यो मे सबसे ज्यादा विरोध करती है। सदैव पति के कान भरती है और अवसर मिलने पर वर्षा को व्यग्य सुनाती रहती है। वह भी चाहती है, कि किसी तरह यह यहाँ से चली जायँ ताकि वे घर मे अकेले मौज मस्ती कर सके।[32]

'कुसुमा' एक आदर्शमयी भाभी है जो अपनी ननद का पग-पग पर साथ देती है। यदि कोई उसकी ननद से मजाक भी कर दे तो वह बर्दाश्त नही कर पाती और तुरन्त जवाव दे देती है - मदा की सगाई मकरन्द से कर दी जाती है। पर्व पर, गॉव की समस्त नारियॉ एकत्र होकर हॅसी-ठिठोली करती है। वे गुमसुम बैठी मदा को भी नही छोडती - ''ओ मद! तुम्हे तो नही छू लिया मकरद ने? मन्दा लोगो से छिपकर कुसुमा के पीछे दुवकने लगी '' मदा को मकरद के साथ विताये मधुर क्षण याद आने लगते है और वह भय तथा शर्म के कारण घवरा जाती है। कुसुमा उसकी स्थिति समझ जाती है इसलिए- '' कुसुमा उसे अपनी आड मे दुबकाते हुए बोली- *''ऐसे न छेडो सरजू! अबे कुवॉरी कन्या ठहरी।*''[33] जब कि कुसुमा को मालूम है कि मदा के साथ बहुत कुछ हो चुका है। फिर भी वह घवरायी मदा को अपने शीलत स्नेह का सरक्षण प्रदान करती है और *उसे 'कुवारी कन्या' कहकर सबोधित करती है ताकि मदा के मन मे समाया सत्रास खत्म हो सके।*

'हर्ष' की आकस्मिक मृत्यु के बाद 'वर्षा' अकेली हो जाती है किन्तु उसकी वडी ननद- उसके प्रति कोई। सहानुभूति नही रखती बल्कि व्यग ही बोलती है। जब पता चलता है कि वर्षा मा बनने वाली है [तो अपने बडे होने का] अधिकार जताने के लिए चली आती है और कहती है - *''क्यो? हमको बतलाना तुम्हारा फर्ज नही था?'' इस पर वर्षा प्रतिक्रिया व्यक्त कर कहती है- ''फर्ज निभाना सिर्फ मेरी ही जिम्मेदारी रह गयी है? मेरे होने वाले पति के शव के सामने आपने मुझपर ऊल —जुलूल अभियोग लगाये। मै यहॉ अपने दु ख-दर्द के साथ अकेली जूझरही हूँ। आपने एकबार भी पूछा कि*

वर्षा,तुम कैसी हो? "

'सुजाता' के साथ सबध की कड़वाहट की चोट वर्षा के गले मे नमी बनकर उभरने लगी, " अपनी डोली उठते समय आपने कहा था, हम दोनो एक-दूसरे की जिदगी बॉटेगे। जब इस साझे की सबसे ज्यादा जरूरत थी तभी आपने मुझसे मुँह फेर लिया। " सुजाता ने सपत्ति के बँटवारे के भय से परेशान होकर वर्षा को सलाह दिया कि जब हर्ष जीवित नही रहा तो वह उसके बच्चे का गर्भ पात क्यो नही करवा देती -"तुम इससे छुटकारा क्यो नही पा लेती? " वर्षा ने जवाब दिया - *" मुझे लम्बे समय तक शून्य मे जीना है और अब यही मेरा सहारा बनेगा। "* सुजाता को वर्षा का प्रतिवाद अनुचित लगा और वह मन मे छुपे, सम्पत्ति के बँटवारे के भय को छुपा नही सकी, अपनी आपत्ति दर्ज करते हुए,- क्रोधित होकर सुजाता ने कहा -"अगर इसकी परवरिश मे हम तुम्हारी मद्द न करना चाहे तो? " वर्षा के स्वाभिमान को ठेस लगी- *"आपसे मद्द मॉगी किसने है?" वर्षा का मुँह तमतमा उठा।"मै जैसी दीन-हीन पैदा हुई थी मेरा बच्चा वैसे पैदा नही होगा। वह अपनी मा के घर मे मुँह मे चॉदी के चम्मच के साथ पैदा होगा, जैसे उसका बाप हुआ ऐसी ओछी बात तो चित्रनगरी मे पैदा होने वालो के मन मे आती है, आप तो प्रतिष्ठित परिवार के लोग है। '*[34]

'नर्मदा' जब पहली बार बहू बनकर ससुराल मे आती है तो लोग उसे बुलाने के लिए, अनेक तरह का नाम सुझाते है पर कोई नाम उपयुक्त नही लगता। अत मे 'मदा' उसको नर्मदा नाम देती है। जिसे सर्वस्वीकृति से मान लिया जाता है। यही से ननद भाभी के सबधो की मधुरिमा का आरभ होता है- *"तबसे मन्दाकिनी को बहू बहुत मानने लगी। मन की भाषा पढ लेती है मदा। बहू नर्मदा मन्दाकिनी के सग-साथ हँसती-बोलती है। अपने मन की कहती है। उसकी सुनती है। अतरग सखी हो गयी मदा। बहू निछावर रहती है। मदा पर। '*[35]

सभी जानते है कि परिवार मे सास, ननद की महती भूमिका होती है। यदि ननद अच्छी है तो वह भावज के लिए अच्छी सखी साबित हो सकती है। कभी-कभी देखा जाता है कि सास अनावश्यक रूप से बात-बात पर बहू के ऊपर क्रोध करने लगती है ऐसी स्थिति मे ननद अपनी भाभी का पक्ष लेकर मा को समझाती है। *'नये घर मे आयी है धीरे-धीरे यहॉ के लोगो को और घर के तौर-*

तरीको को समझ जाएगी। 'सकारात्मक विचार वाली ननदे भाभियो के लिए वरदान सावित होती है। भाभियॉ उनकी ओट लेकर अपनी इच्छा आसानी से व्यक्त कर लेती है। प्राय वडी ननदे मॉ की भूमिका भी निभाती है 'कुनी', एक उदार और ममतामयी ननद है जो घर मे वडी होने के कारण अपने दायित्व को अच्छी तरह समझती है और आवश्यकतानुसार प्रत्येक सदस्य की सुख-सुविधा का ध्यान रखती है। वह भाभियो के जीवन मे हस्तक्षेप नही करती है, आवश्यकता पडने पर उनका सहयोग करती है। उसके दोनो भाइयो का विवाह एक साथ ही सम्पन्न होता है, सयुक्त परिवार मे नयी वहुओ को लेकर टोका-टॉकी चलती ही रहती है अत बुद्धिमान कुनी चाहती है कि उसके दोनो छोटे भाई अपनी पत्नियो को लेकर कुछ दिन के लिए घर से बाहर धूमने के लिए चले जायॅ, ताकि एक-दूसरे को अच्छे से समझ सके। वह दोनो भाभियो सहित भाइयो को 'हनीमून' पर भेज देती है इस वात पर घर की बडी बुजुर्ग नारियॉ अपत्ति करती है वह भाभियो का पक्ष लेकर उन्हे समझाते हुए कहती है- *''आई! पत्नी को उसका अधिकार मिले तो वह शिकायत नही करेगी। नही तो मुँह खोलकर प्रश्न पूछेगी। इसलिए हमने बहुओ को अपने पतियो के साथ भेजा है। इसमे कलियुग कहॉ से आ गया। '*[36] इस प्रकार वह अपनी सूझ-बूझसे घर मे आए भूचाल को शात करने मे सफल हो जाती है। और नयी नवेली भाभियॉ कुछ दिनो के लिए अपने पतियो का अवसर पा जाती है।

स्वार्थ एक ऐसी मजवूरी है जो दुश्मनो को भी-एक कर देती है फिर यह तो ननद-भाभी का सबध है। 'मोहिनी' परिवार को लेकर चलने वाली बहू नही है वह स्वार्थी प्रवृत्ति की नारी है और अपने सबध सिर्फ पति तक ही सीमित रखना चाहती है। किन्तु पति की आर्थिक स्थिति सुदृढ न होने के कारण उसे कुछ दिनो तक ससुराल मे ही रहना पडता है। वह अपनी कुढन ननद पर उतारती है। वर्षा की पढाई एव उसके चाल-चलन को लेकर सदैव मजाक उडाती रहती है। किन्तु काफी सघर्ष करने के बाद जब वर्षा आत्मनिर्भर हो जाती है तो वह उससे कहती है- *''सिलबिल रानी हमारी थोडी मद्‌द करोगी? दो दिन पहले भाभी ने अकेले मे कहा- '' तुम्हारे भैया ने इटावा मे एक पुराना मकान देखा है। कुछ पैसा उन्हे अपने प्रोविडेट फड से मिल जायेगा, कुछ भाभी के पिता उधार देदेगे। वह लगभग पचीस, हजार दे सकेगी? वर्षा ने हामी भर दी।''* यह तुम्हारा कर्ज होगा -'' भाभी

ने पुलकित होकर कहा, ''धीरे-धीरे चुका देगे।''[37] सारी कटुता भूलकर वर्षा ने एक अच्छी ननद का दायित्व निभाते हुए कहा- '' कैसी वात करती हो भाभी? -''वर्षा मुस्कराई, *''यह छोटे पर मेरी न्यौछावर है।'' हम अपने प्रेमी और मित्र वदल सकते है, पर रक्त-सबधी नही, वर्षा ने सोचा।*38

सास-वहू का रिश्ता अपने प्रारभ से ही विवाद का विषय रहा है। प्राय दोनो के मध्य शासक और शासित का सवध रहा है। यद्यपि प्राय दोष सास के कटु-व्यवहार को दिया जाता है किन्तु सदैव उसकी ही गलती नही रहती जवाब सवाल मे बहुए भी कम नही होती। इतना अवश्य है, कि इस तरह की बहुओ की सख्या कम है। प्राय देखा जाता है कि गलती चाहे जिसकी भी हो दोष सास के सिर पर मढ दिया जाता है जवकि सदैव ऐसा नही होता। कभी-कभी परिस्थितिया भी एक-दूसरे के सबधो को प्रभावित करती है -''प्रेम की सास अपनी बहू को बहुत मानती है। बेटे की मृत्यु के बाद वह उस पर विशेष ध्यान रखती है किन्तु प्रेम अपने सुख मे सुखी रहने वाली नारी है। वह विधवा सास के हाथो, अपनी दुध मुँही बच्ची को सौप कर, एक दिन अन्य पुरुष के साथ घर छोड कर चली जाती है। सास उसे बहुत समझाती है पर वह नही मानती इससे वोऊ को बहुत पीडा होती है और वह बहू के प्रति घृणा-द्वेष से भर उठाती है। कुछ समय बाद ही, वह अपने नारकीय जीवन से ऊब जाती है और उसे अपने ससुराल की याद आती है वह घर आती है पर उसकी सास उसे स्वीकार नही करती।[39]

'सोमा' अपने पति के दुर्व्यवहार से त्रस्त रहती है उसके जीवन मे 'सुजीत' नाम के पुरुष का प्रवेश होता है वह उसके प्रति आकर्षित हो जाती है और बाद मे उससे प्रेम करने लगती है सुजीत का साथ और उसकी सहानुभूति पाकर, वह अपने नारकीय-जीवन से त्राण चाहती है अत उसके साथ जीवन जीने का निर्णय ले लेती है। इस पर पूरा परिवार उसके विरोध मे आ जाता है लोग उस पर लाक्षन लगाते है और उसे बेइज्ज़त करने लगते है तब उसकी सास अपनी बहू का पक्ष लेती हुई कहती है- *''देखो तुम लोग कीचड उछालोगे। चरित्र माडोगे तो तुम्हारे भाई का भी चरित्र सामने आएगा। .सोमा गई-गुजरी नही। . हीये की फूटी थी? . गलती गौतमिए की है। बात को गॉव मे मत उछालो बनी-बनाई इज्ज़त माट्टी मे मिल जाएगी।*'[40] सोमा सबके सामने स्पष्ट कर देती है कि वह सुजीत के साथ ही रहना चाहती है इसलिए, इस घर को छोडकर जा रही है इस पर उसकी

सास सहानुभूति पूर्वक उसे समझाते हुए कहती है ना ना, *रोमत वेटा थावस रख। सव ठीक हो जायेगा। बेटी तुम समझदार नही हो। घर की नीव मे ईटे नही होती है हम स्त्रियो का त्याग होता है। घर की ड्योढी नही लॉघते* ''[41]

परित्यक्ता कुसुमा, अपनी सौत के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से ऊव कर घर की सपत्ति मे अपने हिस्से की बात करती है, उसकी सास पीछे खडी सारी बात सुनरही थी- '' सास पीठ पीछे न जाने कबसे खडी थी मुँह चॉप दिया कुसुमा का *''कहना यह बात फिर से?चलाना अब की वेर जुबान? चली आयी हिस्से दारिन बनने।* '' और सास ने एक के बाद एक अपशब्द कहने शुरू कर दिए अपमानित होने पर कुसुमा ने हाथ जोड कर सास से कहा - '' *बाई, चली जाओ यहॉ से! अपनी इज्जत अपने हाथ रखो।* '' सास कर्कशा थी उसने चोटी पकड कर झॅझोड डाली और बोली- '' *ते बडी जबर-जुबान हो गयी है किसी को बोलने नही देती।* सास इतने पर भीं चुप नही रही उसने बहू पर चरित्र हीनता का आरोप लगाया जिसे कुसुमा वर्दास्त नही कर सकी और सास को धिक्कारे हुए बोली - *''अगिन साच्छी करके ही आये थे तुम्हारे पूत के सग। सात भॅवरे फिरके। लिहास रखा उसने? निभाया सबध? ''दूसरी विठादी हमारी छाती पर?'' ''ॲधेर पीते रहे तुम लोग। खाक है बूढेपन पर।'' ''उसदिन से कोई सबध कोई नाता नही रहा हमारा। जो व्याह कर लाया था उससे ही कोई ताल्लुक नही तो इस घर मे हमारा कौन ससुर औं कौन जेठ?*
''उमर के नाते अदब कर रहे है, तुम हमारी सास होने का भरम न रखना। '[42] इस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप आपसी सबधो मे दरार डालते है और घर मे कलह उत्पन्न करते है।

जब 'हर्ष' की मा ने यह समाचार पाया, कि वर्षा की कोख मे उनके खानदान का वारिस पल रहा है तो वे न चाहते हुए भी वर्षा से मिलने 'सिलवर सैड' आयी। यद्यपि वर्षा की सास को अपनी बहू के प्रति पूरी सहानूभूति रहती है किन्तु वह बेटी द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार को अच्छा न मानते हुए भी, उसका विरोध नही कर पाती। चुपचाप, बेटी-बहू के आरोप-प्रत्यारोप को सुनती रहती है। इससे वर्षा को ठेस लगती है उसे यह बात सालती है कि सुजाता ने यदि उसे नही समझा तो कोई बात नही, पर मम्मी भी उसका पक्ष नही ले पायी और अत कर चुपचाप खड़ी रही, फिर चली गयी

- ''वर्धन परिवार लम्बे समय से उसके लिए वहुत महत्वपूर्ण था अपने परिवार से कही ज्यादा और आत्मीय। आज उसकी ननद और सास पहली बार उसके घर आयी थी और विद्वेष-भाव से वाहर जा रही थी। '[43]

नीलिमा अपने पति की आकस्मिक मृत्यु के कारण अत्यन्त दु खी हो जाती है वह उसे याद कर अनवरत रोती-चीखती रहती है, उसकी ऐसी दशा देखकर सास दयार्द्र हो उठती है और अपनी बहू को सहानुभूति पूर्वक समझाती है। नीलिमा उनके विषय मे बताती हुई कहती है - *''पति विछोह मे जब भी उसके ऑसू परनालो से फूटे सास ने छाती से चिपका पीठ सहलाई।* हमारे लिए तो तू ही देवेन्द्र। मरेगे तो तू ही इतजाम करेगी कौन से घाट फूके किसके कधे चढे।[44] इस प्रकार सास के सद्व्यवहार के कारण नीलाम्मा धीरे-धीरे अपने आपको सॅभाल लेती है। और दोनो, सास वहू एक-दूसरे के सुख- दुख को आपस मे बॉटकर जीती है। उपरोक्त तथ्यो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सास-बहू के सबधो मे नकारात्मक एव सकारात्मक दोनो पक्षो को देखा जा सकता है। कही वे दोनो मा-पुत्री के रूप मे सामने आती है तो कही प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे।

यह शव्द आज भी अपने आप मे अर्थवान है। कहा जाता है कि एक सच्चे-मित्र का मिलना परम सौभाग्य की वात है। एक सुहृद हमे उचित सलाह ही नही देता बल्कि हमारे दु ख-सुख मे साथ भी देता है। समय के साथ बहुत कुछ बदल रहा है। अत स्वाभाविक है कि इस रिश्ते मे भी बदलाव आए। *आधुनिक युग मे मित्रता की परिभाषा बदल रही है। आज मित्रता का आधार व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व कम उसका 'सामाजिक स्तर' अधिक महत्व रखने लगा है। प्राय लोग ऐसे व्यक्ति को अपना 'सुहृद' बनाना पसद करते है जो 'ऊँची सोसाइटी' से सबध रखता हो, सम्पन्न परिवार का हो।* नारी मे यह भावना विशेषकर पायी जा रही है फिर भी, कही-कही सच्ची मित्रता भी दिखाई पडती है सर्व मान्य सच यही है कि मित्रता जॉति, भाषा, धर्म और आयु को नही मानती। 'वर्षा', 'दिव्या कात्याल' से उम्र और शिक्षा दोनो मे वहुत छोटी है किन्तु दोनो के विचार काफी कुछ मिलते है, और वे दोनो एक दूसरे के लिए समर्पित है। सिल-विल को वर्षा वशिष्ठ तक की ऊँचाई पर पहुँचाने का कार्य दिव्या ने किया है। वह वर्षा की मित्र ही नही अभिभावक भी बनगई है। अत जव दिव्या का स्थानान्तरण लखनऊ हो जाता है तो वर्षा दुखी हो जाती है और एकदिन आत्मघात करने की कोशिश करती है किन्तु समय पर समुचित चिकित्सकीय-सुविधा मिल जाने के कारण वह बच जाती है। इस बात से दिव्या को आघात लगता है, वह स्वय को अपराधी समझने लगती है। वह वर्षा के सिर पर हाथ रख कर कोमल स्वर मे अपनी भवनाए व्यक्त कर कहती है - *''अब तुम मेरी जितनी अतरग हो, उतना कोई भी समलिगी व्यक्ति नही हुआ इसलिए यह एक वर्षा दिव्या ने एक साल की छुट्टी ले ली मेरे इस अनुपम रिश्ते को समर्पित है।''* [45]

नमिता मध्यवर्गीय परिवार की बडी लडकी है परिवार की आर्थिक स्थिति की सुदृढता के लिए उसे नौकरी करनी पडती है किन्तु वह पुरुषो के साथ काम करते हुए संकोच महसूस करती है और स्वय को असुरक्षित पाती है। उसकी हालत को देखकर, उसकी मित्र-हर्षा उसे समझाती है।

दोनो के मध्य वात-चीत का एक अश इस प्रकार है *''बोल्ड वन।'' '' मै एक अच्छी लडकी हूँ'' वोल्ड लडकियॉ अच्छी नही, होती? ''यह मेरी नही, औरो की धारणा है।'' औरो को मार गोली। कुएँ के मेढक वर्जना-हीनता को वोल्ड की परिभाषा गढे हुए बैठे है। उनकी दूरवीन उनको मुबारक । अपने अनुभवो से तू अपनी परिभाषा गढ। आत्मविश्वास अर्जित कर। ये दीन-हीनता झटक, उतार फेक केचुल। ''*[46] हर्षा के प्रोत्साहन को पाकर नमिता ने अपने स्वभाव मे परिवर्तन लाना शुरू किया। वह अपना काम स्वय करने लगी और उसने अपने सहकर्मियो के साथ भी सहज होकर काम करने का निश्चय किया। हर्षा के समयानुकूल सुझाव के कारण ही नमिता, अपने व्यक्तित्व को उचित दिशा मे, विकसित कर सकी।

'स्मिता' एक सपन्न परिवार की लडकी है किन्तु दुराचारी पिता के कारण उसका उचित पालन-पोषण नही हो पाता। उसका व्यक्तित्व उचित दिशा मे विकसित होने की अपेक्षा कुठित होकर रह जाता है। वह उलजुलूल हरकते करती रहती है। नमिता उसकी मित्र है और सुलझी हुई है। अत सदैव उसे समझाती रहती है। उसकी गलतियो के प्रति सकेत करती रहती है किन्तु *स्मिता एक कान से उसकी बात सुनती है और दूसरे कान से उसकी बात निकाल देती है*। वह प्राय अपने पिता से रूपये न मॉग कर, उसकी जेब से रुपये चुरा लेती है यह बात नमिता को बहुत बुरी लगती है। वह प्राय उसे ऐसा न करने की शिक्षा देती है। वह उसकी बात मानती नही और अपने मित्र शरत के साथ मौज मस्ती करने के लिए पुन रुपये चुराती है। इस बात पर नमिता को क्रोध आ जाता है और दोनो-आपस मे उलझ जाती है। नमिता उसे छोड कर घर जाने की बात कहती है तो स्मिता हसकर अपनी मानसिकता के अनुरूप उसे डपटती है ''ऐ छोकरी! बगाल का अकाल क्यो उतर आया थोबडे पर? शरत के नाम से या किस्साए जैकपॉट सुन? ज्यादा सती-सावित्री का ढोग फैलाया न तूने तो किसी रोज मलाई वाली लस्सी मे देशी दारू छीढ, बलात्कार करवा दूँगी शरत से। सीधी हो जाएगी कडे-सी। ''[47]

आज भी अच्छे मित्रो की कमी नही है खोजने पर मिल ही जाते है। 'सारिका' एक डॉक्टर है और 'वाना' को मानती है। वह चाहती है कि उसकी तरह वाना भी आत्मनिर्भर बनने का

प्रयास करे, सिर्फ घरेलू पत्नी वनकर न जिए न ही आकाश और विकास की मा वनकर, अपनी जिदगी की सार्थकता को खत्म कर दे। इस लिए वह वाना को सिर्फ घरेलू नारी के रूप मे देखकर असतुष्ट हो जाती है। वह वाना को आत्म निर्भर बनने की सलाह देती है इस पर जब वाना कहती है कि वह क्या कर सकती है? उसकी दुनिया तो घर के अदर सिमटी हुई है। तो सारिका को यह वात चुभती है और वह उसे मित्र की भॉति समझाकर कहती है - *''वाना रसोई के आगे भी एक संसार है, फैला हुआ अनन्त! तुम हमेशा दाल-चावल के प्रश्न मे उलझी रहती हो ऊबती नही?'' ''आगे पढना शुरू करो। ॲगरेजी सीखो, वच्चे वडे होने पर मनपसद नौकरी करो वाना।''* वाना अर्न्तमुखी होने के कारण उससे कुछ कह नही पाती है, वह स्वय अनिर्णय की स्थिति मे रहती है। अत कुछ कहने की बजाय चुप-चाप उसकी बात सुनती है, इसलिए सारिका परेशान हो जाती है और वाना के अस्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए उससे कहती है- ''वाना, मुझसे प्रॉमिस करो कि तुम आगे कुछ करोगी अभी तो यह गृहिणी पना ठीक है मगर यो ही घर-घुसनी बनकर नही रह जाओगी।''[48] वाना सारिका की प्रेरणा और प्रोत्साहन से प्रोत्साहित होकर अपने कैरियर पर ध्यान देती है। सर्वप्रथम वह अपनी अधूरी पढाई पूरी करती है फिर राहुल से कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त करती है। और तदुपरात एक कम्पनी मे नौकरी कर लेती है। इस प्रकार वह सिर्फ घरेलू नारी बनकर रहजाने की अपेक्षा आत्मनिर्भर नारी बन जाती है अव वह सिर्फ शिवेश की पत्नी और आकाश-विकास की मा नही बल्कि मैडम वाना भी बन जाती है। जिसका श्रेय सारिका को जाता है। इसी प्रकार 'दिव्या' भी एक सुलझी हुई नारी और अच्छी मित्र है जो वर्षा को हर तरह का सरक्षण प्रदान करती है। 'वर्षा' अभिनय का प्रशिक्षण लेने के लिए दिल्ली जाती है वही उसका परिचय हर्षवर्धन नाम के एक सहपाठी से होता है। दिल्ली जैसे अजनवी शहर मे, वह अपने को अकेला महसूस करती है। ऐसे मे, हर्ष की सहानुभूति के परिणाम-स्वरूप वह दोनो एक अच्छे मित्र बन जाते है, समय के साथ मित्रता दैहिक-सबध मे परिवर्तित हो जाती है। वह अपने अन्तरग सबधो की बात जब दिव्या को बताती है तो दिव्या उसके कृत्य को उचित नही मानती। वह विवाह पूर्व नारी पुरुष के दैहिक-सबंधो के नकारात्मक पहलू पर अपनी विचार धारा स्पष्ट करती हुई उसे समझा कर कहती है -''वर्षा, अनुभव तुम्हारे लिए अभी कच्चे

माल की तरह है। फिलहाल विविध और रगारग अनुभवो से गुजरना तुम्हारी एक आतरिक जरूरत है। लेकिन साथ ही मै मानती हूँ कि जिदगी मे कुछ नैतिक आधार, कुछ मूल्य, कोई, विश्वास- तुम उसे कुछ भी नाम दे लो- भी होना चाहिए। तुमने अपनी भावना की गहराई और उष्मा के साथ यह सबध अर्जित किया है। व्यक्तिगत तौर पर मै इसमे कुछ भी अनुचित नही मानती। *लेकिन मुझे यह भी लगता है कि बार-बार अनुभव या सुख के लिए ऐसा आचार एक ओर व्यक्ति के रूप मे तुम्हे हीन और दुर्बल बनायेगा और दूसरी ओर नैतिक दृष्टि से भी मलिन करेगा। '*[49]

'सारिका' की मृत्यु के बाद 'वाना' अकेली हो गयी। वह अपने आपको सभाल नही पायी, और गहरे सदमे की शिकार हो जाती है। इस स्थिति से उसे 'क्रिस्तीन' उबारती है। वह वाना को अपना लक्ष्य चुनने एव उसकी प्राप्ति के लिए सघर्ष करने को कहती है- ''हमे हर चीज हर स्वतत्र इच्छा या कार्य का दाम चुकाना पडता है। बाहर आने मे, अपने स्वभाव को स्वीकारने मे खतरे ही है। मगर एकबार जब कोहरा हट जाए और आगे क्या करना है यह स्पष्ट होने पर भी कुछ न करना अपने आपको झुठलाना है। अपने साथ दगा है। ''[50] वह निर्णय लेने मे असमर्थ वाना को समझाते हुए कहती है कि कोई काम असभव नही है। आदमी को अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए मुश्किलो पर नही। क्योकि जब किसी काम को करने के लिए हम मन बना लेते है तो वह काम मुश्किल नही रह जाता। घबरा कर बैठ नही जाना चाहिए बल्कि निरतर सघर्ष करते हुए आदमी को अपना रास्ता स्वय बनाना चाहिए इसलिए तुम निराश मत हो। '' *''तू तो तितली है, जो अभी अपने विकास की पहली स्टेज पर ही है। जब तेरे पख निकलेगे तब तू अपने रूप से सबको चका-चौध कर देगी। ऐसे ही व्यक्तियो का भी काया पलट होता है, स्वय को दुबारा गढा जाता है। '*[51]

'दिव्या' के रूप मे 'वर्षा' को एक अतरग मित्र के साथ ही अभिभावक भी मिल जाती है जो उसकी आवश्यकतानुसार मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। वर्षा जब पहली बार दिल्ली जाती है तो काफी भाग-दौड के बाद उसे रहने के लिए एक कमरा मिल जाता है। वह प्रसन्न होकर इसकी सूचना दिव्या को देती है। दिव्या उसके घर को व्यवस्थित करने के लिए सारे सामान खरीद कर लखनऊ से ले जाती है, फिर उसके घर को सुसज्जित करती है। वर्षा को यह सब अटपटा लगता

है उसे लगता है, कि वह दिव्या के वोझ तले दवती जा रही है, उसकी मन स्थिति जानकर दिव्या उसे अपनी भावना से अवगत कराती हुई कहती है- *"तुम्हारे माध्यम से मै सतोष पाती हूँ, अपने ऊपर गर्व करती हूँ कि तुम्हारी प्रतिभा ढूँढने का निमित्त मै बनी। व्यक्तिगत रूप से तुम मेरी सबसे अतरग हो। तुम जानती हो कि अपना वहुत कुछ मै पति के साथ भी नही बॉट सकती। तुम उम्र कुछ और बढ जाने के बाद समझोगी कि ऐसी मित्र का होना कितनी बडी नेमत है। तुम्हे फलता-फूलता देखकर मुझे जो तृप्ति और सार्थकता का एहसास होता है उसे मै शब्दो मे नही बॉध सकती। इसलिए तुम्हारी मुश्किल मुझे विचलित कर देती है। वैसे भी तुम्हारे अलावा और कौन है, जिसके लिए मै कुछ कर पाने का सुख पा सकूँ।'*[52] सचमुच एक सुहृद मित्र का मिलाना सौभाग्य की बात है। जो हमारे साथ सुख ही नही दु:ख भी बॉटता है। समय आने पर हमारा मार्ग-दर्शन भी करता है। सारिका, हर्षा, बाना और नमिता इसी तरह की सखी है।

नारी का अस्थायी रूप बंधन की पीड़ा और मुक्ति की तलाश परम्परागत धारण का विरोध

सृष्टि के आरभ से ही नारी और पुरुष दोनो परस्पर आकर्षित होते रहे है। शारीरिक एव भावनागत वैभिन्य के कारण दोनो एक-दूसरे को पाने के लिए लालायित रहते है। इन्ही जैविकीय आवश्यकताओ के कारण इनमे परस्पर नैकट्य स्थापित होता है। प्रेम अपने आप मे एक उदात्त-भावना है जो सभी इन्सानो ने पायी है। किन्तु जब यह एक नारी और पुरुष के मध्य पनपती है तो समाज के आकर्षण का केन्द्र बन जाती है। प्रेमिका के रूप मे नारी सदैव चर्चा का विषय रही है किन्तु वह अब सिर्फ अपने प्राचीन रूप तक सीमित नही रही बल्कि उसमे भी मूल्यगत परिवर्तन हो रहे है। वह प्रेमिका के रूप पुरुष को लुभाती ही नही और न ही केवल उसकी प्रेरणा बनकर उसका जीवन ही सवारती है बल्कि कभी-कभी वह उससे प्रतिशोध भी लेती है और अपनी कुठा का शिकार भी बनाती है। पर प्राय प्रेम मे सर्वस्व त्याग कर देने वाली प्रेमिकाओ का ही उदाहरण मिलता है। 'मकरन्द' और 'मन्दा' एक-दूसरे को प्यार करते है किन्तु, मकरन्द अपनी भावना, अपने माता-पिता के समक्ष व्यक्त नही कर पाता और उनके दबाव मे आकर मन्दा को अकेला छोडकर चला जाता है। और कभी-कभी पत्रो के माध्यम से अपनी उपस्थिति का एहसास कराता रहता है। मन्दा उसके पत्रो को पाकर ही खिल उठती है। लगता है वे पत्र उसके लिए पत्र न होकर मकरन्द के ही प्रतिरूप है। वह पत्रो के माध्यम से उसकी दूरी को भूलकर निकटता का आभास करती है। और मधुर अतीत को याद कर अपना भविष्य सहेजती रहती है- *''मकरन्द, मुझमे सामर्थ्य नही थी, साहस भी नही था कि मै तुम्हारे वियोग मे मर जाती। केवल जीती रही। तुम्हारी यादे जीने की ईच्छा जगाती रही मेरे भीतर। और वही इच्छा बटोरती रही तुम्हारी खुशी, उल्लास, हर्ष। तुम्हारे आगे बढने की कामना। डोर से डोर बॅधती चली गयी। तुम्हारा परस, तुम्हारी चितवन, छुअन, तुम्हारी सासो की सुगध, तुम्हारे प्रेम का अनहद नाद। कितनी निधियाँ है मेरे पास।* '[53]

'कुनी' एक चरित्रवान, आत्मनिर्भर नारी है। पुरुष के प्रति उसे विकर्षण है। सिद्धार्थ से

मिलने पर, वह उसकी ओर खिचाव महसूस करती है। अत सिद्धार्थ से मिलने के बाद, उसने अपने आपको तौलना शुरू किया किया कि कही वह सिर्फ नारी और पुरुष का आकर्षण मात्र तो नही है। वासना के चलते उसके मन मे पुरुष की कामना तो नही जगी है -' *'नही, ऐसा नही है, महज पुरुष का साथ नही है यह। मै अपने अधूरेपन से ऊपर उठना चाहती हूँ। पाने से ज्यादा खुद को देने की चाह उगी है मेरे भीतर। सिद्धार्थ के साथ यो तो अचानक ही भेट हुई थी पर उसके साथ घूमते समय लगा कि इसे तो मै अरसे से जानती हूँ। इसी को तो मै आज तक तलाश रही थी। ''* '' प्रेम तो अचानक क्षण भीतर से उठता कोई त्वरित-सा आभास है, जहॉ दो अपरिचित एक-दूसरे से जुडकर आत्मीय हो जाते है। वहॉ जीवन-भर का जोड-घटाव बिठाने का वक्त किसे मिलता है? और इसकी जरूरत भी कौन समझता है? '' पुन *'' मैने सिद्धार्थ से शादी की बात नही की थी। मै इस घनिष्ठ सबध को उस हदतक जीना चाहती थी, जहॉ मौत भी दो रूहो को अलग नही कर सकती। '*[54]

प्यार विछोह की आग्नि मे तपकर और पवित्र हो जाता है। कहा भी गया है - *''न विप्र लम्भेन सयोगम् पुष्टिमश्नुते''* इसी तरह अल्मा और राणा, एक-दूसरे से दूर रहकर भी, एक-दूसरे की यादो मे खोए रहते है। अल्मा उससे मिलने के लिए, उसे पाने के लिए तमाम यातनाओ के बाद भी,जीना चाहती है, और राणा उसके वियोग मे मानसिक-सतुलन खो वैठता है जब उसे धीरज के पत्र द्वारा, राणा के विषय मे पता चलता है। वह अतीत की मधुरस्मृतियो को याद कर तडप उठती है -' *'दु ख की हद पर खडी करके भगता हुआ राणा अल्मा कागज पर ऑसू गिरा रही है। दु ख की हद तो थी, खाई तो नही मै जिदा रही राणा। जिदा हूँ। दुनियॉ बडी छोटी है, कहॉ से छूटे-विछुडे कहॉ आ मिले? तुम कमजोर पडने लगे? मेरी इस सख्त जान मे से कुछ बॉट लो। कधो पर सूखा ठोस वजन आ लदा। तुम्हारी यादो मे उलझा मन खीचना पडा, असल मे चाह जैसी चीज पिता की चिता मे जलकर मस्म हो गयी। कुछ बचा नही दु ख ने आजादी देदी और समय ने रास्ते बना डाले। जिदगी जहॉ दिखी, उसी ओर भगी। ''*[55]

जहॉ पुरुष नारी का सर्वस्व ग्रहण करने के बाद भी सतुष्ट नही हो पाता उसे कोई न कोई कमी सालती रहती है, वही नारी अपनी हृदयगत-विशालता के कारण पुरुष की एकनिष्ठा और

उसके द्वारा स्मरण किये जाने का सकेत पाकर ही अपने को धन्य समझने लगती है। वह नारी जिदगी वस इस आसरे पर गुजार देती है कि उसका प्रेमी, उसका पति, भले ही कायिक रूप से उससे दूर रहे, पर मन से दूर नही है, कम से कम उसको याद तो करता है उसके मस्तिष्क मे उसका प्रत्यय तो है - '' *मै अर्थवती हूँ। मेरे मकरन्द याद करते है मुझे। जीवन मे इस तरह किसी का होना विकट अँधेरे मे जग मगाती लौ का काम करता है। पथ उजियारता है। और मुझे क्या चाहिए मकरन्द?*''[56]

यह प्यार का अतिशय उदात्त-रूप है जहॉ प्रेमी की उपस्थिति विवाहित प्रेमिका के जीवन पथ का कटक नही बनती, बल्कि अपने सम्पूर्ण रूप मे सरक्षक का दायित्व निभाती है। और उसे पग-पग पर आश्वस्त करती चलती है, जहॉ प्रिय की शारीरिक उपस्थिति-अनुपस्थिति का कोई अर्थ नही रह जाता क्यो कि वह अन्त करण मे विलीन हो जाता है। मधुर स्मृतियो के रूप मे जिसे हर पल महसूस किया जा सकता है। 'कुनी', अपने पति के साथ वहॉ जाती है जहॉ वह सबसे पहले अपने प्रेमी 'सिद्धार्थ' के साथ गयी थी- *''पुरी के श्री मदिर मे अनिरुद्ध के साथ मैने माथा टेका तो सिद्धार्थ साथ-साथ चलता रहा। मैने उसे दुत्कार कर भगाया नही क्योकि वह अपनी परछॉइयो को अपने आस-पास समेटे, अपनी खामोश उपस्थिति मे, मुझसे कही भी उलझ नही रहा था। रुक-रुक कर नजर-भर देख लेता था, सतुष्ट और शायद आश्वस्त भी। वह मेरा अभिभावक वन गया था। वह अतरग मित्र बनकर मेरी यादो मे रच गया है, ढेर से हितैषियो की पक्ति मे खडा। देह से पार।* ''[57] 'रूपा' और 'कुदन' एक दूसरे को प्यार करते है। कुंदन के पिता चाहते है कि वह पढ लिख कर बडा आदमी बने, वह इस रिश्ते को स्वीकार करने के पक्ष मे नही है अत कुदन दु खी हो जाता है उसका मन पढाई से उचट जाता है रूपा एक आदर्श प्रेमिका की भॉति उसे कर्तव्य के प्रति सचेष्ट करती है - ''पुचकारते से स्वर मे उसने कुन्दन को उबारा था, '' लेकिन फिर भी तुम मन को मजबूत करो। बाबू की इच्छा पूरी करो। हम लोग प्रतीक्षा कर सकते है। और सुनो, बहुत सपने मत देखा करो। सपने दु ख पहुँचाते है। सपने सच्चाई से दूर कर देते है। ''[58]

'मकरन्द' के चले जाने के बाद कुसुमा भाभी मंदा से मिलने पर घर का सब समाचार पूछने के बाद बोली कि तुम तो मकरन्द की याद मे जोगन बन बैठी और वह अपनी जिम्मेदारी

भूलकर मा की गऊसाला मे बछडा वना पडा है। उनकी बात सुनने के बाद मन्दा की प्रतिक्रिया एक उदात्त प्रेमिका के रूप मे होती है -'' मन्दाकिनी चुपचाप बैठी रही। क्या कहे वह? क्या बताये? दोषी कौन है? कुछ समझ मे नही आता। मकरन्द ज्यादा तपरहे है या वह? वह अधिक दु खी है या मकरन्द?कोई नही माप सकता। कोई नही बता सकता? *कभी-कभी तो यही लगता है कि एक-दूसरे मे रमे हुए, एक-दूसरे को याद कर-करके जो भी कर रहे है, वह आराधना है, तपस्या है, पूजा है।* '[59] आज कल के चलताऊ प्रेम का एक रूप यह भी है कि प्रेमी के शारीरिक रूप से दूर होते ही उसके प्रति एकनिष्ठता समाप्त हो जाती है। और दूसरे व्यक्ति से सबध बनते देर नही, लगती बस एकात और सुअवसर मिलना चाहिए। 'वर्षा' ने 'हर्ष' की तरह 'सिद्धार्थ' के साथ भी अपनी प्रेमानुभूति को बॉटा और उसकी सशब्द व्याख्या 'दिव्या' के समक्ष कर डाला - ''उसके स्पर्श मे थर-थराहट सा सकोच और आह्लाद है। मुझे ताज्जुब नही होगा, अगर मै उसकी पहली सजीदा प्रेमिका निकलूँ। मुझे महसूस होता है कि गहरे चुबन मे वह भावना की पूरी गहराई से लीन हो चुका है। उसकी सासो मे समर्पण का ऐसा स्पदन होता है कि मेरा रोम-रोम सार्थकता से सिहर उठता है। ''[60]

प्यार के विषय मे एक सर्वमान्य धारणा है, -''त्याग को लेकर, किन्तु इसके अलावा भी, प्रेमी अपने लिए नयी-नयी परिभाषाए गढते रहते है। *आजकल एक सर्वमान्य धारणा वनती जा रही है कि प्रेम मे सिर्फ मन ही नही शरीर की भी अपेक्षा होती है क्योकि वह प्रेम को स्थायित्व देता है, नारी-पुरुष को हर स्तर पर एक करता है।* 'सोमा', को मानसिक प्यार के साथ ही कायिक-सबधो की भी आवश्यकता महसूस होती है। वह समाज की समस्त वर्जनाओं को तोडकर दिल्ली चली जाती है ताकि अपने विवाहित प्रेमी 'सुजीत' के साथ कुछ दिन रह सके। सुजीत के बीबी-बच्चो पर क्या गुजरेगी इससे उसका कोई मतलब नही है। वह कुछ दिनो बाद दिल्ली गई थी। अपने पीहर। महीने भर की छुट्टी। जाने से पहले उसने स्पष्ट शब्दो मे सुजीत से कहा था - ''सुजीत, हम दिल्ली मे मिल सकते है। तुम जहाँ भी ठहरोगे आ जाऊँगी। वहॉ मुझपर कोई बधन नही। और फिर दिल्ली मे वही हुआ, जो एक स्त्री और पुरुष के बीच होता आया है। क्या इसीलिए दोनो इतने करीब आए? क्योकि सोमा प्यासी थी। क्यो कि गौतम का आचरण समाज की नजरो मे अवैध था। सुजीत विवाहित होते

हुए भी सोमा को चाहने लगा था। "[61]

आज के युग मे वासना को ही प्यार का नाम दिया जाने लगा है लेकिन इसकी वास्तविकता से सभी परिचित है *कि त्याग ही सच्चे प्यार की नीव है। बिना त्याग के प्यार का कोई मूल्य नही है क्योकि प्रेम लेने मे नही देने मे विश्वास रखता है। यह दान तो देता है पर प्रतिदान की आकाक्षा नही करता।* भाभी ने मन्दा को विवाह करने के लिए समझाया और कहा कि मकरन्द के साथ तुम्हारा सिर्फ वारदान हुआ था विवाह तो नही, फिर उसकी प्रतीक्षा मे क्यो जिदगी नष्ट करने पर तुली हो। इस पर मदाकिनी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा? - "व्याह से ही पूरा होता है जीवन? फिर मकरन्द ने भी तो नही रखा किसी को उसके स्थान पर। वह क्यो आत्मदया मे जिये?क्यो तरस की भागीदार बने? अपनी इच्छा से ही तो चुना है जीवन का यह रूप। "[62]

'अवतारे' ने 'दिव्या' को एक अच्छा दोस्त तो मान लिया पर उससे शादी करने की इच्छा व्यक्त करने की बजाय उसने कहा कि वह दिव्या के साथ शादी के बारे मे निश्चित नही है- दिव्या की ऑखो मे जिबह होने वाली बकरी का-सा हताश भाव भर आया। पर जल्दी ही वह सॅभल गयी, *" मेरे लिए तुम्हारे साथ विताये ये पल ही अहम है हालाकि मै क्षणो को ही आखिरी सच नही मानती, पर हम कुछ दिनो अतरग आत्मीयता के भागीदार रह चुके है, यह याद करने के लिए काफी है। फिर भीतर उम्मीद भी है। मै वक्त का इतजार करूँगी अवतारे। "*[63]

जिस तरह पति-पत्नी के मध्य नोक-झोक होती रहती है उसी तरह कभी-कभी प्रेमी-प्रेमिका के मध्य भी तकरार हो जाती है। पर इससे उनके प्रेम मे कोई कमी नही आती। वर्षा और हर्ष एक-दूसरे से प्यार करते है। हर्ष सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार का एकमात्र लाडला पुत्र है और वर्षा आर्थिक विपन्नता मे पली-बढी परिवार की उपेक्षित पुत्री है। दोनो अभिनय से जुडे हुए है। पहले इनके सबध सिर्फ मित्रता तक सीमित रहते है फिर प्यार मे परिवर्तित हो जाते है और अतत पारिवारिक सहमति से विवाह मे। हर्ष फिल्मो मे किस्मत आजमाने के लिए बम्बई चला जाता है और वर्षा अकेली दिल्ली मे रह जाती है उसकी अनुपस्थिति मे वह अकेलापन महसूस करती है - *"हर्ष विहीन दिल्ली के सत्रास से वह सुन्न हो गयी थी। ठीक है, हर्ष के साथ पिछले दिनो तनाव चल रहा था। पर उसकी*

उपस्थिति तो थी। भावात्मक रिश्ते मे शारीरिक उपस्थिति के क्या मायने होते है, वर्षा ने पहली बार समझा। वर्षा का एक वाक्य, उसका एक स्पर्श, उसकी एक छवि वर्षा को दिन भर जिलाये रखने की ऑक्सीजन सुलभकर देती थी। मेरी अपनी सॉसे मुझे दिनभर जिलाये रखने के लिए अभी काफी नही है, उसने उदास स्मित से सोचा। '[64]

'राणा' लडाई करके आया था, 'अल्मा' उसे मनाती रही, पर वह नही माना और उसके पास रूका भी नही। फिर भी, वह उसकी हर पल प्रतीक्षा करती रही। पर वह उसे छोड कर गया तो फिर उसके पास लौटा ही नही। परिस्थितियो ने उसे एक के बाद एक उत्पीडन का शिकार बना डाला। वह कितनो के हाथ लगी और कितनो के हाथ से बच निकली। जिदगी जीने के लिए वह सघर्ष करती रही उसने सोचा भी नही था कि राणा उसके वियोग मे उसी की तरह तिल-तिल जल रहा है। मानिनी नायिका की भॉति उसने राणा को अपने दु ख-दर्द की खबर तक नही-भेजी थी। पर जब उसे पता चला, कि राणा बिल्कुल अकेला पड गया है, उसकी याद मे चेतना खो चुका है, तो वह विह्वल हो गयी, चाहा था-कि उडकर राणा के पास चली जायॅ उसका दु ख-दर्द समेट ले। पर बदिनी अल्मा स्वय पहरे मे थी, भला वह कैसे जा पाती, परन्तु राणा की याद आते ही अतीत घूम कर आ खडा हुआ और वह सोचने लगी *''मै रीती खाली नही, द्वार से निकलते समय तुम्हारा दिया धक्का घडकनो से बॉधा था जो कभी प्यार बनता, कभी बदले की भावना। यह अपमान तुम्हारा पीछा करता रहा कि मैं तुम्हारे इतजार मे पलके बिछाए रही? आज धीरज की चिट्ठी ने यह बात साफ कर दी कि मेरे नाम का बधन तुम तोड नही पाए।* त्याग गए, भाग गए पर अपने अधिकार को लेकर धुटते रहे। कुठन भरे रास्ते की ओर तुम न मुड जाओ मै इसी बात से डरती थी। आखिर अपनी तकलीफो से छुटकारा पाने को यह ॲधेरा रास्ता तलाश लिया। काश, आकर कुछ दु'ख तकलीफे बॉट-लेते कधे पर सिर रख कर रो लेते, रोने देते। *कागज के रूप मे मै तुम्हे छू रही हूॅ राणा। मान किया कि अभिमान किया जो भी था उससे विछोह के दर्द को साधे रही। तुमको कोसकर, इल्जाम देकर खुद को जलकर खत्म होने से बचाती रही। तुमने यह ताकत क्यो छोड दी राणा! इतना विश्वास क्यो किया था अल्मा पर कि खुद टूटते चले गये। '*[65]

'रेखा' ने अपने लोगो से प्यार नही घृणा और उपेक्षा पायी थी सिवाय पिता के। पिता के बाद यदि किसी ने उसे प्यार दिया था तो वह गोपाल था। इसलिए वह अपने प्यार के प्रति समर्पित थी और कर्तव्य के प्रति भी। गोपाल को आगे की पढाई जारी रखने के लिए रुपयो की आवश्यकता थी अत उसने घरवालो के विरोध के बाद भी, नौकरी करने का निर्णय लिया। अपनो से दूर दिल्ली जाकर नौकरी ती तलाश मे भटकती रही फिर कही जाकर उस नौकरी मिली। अपने गुजारे के लिए रुपया रखकर वह सारा वेतन गोपाल को भेज देती थी ताकि उसका भविष्य बन सके। वह बाहर के अनेक झझा-वातो को इस आशा के साथ झेलती रही कि गोपाल को पढाना है अफसर बनाना है।[66]

आधुनिक नारी प्रेम को लेकर कुछ ज्यादा ही लिवरल हो गयी है। अब वह पुरुष से मानसिक एव भावात्मक स्तर पर ही नही जुडती बल्कि शारीरिक सबध बनाने मे भी सकोच नही करती। *प्रेम करने वालो की यह धारणा बनती जा रही है कि प्रेम की चरम अभिव्यक्ति को कायिक संबंध स्थापित करके ही जिया जा सकता है। अत पूर्व की समस्त वर्जनाए टूट रही है। नैतिकता और मर्यादा की धज्जियॉ उडा दी जा रही है।* अब समाज मे विवाह-पूर्व यौन सबध सजहता से स्वीकृत होने लगा है। अत नारी अविवाहित-मातृत्व की ओर अग्रसर हो रही है। अवैध मातृत्व की वह कलक नही बल्कि अपने प्यार की चरम परिणति मान रही है। नारी का यह मूल्यगत परिवर्तन भले ही उसका साहसिक कदम हो, परन्तु इससे समाज मे अनैतिकता को बढावा मिल रहा है, स्वस्थ मूल्यो पर आघात हो रहा है। अब आधुनिक प्रेमिका शिशु को जन्म देने के साथ ही उसे प्रेम के स्मृति चिन्ह के रूप मे चिन्हित कर रही है -"मै हर्ष के बच्चे को स्वीकार करूँगी, यह धारणा बलवती होती जा रही थी। हर्ष उसके अब तक के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण था। अनेक झझावातो से गुजरने के बावजूद उसके साथ रिश्ता बहुत दृढ और स्थायी सावित हुआ था। अब इस सबध का एक प्रतीक उसे मिल सकता था। *हर्ष से सबध की निरतरता बनी रह सकती थी। यह निर्णय कंटक-पथ सावित होगा, यह समझना मुश्किल नही था। हर्ष के आत्मसहार को उसने कायरता माना था। क्या वह भी कायरता दिखाये और क्लिनिक मे मुक्ति पाकर बाहरी तौर पर धुली-पुँछी जिदगी जीती रहे?* निरर्थक विवाद मे पडने की उसमे कोई चाह नहीं थी। लेकिन उसके पेट मे जो बीज है, वह सिर्फ हर्ष की ही स्मृति

नही, उसका अपना भी अश है। वह उन दोनो की साक्षी प्रतिबद्धता है। अपनी कलानिष्ठा के वाद यह वर्षा का सबसे महत् मानवी गठबधन है। मै इस फैसले का मूल्य चुकाने को तैयार हूँ।"[67] आज की प्रेमिका के रूप मे वर्षा का यह कृत्य आनेवाली नारी को क्या दिशा दे सकता है? इसे समझना कठिन नही है।

"रेखा' भी, 'वर्षा' की ही तरह प्रेम की चरम अभिव्यक्ति शारीरिक सबध मे ही मानने वाली आधुनिक नारी है। वह प्रेम की मादकता को स्पष्ट कर कहती है- "तुम्हारा वह प्रथम चुवन! आह, कई दिनो तक वह स्पर्श मेरे होठो पर सुलगता रह गया। उस दिन के एक-एक क्षण को, एक-एक कपन और स्पर्श को मै कई दिनो तक महसूसती रही उन्ही क्षणो मे जीती रही उसी नशे मे झूमती रही। तभी मुझे लगा था कि अगर प्रेम की दुनिया सचमुच ही वर्जित और खराब होती तो इसमे इतना सुख कहाँ से आता यह सब इतना अच्छा क्यो लगता। मै तुम्हारे आगे समर्पित होती गयी अपने को पूर्णत तुम्हारे कदमो पर डाल दिया अपना कुछ भी अदेय नही रखा छिपाया नही - तन-मन-प्राण सब! तुमने कभी रोका नही।"[68]

आज की नारी प्रेम के कारण, अपने स्वाभिमान के साथ समझौता करने को तैयार नही है। 'सुनदा' एक श्रमिक नारी है जो 'सुहैल' नाम के मुस्लिम युवक से प्रेम करती है। और विवाह पूर्व यौन-सबधोकी विकृति के कारण वह गर्भवती हो जाती है। सुहैल यह बात ज्ञात होने के बाद उससे शीघ्र विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है ताकि वह बच्चा और अपने प्यार, दोनो को अनैतिकता के दायरे से बचा सके। किन्तु उसकी यह शर्त होती है कि पहले सुनदा मुस्लिम धर्म को स्वीकार करे फिर दोनो का विवाह होगा। सुनदा को लगता है कि - *"समझौते, ' आदि तो होते है अत नही]। फिर जो शर्त पहले नही थी बाद मे क्यो शर्त बने। सुहैल ने प्रेम करने के समय तो कोई शर्त नही रखी? व्याह करना होगा तो उससे नही, इस्लाम से करना होगा।'*[69] उसने धर्म परिवर्तन करना स्वीकार नही किया और अपने नाम को परिवर्तित करने के लिए भी तैयार नही हुई। उसने अपने बलबूते शिशु-बच्ची को जन्म दिया और अपनी जिदगी जीती रही। इस प्रकार सुनदा ने प्यार का मूल्य तो चुका दिया किन्तु स्वाभिमान के साथ समझौता नही किया।

उलझ आये बालो को कानो के पीछे सॅवाराते हुए 'रूपा' ने धडकते दिल से अपने सबधो को स्वीकार किया, अपनी भावनाओं को सशब्द अभिव्यक्ति दी -''शुभ-अशुभ का मुझे ज्ञान नही कुन्दन। मै इतना ही जानती हूँ कि मै तुम्हे प्यार करती हूँ। किसी दूसरे को कभी प्यार कर सकूँगी, ऐसा मै कभी सोच भी नही सकती। मै लैला शीरी होने का दम नही भरती पर *किसी ने कहा है न कि, आदमी से प्यार करने के बाद भगवान से भी प्यार करना कठिन हो जाता है, मेरा भी वही हाल है।* ''[70]

वर्तमान युग मे प्यार सिर्फ भवनाओं की अभिव्यक्ति मात्र नही रह गया है बल्कि इसके आगे भी कुछ चाहता है। आधुनिक प्रेमिकाओं की यह एक विशेषता है कि वह कपडे की तरह अपने प्रेमी भी बदलती रहती है वह विल्कुल लज्जा विहीन हो गयी है। न तो कोई वर्जना रह गयी है और नही कोई मर्यादा। प्रेमी इनके लिए मौज-मस्ती का साधन है जिसके साथ इच्छानुसार मस्ती-करती है और कुछ समय बाद सबकुछ भूल जाती है। इनके लिए प्रेम का मतलब सिर्फ-वासना है इसकी पूर्ति करना यह अपना धर्म समझती है। नारी सिर्फ स्वतत्रता नही चाहती, बल्कि वह उच्छृखल हो जाना चाहती है। बिल्कुल पशुओं की तरह। 'स्मिता' ऐसी ही नारी है जो वेशर्मी की हद पार कर जाती है उसका प्रेम, प्रेम नही बल्कि कुठित प्रेम है। वह अपनी कुठाओं की अभिव्यक्ति 'नमिता' से करती है- ''एक शाम मैने शरत को फोन पर कहा, शरत! बडी जोर से तुम्हे प्यार करने का जी हो रहा है। चलो कही किसी होटल मे एक सस्ता-सा कमरा लेकर मिलते है कडोम का पैकेट साथ लाना न भूलना। उसे इस्तेमाल मुझे मालुम नही। मेरा तो पारा आपे से बाहर हो उठा। गधे की औंलाद मै तेरे बच्चे की कुँआरी मा नही बनना चाहती और जो लडका इस्तेमाल करना नही जानता, वह मेरा प्रेमी होने के काबिल नही। बैठ घर मे।'' पुन बोली - ''हर दूसरे-तीसरे रोज पगलाया-सा फोन खटखटाता रहता है। मेरी 'हेलो' सुनते ही रडी रोना शुरु कर देता है। फोन पकडे मै नि शब्द उसकी गिडगिडाहट सुनती रहती हूँ। कुछ देर बाद फोन रख देती हूँ। वैसे तो हरामखोर मर्द रोते नहीं साआल्ले, रूलाने पर ही रोते है, रूलाने वाला कोई चाहिए।'' [71] *स्मिता का यह प्रेम एक विकृति है जो न तो प्रेम करने वाले को कुछ दे सकता है और नही समाज मे प्रतिष्ठा पा सकता है। इसको सदैव हिकारत की नजर से ही देखा*

जाएगा, आज भी और आनेवाले कल मे भी। यद्यपि यह सही है कि चित्रा मुद्गल ने जिस प्रेम को उजागर किया है वह तथा कथित उच्चवर्गीय नारियो मे ही पाया जाता है मध्य एव निम्न वर्गीय नारी इस तरह की मनोविकृतियो की प्राय शिकार नही होती। वह सहजता की जिदगी जीती है इसलिए उसके कार्य व्यापार भी सामान्य ही होते है। यद्यपि इस वर्ग मे भी उच्चवर्गीय नारी की छूत लगने लगी है पर यह अपवाद के रूप मे ही देखने को मिलती है।

'रेखा' त्यागमयी नारी है। वह अपने प्रेमी के भविष्य को बनाने के लिए अपना घर-परिवार, शहर सबकुछ छोडकर दिल्ली चली जाती है और नौकरी करती है ताकि गोपाल को अधिक से अधिक रुपया भेज सके। "वह चाहती थी कि पार्ट-टाइम नौकरी करके अधिक से अधिक पैसा कमा सके और ज्यादा से ज्यादा रुपया गोपाल के पास भेज सके- गोपाल के सुन्दर भविष्य के लिए वह कठिन से कठिन परिश्रम करने को भी तैयार थी   कोई भी दु ख सहने को प्रस्तुत।"[72] आज की नारी प्रेमिका की भूमिका मे आने पर अपने प्रेमी के लिए सिर्फ त्याग ही नही करती बल्कि अपनी तरह से जिदगी भी जीती है। यदि प्रेमी विश्वासघात करता है, तो उसके नाम पर आजीवन अविवाहित बैठी नही रहती बल्कि दूसरा जीवन साथी ढूँढ लेती है। वह प्रेमी से प्यार भी करती है और समय आने पर उससे प्रतिशोध लेने मे भी झिझकती नही है।

नारी के समस्त रूपो मे, उसका विधवा रूप समाज द्वारा निरादृत समझा जाता है। पति के मरते ही नारी का अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है। ऐसा लगता है, कि जैसे नारी के अस्तित्व के होने का मतलब है - पुरुष का साथ, सामाजिक रुढियो के कारण वह पुरुष के विना कुछ भी नही है, कहा भी गया है - *''जियबिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।''* किन्तु आज इतनी भयावह स्थिति नही रही जो कभी थी। समाज की सोच और नारी के मूल्यो मे बदलाव के कारण अब उसका वैधव्य पूर्व जन्म के पापो का परिणाम नही माना जाता। यही कारण है कि अब वह अपमान और उपेक्षा का पात्र नही समझी जाती। वह पुरानी रुढियो को अस्वीकार कर, जीने के नये तरीके अपनाने लगी है पति की मृत्यु के बाद अभिशप्त जीवन जीने की वजाय, वह नया जीवन जीने के लिए प्रयास करती है। विगत को भूलकर आगत को सुखी बनाना चाहती है। यदि समाज उसके सुख की अभिलाषा को अनैतिक मानता है तो वह समाज की परवाह न करके, अपना जीवन स्वेच्छानुसार जीने लगती है। 'मिसेज मेहता' विधवा नारी है और एक बेटे की मा भी। सामाजिक रुढियो के चलते वह पति की मृत्यु के बाद पुन विवाह नही करती और विधवा का जीवन व्यतीत करती है। किन्तु उन्हे यह जीवन सहजता से स्वीकार्य नही होता बल्कि इसे वह सामाजिक एव पारिवारिक दबाव के चलते अपनाती है। पुत्र के विवाह के बाद वह अपने दायित्व से मुक्त हो जाती है और विवाह कर लेती है। नारी के ऊपर थोपे गए इन्द्रिय निग्रह का विरोध कर कहती है - *''यह जीवन भोग है और इसे भोगकर ही समझा जा सकता है कि हमे जीवन मिला है। जो इसे भोग नही सकता वह जीवित ही नही है। मै आपके सामने यह कह सकती हूँ, क्योकि मैने आपके समाज द्वारा निर्मित मर्यादाओ को ओढकर अपनी उम्र के सबसे गौरव भरे काल को शीतनिद्रा मे गुजार दिया। सहमी हुई, ठिठुरी हुई, डरी हुई, अपने आपको पीसती हुई, अपने आपको अपने से चुराती और छिपाती हुई, जीती रही मै। और तभी यकायक मुझे लगा मै भीतर से जीवित हूँ। मैने तय किया, अब मै निर्भय होकर अपना सुख और भोग प्राप्त करूँगी और किया।''*[73]

इसी तरह प्रेम ने पति की मृत्यु के बाद कुछ दिन तक शोक मनाया उसके बाद अपनी

अवोध वच्ची का भी मोह त्याग दिया, और अपनी जिदगी को सहजता पूर्वक जीने के लिए, पर पुरुष के साथ गॉव छोडकर चली गयी। पुत्र की मृत्यु के बाद दु खी सास ने वेटे की कमी बहू से पूरी करनी चाही इसलिए प्रेम के घर छोडकर जाने की बात पर, उसने उसे बहुत समझाया, बच्ची के पालन-पोषण के लिए मा के कर्तव्य को चेताया फिर भी प्रेम ने अपना इरादा नही बदला और विधवा, वृद्ध सास के सहारे अपनी दुध मुँही बच्ची को छोडकर अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए चली गयी।''74

'बसुधा' अपने पति से 'प्रेम' करने वाली नारी है, वह उसकी मृत्यु के बाद अकेलापन महसूस करती है। किन्तु सामाजिक रुढियो के कारण वह मानसिक सत्रास से गुजरने लगती है। एक तो पति की आकस्मिक मृत्यु उसे झकझोर कर रख देती है दूसरे समाज के नकारात्मक-दृष्टि कोण के कारण उसे लगता है कि निखिल के जाने के बाद अब जिदगी मे कुछ भी शेष नही रह गया। वह विधवा जीवन पर नये सिर से सोचती हैं - *''करने को क्या रह जाता है? सिय मान लेने के कि पटाक्षेप हो गया। मान लेना कि ॲधेरा ही सच है। अकेले हो गए होने की नियति ही सच है। सूने सपाट माथे को सौन्दर्य दीप्त कर सकने वाले टीके का और कोई अर्थ नही। न ही नीरव-एकात को चूडियो की घरेलू खनक से हर लेने की अपनी कोई महत्ता। वह सब कुछ तो एक प्रतीक मात्र था। एक पराई मिल्कियत। मालिक के चल बसने पर लवादे की तरह उतार फेकी गई। अपनी कुछ नही, हैसियत को और नगा कर दिया गया।''*75

किन्तु सभी नारियॉ एक ही दृष्टिकोण नही रखती। 'नमिता' की मा, पति की मृत्यु का काम समाप्त होने के पूर्व ही चहकने लगी। उसे पति के निधन का कोई शोक ही नही था। पिता की अनुपस्थिति मे मा की हसी ठिठोली देख कर नमिता कुढ जाती है । किन्तु उसकी मा किसी, औंपचारिक्ता की परवाह नही करती। नमिता मा के असामाजिक क्रिया कलाप को वर्दाश्त नही कर पाती और न चाहते हुए भी कठोर स्वर मे प्रतिवाद करती हुई कहती है -''सॉझ की ही तो बात है। बाबूजी की शैय्या के स्थान पर वह दीपक जला कर रख रही थी कि मा और मौसी के समवेत ठहाको ने माथा धुमा दिया। वितृष्णा से भर उसने मॉ को टोका। हॅसने की मनाही नही, मगर क्या वे धीमे से

नही हस सकती कि बद दरवाजे उनकी उद्दडता पर परदा डाल सके?''[76]

'नीलिमा' की मा ने विधवा होने के वाद हिम्मत नही छोडा। स्वय दु ख झेलते हुए भी उन्होंने अपनी इकलौती बेटी को आत्मनिर्भर बनाने का फैसला किया। जो दु ख वह भोग रही थी उससे वेटी को बचाने के लिए उसे उच्च शिक्षा दिलाने का प्रयास करती है। समाज एव परिवार के विरोध को झेलकर भी वह अपने निर्णय के प्रति आडिग रही - *''नीलिमा को पढाया। पूरे खानदान के विरोध के वाबजूद पढाया। उसके ताऊ ने तो बहुत सर मारा था कि गॉव के स्कूल से दसवी पास कर ली है। अब शादी कर दे। ना, उनकी बेटी खूब पढेगी। एक चहर दीवारी से उठे तो गाजे-बाजे के साथ दूसरी चारदीवारी के अन्दर जा पडे, लेकिन अब वह जमाना नही रहा। बेटी को खानदानी परम्परा की दु:खद धरोहर क्यो कर सौपती।''*[77]

'बसुधा' के भाई ने उसे पुन विवाह करने के लिए कहा तो वह वेचैन हो उठी। उसे लगा लोग अपनी मर्जी से किसी के भविष्य का निर्णय कैसे ले लेते है? जिसको विवाह करना है उसकी सहमति-असहमति को ध्यान मे रखकर कोई कदम क्यो नही उठाया जाता?क्या विधवा नारी की कोई अपनी जिदगी नही होती उस पर दूसरो द्वारा लिये गये निर्णय क्यो थोप दिए जाते है।

''क्या जवाब दे ? *क्या कहे यह जिदगी है या काठ का कोई शहतीर जब जहॉ से चाहा काट दिया गया। एक टुकडा चिता के साथ धधकने के लिए रख दिया, दूसरा नई इमारत की पहली चौखट मे जड देने के लिए रख दिया गया।''*[78] उसके सामने बार-बार शादी का प्रस्ताव रखा जा रहा है जबकि उसकी भावनाओं की जडे निखिल के साथ गहरे जुडी हुई है। *''उन्हे क्या पता कितनी छोटी-छोटी वातो पर बधक पडी है जिदगी। निखिल को आम खाने का शौक था तो आम देखने तक की इच्छा नही होती स्वतत्रता उसे नही है अपने आप से नाही अपने भीतर से नही।''*[79]

क्या वह शादी के बिना अकेले नहीं रह सकती। किसी न किसी पुरुष को अपनाना जरूरी है। क्या नारी होने की सार्थकता तभी है जब वह पुरुष के साथ रहे। नारी के अपने अस्तित्व के लिए इतना बड़ा प्रश्न चिन्ह क्यो? *''सार्थकता और पुरुष - यह दोनो एक ही चीज के नाम क्यो है स्त्री के जीवन मे ? इतनी बडी जगह क्यो घेर ली है इस सबध ने कि हर चीज की व्याख्या इस*

बिन्दु से ही होने लगे।   किस लिए जरूरी है किस न किसी के गले मे बॉध देना। बैल के गले मे पडे लक्कड के लटकेपन को सार्थकता समझने की हठ करना क्या वही एक समाधान है   वही एक पगडीडी   एक वही उद्देश्य है जीवन का   अतिम। '[80]

समाज की एक प्रचलित धारणा है कि विधवाओ को इन्द्रिय-निग्रह पर ध्यान दंना चाहिए जिससे वासना से दूर रहकर मृत-पति की स्मृति के सहारे जीवन गुजारा जा सके। आधुनिक नारी पति की मृत्यु को अपनी जिदगी का अन्त नही समझती, बल्कि जीवन मे आयी रिक्तता को दूर कर, अन्य पुरुष के साथ जीवन का आनन्द लेना चाहती है। वह जीवन को वहती हुई नदी के रूप मे क्रियाशील रखना चाहती है। ठहरे हुए पानी की तरह गति हीन नही। अब किसी एक पुरुष के नाम पर जीवनपर्यन्त घुटते रहना उसकी प्रवृत्ति मे नही रह गया है वह जीवन का भर-पूर सुख लेना चाहती है। सामाजिक नैतिकताओं के बोझ तले दबना नही चाहती। 'मिसेज मेहता' इसी प्रकार की नारी है -
'' मनुष्य तो उसी दिन प्रकृति से हार गया जिस दिन उसने यह अहकार पाला कि वह प्रकृति को जीत सकता है। वह उसकी अत प्रकृति हो या वाह्य-प्रकृति वह उसे रौदने का प्रयत्न करता रहा और वह उग्र होती चली गयी। वह उसके रहस्य खोलने को पागल रहा और वह अधिक रहस्यमय, अधिक जटिल, अधिक अबोध होती चली गई। अरे, अणु ब्राह्माड से बढकर उसका पार पाएगा या अपने को मिटाएगा। महाशक्ति से लडोगे तुम? महामाया को परास्त करोगे, जिसने तुम्हारे ब्रह्म को, परमपुरुष को परास्त कर दिया? कैसे-कैसे नाच नचाती रहती है वह उसे। उसी के अश से, अपने ज्ञान के अहकारर से पागल होकर, अपने ही विनाश का इतना प्रबध कर बैठे हो कि उसने किसी भी मूढ को उकसा दिया तो पूरा ससार राख की ढेर मे बदल जाएगा।   वह तुम्हारे भीतर भी है और तुम्हारे वाहर भी। तुम उसे बाहर से जीतने चलोगे तो तुम्हे भीतर से तोड देगी। भीतर से जीतने चलोगे तो बाहर से पगु बना देगी। लुज-पुज। अरे निमित्त-कर्ता को कैसे जीत सकता है? चालक-शक्ति तो वही है। ''[81]

'प्रेम' के घर से चले जाने और पराए पुरुष के सग रहने पर, उसकी सास ने उससे सारे सबध तोड लिए। यहॉ तक कि घर मे उसका प्रवेश भी वर्जित कर दिया। 'मन्दा', मा की यह

स्थिति सह नही सकी। उसे लगा, दादी ने मा को उपेक्षित इसलिए समझ लिया, क्योकि विधवापन के लिए बनाये गये निषेधो को झेलती रही, अम्मा ने उन्हे नकार दिया। जिन दैहिक-सुखो को वऊ ने इच्छा या अनिच्छा से कुचला, उन्ही को अम्मा ने अनिवार्य समझ लिया। उनका गम यह भी हो सकता है कि विधवापन के चलते सामाजिक-विधान की भागीदार वे ही अकेली क्यो हुई? *यह दण्ड उनकी बहू ने क्यो नही भोगा? हवेली की मर्यादा की रक्षा मे हो या होने की सजा केवल। उनके लिए और जायदाद का बँटवारा बराबर-बराबर। यह कहॉ का न्याय है? सभवत यही कुठा चबा गई बऊ की उदारता को। अम्मा को निष्कासन के सिवा और क्या दे? लेकिन किस स्त्री मे देह की भूख नही रहती विधवा होने पर क्या सूख जाते है स्रोत?* 'मदा की सोच परम्परा से हटकर नयी सोच को प्रोत्साहन देती है। विधवा नारी को भी जीने का अधिकार है क्योकि पति के साथ ही इच्छाए दफन नही हो जाती।[82]

पति की मृत्यु को प्रकृति का नियम मानकर, वह पूर्ववत् जीवन जीने लगी, यद्यपि अभी ब्रह्मभोज भी नही हुआ था। पर उसे सामाजिक-बधनो से भी कोई सरोकार नही रहा-कि कम से कम समाज के भय से ही पति की मृत्यु पर शोक सतप्त हो ले। उसने अपनी बेटी 'नमिता' से कहा *''अपना जीवन जीकर जिसे जाना था सिधार गया, उसके मरे मै भी मर लूँ, ऐसी सती सावित्री मै नही। जबतक जागर चलेगा अघाकर जियूगी। बूढी हड्डिया टेका लेने को मजबूर होगी तो ढूढ लूगी कोई कुआ बावडी। अनपढ आई थी तो क्या औरत नही थी? जा तू अपना काम देख टगडी लगाने की जरूरत नही, मेरे उठे-बैठे, हँसे-बोले?'*[83]

'मिसेज मेहता' एक विधवा नारी है जो पति की मत्यु के बाद सामाजिक रुढियो के चलते वैधव्य- जीवन का पालन करती है उन्होने वाह्य तौर पर अपने को नियत्रित कर रखा था पर आन्तरिक रूप से उनकी इच्छाए मरी नही थी। बेटे की शादी के बाद बहू के घर मे आने पर, उसके बनाव-श्रृगार को देख-देख कर उनकी सुप्त वासनाए जाग्रत हो उठी -''श्रीमती मेहता, एक बच्चे की मा बनने के बाद विधवा हो गई, अध्यापकी की कमाई से अपने इकलौते बच्चे को जतन से पाला, त्याग और तपस्या का जीवन बिता कर। इन्हे लोग उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत करते थे। किन्तु लडके के

विवाहोपरात मेहता की वे सारी लालसाए उग्र होकर जाग पडी जिन्हे युवावस्था मे वह दवाए रही। उन्हे विश्वास था कि - इस उम्र मे भी वह अपनी बहू से सुन्दर ही पडेगी। अब वह वन-ठनकर देर-देर तक शीशे के सामने खडी अपना रूप निहारती रहती । कई वार तो वह अपनी वहू से कहना चाहती, मेरी उम्र ढल गई तो क्या, अभी जवान छोकरे भी''[84]

वह मा के प्रति, दादी के आक्रोश को देखकर, दु खी हो जाती, उसकी स्नेहिल-वऊ, वैधव्य जीवन की त्रासदी झेलने के कारण विधवा-बहू के पूर्नविवाह और सुख-पूर्वक जीवन को सहजता से नही, ले पायी। वह अवसर मिलने पर उसे अपमानित करने का मौका नही छोडती। वह प्रैम से घृणा करती थी, जबकि उनका व्यवहार इसके विपरीत था। ''बस, एक ही दुख सालता रहा पुरुष समाज के डर से बऊ ने जिस आदिम-भूख को निर्ममता से मारा है उसके परिणाम स्वरूप डाह का जन्म हुआ है। यदि बऊ ने वैधव्य अपने लिए जिया होता तो उन्हे अम्मा पर क्रोध न आता, जिसकी जडो मे क्षमा भाव भी रहता। डाह के चलते तो बदला ही लेगी। बऊ? ''[85] 'प्रैम' अपनी बेटी से मिलने एव उसको अस्पताल की व्यवस्था के लिए, रूपया देने अपनी ससुराल आयी, तो विधवा सास ने घर के अन्दर नही आने दिया। अत वह अपनी बेटी 'मदा' के साथ एक रात अस्पताल मे ही रही। इस बार गॉव वालो ने तरह-तरह का व्यग्य किया। वह उसे कौतूहल-पूर्वक देखते रहे जो मदा को अच्छा नही लगा उसने मन हीमन सोचा - *''गॉव मे हुए आठ ऐसे जोडे है, जिन्होने दूसरा विवाह किया है। माना कि पुरुष है तो क्या? अम्मा स्त्री होने के नाते दण्ड की, मरवौल की, हेय की दृष्टि की भागीदार है? यदि ऐसा नही है तो उन पुरुषो से अटपटे प्रश्न क्यो नही पूछता कोई? उनकी निगाह नीची क्यो नही होती? वे अस्पताल जैसी सार्वजनिक जगह मे रात काटने को क्यो विवश नही किये जाते।* '[86]

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि जो नारियॉ पति के प्रेमवस पुन विवाह नही करती वे तो सहज जीवन जीती है किन्तु, जो सामाजिक रुढियो के कारण वैधव्य-जीवन अपनाती है उसके भीतर कुठा घर कर जाती है, जिसका परिणाम दुष्प्रभाव कारी होता है। वे विधवाओं के पुर्नविवाह एव उनके जीवन को देखकर अपनी कमी का एहसास करती है और उनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है।

भारतीय समाज दोहरे मापदड लेकर चलता है। नारी के लिए अलग और पुरुष के लिए अलग। सदियो से नारी दवी-कुचली जिदगी जीती रही है, वह शासित रही और पुरुष शासक। वह उसकी-अच्छी बुरी जिदगी का नियन्ता रहा है, और कमोबेश स्थिति आज भी वही है। नारी उसकी कसौटी पर खरी नही उतरी कि उसने कपडे की तरह उठाकर फेक दिया, फिर वह कहॉ जा गिरी, इससे उसे कोई मतलव नही है। पुरुष-प्रधान समाज मे 'परित्याग' का अधिकार पुरुष के पास सुरक्षित है, नारी उसके इशारो पर नाचने वाली नटी है। पुरुष ने सारे नियम अपनी इच्छानुसार और अपने हित के अनुकूल बनाए। सदियो से जिसका मोहरा नारी बनती रही है। उसकी गलती हो या न हो यदि पुरुष की नजर ने उसे सिद्ध कर दिया कि वह गलत है तो उसके जीवन को अभिशापित करने का अधिकार पुरुष के पास है। यही कारण है, कि पत्नी के परित्याग से, इतिहास भरा पडा है जबकि किसी पत्नी ने पुरुष का परित्याग कर दिया हो यह खोजने पर भी शायद न पता चले। क्योकि नारी को प्रारभ से ही ऐसे सस्कार दिए जाते है कि वह सदैव पुरुष के सामने सिकुडी-सिमटी रहती है निगाह नीची किए पडी रहती है। *किन्तु अब सामाजिक परिवर्तन एव शिक्षा की जागृति के कारण उसकी भी मानसिकताए बदल रही हैं उसके जीने के मूल्य बदल रहे है वह उन कमियो को दूर कर अपने को बधक मानने से अस्वीकार करने लगी है। उसने अपनी जिदगी का फैसला स्वय करना शुरू कर दिया है। यदि पुरुष उसका परित्याग कर देता है, तो वह उसके सामने दया के लिए गिडगिडाती नही बल्कि अपना सफर खुद तय करती है। अब वह प्राय अपने स्वाभिमान के साथ मसझौता नही करती। अकेली रहकर या विवाह करके सामान्य जीवन जीती है*। 'कुसुमा' ऐसी ही भारतीय नारी है, परस्त्री गामी पुरुष ने जब उस पर लाक्षन लगाकर उसका परित्याग कर दिया तो उसने एकाकी जीवन को स्वीकार नही किया बल्कि दाऊजी के साथ उसने अपने सुख-दु:ख को बॉटकर जीवन-यात्रा तय करने का निश्चय किया। मानव की समस्त जैविक इच्छाए उसने पूरी की, पति ने जब रोका-टोका तो वह तनकर खडी हो गयी। सास ने घर की मान-मर्यादा को बनाए रखने के लिए, उसे घर के एक कोने मे पडी रहने को कहा तो उसने उनका भी जवाब दिया- *"अगिन साच्छी करके ही आये*

थे तुम्हारे पूत के सग। सात भॉवरे फिरके। लिहास रखा उसने? निभाया सबध? ''दूसरी बिठादी हमारी छाती पर। ॲधेर पीते रहे तुम लोग। खाक है बूढे जनपर। उस दिन से कोई सबध, कोई नाता नही रहा हमारा। जो व्याह कर लाया था उससे ही कोई ताल्लुक नही तो इस घर मे हमारा कौन ससुर और कौन जेठ?'' [87]

'सतवती' का पति कौशल्या पर अनुरक्त हो जाने के कारण उससे कटने लगा, उसे सतवती मे कमियॉ - ही कमियॉ नजर आने लगी बह बात-बात पर सतवती के साथ दुर्व्यवहार करने लगा, कुछ दिनो तक, वह यह सब वर्दाश्त करती रही फिर अपनी बेटी को लेकर मायके चली आयी। 'वर्षा' को अपनी अपबीती सुनाते हुए, रोकर कहा -''उस जैसी गृहस्वामिनी पर कोई ॲगली कैसे उठा सकता है मेरा घर चम-चम चमकता था। मेरी रसोई मे आपको एक मक्खी भिनभिनाती मिल जाये तो वेशक आप मुझे सूली पर लटका दो। जुल्म की हद तब हो गई, जब पति ने सौतन को छाती पर लाकर बिठाया। ''[88] सतवती को दु ख इसबात का था कि उसमे तो कोई कमी थी ही नही, पतिव्रता भी वह थी, फिर पति ने उस पर इल्जाम लगाकर छोड क्यो दिया? वर्षा के सहयोग से उसने टाइपिग का काम सीखा और टाइपिग करके अपना तथा अपनी बेटी का खर्च निकालने लगी। मायके वालो पर वोझ बनकर जीने की बजाय उसने परिश्रम का रास्ता चुना।

जब गोपाल ने रेखा को छोड, किसी अन्य से विवाह कर लिया तो वह बहुत रोई, उसने सोचा जिसके प्रेम मे पागल होकर वह अपना गॉव, अपना परिवार छोडकर आ गयी, उसी ने उसके साथ धोखा किया पहली वार उसे अपना घर छोडकर आने पर दु ख हुआ घर छोडकर उसने। '' मूर्खता की थी पिता की बात न मानकर उसने गलती की थी। स्त्री आज भी उतनी ही असहाय है उतनी ही कमजोर है। उसे फैलने के लिए जीने के लिए एक सहारा चाहिए, एक आधार चाहिए - पुरुष का आधार अब वह घर नही लौट सकती। उसे वहॉ स्वीकार नही किया जाएगा मा पिता, भाई बहने, टोला-मुहल्ला सबकी सामूहिक घृणा की आचमे वह जिदा ही झुलसने के लिए घर नही लौटेगी नही लौटे गी। ''[89] रेखा ने साहस बटोरा, उसने अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नही किया, न ही, वह पिता के पास आश्रय के लिए गयी और न ही उसने गोपाल से अपना

अधिकार मॉगा। उसने जीने का फैसला, किया और उसके लिए सघर्ष का रास्ता चुना। उसने नौकरी कर ली।

'नीलिमा' अपने पति से अलग रहती है, वह लेक्चरर के सम्मानित पद पर कार्यरत है किन्तु अकेली होने के कारण हर पुरुष उसे अपनी सपत्ति समझता है। उसे सबकी निगाहो मे सिर्फ वासना झलकती है इसके अतिरिक्त कुछ भी नही। वह लोगो की प्रतिक्रिया देखकर सोचती है- ''आत्मनिर्भर और अकेली रहने वाली औरतो की यही नियति है? हर आने-जाने वाला उन्हे रास्ते का पत्थर क्यो समझता है। उसकी शादी न हुई होती, तो कम से कम लोग तरस खाते। सोचते कि वाप के न होने से कोई देखने-भालने वाला न होगा। या दहेज के चक्कर मे शादी न हो पाई होगी। लेकिन उसका मामला तो गडबड है। शादी शुदा और अकेली। न पति का कभी आना न उसकी खोज खबर पीछे न जाने क्या क्या सोचते होगे। तभी तो अभिजित की हिम्मत हुई थी उसका हाथ पकडने की। ''[१०]

नारी जीवन की कितनी बडी त्रासदी है कि एक तरफ वह पुरुष द्वारा त्यागी जाती है तो दूसरी ओर अकेली होने के कारण पुरूष की वासना को झेलने के लिए मजबूर होती है। वह अपनी सोच अपने क्रिया-कलापो मे परिवर्तन ला सकती है परन्तु पुरुष की कुठा को कैसे बदल सकती है? जिसके लिए दुनियॉ की सारी नारियॉ 'उपभोग की वस्तु' के अतिरिक्त कुछ भी नही है। पुरुष आदिकाल से चली आ रही अपनी निकृष्ट मानसिकता को आज भी छोडने के लिए तैयार नही है। आखिर कब तक यह अराजकता चलती रहेगी? जिस मे नारी-समुदाय पिसता रहेगा? *आखिर कब तक झेलती रहेगी नारी पुरुष की गुलामी? वैश्वीकरण की दुनियॉ मे जहॉ एक देश दूसरे देश से जुडने को आतुर है, एक-दूसरे की उपयोगिता को समझ रहे वही पुरुष के चितन मे नारी की स्थिति को लेकर बदलाव क्यो नही आ पारहा है? बदलाव की प्रक्रिया लाने के लिए आवश्यक है कि पुरुष की सामती प्रकृति को नकारा जाय, प्रारभ से ही उसके श्रेष्ठ होने के दभ को तोडा जाय। उसकी पाशविकता को सहन करने की बजाय उसे दण्डित किया जाय। पर यह सब करेगा कौन सरकार समाज या नारी स्वय?*

आर्थिक स्वतंत्रता और नारी

आर्थिक रूप से स्वतत्र होना नारी-जीवन की प्राथमिकता है। उसका प्रथम प्रयास स्वय को आत्मनिर्भर बनाना है। क्योकि वह भली-भाँति जानती है कि इन्ही चद-रुपयो के बल पर ही पुरुष उस पर धौस जमाता रहता है अपनी इच्छाए उस पर थोपता रहता है। और आर्थिक रूप से पराश्रित होने के कारण वह उसके द्वारा किए जा रहे समस्त अत्याचारो एव दुर्व्यवहारो को सहती रहती है कुछ बोल नही पाती। पति के घर को छोडने का मतलब है पीहर मे शरण लेना, जो भाभियो के चलते प्राय सभव नही हो पाता। यदि हिम्मत करके नौकरी की तलाश मे बाहर निकलती है तो नौकरी तो नही मिल पाती किन्तु उसकी अपनी अस्मिता जरूर खतरे मे पड जाती है। इसलिए नारी चाहे जिस भी वर्ग से सम्बद्ध क्यो, वह अपनी योग्यता के अनुसार आत्मनिर्भर बनने का प्रयास अवश्य करना चाहती है। शिक्षित एव मध्य वर्गीय, तथा उच्च वर्गीय नारियॉ नौकरी, व्यवसाय, मॉडलिग को अपनाती है तो निम्न वर्गीय अशिक्षित नारी और कभी-कभी मजबूरी बस शिक्षित नारियॉ मेहनत-मजदूरी को अपनी आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाती है। आज के प्रगतिशील एव व्यावसायिक युग मे जहॉ अर्थ ही सर्वोपरि होता जा रहा है, हर वस्तु का व्यावसायिकरण कर दिया जा रहा है। ऐसे मे, नारी सिर्फ पुरुष के ऊपर आश्रित बनकर कैसे रह सकती है? प्रथमेव आर्थिक स्वतत्रता के कारण आत्मनिर्भर होना उसकी आवश्यकता है, दूसरे सुचारू रूप से पारिवारिक सचालन के लिए भी आर्थिक तत्र का मजबूत होना आवश्यक है। तीसरे अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए भी नारी को नौकरी इत्यादि का सहारा लेना पडता है।

श्रमजीवी नारियॉ प्राय निम्न वर्ग की हो होती है या कभी-कभी मध्य वर्गीय शिक्षित नारी भी इसे अपना लेती है। निम्न वर्गीय नारियॉ गरीबी एव अशिक्षा के कारण मेहनत मजदूरी के कामो को करती है। क्यो कि इसके माध्यम से ही वह अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करती है। आर्थिक विपन्नता के कारण इस वर्ग की नारी अपने बाल्यकाल से ही आत्मनिर्भर बनने के लिए विवश हो जाती है। महनतकश नारियॉ, मधयवर्गीय एव उच्चवर्गीय नारियो की तरह सामाजिक परम्पराओ और रुढिगत मान्यताओ का अनुसरण नही कर पाती क्योकि वह मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बचपन से ही सघर्ष करती है। इसलिए वह काफी हद तक पुरुष की तरह ही स्वतत्र जीवन जीती है। शादी उनके लिए किसी एक पुरुष से बध जाने की नियति नही है। होश सभालते ही अपने बल-बूते क्षुधाग्नि को शात करने की विवशता के कारण वह मानसिक रूप से भी स्वतत्र रहती है। यही कारण है कि परिवार एव पति के दुर्व्यवहार को सहने की बजाय वह किसी अन्य पुरुष के साथ गठबधन कर लेती है। क्योकि पुरुष उनके लिए भरण-पोषण का माध्यम न होकर सिर्फ जैविकीय आवश्यकताओं की पूर्ति का कारण होता है।

किन्तु यह भी एक तथ्य है कि पुरुष किसी न किसी कारण को लेकर उनका शोषण करने से नही चूकता है। यही कारण है कि एक ओर मजदूरी करने वाली नारी आत्मनिर्भर है तो दूसरी ओर काम देने के नाम पर मालिक उनके साथ दुर्व्यवहार करते है। श्रमिक नारी दिन मे मजदूर करती है तो रात मे अपने शरीर के साथ समझौता। ऐसा नही है कि उसके भीतर प्रतिशोध की आग्नि नही धधकती पर पेट की आग उसे सबकुछ सहने पर मजबूर करती है और वे पुरुषो के आगे घुटने टेक देती है। 'अहिल्या' अपने माता-पिता को इकलौती सतान है। उसके माता-पिता वृद्ध हो जाते है लोग उन्हे काम नही देते। अत अहिल्या मजदूरी का काम करती है किन्तु मालिक लोग उससे मजदूरी ही नही करवाते बल्कि उसका शोषण भी करते है। मालिको की जोर जबर्दश्ती के कारण, अनेको लोगो के साथ सबध स्थापित करने के लिए बाध्य हो जाती है और चर्मरोग से ग्रस्त हो जाती है, उसकी बीमारी के कारण, बिना विवाह किए ही पत्नी की तरह रखने वाला जगेसर मारता-पीटता है और

अपने घर से निकाल देता है। अहिल्या की मा तुलसी आक्रोश और पीडा से भर कर कहती है- *''अरे हमारी बेबसी है ठेकेदार, हमे पेट के लाने दिन मे ही पथरा नही तोडने पडता, रात मे देह भी हमे बिना रौदे-चीथे तुम्हारी बिरादरी के लोग, पत्थरो को हाथ नही लगाने देते। बिटियॉ का करै, वूढी मताई को, बाप को काम नही देता कोई और जनी की जात मरद विरोवर काम नही कर पाती सो सहद के छत्ता की तरह निचोरते है मालिक लोग चीखते-चीखते रोने लगी और जगेसर की छाती खरोचती कमीज फाडती हुई धरती मे ढह पडी। ''*[91]

'सुनन्दा' स्वाभिमानी नारी है और आत्मनिर्भर भी। वह 'श्रमजीवी' मे नौकरी करती है। और एक मुसलमान युवक से प्रेम करती है, वह बिना विवाह के ही गर्भवती हो जाती है। युवक उससे विवाह करने से पूर्व उसे मुसलमान बनने के लिए कहता है जिसे वह स्वीकार्य नही करती और 'नमिता' से कहती है -'' 'सुहैल' ने प्रेम करने के समय तो कोई शर्त नही रखी? व्याह करना होगा तो उससे नही इस्लाम से ''[92] वह अविवाहित रहकर अपने गर्भस्थ शिशु को जन्म देती है। '' मै आत्मनिर्भर हूँ दीदी। अपनी बच्ची की परवरिश कर सकने मे समर्थ। मेरा मातृत्व व्याह के टुचे प्रमाण-पत्र का मोहताज नही। ''[93]

इसी प्रकार 'अजी' भी एक स्वाभिमानी नारी है, 'असलम' उसे छोडकर 'ग्लोरिया' के साथ रहने लगता है। और वह अपने दोनो बेटो के साथ रहने लगती है वह, जीविको पार्जन के लिए कपडो मे सलमा-सितारा टॉकने का काम करती है। रात-दिन काम करने के बाद वह थक जाती है फिर भी हसती रहती है - ''जिदगी तो गुजारनी ही है चाहे हॅसकर या रोकर। हॅसते रहने से हिम्मत रहती है, जितना रोओ उतना दु ख अन्दर-अन्दर बढता है। ''[94]

आत्मनिर्भर नारी अपने जीवन को स्वेच्छानुसार जीने के लिए स्वतत्र होती है। विशेषकर मजदूर वर्ग की नारियॉ लोक-लज्ञा और रुढियो से कम डरती है क्योकि वह किसी पुरुष की वजाय अपने बाहुबल पर जीवन जीती है। 'छविया' ऐसी ही नारी है जो झूठी मर्यादाओं को नकार कर एक दिन किसी के साथ चली गयी। *'' वह वचपन से भूख की लडाई मे जूझनेवाले वर्ग मे जन्मी थी। वह जीविका के लिए सघर्ष करती थी। मेहनत मजदूरी द्वारा रोटी कमाने मे हरिजनो और*

गिरिजनो की स्त्रियॉ पति की गुलामी का वोझ कहॉ ढोती है। कल को आदमी से नही पटी, तो वे अपने घर, पति अपने घर। जब शरीर उठाकर ही दो रोटी कमानी है, तब किसी का धौस क्यो सहे?'[95]

'देवेन्द्र' और 'नीलिमा' का सुखी परिवार था। उसके परिवार मे दोनो पति-पत्नी सास, ससुर, और दो प्यारे छोटे बच्चे थे, देवेन्द्र की मृत्यु के बाद घर को सभॉलने वाला कोई न रहा अत नीलम्मा ने वर्तन मॉजने का काम शुरुकिया। सास ने बेटे की अनुपस्थिति मे कहा - ''हमारे लिए तो तू ही देवेन्द्र है,'' कुछ दिनो तक यूँ ही चलता रहा तदुपरात नीलिमा 'राघव' के सम्पर्क मे आयी, दोनो एक दूसरे से प्यार करने लगे। राघव द्वारा बार-बार विवाह का प्रस्ताव रखने पर नीलिमा ने भी विवाह का मन बना लिया। पुन उसने सोचा, राघव से शादी करके वह तो सुखी हो जाएगी पर बच्चो को कौन सॅभालेगा? -''उसे राघव की सख्त जरूरत है मगर बच्चो की जरूरत उसकी जरूरत से कही अधिक बडी और विकराल है।''[96] अत उसने राघव से विवाह नही किया और बच्चो की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए वर्तन मॉजने के साथ ही घरो मे तेल-मालिश का भी काम करने लगी। अपनी श्रमजीविता के बल पर उसने परिवार को विखरने से बचा लिया।

मेहनतकश नारियो की सवसे बडी विशेषता यह होती है कि वह खुद्दार होती है। नैतिकता और मर्यादा उनके लिए सामाजिक चोचले भर होते है - क्योकि पेट की आग से बढकर कोई चीज नही होती किन्तु वह भी अपनी अस्मिता के प्रति जागरुक होती है। उनका भी अपना मान-सम्मान होता है जिसे वे चद रुपयो के बदले गिरवी नही रखती क्योकि उन्हे अपने परिश्रम पर भरोसा होता है वे किसी की दया पर नही पलती। 'कदमबाई' और 'जगलिया' का दाम्पत्य -जीवन सुखमय होता है। जगलिया कबूतरा के साथ मिलकर कदमवाई दारू पिलाने का काम करती है किन्तु उसकी मृत्यु के बाद वह अकेले ही दारू का अड्डा चलाती है। और मर्यादित जीवन जीती है। वह किसी की दया पर नही जीती प्रतिदिन परिश्रम करती है और स्वाभिमान के साथ जीती है। पति की मृत्यु के बाद, 'मसाराम' ने कदमबाई की सहायता के उद्देश्य से दो बोरा चावल उसके डेरे पर भिजवा दिया। कदमवाई को उसकी दया अच्छी नही लगी -' *'उसे अपने औरतपने पर आभिमान हुआ चावल वापस कर दिये। मलिया उन्हे लिए जा रहा है, कदमवाई की खुद्दार निगाह ताकतवर होती जा रही*

है/ '[97] अपनी ताकत पर भरोसा रखने वाली कदमबाई ने दया की पात्र बनने से इनकार कर दिया।

आज भी भारत मे, श्रमजीवी नारियो का शोषण जारी है। उनसे काम लेने वाले मालिक उनके साथ दुर्व्यवहार करते है। समय पर पूरा काम करवाते है किन्तु पारिश्रमिक देने मे कोताही दिखाते है। 'मन्दा' को यह बात बुरी लगी, फलत उसने ग्रामीण लोगो को स्वाधिकारो के प्रति जाग्रत करने का सकल्प लिया। उसके परिश्रम का फल यह हुआ कि मजदूर नारियाँ अपने अधिकारो को समझने लगी, उन्हे अपनी स्वतंत्रता समझ मे आयी। वे अपने ऊपर हो रहे अत्याचारो का विरोध करना सीख गयी। मन्दा मजदूरो का यूनियन बनाकर उनके अधिकारो की लडाई मिलकर लडती है इसलिए उसे रुपयो की आवश्यकता पडती है। श्रमिक नारिया इस कार्य के लिए उसे अपना छुपाकर रखा हुआ धन भी देने को तैयार हो जाती है - ''फिर क्या था, मरदो को पीछे छोडकर औरते आगे आ गयी। जिस पर जो था बाली, मुँदरी, पेजना, लच्छा, सब घर दिये। मदाकिनी देखती है कि सेगा-सेगी मे वे मायके भागी गयी। जिनके पास कुछ नही था भाइयो से पिताओं से, माताओं से, यहाँ तक कि भौजाइयो से उधार-सुधार, दबाया-छिपाया माँग लाई। अपड और चिथडो मे लिपटी औरते किस तरह लगी है। इस यज्ञ की तैयारी मे। ''[98] नारियो को आर्थिक दृष्टि से पिछडे पन एव कायरता पर दु ख हुआ और ग्लानि हुई कि वे जो काम मदा के नेतृत्व मे अब कर रही है वह पहले ही कर देती तो ऐसी दुर्गति न भोगनी पडती वह कहती है - ''हमारी समझ मे तो यह आ रही है मदा कि तुम्हारी सगत मे रहकर हमारी बूढी बुद्धि जो अबतक जग खाई पडी थी, धारदार होती जा रही है। नातर कितै मारी गयी थी वा समय हमारी अकल तब ही बढ लिये होते आगे। कर लिया होता है सला पर कहाँ, इससे अगाई कुछ सोचा ही नही,सिरकार-दरबार से परजा नही लड सकती। किसी विध सभव नही। ''[99]

आधुनिक नारी किसी भी काम को करना बुरा नही समझती बशर्ते उसके स्वाभिमान को चोट न पहुँचे। 'नमिता' बी0 ए0 की शिक्षा पूरी करने के बाद एम0 ए0 मे प्रवेश लेना चाहती है। तभी उसके पिता को 'सेरीब्रेल अटैक' पड जाता है अत घर का आर्थिक ढाँचा चरमरा जाता है। परिवार के भरण-पोषण एव पिता के इलाज की जिम्मेदारी उसके दुर्बल कधो पर आ जाती है। नौकरी के लिए

कोशिश करने का समय उसके पास नही होता। अत वह 'बेलनहारी' का काम करने लगती है वाद मे उसकी मा भी उसके साथ पापड बेलने जाने लगती है। दोनो मा-बेटी मिलकर जो कमाती है उसी से परिवार का भरण-पोषण होता है। कुछ समय के बाद 'अन्ना साहब' की कृपा से वह 'श्रमिक यूनियन' मे काम करने लगती है।

अपने आपको बुद्धिजीवी-वर्ग से सबद्ध रखने वाला पुरुष भी, नारी की असहाय स्थिति, का फायदा उठाने से नही चूकता। अन्ना साहब बाहर से मजदूरो के मसीहा है किन्तु भीतर से चरित्रहीन और शोषक है। वे नमिता की आर्थिक स्थिति को जानते है, अत उसका फायदा उठाकर एक दिनउसके साथ दुर्व्यवहार करने का प्रयास करते है। वह किसी तरह उनके मजबूत पजो से छूटकर भाग निकलती है और उनके यहॉ काम करना छोड देती है क्यो कि वह अपनी अस्मिता के साथ समझौता नही करना चाहती। 100

'सुनदा' 'सुहैल' के बच्चे की मा बनती है और अपने अधिकारो के लिए सघर्ष करती है। धर्मान्ध समाज उसे वर्दास्त नही कर पाता और उसकी हत्या कर दी जाती है। उसकी हत्या के कारण समस्त श्रमजीवी नारियो के मन मे आक्रोश उत्पन्न हो जाता है। ''सुनदा की मय्यत को अन्ना साहब और पवार ने कधा दिया अचानक विजली की सी फुर्ती से विमला वेन ने पवार को ठेल अर्थी को अपने कधो पर टेक लिया। उनके अप्रत्याशित व्यवहार से हत्प्रभ पवार एक ओर हटकर खडा हो गया। रामनाम सत्य है, की उठती समवेत स्वर लहरी सहसा हवा मे रग गई। *पहली बार सभवत किसी औरत को मय्यत को कधा देने का दुस्साहस दिखाया होगा। हो सकता है, मय्यत को कधा देने विमला वेन देश की पहली हठी महिला हो। उनके आचरण ने लोगे मे कुन मुनाहट भर दी।* ''[101]
श्रमजीवी नारी की हिम्मत देखकर लोग आश्चर्य मे पड गए उनकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या किया जायॅ, अन्तत पाटिल ने कहॉ- *''बाई साहब ये अब क्या कर रही है? आपको मालुम नही औरत के लिए मय्यत को कधा देना शास्त्र-सम्मत नही ?-'' श्रमजीवी'' की सचालिका विमला वेन ने जवाब दिया - ''कूप मडूक पुरुषो से हमे सीखना होगा कि स्त्रियो के लिए क्या शास्त्र सम्मत है क्या नही? निर्दोष स्त्री की नृशस हत्या करना शास्त्र-सम्मत है पाटिल? नही, तो पूछो अपने हृदय से कि क्यो*

हममे से किसी ने उसके प्राण ले लिए? मै कधा किसी औरत की मय्यत को नही दे रही, उस स्त्री-चेतना को दे रही हूँ जिसका गला घोटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मै हर जाति, धर्म, वर्ण की स्त्रियो का आवाहन करती हूँ कि वे सवकी सब श्मशान चले और बारी-बारी से सुनदा की मय्यत को कधा दे। ''[102]

सामाजिक परिवर्तन के साथ ही नारी के मूल्यो मे भी परिवर्तन आ रहे है। अब वह अपना अच्छा -बुरा समझने लगी है। और उसी के अनुरूप स्वय से तथा समाज से अपेक्षा करने लगी है। पहले मेहनत मजदूरी करने वाली नारियॉ अपने ऊपर हो रहे अत्याचार या दुर्व्यवहार को सहती रहती थी। वह अपने तथाकथित मालिको के विरोध मे कुछ बोल नही पाती थी बल्कि वह यथा स्थिति को अपनी नियति मान लेती थी। परन्तु आज की नारी शोषण सहने की विचार धारा से मुक्त हो चुकी है वह अवसर पाते की मालिको के प्रति विद्रोह कर देती है। क्योकि वह भले ही अशिक्षित हो किन्तु उसके वर्ग को प्रवुद्ध-नारियो का नेतृत्व प्राप्त होता है। जिसके कारण उसे अपने आधिकारो तथा कर्त्तव्यो के विषय मे पूरी सूचना प्राप्त होती रहती है। अत मध्य और निम्न वर्ग की नारियो को भी अपने स्वाभिमान और अधिकारो के साथ समझौता नही करनी चाहिए।

समाज की बदलती हुई विचारधारा के कारण नारी शिक्षा को प्राथमिकता दी जाने लगी है। माता-पिता अपनी पुत्री को भी उच्च-शिक्षा दिलाने लगे है। उन्हे भी अब यह बात समझ मे आनेलगी है कि पुत्री को पढाना आवश्यक है जिससे वह अपने ऊपर आयी किसी भी विषम स्थिति का सामना कर सके। अत माता-पिता भी अपनी लडकी को आत्मनिर्भर वनाना चाहते है। नारी स्वय भी अपने कैरियर को लेकर बहुत जागरूक हो चुकी है। अब वह सिर्फ किसी की पत्नी किसी की मा और किसी की बहू बनकर नही रहनी चाहती बल्कि अपना अलग स्थान बनाना चाहती है जहॉ वह रिश्तो के माध्यम से नही, अपने व्यक्तित्व के कारण पहचानी जायॅ। आत्मनिर्भर होने के साथ ही वह अपनी आत्मसार्थकता भी चाहती है। यही कारण है कि वह उन पदो पर भी पहॅुच रही हैजिस पर कभी सिर्फ पुरुषो का एकाधिकार माना जाता था। अब वह सिर्फ विवाह करके घर की चौखट मे बद होने को तैयार नही बल्कि सामान्य जीवन के साथ ही आत्मनिर्भर भी होना चाहती है। पहले की तरह विवाह अब उसके जीवन की प्राथमिकता मे शामिल नही है बल्कि एक आवश्यकता मात्र है। इसलिए वह आत्मनिर्भरता के साथ समझौता नही करना चाहती। *'रजना' के पिता जब उससे शादी के विषय मे बात करते है तो वह स्पष्ट रूप से कहती है -"मुझे अभी विवाह नही करना। मैंने मन मे ठान लिया है कि नौकरी मिल जाएगी तब करूॅगी। तब निर्णय लेने मे आसानी होगी।* '[103]

इसी तरह 'नमिता' भी विवाह की वजाय अपनी आत्मनिर्भरता और अपने पारिवारिक दायित्व को महत्व देती है- नमिता अपने घर की आर्थिक-स्थिति का आधार स्तभ है साथ ही एक स्वाभिमानी नारी भी। छोटे-भाई बहनो की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही वह उनको सुरक्षित भविष्य भीदेना चाहती है। किन्तु समाज की नजरो मे उसकी बढती हुई उम्र चर्चा का विषय वन जाती है। सभी उसके विवाह को लेकर कुछ न कुछ कहते रहते है और उसकी अशिक्षित मा के कान भरते रहते है। नमिता असमय ही घर की जिम्मेदारी सॅभालने के कारण आत्मनिर्भरता एव नौकरी के महत्व से भली-भॉति परिचित है। महत्वाकाक्षी एव जिम्मेदार होने के कारण वह किसी अन्य पर यानि पति पर विश्वास करने की अपेक्षा स्वय पर ज्यादा विश्वास रखती है। जब समाज के तथाकथित

शुभचितक उसे, उसके घर परिवार को अपना समझने वाले किसी पुरुष से विवाह करने की सलाह देते है तो वह चिढकर कहती है - *''मुझे लगता है किसी के जानने-समझने की बनिस्पत स्वय को तौलना-जानना कम जरूरी नही है। अभी मै केवल अपने कैरियर के विषय मे सोच रही हूँ   नौकरी के विषय मे।''*[104]

नौकरी करने वाली नारी, जव तक मायके मे रहती है। वहॉ खर्च करती है जब ससुराल चली जाती है तो वहॉ की भी जिम्मेदारी उठाती है। किन्तु दहेज लोभी समाज उसकी योग्यता और नौकरी द्वारा अर्जित धन को कभी महत्व नही देता। बल्कि दहेज को ही प्राथमिकता देता है क्योकि वह जानता है कि घर मे आ जाने के वाद बहू का सब कुछ तो उसका ही है। अत दोनो तरफ से धन उगाही की चाल चलता है। दहेज लोलुपता के कारण 'कुनी' की भावना को वरपक्ष ने महत्व नही दिया। वरपक्ष द्वारा लडकी देखने के वाद पर्याप्त दहेज न मिलने के कारण, विवाह की अस्वीकृति से परेशान और अपमानित पिता अपनी इज्जत वचाने के लिए वरपक्ष के आगे हाथ जोडकर गिडगिडाने लगे। कुनी का स्वाभिमान, यह सब वरदास्त नही कर पा रहा था। उसे लगा, वह नौकरी करती है अपने पैरो पर मजबूती से खडी है फिर विवाह की आवश्यकता क्या है? इन लालची लोगो के कारण भरे समाज मे उसके पिता का अपमान हो रहा है, वह आत्मनिर्भर होने के बाद भी, पिता का झुका हुआ सिर देख रही है,। इस बात से वह आहत हो उठती है और उसने निर्णय लिया कि वह पिता का सिर झुकने नही देगी। अपने भावोद्गार व्यक्त करती हुई वह कहती है - *''मुझसे बप्पा का दीनता जताना सहा न गया। मेरे कारण बप्पा का ऊँचा सिर झुक जाएगा? मन ने बगावत की। ऐसा नही होने दूँगी। मै अड गई। बप्पा से तो कुछ नही कहा पर मा से जोरदार शब्दो मे अपनी नाराजगी व्यक्त की -''नही वोऊ, बप्पा मेरे लिए किसी का पैर नही छुऐंगे। मौसा हमारी तरफ से उन लोगो   मुझे यह शादी नही करनी है।   मेरे लिए ही तुम कर्ज-उधार करोगे, तो आगे क्या होगा? . ऐसी कोई जल्दी नही है बोऊ।* '[105]

घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पिता स्कूल मे पढाने के बाद ट्यूशन भी करते थे फिर भी मौलिक आवश्यकताए पूरी नही हो पाती थी। इसी के चलते उसकी पढाई भी

बद होने की स्थिति मे आगई। उसके भीतर की महत्वाकाक्षी नारी ने अगडाई ली, क्यो न ट्यूशन पढॉऊ? जिससे अपनी पढाई भी पूरी कर लूँ और घर की आर्थिक सहायता भी करूँ। घरवालो की अनिच्छा के बाद भी उसने ट्यूशन पढाने की नौकरी कर ली, 'वर्षा' ने जब पहला वेतन लाकर मा को दिया तो वे प्रसन्नता से रोपडी- *''सिलविल ने पिता की ओर देखा। वे सुबह से निकले अभी लौटे थे। चेहरे पर आयु (और जीवन की) थकान के गहरे चिन्ह, अपनी काली मन स्थिति और पिता से तीखे मत-वैभिन्य के बावजूद उसका मन थोडा तरल हो गया।'' दो पैसे और आयेगे, तो घर की मदद् ही होगी।'' उसने तुरत कार्यालय जाकर दो महीने की तीस रुपये की फीस जमा की और घर जाकर पाव भर पेडो के साथ सौ रुपये मां के चरणो मे रख दिये। मॉ ने पेडो का एक टुकडा उसके मुँह मे रखा, तो उनकी ऑखे तरल थी। इस वश की सात पीढियो मे काम करने वाली वह पहली कन्या थी।'*[106]

'रेखा' एक महत्वाकाक्षी नारी है वह, आत्मनिर्भरता के लिए नौकरी करना चाहती है किन्तु परिवार के समस्त सदस्य इसका विरोध करते है। और तो और मुहल्ले वालो को भी यह वात अच्छी नही लगी। उसके नौकरी करने के निर्णय ने भूचाल ला दिया - *''घर से चलते समय उसके अन्दर जोश था- परम्परा और रुढियो से विद्रोह कर जिदगी की एक नयी राह तलाशने की ललक थी। अकेली जवान लडकी दिल्ली मे रहकर नौकरी करेगी, इस खबर ने न केवल उसके परिवार मे ही भूचाल ला दिया था बल्कि, पूरे मुहल्ले के वातावरण को भी आदोलित कर दिया था। उस निम्न-मध्यवर्गीय लोगो के मुहल्ले मे आज तक किसी लडकी को अपने मा-बाप द्वारा तय की गयी शादी का विरोध कर इतनी दूर जाकर नौकरी करने का साहस नही था।'*[107] रेखा ने अपने भविष्य का निर्धारण करने का अधिकार अपने हाथ मे लिया और सबका विरोध कर घर से नौकरी करने के लिए निकल पडी। *''पता नही रेखा के अन्दर कहॉ से इतना साहस आ गया था कि वह सारे विरोधो और प्रतिरोधो को ठुकरा कर जिदगी की एक अनजान-अनदेखी मजिल की ओर दौड पडी थी।'*[108]

आत्मनिर्भर नारी, कभी भी किसी भी प्रकार का अपमान नही वर्दाश्त कर पाती। क्योकि उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नही होती। बल्कि वह स्वयं औरो का सहारा बनने की क्षमता

रखती है यही कारण है, कि वह निर्णय लेने मे भी स्वतत्र रहती है। आत्मनिर्भर पुत्री घर के दायित्व की पूर्ति करने के कारण परिवार के मध्य अपनी विशेष अहमियत रखती है। ससुराल से आकर 'शर्मिष्ठा' ने अपनी पैतृक सपत्ति मे हिस्से की मॉग की तथा बडी बहन से जवाब-सवाल किया। इस पर 'रजना' ने उसे अपने घर से चले जाने के लिए कहा और स्वय को पिता का उत्तराधिकारी घोषित करते हुए बोली - '' निकलो! अभी। इसी वक्त। इसमे किसी दूसरे का हिस्सा नही है। इसे मै अपने नाम करा चुकी हूँ। *''उस दिन मैने सोचा, पण्डित सदानद की उत्तराधिकारिणी अकेली रजना रहेगी।* जब इसमे रहने वाला कोई नही रह जाएगा तो इसे किसी अनाथालय को दान मे दे देगी या इसे बेचकर वह धन किसी अन्य सस्था को दे देगी, पर इतने गिरे हुए लोगो को पॉव तक नही रखने देगी। जिनकी निगाह अपाहिज पिता और विक्षिप्त भाई की पीडा और मॉ की असहायता पर नही केवल जायदाद पर है। ''[109]

मध्यवर्गीय परिवारो मे जीविकोपार्जन का माध्यम नौकरी ही है। मध्य वर्गीय परिवार की प्राय· यही स्थिति होती है कि यहि किसी कारण वस गृहस्वामी कुछ दिनो के लिए विस्तर पकड ले तो घर मे भोजन कैसे बने इसकी समस्या खडी हो जाती है? पिता लकवे के शिकार हो जाने के कारण स्वय कुछ करने मे असमर्थ हो गए अत अपने बच्चो के भरण-पोषण की समस्या उन्हे द्रवित करती है। नमिता घर की बडी पुत्री है वह भाई तथा पिता की अनुपस्थिति मे घर के प्रति अपने कर्तव्य को समझती है। काफी भाग-दौड के बाद उसे एक कम्पनी मे नौकरी मिल जाती है तो वह घर लौटते समय सोचती है - *''नई नौकरी की सूचना उन्हे सबसे अधिक खुशी देगी? असमर्थ असहाय बाबू जी की वह बडी बेटी है- बडे बेटे की जगह।* '[110] आत्मनिर्भर नारी, अपनी आर्थिक स्वतत्रता के साथ ही पुत्र का स्थानापन्न भी होना चाहती है इसीलिए जिन घरो मे बडे पुत्र नही है या आयोग्य है वहॉ पुत्रिया अपने आपको पुत्र की तरह ही समझ कर घर की सारी जिम्मेदारी उठाती है।

पुरुष सहकर्मियो के मध्य काम करने वाली नारी, अपनी अस्मिता को लेकर बहुत सावधान होती है। वह अपने तथा अपने पद की गरिमा को अक्षुण्य बनाए रखना चाहती है। इसीलिए वह लोगो से बात-चीत करते समय भी सावधान रहती है ताकि उसके मुँह से निकली कोई बात चर्चा

का विषय न वनकर रह जायँ। कभी भी, वह अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नही करना चाहती। क्योकि अपनी श्रेष्ठत का बोध उसे असहज बना देता है। वह घर और बाहर के दोहरे तनावो को झेलकर भी समाज तथा परिवार के समाने सहज दिखने की कोशिश करती है ताकि उससे कोई यह न कह सके कि लडकी होने के कारण यह काम उसके बस का नही है। दूसरे अपने दु ख दर्द कहकर वह किसी की अतिरिक्त सहानुभूति भी नही चाहती। क्योकि इससे उसे लगता है कि वह लोगो की दृष्टि मे दया का पात्र बनती जा रही है। आधुनिक नारी अपने-आपको किसी की कृपा-दृष्टि का पात्र नही बनने देना चाहती है। भले ही सारी मुश्किलो से अकेली ही क्यो न जूझती रही किन्तु किसी के सामने असहाय नही दिखना चाहती। - रजना ऐसी ही एक खुद्दार लडकी है जो अपने घर की विषमताओं से अकेले ही टकराती रहती है - *''दूसरो के सामने उदास तक नही दिखना चाहती। मा और पिता के सामने तक। डर लगता है कि लोग मेरे ऊपर तरस खाने लगेगे- और जो थोडी सी ताक्त मेरे पास बची रह गई है - उसे अपनी सहानुभूति से कुचल कर रख देगे। आफिस मे इतने सारे लोग है, लडकिया है, सबसे कटी रहती हूँ। '*[111]

'नमिता' काम के सिलसिले मे शहर से बाहर गई थी, घर आने पर पता चला कि पिता को 'सेरीब्रल अटैक' पड चुका है। शीघ्र अस्पताल ले जाने के लिए, वह किसी को बाहर भेज कर टैक्सी बुलवाने लगती है। परन्तु उसकी मा अस्पताल मे होने वाले खर्च के विषय मे सोचकर ही परेशान है। इसलिए वह घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए मितव्ययिता दिखाती है, जबकि मरीज जीवन और मृत्यु से जूझ रहा है। नमिता मा के इस व्यवहार पर क्रोधित हो जाती है। उसे लगता है, कि उसके पिता के जीवन को बचाने की वजाय रुपया बचाने का प्रयास किया जा रहा है। मा-पुत्री के बीच होने वाले वार्तालाप का एक प्रसग - *'' टैक्सी काहे बुलवा रही? बेमतलब पच्चीस-तीस ठुक जाएगा। घडी-खाड मे कुती पहुँच जाएगी गाडी लेकर। पर्स खोलकर पॉच-पॉच हजार की दो गड्डियॉ निकाल उसने मॉ की ओर बढा दी। रखिए भीख मॉगने की जरुरत नही बाबू जी के इलाज के लिए। और जो भी खर्च आएगा, प्रबध हो जाएगा। '*[112]

आज भी आर्थिक रूप से कमजोर परिवार मे पुत्री का विवाह करना एक बहुत बडी

समस्या है। इन परिवारो मे पुत्री के लिए प्राय दुहेजू वर ही खोजा जाता है जिससे पुत्री के हाथ भी पीले हो जायॅ और दहेज की समस्या भी न आए। लेकिन महत्वाकाक्षी नारी इन परिस्थितियो के आगे इतनी सहजता से नही झुकती। वर्षा ऐसी ही स्वाभिमानी नारी है, जो किसी कुपात्र के साथ बधकर अपनी जिदगी काट देने की बजाय सघर्ष करके आगे बढना चाहती है। *वह नौकरी करके आत्मनिर्भर बनना चाहती है। और पति के बलबूते नही बल्कि अपने परिश्रम से जीवन की सारी -सुख-सुविधाए पाना चाहती है।* इसलिए वह घर के लोगो की बात सिर झुकाकर मान लेने की बजाय उनका प्रतिवाद करती है और *जिस काम को करने के लिए सात पीढियो मे से किसी लडकी ने हिम्मत नही दिखायी वह उस काम को करने के लिए कमर कस लेती है - ''क्या तुम सोचती हो कि कलक्टर आयेगा तुम्हारी डोली ले जाने ? मडवे मे बिठा दो इसे हाथ-पॉव -बॉध के। जान तो छूटे। '' सिलविल तुम हर लिहाज़ से सीमा पार कर चुकी हो। बी0 ए0 कर लूॅ। फिर नौकरी करूॅगी। '' हमारे वश मे कभी लडकी ने नौकरी नही की। वश मे जो कभी नही हुआ, वह आगे भी नही यह जरुरी नही, यह ब्याह मै नही करूॅगी। ''*[113]

इसी प्रकार बसुधा भी एक स्वाभिमानी नारी है वह पति की मृत्युपरात अपनी ससुराल मे ही रहना चाहती है क्योकि ''शुरू मे वहॉ रहने की इच्छा इसलिए थी कि लगा सबका दुख है। वॅट जाएगा पर वहॉ चिताए दूसरी थी। प्राविडेट फड इश्योरेस, बैक-बैलेस इन सब चीजो की कानूनी हकदार मै भी, और यह बात उन्हे कष्ट देती थी। ''[114] अत वह ससुराल छोडकर मायके आ जाती है किन्तु वहॉ भी भाई-भाभी पर बोझ बनकर नही रहती। उसने स्कूल मे पढाने की नौकरी कर ली, ताकि कोई उस पर, घर बैठ कर खाने का आरोप न लगा सके।

नारी जब तक अपने पैरो पर खडी नही होती, उसे परिवार के हर अच्छे-बुरे निर्णय को मानता पडता है। आर्थिक रूप से घर पर आश्रित होने के कारण वह अपनी जिदगी स्वतत्र तरीके से नही जी पाती, क्योकि कि वह आर्थिक रूप से कमजोर होती है, परन्तु आत्मनिर्भर होते ही वह अपने जीवन की स्वामिनी हो जाती है और किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत निर्णय लेने के लिए स्वतत्र। यद्यपि यह स्वतत्रता सदैव सकारात्मक नही होती, फिर भी; वह किसी भी कार्य के लिए स्वतंत्र होती

है। 'कुनी' ने जव देखा, कि नौकरी करने वाली उसकी छोटी वहन परिवार की मान-मर्यादाओ के विपरीत जा कर प्रेम-विवाह करने को इच्छुक है और उसे किसी भी तरह समझाया नही जा सकता तो उसने घर की इज़्ज़त को बचाये रखने के लिए, पिता से इस विवाह के लिए सहमत हो जाने को कहा - *''बप्पा अब प्रीति बडी हो गई है। अपना भला-बुरा समझने लगी है। यह उसकी जिद् मात्र ही नही है। दोनो ब्याह के मामले मे गभीर है। आप उन्हे आशीष दे तो घर की इज़्ज़त भी बची रहेगी और बच्चे भी सुखी रहेगे। नही तो क्या मालूम घर की बात चौरास्ते पर आ जाए ''*[115]

'रत्नी', शिक्षा के महत्व को समझने वाली मा है जबकि वह स्वय आशीक्षित है। वेटी का रिश्ता तय करने के लिए, जब वह 'दयाराम मास्टर' के यहाँ जाती है तो वह उनसे 'रूपा' के विवाह की बात उसके आत्म निर्भर हो जाने के बाद ही करने को कहती है- *''शादी-ब्याह की वात तो अभी हो नही सकती। पढ-लिखकर दोनो अपने पैरो पर खडे हो जायेगे, तब देखी जायेगी। फिलहाल, आप इज्जत दे तो वारदान कर देते है। '*[116]

सामर्थ्यशाली और अविवाहित पुत्री अपने घर मे प्राय मुखिया की भूमिका निभाती है। क्योकि परिवार का भरण-पोषण करने के कारण उसकी स्थिति पिता या बडे भाई जैसी ही होती है। अत उसकी बात सुनी भी जाती है और मानी भी। वहन के वाद-प्रतिवाद से दु खी होकर 'रजना' ने कागजी तौर पर पिता की सारी सपत्ति अपने नाम कराने की इच्छा, पिता के सामने व्यक्त की और सारी औंपचारिकताए पूरी कर, उनसे कागज पर अपना हस्ताक्षर करने के लिए कहा, तो पिता ने सहज भाव से उस पर हस्ताक्षर कर दिया - ''अगले दिन मसौदा तैयार हो गया तो उस पर एक नजर डाली, सहारा लेकर बैठे और चुपचाप हस्ताक्षर कर दिया। जब हठ पूरा हो गया तो सोचने लगी, क्या करूँगी मै इस बोझ का? क्या इससे मुझे अपनी अर्थी सजानी है? ''[117]

'स्मिता' आर्थिक रूप से परतत्र नारी है। जिसके कारण उसे दुराचारी पिता के आतक को मा-बहन सहित बर्दाश्त करना पडता है क्योकि घर की आय का स्रोत एक-मात्र पिता ही है। वह अपने पिता से घृणा करती है किन्तु न चाहते हुए भी उसे पिता के साथ एक ही छत के नीचे रहना पड़ता है। वह चाहती है कि उसे शीघ्रातिशीघ्र कही नौकरी मिल जाय ताकि वह अपनी मा और वहन

वह अपनी असहाय स्थिति और अपनी भावना को व्यक्त करते हुए मित्र 'नमिता' से दुखी होकर एकदिन कहती है -''जिस दिन नौकरी मिल जाएगी मुझे, नमी, बाप रूपी इस राक्षस को मै सीढियो से ढकेल कर स्वाभाविक मौत मरने पर विवश कर दूॅगी।''[118] नारी के लिए आर्थिक स्वतत्रता अति आवश्यक है अन्यथा वह, स्मिता आदि नारियो की तरह घुटन भरी जिदगी जीने को मजबूर होती है।

कभी-कभी समाज मे ऐसे उदाहरण भी मिलते है जहॉ नारी अपनी आत्मनिर्भरता के लिए नौकरी नही करती, बल्कि आत्मसतुष्टि के लिए इसे अपनाती है। उसे अपने-आपको पुरुष-प्रधान समाज मे स्थापित करने के लिए भी, इसकी आवश्यकता होती है। एक तरह से आत्मनिर्भरता आत्मभिव्यक्ति का माध्यम भी है। 'वर्षा' ऐसी ही आत्मनिर्भर नारी है जो विवाह करने के वाद भी अपने सम्पन्न और प्रतिष्ठित पति के घर मे सिर्फ पत्नी बनकर रहना नही चाहती क्योकि वह समाज मे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना चाहती है उसका क्षरण नही होने देना चाहती। इसलिए वह विवाह के बाद भी अपनी नौकरी के साथ समझौता करने को तैयार नही है। अपने विचार व्यक्त करते हुए वह कहती है -''*अगर मैने ब्याह कर भी लिया तो भी मै रिपर्टरी कभी नही छोडूॅगी- वर्षा ने तय कर लिया था। मै रगमच के बिना नही जी सकती। गृहस्थी और बच्चे मंचोपस्थिति के जादू का स्थानापन्न नही हो सकते यदि पति का तबादला हुआ, तो वह रिपर्टरी की बजाय उसे छोड दोगी।*''[119] यानि वह, अपनी प्रतिभा और आत्मनिर्भरता के साथ किसी भी प्रकार का समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाने को तैयार नही है यदि उसे अपनी महत्वाकाक्षा की पूर्ति के लिए पति-पत्नी के मधुर सबधो को भी एक बार नकारना पडे तो वह इसके लिए तैयार है।

आज की नारी नौकरी करने के कारण जहॉ आत्मनिर्भर है वही सामाजिक विषमता का शिकार भी। पुरुषो के साथ मिलकर काम करने के कारण लोग उसके विषय मे अनेक प्रकार की गलत धारणाए बना लेते है। क्यो कि पुरुष-प्रधान समाज, नारी की आत्मनिर्भरता सहज रूप मे स्वीकार्य नही कर पाता पुरुष की विकृत मानसिकता के कारण, प्राय नारी अपनी योग्यता एव नौकरी के कारण समाज मे अपनी पहचान नही बाना पाती, बल्कि समाज सिर्फ उसे 'देह' के रूप मे ही मान्यता देता है। अपनी 'धारण' करने की विशिष्ट क्षमता के कारण उसका अपना समस्त व्यक्तित्व गौण होकर रह

जाता है। पुरुष द्वारा नारी के विषय मे इस प्रकार की सोच तो एक बार समझ मे आती है कि वह इससे अधिक नारी को कभी कुछ समझ ही नही सका। लेकिन जब एक नारी भी दूसरी नारी के विषय मे ऐसी ही गलत धारण बनाती है और उसे अन्य लोगो के सामने 'दिलचस्प अदाज' मे प्रस्तुत करती है तो बडा अशोभानीय और घृणास्पद लगता है। 'मिसेज भटनागर' इसी प्रवृत्ति की नारी है, जिनके स्वभाव पर टिका-टिप्पणी करते हुए 'कुसुम' कहती है " *किसी गैर शादी शुदा लडकी की तवियत खराब हो जाए और खुदा न खास्ता* वह नौकरी करती हो और अकेली रहती हो तो हमारी ये पढी-लिखी डिग्रीधारी महिलाए ताल ठोक कर कहती है कि सौ प्रतिशत उसका कोई चक्कर है। क्या जहालत है भई! अकेली नौकरी करने वाली लडकी को कभी उल्टियॉ नही होनी चाहिए वर्ना विना किसी शक और गुजाइश के मिसेज भटनागर कहेगी कि जरूर वह प्रैगनेट है। अगर इसके साथ आपने दो-तीन दिन की छुट्टी भी लेली तो जरूर आपने अवार्शन करवाया है। इसके आलावा और कोई बात उन लोनो के दिमाग मे आ ही नही सकती। "[120]

आत्मनिर्भर होने के कारण जहॉ नारी का भविष्य सुरक्षित रहता वही घर और बाहर की दोहरी भूमिका के कारण कभी-कभी विवाद की स्थिति भी पैदा हो जाती है। वह पति से अपेक्षित सहयोग चाहती है क्यो कि शारीरिक और मानसिक दोनो स्तरो पर पति से ज्यादा परिश्रम करती है। पर प्राय देखा जाता है कि भारतीय पति उसकी भावना को कोई महत्व नही देता, वह अपने तरीके से जीना चाहता है जबकि पत्नी को सबकी जिम्मेदारी लेकर जीना पडता है। 'कावेरी' और 'दिवाकर' दोनो नौकरी करने वाले पत्नी-पति है, अत कावेरी चाहती है कि दोनो एक ही जगह नौकरी करे जिससे परिवार के लोग एक साथ रह सके और दोनो को एक-दूसरे का सहयोग भी मिल सके। किन्तु दिवाकर स्थानान्तरण मे कोई रूचि नही लेता, फलत वह आक्रोश मे आकर आपनी प्रतिक्रिया, इस प्रकार व्यक्त करती है "जरूरी है क्या कि हर वार पत्नी ही बलि का बकरा बने शादी के बाद घर-गृहस्थी मे तो दोनो की बराबर हिस्सेदारी है। "[121]

उपरोक्त तथ्यो के आधार पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि आज की शिक्षित नारी के जीवन की पहली प्राथमिकता आत्मनिर्भरता है। बचपन से ही वह जिस दोहरे मापदण्ड को सहती

आयी है वह अब उसे स्वीकार्य नही है। पुरुष अर्थोपार्जन के कारण ही घर का स्वामी वना हुआ है और नारी दिन भर घर मे काम करने के बाद भी दासी से ज्यादा कुछ नही है। यानि आर्थिक स्वतत्रता ही पुरुष को सवलता प्रदान करती है। अत नारी भी आर्थिक रूप से मजबूत होना चाहती है ताकि वह भी स्वतत्रता पूर्वक रह सके। इसलिए वह पहले आत्मनिर्भर बनना चाहती है फिर कुछ और।

आधुनिक नारी, सिर्फ किसी एक क्षेत्र तक सीमित नही रही, आवशयकता-नुसार कार्य-क्षेत्र बढता भी जा रहा है। पहले वह व्यवसाय के लिए अनुपयुक्त मानी जाती थी किन्तु आज वह इस क्षेत्र मे भी सफलता प्राप्त कर रही है। अत समाज मे नारी की बदलती हुई स्थिति से उपन्यास भी प्रभवित हो रहे है और उपन्यासकार भी, व्यवसाय से जुडी नारियो का चित्रण करने लगे है।

'गौतमी' एक सफल व्यवसायी नारी है। वह व्यवसाय को आगे बढाने का गुण जानती है। वह अभूषणो की विक्रेता है, इसकी मालकिन 'मिसेज वासवानी' है जो अधिकत्तर विदेशो के दौरे पर रहती है। उनके भ्रमण करने का उद्देश्य यही है कि विश्व-व्यापार की दुनिया को समझ कर अपने व्यवसाय को सुचारु रूप से चलाया जाय। अत उनकी अनुपस्थिति मे, उनका सारा व्यवसाय गौतमी सभॉलती है। 'सजय' एव 'निर्मल' कनोई का अपना व्यवसाय है वह आभूषणो के क्रय के लिए गौतमी से सम्पर्क करते है। गौतमी यह अनुबध खाली नही जाने देना चाहती अत वह इस प्रकार का प्रवध करना चाहती है कि जिससे कनोई-दपत्ति प्रभावित हो सके और वृहद्स्तर पर आभूषणो का क्रय करने के लिए बाध्य हो जाय। इसलिए, आभूषणो के समुचित प्रदर्शन के लिए वह नमिता को मॉडल के रूप मे तैयार करती है और उसे अपने व्यवसाय के कुछ उपयोगी पहलू बताती है - *''बार-बार तुम्हे समझाने के पीछे गणित यही है कि पारखी क्या खरीदे? महत्वपूर्ण यह है कि हम उसे क्या खरीदवाना चाह रहे है हम अपनी चीजे इस प्रकार बेचे कि ग्राहक उन्हे पाने के लिए स्वय ललचा उठे।''*[122]

व्यापक स्तर प फैले अपने व्यवसाय को सभालने के लिए आजकल, आभिभावकगण बेटी को भी व्यवसाय मे हिस्सेदार बनाने लगे है और पुरुषो की भॉति, नारी भी व्यवसाय को अच्छे तरह से सभालने लगी है। किन्तु कभी-कभी इसके नकारात्मक पहलू भी देखने को मिलते है। पिता की व्यावसायिक जिम्मेदारी के कारण, यदि पुत्री अपनी स्वेच्छा से पति का चुनाव करना चाहे तो उसके लिए ऐसा करना सभव नही हो पाता, क्योकि पिता किसी व्यवसायी या व्यवसाय मे रुचि रखने वाले लडके से ही अपने बेटी का विवाह करना चाहते है ताकि उनका व्यवसाय फलता-फूलता रहे।

'शिवानी' अपने व्यवसायी पिता की इकलौती लाडली बेटी है अत पिता की सम्पत्ति तथा व्यवसाय दोनो मे उसका हिस्सा है। वह 'अश्विनी' नाम के एक लडके से प्यार करती है और शादी भी उसी से करना चाहती है। किन्तु वह अश्विनी के साथ अपने स्थायी सबधो को लेकर निश्चित नही हो पाती। क्योकि वह जानती है कि दोनो की इच्छाओं को मान्यता तभी दी जायेगी जब अश्विनी उसके पिता के व्यवसायिक स्तर पर खरा उतरेगा। उसने अपने सबधो की अनिश्चयात्मकता के बारे मे वर्षा से बताते हुए कहा -*''डैडी और भैया की अकेली लाडली हूँ जाय-दाद की आधी वारिस, बिजनेश की आधी पार्टनर। मेरा हाथ पाने के लिए अश्विनी को लोहे के चने चबाने पडेगे।* ''[123]

'शिवेश' की काम चलाऊँ आमदनी एव अस्थायी नौकरी के कारण 'वाना' प्राय परेशान रहती है। पति, बच्चो के ऑफिस और स्कूल चले जाने के बाद वह दिनभर घर मे अकेली घुटती रहती है। 'सारिका' की आत्मनिर्भरता भरी जिदगी को देखकर उसे अपने ऊपर तरस आती, और वह भी आत्मनिर्भर होने का सपना देखने लगती है। किन्तु उसे पूरा करने का तरीका उसके समझमे नही आता। सारिका ने उसकी समस्या का निराकरण करते हुए कहा -'*'आगे पढंना शुरू करो। अग्रेजी सीखो वाना! यहाँ अग्रेजी क्लास होते है। उनमे तुम्हारा नाम लिखाये देती हूँ* -''*क्लास शाम को होते है शिवेश से कहना वह बच्चे देखेगे या फिर जमीला बुआ को बुला लेगे। अपने सपनो का पीछा करो।* ''[124] नौवी पास वाना ने, सारिका का प्रोत्साहन पाकर अपनी अधूरी पढाई को पूरा किया तदुपरात उसने राहुल के सहयोग से कम्प्यूटर मे प्रशिक्षण प्राप्त किया और एक व्यवसायिक कम्पनी मे नौकरी कर लिया। पूरे दिन ग्राहको के साथ रहने के कारण उसके आचार-विचार तथा पहनावे मे भी काफी परिवर्तन आया। वाना के असहज रूप को देखकर शिवेश को बहुत बुरा लगा और उसने कठोर शब्दो मे अपनी आपत्ति जताया -'' यह सब क्या है वाना? इतनी ऊँची-सी स्कर्ट, कसी हुई जैकेट। सारा शरीर नजर आता है और इतनी सारी लाली .. ''वाना ने प्रतिवाद करते हुए कहा - ''आजकल ऐसा ही फैशन है। मै कोई लवादा पहनकर काम पर थोडे ही जा सकती हूँ। ग्रेस कहती है कि हर वक्त लिशक-पुशक स्मार्ट बनी रहना चाहिए।'' वाना का कहना था कि व्यवसाय की वृद्धि के लिए स्मार्टनेस की आवश्यकता है और इसके लिए सिर्फ परिश्रम नही बल्कि वेश-भूषा मे भी

परिवर्तन की अपेक्षा रहती है। आखिर ग्राहको को आकर्षित करने का यह भी एक तरीका है? - '' अमलेट बनाने के लिए अडे तो तोडने ही पडेगे शिवेश । चलो, ले चलो - मुझे देर हो रही है। ''125

'असलम' ने अपनी पहली पत्नी को छोड कर दूसरा विवाह कर लिया और वह 'ग्लोरिया' के साथ रहने लगा। इस दु ख की घडी मे अजी ने हिम्मत नही हारी वह अपने दोनो बच्चो को लेकर अकेले रहने लगी। उसने जीविका-पार्जन के लिए कढाई का व्यवसाय अपना लिया। वह सुबह से शाम तक इसी यवसाय मे लगी रहती। अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए वह 'वाना' से कहती है -''कभी-कभी रात को विस्तर पर जाती हूॅ तो एक-एक हड्डी चटकती सी लगती है, रोज रात लगता है कि कल सुबह होगा तो उठ नही पाऊगी। ऑखे खोलने तक की ताकत नही होगी क्या बनेगा मेरा। ''126 फिर भी वह हसती-मुस्कराती रहती है, छोटे-छोटे बच्चो को लेकर अकेले दम पर सारा विजनेस सॅभालती है। वाना जब भी उसके घर जाती है तो अजी उसे काम करती या अपने ग्राहको से बात करती ही मिलती है, वाना उसकी स्थिति से भिज्ञ है अत उसके प्रति सहानुभूति रखती है। वह अजी की व्यस्तता देखते हुए जब भी उसके घर जाती है उसका काम करवाने लगती है ताकि अजी को थोडा आराम मिल सके। वह अजी को हसते देखकर कहती है कि इतनी मुसीवत के वाद भी वह सहज कैसे रह लेती है इस पर अजी अपने विचार व्यक्त कर सकती है -'' जिदगी तो गुजारनी ही है चाहे हॅस कर या रो कर, हसते रहने से हिम्मत रहती है, जितना रोओ उतना दु ख अन्दर-अन्दर बढता है। कभी-कभी मेरा दिल दु ख सह नही पाता वाना। पर रोने से किस्मत नही बदलती । ''127

ग्लोरिया की विश्वासघार्त के बाद असलम अंजी को लिवाने के लिए आता है तो वह काफी सोच विचार के बाद उसके साथ पुनः रहने का निर्णय लेती है और वाना से कहती है- ''वाना! मैं भी थक गई हूं। कैची पकड़ते-पकड़ते मेरे हाथ टेढ़े हो गए है, सलमा-सितारा टॉकते-टॉकते। ''128

'वर्षा' सिनेमा व्यवसाय से जुडी हुई है, वह दिन भर की भाग दौड के बाद थंक जाती

है। किन्तु प्रसिद्धि का ज्वर उसे चैन से जीने नही देता। कभी-कभी वह अपनी जिदगी से कुढने लगती है उसे सामान्य नारी का जीवन ज्यादा सुख कर लगने लगता है -"क्षण भर के लिए वर्षा को जिज्ञी के साथ इर्ष्या हुई और अपनी निरतर सुलगने वाली मानसिक बेसब्री की ऑच पर आक्रोश। एक ओर चार घॅटे की नीद को तरसती जिज्जी का जीवन समतल एव तृप्त रहेगा, वही आठ घटे की भरपूर नीद के वावजूद सिलबिल कला लालसा के व्यग्र-ज्वर मे हमेशा डूबती-उतराती रहेगी।"[129] किन्तु अपनी महत्वाकाक्षा और अथक परिश्रम के कारण जब उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ हो जाती है और वह मुबई जैसे शहर मे जब अपनी पसद का मकान खरीद लेती है तो, उसे आत्मसतोष होता है। मुबई जैसे शहर मे निवास की व्यवस्था उस के जीवन को दृढता प्रदान करती है -" *अपनी चाभी से सिलवर सैड का दरवाजा खोलते हुए जो अनुभूति हुई वह अभूतपूर्व थी। ये छते और दीवारे मेरी है, खिडकियो और रोशन दानो पर मेरा स्वामित्व है, ये कमरे मेरी जागीर है, इस टैरेस पर मेरी प्रभुता है, यहॉ से वाये, दाये और सामने सागर का जो पारावार है, उस, पर वर्षा वशिष्ठ की अभूत पताका फहरा रही है। मेरे इस लाल किले से मुझे कोई मकान मालिक नही हटा सकता,उसने आत्मविश्वास के साथ सोचा।* "[130] सफल व्यवसायी नारी किसी की सहायता पर निर्भर नही रहती। उसके व्यवसाय की दृढता का आधार कोई और नही बल्कि उसका परिश्रम और उसकी सूझ-वूझ होती है। वह अपनी जिदगी का निर्णय लेने के लिए स्वतत्र होती है। उसे किसी के वरदहस्त की जरूरत नही होती। अविवाहित वर्षा ने जब कोख मे पल रहे अपने शिशु को जन्म देने का निर्णय लिया तो उसके अधीनस्थ सहयोगी ने उसके कृत्य पर टीका-टिप्पणी शुरू की, इस पर वर्षा ने उसे जवाब देते हुए कहा -" अगर आप चाहे तो अपने हित को मुझसे काट लीजिए।"[131]

उसने समाज की नजरो मे अवैध-बच्चे को जन्म देने एव समाज से टकराने का सकल्प ले लिया जबकि वह जानती थी कि यह बगावत मॅहगी पडेगी पर वह अपने निर्णय से पीछे नही हटी। ''उसे अदाज था, इस जीव की स्वीकृति उसके आगामी जीवन की दिशा और प्रकृति बदल देगी। पेडो के झुरमुट के वीच सूखे पत्तो पर चलते हुए *उसने मन-ही-मन कहा, मै इस फैसले का मूल्य चुकाने को तैयार हूँ।* ''[132]

पुरुष वर्ग आज भी नारी के अधीनस्थ रहकर कार्य करने मे असहजता महसूस करता है। क्योकि उसकी प्रवृत्ति आरभ से ही शासक की रही है परन्तु नारी अपने कार्यो का सचालन पूर्वा ग्रह से मुक्त होकर करना चाहती है। 'शिवानी' एक सफल व्यवसायी पिता की उत्तराधिकारी है जब वह व्यवसाय का कारोबार सभाल लेती है तो 'वर्षा' उसके इस नये अनुभव के बारे मे पूछती है, शिवानी ने पलभर उसे ध्यान से देखा, ''थोडा मुश्किल सवाल पूछा है *तुमने। पुरुषो का एक वर्ग है, जिसे युवा स्त्रिलिग से आदेश लेने मे तकलीफ होती है ऐसे कुछ नमूने हमारे यहॉ भी है। मै काफी कोशिश करती हूँ कि उनके अह को ठेस न पहुँचे, पर कुछ का अहं इतना नाजुक है कि वह सिर्फ मेरे अच्छे प्रदर्शन से ही, जिसका उनसे चाहे कुछ भी सबध न हो, चटख जाता है। तब सतुलन बनाये रखने मे कुछ कठिनाई होती है।* ''[133] आज नारी, व्यवसायिक स्तर पर पूर्णत सफल है। क्योकि कि वह, इस नये काम को भी सुचारू ढग से कर रही है। किन्तु पुरुष वर्ग उसके व्यवसायिक रूप को सहजता से नही ले पा रहा है। यह भी एक तथ्य है कि व्यवसायिक भाग दौड नारी की शारीरिक प्रकृति के अनुकूल नही है फिर भी वह इस नये क्षेत्र मे अपने आपको स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है।

समाज मे 'व्यक्ति' एव 'वस्तु' के प्रदर्शन की भावना बहुत पहले से ही चली आ रही है। मानव ने जब से सभ्य जीवन जीना शुरू किया, तभी से नारी की बडी-बडी ऑखे,खु-बसूरत होठ, नुकीली नाक और लम्बे बाल आदि उसके आकर्षण का केन्द्र रहे है। उनका प्रदर्शन भी किसी न किसी माध्यम से किया जाता रहा है। नारी स्वय भी अपने हाव-भाव के माध्यम से पुरुष को प्रसन्न करती रही। और इन्ही को अपने जीवन का सौन्दर्य समझती रही है। विकास-क्रम के अनुसार कभी काजल-बिन्दी आदि को मॉडलिग के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। किन्तु अब समय बदल गया है, और उपभोक्त्त-वादी सस्कृति, आने वाले समाज को प्रभावित कर रही है। वस्तु से लेकर व्यक्ति तक सब बाजारू सस्कृति के अग बनते जा रहे है। *विश्व-बाजार मे अपनी शाख जमाने के लिए व्यावसायिक जगत अपनी वस्तुओ के उत्कृष्ट प्रदर्शन को प्रोत्साहन दे रहा है। इसलिए वस्तुओ के सजीव प्रदर्शन के लिए आवश्यक है कि उसकी मांडलिग की जाय और पुरुष-प्रधान समाज की मानसिकता के अनुसार नारी ही उपयुक्त माडल वन सकती है क्योकि उसके पास दिखाने के लिए शरीर है और रिझाने के लिए हाव-भाव है।* नारी की आत्मनिर्भर बनने की मजबूरी और उसकी महत्वाकाक्षा का फायदा उठाकर पुरुष ने उसे माडलिग की दुनिया की ओर आकृष्ट किया। किन्तु क्रमश नारी अपनी दमित-इच्छाओं की पूर्ति के लिए इस व्यवसाय को सहजता के साथ अपनाने लगी। और पुरुष प्रधान समाज मे उसने अपने शारीरिक सौन्दर्य एव प्रदर्शन के बल पर अपनी श्रेष्ठता को स्थापित करने का प्रयास शुरू किया। और शक्तिशाली पुरुष 'लोलुप भ्रमर' की भॉति उसके चारो ओर चक्कर काटने के लिए मजबूर हो गया। अपनी दमित इच्छाओ की पूर्ति के चलते ही उसने नारी के प्राचीन प्रतिमान *'लज्जा ही नारी का आभूषण है', को नकार दिया है*। आज वह लज्जाविहीनता की पराकाष्ठा पर पहुॅच चुकी है। साबुन, तेल से लेकर अन्त वस्त्रो तक की नुमाइश कर रही है। और उसके माध्यम से अपने दैहिक सौन्दर्य का प्रदर्शन भी।

तत्कालीन समय मे इसने फलते-फूलते व्यापार का रूप ले लिया है सौन्दर्य के नामपर विश्व-स्तर पर प्रतियोगिताए आयोजित की ही जा रही है और इन प्रतियोगिताओं मे सफलता अर्जित

करने वाली 'विश्व सुदरी' तथा 'व्रह्माण्ड सुदरी' को राष्ट्रपति तथा राष्ट्राध्यक्ष तक सम्मान देते है, और इन्हे देश का गौरव मानते है। सम्मान और धन की भूख, नारी को अग प्रदर्शन के लिए उत्साहित कर रही है जिसके कारण समाज मे सौदर्य प्रतियोगिताओ की बाढ सी आ गयी है जिसमे सभी वर्गो की नारिया उत्साह के साथ शामिल हो रही है। इस प्रकार सौन्दर्य प्रतियोगिताए भारतीय सस्कृति का अग बनती जा रही है। *व्यावसायिक बाजार मे, प्राय प्रतियोगिताओ मे सफलता आर्जित करने वाली मॉडल ही प्राथमिकता पाती है तदुपरात चर्चित मॉडल और सघर्षरत मॉडलो को अवसर दिया जाता है।*

'गौतमी' एक उद्यमी नारी है। वह मैडम वासबानी के अधीनस्थ रहकर उनके व्यवसाय का काम सभॉलती है। 'संजय' एव 'निर्मल कनोई' आभूषणो की खरीदारी के लिए उसके यहॉ सम्पर्क स्थापित करते है। वह नमिता को एक मॉडल के रूप मे प्रस्तुत करना चाहती है ताकि उसके आभूषणो का उचित प्रदर्शन हो सके और अधिक धन की वसूली भी। वह मॉडल की उपयोगिता पर प्रकाश डालती हुई नमिता को समझाती है - *''अभूषणो का सम्मोहन देखने वालो के सिर तभी चढकर बोलता है जब उन्हे धारण करने वाली स्त्री अपनी देह के जादुई स्पर्श से उन्हे जागृत कर ले। उन्हे पहनते हुए वह लाव व्यमयी अर्तलीन हो तो हमारी आखो के समाने वह काल खड अपनी कला-सस्कृति के वैभव के साथ पुर्नप्रतिष्ठित हो उठता है।*[134]

मॉडलिग के माध्यम से किसी भी वस्तु को खूबसूरती के साथ पेश किया जा सकता। यही कारण है कि वर्तमान युग मे मॉडलो की बाढ सी आ गयी है। आजकल लोग कभी-कभी सामान की गुणवत्ता देखे बिना ही सिर्फ मॉडलो के नाम पर सामान खरीद लेते है। क्योकि यदि किसी चर्चित मॉडल ने किसी खराब वस्तु का भी प्रदर्शन कर दिया है तो भी, लोगो की धारणा उस वस्तु के प्रति सकारात्मक ही होती है। *आजकल मॉडलिग और व्यवसाय एक-दूसरे के पूरक होते जा रहे है। मॉडलिग के बिना किसी भी व्यवसाय के उन्नति की कामना नही की जा सकती। यही कारण है कि व्यवसायी-बाजार मे प्रतिदिन मॉडलो की माग बढती जा रही है। याद रहे मॉडलिग की दुनियॉ का केन्द्र नारी है, पुरुष नही।*

'वाना' महत्वकाक्षी नारी है। उसका पति 'शिवेश' उसकी इच्छा के अनुसार जीवन जीने

मे असमर्थ है। उसकी आय से सिर्फ घर का खर्च चल सकता है। ऐशो-आराम की जिदगी नही बितायी जा सकती है। वाना समय की रफ्तर से साथ दौडना चाहती है, जबकि वह जानती है कि यह सव सिर्फ शिवेश के बल पर सभव नही है, अत वह कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त करती है और 'प्रापर्टीडीलिग' के व्यवसाय से जुड जाती है। ग्राहको को लुभाने के लिए अच्छे हाव-भाव के प्रदर्शन के साथ ही साथ उचित कपडो को भी आवश्यकता होती है अत वह शिवेश को समझाती हुई कहती है -''आमलेट बनाने के लिए अडे तो तोडने ही पडेगे शिवेश। मै अब ऐसा काम हाथ मे लूगी तो उनके अनुसार ही मेरी सज्जा होगी। चलो ले चलो-मुझे देर हो रही है। ''[135] महत्वाकाक्षा की चमक से आज की आधुनिक नारी अधी होती जा रही है। उसे-सुख सुविधापूर्वक जीवन-चाहिए धन और प्रतिष्ठा चाहिए पर इसके लिए वह प्ररिश्रम का रास्ता नही अपनाना चाहती। मॉडलिग का सहज मार्ग अपनाती है। जिससे उसकी समस्त लालसाए शीघ्र पूरी हो जाय। स्वय को किसी भी तरह से प्रतिष्ठित करने की प्रवृत्ति, उसे मॉडलिग की चकाचौध भरी दुनियॉ मे खीच लाती है।

'मैडम वासवानी' ऐसी ही प्रगतिशील विचारो वाली नारी है, जिनके लिए रूपयो की ताक्त बहुत बडी है। वह 'नमिता 'को रुपये की ताकत से परिचित कराती है और अप्रत्यक्ष, उसे मॉडलिग के व्यवसाय की ओर जाने के लिए उत्साहित करती है। वह उसकी घरेलू स्थिति एव महत्वाकाक्षा दोनो का लाभ उठाना चाहती है वह जानती है कि इन परिस्थितियो मे वह कोई भी काम करने को तैयार हो जाएगी, जहॉ उसे पर्याप्त रुपया मिले और उसके स्वाभिमान को भी जल्दी ठेस न पहुॅचे। *''ख्याल रहे। छुट्टे रुपयो की बजाय एक पॉच सौ का पत्ता हमेशा तुम्हारे पर्स मे सुरक्षित रहे। छुट्टे मे ताकत नही होती। ताकत होती है वडे नोट मे। बडे नोट की मौजूदगी मे तुम स्वय अनुभव करोगी कि सकट की घडी मे भी तुम्हारा आत्मविश्वास अविचलित बना हुआ है, गहरा अभाव है उसका तुममे पैसो की ताकत मनुष्य की बस से बडी ताकत है। पैसो की ताक्त से एक बुद्धिहीन, अपाहिज, असमर्थ व्यक्ति बुद्धिमान का मस्तिष्क और सवल की शक्ति, बडी आसानी से अपने हितो के लिए उसका उपयोग कर, समाज और ससार का सर्वाधिक समर्थ व्यक्ति बन सकता है। सत्ताधारी बन सकता है। प्रतिष्ठा अर्जित कर सकता है। लोगो पर शासन करने के लिए नोट की शक्ति पहचानो।*

सुख सुविधाए जुटाने मे उसकी भूमिका की कद्र करो। हर हाल मे एक बडा नोट अपने पर्स मे सुरक्षित बनाए रखोगी न! पाओगी, वह नोट सोने के अडे देने वाली मुर्गी की भाति तुम्हे अनगिनत नोट देगा। जैसा कि बहुत पहले मेरे पर्स मेसुरक्षित नोट ने किया। ''[136] मैडम वासवानी ने अपनो विचारो के माध्यम से नमिता को मॉडलिग का रास्ता दिखाकर उसके परिवर्तित जीवन के लिए अनुकूल वस्त्रो की भी व्यवस्था कर दी। ''आज की यह सारी खरीदारी तुम्हारे जन्मदिन का उपहार है। इनमे से कोई भी पोशाक जिसे तुम सबसे पहले पहनने का चाव रखती हो, पहनकर कल आना अपने कार्यालय। मै अपने कार्यालय मे, एक नई नमिता से मिलना चाहती हूँ- एकदम अलग व्यक्तित्व की मालकिन, समझी। ''[137] पुन उसने नमिता को आकर्षक दिखने के लिए हेयर स्टाइल की विशेषता की ओर ध्यान दिलाया और उसे पूरी तरह से 'परफेक्ट' बनाने का प्रयास किया - *''सीधी मॉग क्यो काढती हो तुम? तुम्हारे सलोने तीखे नयन-नक्श पर टेढी माग अधिक फबेगी। टेढी मांग निकालकर अपना चेहरा ध्यान से आइने मे देखना, पहचान नहीं पाओगी खुद को। ''* [138] *इस प्रकार मैड़म वासवानी को नमिता के रूप मे आभूषणो के प्रदर्शन के लिए एक उपयुक्त मॉडल मिल गयी और नमिता को अपनी महत्वाकांक्षा के अनुरूप रुपयो से खनकती दुनियॉ।* झिझकते मन से उसने पहली बार ग्लैमर की दुनियॉ मे कदम रखा, पर कुछ ही दिनो मे उसका आत्मविश्वास बढता गया। उसके घर की आर्थिक आवश्यकताए सहज ही पूरी होने लगी। पिता का इलाज भी सभव हो गया और इसके वाद जो रुपये बचते थे वह उन रुपयो से अपने लिए सुख-सुविधाए जुटाने लगी। इस प्रकार उसके जीवन का स्तर बदल गया अब वह नमिता से नमिता जी, फिर नमिता मैड़म बन गई।

जल्दी से जल्दी नाम और दौलत कमाने के लिए नारी मॉडलिग का व्यवसाय चुन रही है। जहॉ उसकी समस्त आकाक्षाए शीघ्र ही पूरी हो जाती है पर वह यह बात भूल जाती है कि थोडा पाने के चक्कर मे वह अपना बहुत कुछ खो देती है। नारी का सबसे बडा आभूषण है उसका 'शील', आज वह इसके साथ भी समझौता करने लगी है। लज्जाविहीन होकर वह अपने अग-प्रत्यगो की नुमाइश करती है और अपने शरीर को कम से कम कपडो मे प्रदर्शित करने के बदले रुपये लेती है। *पुरुषो की बराबरी मे आने के लिए नारी घिनौने रूप अपनाती रही है और खुश होती है कि वह पुरुषो*

के समाज मे स्वय के बल बूते पर स्थापित हो रही है। जबकि होता इसके विपरीत है। पुरुष-प्रधान समाज रुपयो की ताकत के बल पर उसके मन-मस्तिष्क और शरीर तीनो को खरीद लेता है। नारी उसकी इच्छा के अनुरूप नाचती है। यह सोचने का विषय है कि मॉडलिग के नाम पर सिर्फ नारी को ही निर्वस्त्र होना पडता है उत्तेजक दृश्य देने पडते है, पुरुष को नही। कपडे उतारने की आवश्यकता सिर्फ नारी के लिए समझी जाती है पुरुष के लिए नही।

'वाना' ऐसी ही महत्वाकाक्षी नारी है जो ग्रहको को अपने काम के माध्यम से कम, अपने हाव-भाव एव शारीरिक नग्नता के कारण ज्यादा लुभाती है। उसके इस रूप को देखकर शिवेश क्रोध मे आ जाता है। दोनो पति-पत्नी के मध्य हुए वार्तालाप का एक प्रसग -''यह सब क्या है वाना? इतनी ऊँची सी स्कर्ट कसी हुई जैकेट। सारा शरीर नजर आता है और इतनी सारी लाली - ''आजकल ऐसा ही फैशन है। मै कोई लबादा पहन कर काम पर थोडे ही जा सकती हूँ। ग्रेस कहती है कि हर वक्त लिसक-पुशक स्मार्ट बना रहना चाहिए। ''[139]

व्यवसाय की प्रगति के लिए आभूषणो का प्रदर्शन आवश्यक हो जाता है, इसलिए 'मैड्म वासवानी' की नजर सदैव उस महत्वाकाक्षी नारी को खोजती रहती है जो उनके यहाँ मॉडलिग करने को तैयार हो जाय। 'गौतमी' उनकी व्यवसायी बुद्धि को बताती हुई कहती है - *''जव भी कोई देशी-विदेशी व्यवसायी आभूषणो को देखने-चुनने आता, आभूषणो को प्रदर्शित करने के लिए मौड़म किसी न किसी मॉडल बनने की इच्छुक युवती को अनुबधित कर लेती है। मॉडलिग के पेशे मे नई-नई दाखिल हुई युवतिया उनके व्यवसाय मे दो तरह से उपयोगी सिद्ध होती है उनका व्यक्तित्व कोरी स्लेट सा-होता है अनुकूल प्रकार-प्रकार मे ढाला जा सकता है पारिश्रमिक के मामले मे उन्हे अपनी सीमा और सामर्थ्य मे साधा जा सकता है। जो दे दो सहर्ष ले लेती है। ''*[140]

नारी अपने आपको सभी प्रकार के शोषण से मुक्त रखना चाहती है किन्तु 'लुभाने की वस्तु' बनकर वह अप्रत्यक्षत स्वेच्छा से अपना शोषण ही करवाती है -''वीसवी'' शताब्दी मे तुम तो अठारहवी का नमूना हो। देह की आनुपातिकता मे कही-कोई कमी है तो उसे दूरकर लेने मे कैसी अश्लीलता? मत भूलो, औरत के अस्तित्व का तिलिस्म उसकी देह से ही उपजता है। मै आभूषणो

के शिल्प का इतिहास अन्वेषित करने निकलती थी। पाया -''वह और कुछ नही स्त्री देह के तिलिस्म का ही शिल्प है। ''[141] पुन गौतमी ने शारीरिक स्पर्श के जादूई प्रभाव को व्यक्त करते हुए कहा- *तुम बदल-बदल कर उन आभूषणो को पहले प्रदर्शित करोगी जिन्हे हम उन्हे पसद करवाना चाहते है - कहना न होगा, इन जेवरो मे अपनी भावनाओ से तुम्हे स्पदन पैदा कर देना है। बार-बार तुम्हे समझाने के पीछे गणित यह नही कि पारखी क्या खरीदे? महत्वपूर्ण यह है कि हम उसे क्या खरीदवाना चाह रहे है। हम अपनी चीजे उन्हे इस प्रकार बेचे कि ग्राहक उन्हे पाने के लिए स्वय ललचा उठे।* '[142]

किस प्रकार की भाव-भगिमा के माध्यम से ग्राहक को आकृष्ट किया जा सकता है इस पर प्रकाश डालते हुए गौतमी ने नमिता को समझा कर कहा - ''जैसे ही वह बाहर से हरी बत्ती का बटन दबाएगी दरबाजा खोल वह हौले से बाहर निकल आएगी। आभूषण दीर्घा मे आत्मचेतना झकृत कर देने वाली उसके स्वर लहरी के लहरो पर हसिनी -सी तैरती हुई वह कनोई दपती की ओर बढेगी और निकट पहुँच कर सलज्ञा मुस्कराते हुए उन्हे नमस्कार करेगी। ''[143]

मॉडलिग की दुनिया मे भी नारी का शोषण ही होता है लेकिन उसकी मर्जी से। समाज ने सदैव नारी का दोहन किया है, कभी प्रत्यक्षत करता था, तो अब तरीका बदल कर अप्रत्यक्ष रूप से कर रहा है। स्पष्टत कहा जा सकता है कि मॉडलिग के माध्यम से नारी का अप्रत्यक्षत प्रत्येक स्तर पर शोषण किया जा रहा है। कभी-कभी, व्यवसायी जगत सीधी-साधी लडकियो की मजबूरी का फायदा उठाते हुए उसे मॉडल बनकर अपने जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लिए प्रलोभन देता है। पहले वह सहजता से इस जीवन को स्वीकार नही कर पाती किन्तु एकबार किसी भी तरह से इसमे आ जाने के बाद, वह इसकी चकाचौध मे खोती चली जाती है। फिर उसके लिए मॉडल बनकर लोगो के दिलो पर राज करने के अलावा कोई और विकल्प नही रह जाता। *फिर तो वह भी 'कुए के मेढक' की तरह इसी व्यवसाय का एक अग बनकर रह जाती है। इस क्षेत्र मे दो कारणो से नारियाँ आती है एक तो प्रलोभन के कारण लोगो के बहकावे मे आकर दूसरे अतिमहत्वाकाक्षा के कारण। महत्वाकाक्षी नारी समाज मे अपने आपको प्रतिष्ठित करने के लिए प्राय किसी भी तरह का समझौता आसानी से*

कर लेती है वैसे भी इस पेशे मे आने-वाली नारियो का कोई अपना जीवन-मूल्य नही होता उनमे सिर्फ पुरुषो से होड लेने की भावना होती है और स्वय को लोगो की दृष्टि मे आकर्षण का केन्द्र बनाने की तमन्ना/नमिता और वाना, दोनो ही इसी महत्वाकाक्षा के चलते मॉडल बनती है जबकि वह रुपयो के लिए कोई और भी रास्ता अपना सकती थी, किन्तु उन्होने स्वय को सहजता के साथ प्रतिष्ठित करने के लिए इस व्यवसाय को अपनाया जिसमे उन्हे आसानी से शोहरत और दौलत दोनो मिल सके८

संदर्भ ग्रंथ . सूची
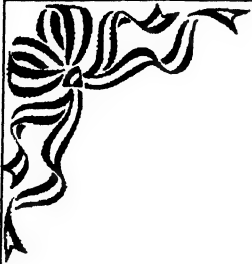
	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	228
2.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	65
3.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	74
4.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	48
5.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	63
6.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	399
7.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	404
8.	अपनी सलीवे	नमिता सिह	126
9.	अपनी सलीवे	नमिता सिह	220
10.	ऐलान गली जिन्दा है	चद्रकाता	88
11.	कथा अनन्ता	काति द्विवेदी	60
12.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	270
13.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	346
14.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	18
15.	अपनी सलीवे	नमिता सिह	218
16.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	69
17.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	312
18.	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	236
19.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	425
20.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	99
21.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	425
22.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	93
23.	सात आसमान	असगर बजाहत	784
24.	तत्सम्	राजी सेठ	25
25.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	160

26.	पीलीआंधी	प्रभा खेतान	226
27.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	83
28.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	92
29.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	94
30.	तत्सम्	राजीसेठ	29
31.	अपने अपने कोणार्क	चद्रकाता	94
32.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	---
33.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	119
34.	मुझे चाद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	555-56
35.	इदन्नमम	मैत्रेयीपुष्पा	128
36.	अपने-अपने कोणार्क	चन्द्रकाता	82
37.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	501-502
38.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	501-502
39.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	502
40.	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	252
41.	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	253
42.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	146
43.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	555-56
44.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	516
45.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	61
46.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	55
47.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	186
48.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	160
49.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	142
50.	अर्न्तवशी ऊषा	प्रियवदा	108
51.	अर्न्तवशी ऊषा	प्रियवदा	108
52.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	229
53.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	223
54.	अपने-अपने कोणार्क	चन्द्रकाता	115,153
55.	अल्माकबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	341

56.	अल्माकबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	223
57.	अपने-अपने कोणार्क	चन्द्रकाता	199-200
58.	ऐलान गली जिन्दा है	चन्द्रकान्ता	91
59.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	250
60.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	316
61.	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	241-243
62.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	250
63.	ऐलान गली जिन्दा है	चन्द्रकान्ता	178
64.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	218
65.	अल्मा कबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	34
66.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	---
67.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	553
68.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	13
69.	ऑवा	चित्रा मुद्‌गल	112-105
70.	ऐलान गली जिन्दा है	चद्रकान्ता	71
71.	ऑवा	चित्रा मुद्‌गल	205
72.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	77
73.	उन्माद्	भगवान सिह	293
74.	इदन्नमम्	मैत्रीयीपुष्पा	---
75.	तत्सम्	राजीसेठ	22
76.	ऑवा	चित्रा मुद्‌गल	404
77.	अपनी सलीवे	नमिता सिह	126
78.	तत्सम्	राजी सेठ	24
79.	तत्सम्	राजी सेठ	24
80.	तत्सम्	राजी सेठ	43
81.	उन्माद्	भगवान सिह	293-94
82.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	269
83.	ऑवा	चित्रामुद्‌गल	404
84.	उन्माद्	भगवान सिह	13-17
85.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	270

86.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	271
87.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	148
88.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	223
89.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	176
90.	अपनी सलीवे	नमिता सिह	88
91.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	241-42
92.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	112
93.	ऑवा	चित्रामुद्गल	111
94.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	125
95.	अग्निबीज	मार्कण्डेय	172
96.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	516
97.	अल्मा कबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	36
98.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	209
99.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	210
100.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	---
101.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	153
102.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	154
103.	उन्माद	भगवान सिह	160
104.	ऑवा	चित्रामुद्गल	443
105.	अपने-अपने कोणार्क	चद्रकाता	47-48
106.	मुझे चाद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	22
107.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	54
108.	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	54
109.	उन्माद	भगवान सिह	251
110.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	191
111.	उन्माद्	भगवान सिह	247
112.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	313
113.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	76-77
114.	तत्सम्	राजी सेठ	78

115.	अपने-अपने कोणार्क	चद्रकाता	147
116.	ऐलान गली जिन्दा है	चद्रकाता	184
117.	उन्माद्	भगवान सिह	251
118.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	43
119.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	164
120.	अपनी-सलीवे	नमिता सिह	146
121.	अपने-अपने कोणार्क	चद्रकाता	92
122.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	22
123.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	308
124.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	72
125.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	130
126.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	127
127.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	127
128.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	187
129.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	176
130.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	383
131.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	553
132.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	553
133.	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	208
134.	ऑवा	चित्रामुद्गल	214
135.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	130
136.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	201
137.	ऑवा	चित्रामुद्गल	201
138.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	201
139.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा	130
140.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	212
141.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	214
142.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	221
143.	ऑवा	चित्रा मुद्गल	221

पंचम अध्याय

विभिन्न परिप्रेक्ष्य में समाज के बदलते मूल्य:
और नारी की असहज स्थिति
यातना और संघर्ष का द्वन्द्व-

- अपराध बोध
- हत्या
- बलात्कार
- विवाहेत्तर - संबंध
- दमित इच्छाएं
- समलैंगिकता

विभिन्न परिप्रेक्ष्य में समाज के बदलते मूल्यः और नारी की असहज स्थिति यातना और संघर्ष का द्वन्द्व

नारी और पुरूष मे जैविकीय–भिन्नता के बाद भी दोनो एक–दूसरे के पूरक है। दोनो यदि सामजस्य के साथ रहे तो समाज स्वस्थ और सुन्दर बन सकता है।" *पुरूष और नारी की भिन्नता के ही कारण तात्विक–दृष्टि से 'अर्धनारीश्वर' की अवधारणा की गई है जहॉ पुरूष में स्त्रीत्व के होते हुए भी पुरूषत्व का प्राधान्य और स्त्री मे पुरूषत्व के विद्यमान होते हुए भी स्त्रीत्व की प्रधानता है। साख्य दर्शन के अनुसार , एक तरफ निर्गणउपाधि रहित स्थिर पुरूष तो उधर सत्व, रजस,तमों गुणो से आच्छादित प्रकृति । यह प्रकृति स्वरूपाकार होती है पुरूष ससर्ग से और पुरूष अंदोलित,परिचालित और आच्छादित 'ससार' होता है स्त्री (प्रकृति) शक्ति द्वारा।"* (प्रभा खेतान, हस, जून 1994)। किन्तु होता इसके विपरीत है। पुरूष नारी के अस्तित्व को नकार कर अपनी इच्छाएँ थोपता है। उसने नारी की इच्छा–अनिच्छा को कभी महत्व ही नही दिया। *सच यह है कि उसने नारी को कभी 'व्यक्ति' समझा ही नही, वह उसे 'वस्तु' समझकर इस्तेमाल करता रहा । नारी उसके लिए 'Use and Throw' ही बनी रही* और उसकी आक्रामक तथा कामुक प्रवृत्ति के चलते, वह उत्पीडन का शिकार होती रही तथा आज भी हो रही है।

पुरूष द्वारा, उसका दो ही स्तरो पर शोषण किया गया– आर्थिक निष्क्रियता एव सेक्स। नारी ने आर्थिक–स्वतत्रता पाने के बाद सोचा, कि अब उसकी स्थिति पहले से बेहतर होगी। वह अपनी इच्छानुसार जी सकेगी। यद्यपि ऐसा हुआ भी, वह पहले की अपेक्षा बेहतर स्थिति मे आ गई किन्तु अपनी शारीरिक दुर्बलता से मात खा गयी। *जिस 'नारीत्व' के कारण वह सृष्टि के 'सृजन' का कारक बनी, वही पुरूष की आक्रामक एवं कामुक प्रवृत्ति के कारण उसकी स्थायी दुर्बलता बन गई। वह बुद्धि और ज्ञान में पुरूष के बराबर हो कर भी अपनी एक 'कमी' के चलते जीवन की जीती बाजी हारती रही।* किन्तु, अब अपनी स्थिति

को लेकर उसकी मानसिकता बदल रही है। वह पुरूष के दश को आजीवन भोगने को तैयार नही है, क्योकि वह जान चुकी है कि समाज उसे समझने और जानने का प्रयत्न नही करेगा। पुरूष अपनी मानसिकता नही बदलेगा इसलिए उसे अपने वैचारिक–मूल्यो मे बदलाव लाना ही होगा अन्यथा अपनी एक 'कमी' के चलते वह घुटनभरी असहज जिदगी जीती रहेगी। फिर भी, वह स्वय को कितना सहज कर पाएगी ? जब मन पर खरोच आएगी तो जिस्म अपने आप सिहर उठेगा।

वैसे तो प्रत्येक मानव के जीवन मे कभी न कभी असहजता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किन्तु, अपने आरभ से ही 'नारी–समाज' असहज स्थिति से ज्यादा प्रभावित रहा है। क्योकि पुरूष द्वारा निर्मित समस्त वर्जनाए और नैतिक मान्यताए, नारी के ही हिस्से में आती हैं। प्राय देखा जाता है कि वह छोटा से छोटा निर्णय भी अपने मन से नही ले पाती बल्कि दबाव मे आकर लेती है। जिसके कारण उसकी इच्छाए तथा भावनाए दोनों दमित होती है। वह अपनी अधूरी आकाक्षाओ के लिए किसी से शिकायत तो नही करती पर भीतर ही भीतर घुटती रहती है। यही घुटन उसे एक दिन असहज–जीवन की ओर अग्रसर कर देती है। नारी जीवन की विसगतियो से साहित्य भी अछूता नही रह सका है। नयी कविता और आधुनिक उपन्यास–साहित्य की, ऐसी दो विधाए है जिसमे सामाजिक यातना सहती हुई नारी को असहज जिदगी की ओर अग्रसर होते दिखाया गया है। इन दोनो विधाओ मे भी, उपन्यास विधा, अपने व्यापक फलक के कारण ज्यादा चर्चित है जिसमे नारी को अपनी असहज जिदगी से सघर्ष करते चित्रित किया गया है। इन्ही असहज मन स्थितियो के कारण अपराध बोध, हत्या, विवाहेत्तर सम्बन्ध, दमित इच्छाए आदि का जन्म हुआ।

जब हम किसी कार्य को बिना सोचे–विचारे करते है तो उसका परिणाम भी अनुचित ही मिलता है। कभी–कभी किसी काम को दबाव मे आकर करना पडता है या हमारा अह सामने आ जाता है जिसके कारण हम गलत काम कर जाते है। बाद मे, जब वास्तविकता समझ मे आती है तब हमे ग्लानि के साथ ही अपराध – बोध भी होता है–

'नीलिमा' एक विवाहिता नारी है जो अपने अह के कारण पति से अलग रहने लगी है। वह लेक्चरर के पद पर कार्यरत है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी है। किन्तु, हर पुरूष की निगाह उसके भीतर कुछ टटोलती रहती है। एक दिन एकात पाकर उसके सहकर्मी आभिजित ने उसका हाथ पकड लिया। इस पर उसके भीतर क्रोध और अपराध–बोध दोनो की मिली –जुली प्रतिक्रिया जाग्रत हुई। उसे लगा, कि उसने अपने पति 'इशू' को छोडकर बहुत गलत किया। उसकी अनुपस्थिति के कारण ही लोग उस पर बुरी नजर डालते है। वह स्वय को अपराधी समझने लगती है। सदैव इसी उधेड–बुन मे लगी रहती है कि सामाजिक बंधन को नकारने के कारण लोग उसके विषय मे पता नही क्या–क्या बाते बनाते रहते है– " *लोग क्या कहते होंगे ? उसकी शादी न हुई होती, तो कम से कम लोग तरस खाते। सोचते कि बाप के न होने से कोई देखने–भालने वाला न होगा। या दहेज के चक्कर मे शादी न हो पाई होगी। लेकिन उसका मामला तो गडबड है। शादी शुदा और अकेली – पीठ पीछे न जाने क्या–क्या सोचते होगे ?*"[1]

पुरूष अपनी मनोविकृतिया उगल कर अलग हो जाता है और नारी उसके अपराध को अपना अपराध मानकर पीडित होती रहती है। 'नमिता' साथियों के साथ ड्रिक करने के बाद अपने कमरे मे आकर बिस्तर पर सो गयी, वह नशे की हालत मे कमरे का दरवाजा बद करना भूल गयी । उसके मित्र ने उसकी हालत का फायदा उठाया और उसके कमरे मे चला गया। जब उसे अपने साथ हुए बलात्कार का पता चला तो वह स्वय को

अपराधी समझने लगी– *" बाथरूप मे जाकर गुन– गुने पानी से साबुन लगा लगा कर अपना चेहरा धोया, उसे नही मालुम कि नीद की बेहोशी में –––– मुँह धोते हुए वह सोचती रही, धो लेने भर से अंकित चुबनो के स्पर्श धुल सकते है ? विस्तर पर पलटते ही कबल नाक तक खीच सुबक पडी।'* [2] उसे लगा कि यदि उसने ड्रिंक न किया होता तो उसके साथ इस तरह का दुर्व्यहार नही किया जा सकता था। उसे, अपने साथ के लोगो पर विश्वास नही करना चाहिए था क्योकि उनकी इच्छा रखने के लिए ही उसने भी ड्रिंक किया।

'सोमा', पति के दुर्व्यवहार से पीडित होने के बाद अपना घर छोड कर अपने प्रेमी 'सुजीत' के घर चली आती है। वह उसका भरा पूरा घर–परिवार देखकर अपने कृत्य पर क्षुब्ध हो उठती है। उसे लगता है कि उसने विवाहित सुजीत से प्यार करके और उसके साथ रहने का फैंसला लेकर उसकी पत्नी के साथ अपराध किया है– *"चित्रा मै। अपने को इतना अपराधी पा रही हूँ। तुम दोनो के बीच ? सोमा तुम दोनो को एक दूसरे की जरूरत है। तुम लोग एक–दूसरे से प्यार करते हो। मेरी भूमिका समाप्त हुई समझो।"*[3]

ज्वर से पीडित 'मदा' को अकेले पाकर 'कैलाश' ने उसकी मजबूरी का फायदा उठाया । वह प्रतिरोध करती रही किन्तु नर भेडिया के सामने छोटी बच्ची की बिल्कुल न चली । 'कुसुमा' के आने पर वह उसे पकड कर रोती रही और लज्जित होने के कारण उसने अपने गॉव न जाने की इच्छा व्यक्त की । (क्योकि उसके भीतर अपनी अस्मिता के लुट जाने के कारण भय एव अपराध–बोध घर कर गया था।) उसकी मन· स्थिति जानने के बाद 'कुसुमा' ने उसे समझाते हुए कहा–" *'बिन्नू' , अपने मन मे तनिक भी भय मत लाना, जो तुमने किया ही नही, उसके लिए अपने को दोषी क्यो मानना?.. अरे! 'श्यामली' काहे नही जाएगे? किसका डर है वहॉ ? किससे झिझक रही हो 'बिन्नू' ? . तुमने तो रो–रोकर बुरा हाल कर लिया है।'* [4]

'वाना' ने 'शिवेश' की अनुपस्थिति में 'राहुल' का बच्चा धारण किया। शिवेश

उसे गर्भवती देखकर बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु वाना को उससे झूठ बोलना उचित नही लगा । उसने सारी वस्तु –स्थिति से 'शिवेश' को अवगत करा दिया। वह इस समाचार को वर्दाश्त नही कर सका और रात मे उसने चुपके से कमरा बद कर पखे से लटक कर, आत्म हत्या कर लिया। 'वाना' इस दृश्य को देखकर जड हो गयी, उसने महसूस किया कि शिवेश की हत्या की जिम्मेदार वह है। कुछ दिनो के लिए उसने अपने आपको सबसे अलग–थलग कर लिया। [5]

इसी प्रकार 'नमिता' ने अविवाहित होते हुए भी गर्भधारण कर लिया। जब उसे पता चला तो वह परेशान हो गयी, उसने डॉक्टर से गर्भपात कराने के लिए बात किया। गर्भस्थ– शिशु तीन माह से ऊपर का हो चुका था। उसने भी बच्चे की हलचल महसूस की थी । डॉक्टर ने गर्भपात न कराने की सलाह दी किन्तु अविवाहित होने के कारण उसके पास इसके सिवाय कोई विकल्प नही था। उसे अपने बच्चे को मारने का निर्णय लेने के बाद एहसास हुआ कि वह निरपराध – भ्रूण को मारने जा रही है। जबकि उसे मा बनने पर प्रसन्नता होनी चाहिए–" *बच्चे के आने की खुशी मे उसे खुश होना चाहिए ? गर्भ मे ही सही, क्या सोचेगा बच्चा उसे उलझन मे पडा देख! मा, तुम्हें खुशी नही हुई मुझसे मिलकर !*" [6] और वह रोने लगी ।

'सोमा' ने जब 'सुजीत' के घर मे रहने के इरादे से प्रवेश किया और उसने 'चित्रा' जैसी उदार नारी को पाया तो, उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। (उसने पति–पत्नी के बीच दरार डालने का काम किया है जो उसे नही करना चाहिए था।) क्योकि वह प्यार करने के पूर्व ही यह बात जान चुकी थी कि सुजीत अविवाहित नही है फिर भी वह अपने आपको रोक नहीं सकी और अपने प्रेमी के दाम्पत्य–जीवन के विघटन का कारण बन गई । उसने अपनी गलती के लिए चित्रा से क्षमा मॉगा, इसपर चित्रा ने उसे स्नेह पूर्वक डॉटते हुए कहा– " *चुप ! अपराध बोध से ग्रसित होकर बच्चे को बडा मत करना । जो कुछ भी घटा वह कोई नया तो नही। मै भी तो किसी अन्य पुरूष के प्रेम मे पड़ सकती*

थी। इसमें तुम्हारा क्या दोष ?" [7]

प्रैम,पति की मृत्यु के बाद अबोध बच्ची को विधवा सास के पास छोडकर पर–पुरूष के साथ चली गयी। उसने सुखी–जीवन की कामना से अपना घर छोडा था किन्तु जिस पर उसने विश्वास किया था उसने उसे बीच मे ही छोड दिया। वह अपराध–ग्रस्त होने के कारण इधर–उधर अकेली भटकती रही पर अपनी ससुराल नही लौटी। काफी दिनो बाद जब 'मदा' बड़ी हो गयी और उसकी समाज सेवा की प्रशसा गॉव–गिरॉव से बाहर भी होने लगी तो प्रैम अपने को रोक नही सकी । जिस वेग को वह अब तक रोकती रही थी, वह अब उसके नियत्रण से बाहर हो गया। उसने अपनी बेटी को सूचना भेजा कि उसकी मॉ उससे मिलना चाहती है, और मिलने पर बोली – *" माफी दे दो बिटिया अपनी अम्मा को माफी दे दो . . बेटा जे धरो तुम! पूरे पचास हजार है। तुम्हारे है, तुम्हारे पिता के। अपनी मरजी से खर्च कर लेना। सुनी है कि तुम जा अस्पताल को चलावे की सोच रही हो। नेक काम है बेटा। बाप अधूरा छोड गये है तुम पूरा करने की कोशिश करो । . बस हमे माफी दे देना मदा ।"* [8]

'सोमा' अपने क्लीव पति को छोडकर जब जाने लगती है तो उसकी सास उसे रोकती है। लोग, सोमा पर लाक्षन लगाते है और उसे गाली देते है। उसके अलग रहने की बात पर, परिवार वाले उसे पैतृक–सपत्ति से बेदखल करने की धौस भी देते है। उसकी 'सास' इन सब प्रति–क्रियाओ का विरोध करती है और सबको, अप्रत्यक्षत अपराधी ठहराती है। वह कहती है कि गलती सोमा की नही है बल्कि गौतम ही गलत है। *" बात को गॉवं मे मत उछालो, बनी बनाई इज्जत माटी मे मिल जाएगी।.. फिर सोमा से कहा– " ना . .ना! रो मत बेटा! थावस रख। सब ठीक हो जाएगा।"* वह इस बात को स्वीकार *करती है कि उनकी बहू के साथ पहले भी गलत हुआ और अब भी गलत हो रहा है। अपनी ग्लानि को व्यक्त कर वे पुन कहती हैं– "छोटी तुम समझदार हो। घर की नीव मे ईट नही होती बेटा! हम स्त्रियो का त्याग होता है। ...... ऐसे घर की ड्योढी नहीं लॉघते '* [9] यद्यपि

वह जानती है कि सोमा को रूकने के लिए कहकर अपराध ही कर रही है, घर–परिवार वाले उसे चैन से जीने नही देगे फिर भी वह खानदान की मर्यादा के लिए ऐसा करती है।

भाभी के समझाने–बुझाने पर वह श्यामली गॉव तो वापस आ गयी पर अपनी हसी–खुशी वही छोड आयी । जिस दिन कैलास मास्टर ने उसकी अस्मिता के साथ खिलवाड किया, वह उसी दिन से अपनी नजर मे अपराधिन बन गई। भले ही 'कुसुमा' ने उसे 'पवित्र और अक्षत्' कहा हो किन्तु वह अपने को ऐसा नही मान पायी। जिस 'मकरन्द' को देखकर वह फूली नही समाती थी उसे देखते ही कन्नी काटने लगती। उसे लगता वह मकरद के पवित्र प्यार के योग्य नही है, वह गिर चुकी है– " *मन्दाकिनी उनकी ओर देखना चाहकर भी नही देख पा रही न जाने क्यो ? मन मे लौट–लौट कर आ रहा है बिरगवॉ ! एकांत! अधेरा! बुखार! और देह को टटोलता, जकडता कैलास मास्टर आह! आह!* " [10]

'दिव्या' के लखनऊ प्रवास की बात जानने के बाद वर्षा निराश हो गयी। उसके जाने की बात सोचकर, वह स्वय को सभाल नही सकी, उससे अलग होकर जीने की बनिस्पत उसे मर जाना ज्यादा बेहतर लगा। फलत उसने जहर खा लिया, यद्यपि शीघ्र उपचार के कारण वह बच गयी। उसकी, यह हालत जब दिव्या ने सुना तो वह अपने आपको अपराधी महसूस करने लगी, उसे लगा कि वह हमेश–हमेशा के लिए वर्षा को खो देगी, अत उसने वर्षा से क्षमा मॉगा और एक वर्ष, वर्षा के ही साथ रहने का, अपना सकल्प दुहराया। इस पर वर्षा ने उसे अपराध भाव से मुक्ति दिलाने के लिए कहा– " *भूल मेरी थी। तुम्हारे ऊपर मेरी भावात्मक निर्भरता बहुत बढ गई थी मुझे यह समझना चाहिये था कि अपना–अपना बोझ अकेले ढोने के लिए हर कोई अभिशप्त है।* " [11]

'कुनी' ने घर की आर्थिक–स्थिति को सुदृढता प्रदान करने एव बहन–भाइयो को सुखद् भविष्य देने के कारण, व्यक्तिगत जीवन की ओर, कभी ध्यान ही नहीं दिया। घर के लोगो ने भी, आत्मनिर्भर बेटी के विवाह को बहुत गहराई से नही लिया। किन्तु बढती

हुई उम्र एवं भाई–बहनो का अपना परिवार हो जाने पर, उसे अपनी गलती का बोध होने लगा था। फिर भी, वह भावनाओ एव इच्छाओ को नकारती रही। किन्तु छोटी बहन के बच्चे को पाकर उसका मातृत्व जाग उठा उसने उसे अपनी छाती से लगा लिया परन्तु कोई देख न ले, इस भय से उसे अपने से अलग कर दिया। " कही 'मति' को मेरे भीतर उठी प्यास का अदाजा न लगे। मन को कचोटती हौस का एहसास न हो। एक नन्हे मॉस–पिण्ड को अपने भीतर उगते और बढते देखने की अदम्य लालसा, एक नन्ही जान को कोख मे पालने का गर्व। गुलाब की पत्तियों– जैसे होंठो की छुअन ने मेरे भीतर के मातृत्व को अजीव सी चुनौती दी थी और भीतर– ही– भीतर ढह गई थी। *वक्त के बे आवाज चक्को की रौंध मुझे किस कदर अपाहिज कर गई थी।'* [12] उसने मन में उठी तरगो के माध्यम से अपने रोते जीवन को महसूस किया था, वह भी मति की तरह किसी की पत्नी, किसी की मा हो सकती थी पर उसने अपने आपको इस सुख से वचित रखा था। आज यह अपराध उसे साल रहा था।

रूपयो की खातिर उसे सम्पन्न घरो की नारियो को प्रसन्न करना पड रहा था। विधवा 'नीलम्मा' इस कुकर्म को नही करना चाहती थी किन्तु दोनो बेटो के सुख के लिए, वह अधिक रूपया कमाने की लालच मे पड गई। कुछ दिनो बाद वह अपनी ही नजरो मे गिरने लगी, उसे लगा वह अपराध कर रही है– " *वह जो भात का माड पीकर, बच्चो को पिलाकर सारी दुनिया को ठेगे पर रखकर, स्वाभिमान से तनकर चला करती थी– चल पाएगी ?'* [13]

नारी अपनी हृदयगत सुकोमलता के लिए प्रशसनीय है। *भावना–प्रधान होने के कारण ही प्रकृति ने उसे जननी का गौरव प्रदान किया है इसीलिए वह सृजन की कारक बनी। क्षमाशीलता की प्रवृत्ति ने उसे देवी का स्थान दिया और वह पूज्यनीय हुई* किन्तु परिस्थिति के अनुसार वह अपनी भावनाए अपना स्वरूप भी बदलती रही है वह आदिकाल से सृजन के साथ ही सहार का कारक भी बनी रही है। भरत मुनि ने कहा भी है– कि – *"वह कुसुम से ज्यादा कोमल है तो वज्र से अधिक कठोर भी।"* आज की नारी भी, उन्ही विशेषताओ की पुज है जो पूर्व की नारियो मे समाहित थे किन्तु उसके स्वरूप मे परिवर्तन होने लगा है क्योकि अब उसके मूल्य बदल रहे है। क्षमाशीलता के विशिष्ट – गुण के कारण उसे कमजोर समझा जाता रहा है इसलिए वर्तमान समय की नारी, इसे अपनी कमजोरी नही बनने देना चाहती। क्योकि अब वह शोषण सहने को तैयार नही है। वह प्रतिकार करना सीख गयी है। *अब वह एक गाल पर मार खाकर दूसरा गाल मार खाने के लिए आगे नही करती* बल्कि मारने वाले को भी लहूलुहान करती है।

वह घर की देहरी से बाहर निकली है अपने अस्तित्व को नवीन दिशा देने के लिए, अपनी योग्यता को प्रमाणित करने के लिए, अत आज उसका जीवन पहले की अपेक्षा अधिक असुरक्षित हुआ है किन्तु विशेष बात यह है कि वह *" शठेशाठ्यसमाचरेत्"* का मूलमत्र आत्मसात कर चुकी है। इसलिए प्रायं अपना बचाव भी कर ले रही है । दुर्भाग्य पूर्ण यह है कि वह दोहरी असुरक्षा की शिकार हो रही है– एक तरफ वह समाज की नंगी नजरो का सामना करती है तो दूसरी तरफ अपने सगे–सम्बन्धियो से ही बचती फिरती है। बाहरी पुरूषो से तो वह फिर भी निपट लेती है परन्तु घर के अन्दर बैठे भेडियो से मुकाबला करना मुश्किल हो जाता है क्योकि वह चौबीसो घटे ताक लगाए रहते हैं। नैतिकता और मर्यादा का इतना स्खलन हो रहा है कि पिता–पुत्री को 'पितृवत–दृष्टि' से देखने की

बजाय 'पुरूषत्– दृष्टि' से देखने लगा है। यद्यपि इस तरह के 'पशु' समाज में कम है पर इनकी उपस्थिति को नकारा नही जा सकता।

'स्मिता' का पिता 'मटका किग' है। वह सदैव शराब के नशे मे धुत्त रहता है। उसकी भोगेच्छा अपनी पत्नी से तृप्त नही हो पाती तो वह अपनी आत्मजा को वासना का शिकार बनाता है। पूरा शहर उसके आतक से कॉपता है। ऐसे मे पत्नी और बच्चो की स्थिति का क्या कहना? पुत्री के लाख विरोध के बावजूद, उसे आए दिन बलात्कृत करता है। वह धीरे–धीरे, अपना मानसिक–सतुलन खो बैठती है। स्मिता अपनी बडी बहन व मा की दयनीय स्थिति नही सह पाती इसलिए उसके भीतर प्रतिशोध का लावा बनने लगता हैं। वह अपने जन्मदाता को मारने का सकल्प लेती है। और सदैव अवसर की तलाश मे रहती है। एक दिन जब घर के सभी सदस्य सोए रहते हैं शराबी पिता की आवाज सुनकर वह दरवाजा खोलती है, जैसे ही वह सीढियो पर चढने लगता है वह धक्का दे देती है। इस प्रकार वह नर–पिशाच को मार कर अपनी मा और बहन का बदला लेती है। सखी 'नमिता' द्वारा इस कृत्य को अनुचित बताने पर वह कहती है– *"प्रतिहिसा पेट से लेकर नही जन्मता कोई नमी ! हो सकता है, मेरे जीस जाचे–परखे जाए तो औरो से भिन्न निकले। अस्वाभाविक नही ? मटका किग की औलाद हूँ। लेकिन मुझे लगता है, वैज्ञानिक शोध के अतर्सत्यो से परे कि मुझमे आज की औरत का जीन है, जो अब तक जन्मी नही थी जन्मने को छटपटा रही थी।* मटका किग पिता नही था राक्षस था। उसके मारे हम रोज मरते रहे, हम अब नई जिदगी जिएगे खुलकर सास लेगे!.. घर मे रहते हुए दड बो मे दुबके नही रहेगे–कीडे– मकोडो की भॉति फडफडाते। पुन– मेरे पास तो कुछ है ही नही, है तो, केवल रेतीला अतीत, मृगमरीचिका से भरा दौडाता, बिरझाता, खाली हाथ लौटाता। उस रेतीले अतीत को मैं स्वय खोना चाहती हूँ नमी ! मटका किग की मिट्‌टी के साथ उसे बहा देना चाहती हूँ। शायद तभी मै अभिशप्तता से मुक्त हो दीदी के साथ, मॉ के साथ, विक्रम के साथ जीने का विकल्प खोज पाऊँ।" [14]

'रामसिह' की बेटी 'अल्मा'। जिसे रामसिह ने गॉव से दूर शहर मे रखा, उसे उज्जवल भविष्य देने के लिए पढाया –लिखाया। परिस्थितियो के हाथो वही रामसिह मजबूर हो गया उसकी सोची एक न चली और उसके रहते ही, उसकी बेटी अल्मा का, शिकार होने लगा। उसने बेटी को सुरक्षित करने की खातिर अपने मित्र के यहॉ उसे भेज दिया किन्तु वहॉ भी उसकी अस्मिता नही बच पायी और वह 'बेटासिह' के हाथो बेच दी गई। वहॉ से जान बचाकर भगी तो 'श्रीराम शास्त्री' की झोली मे आ गिरी यानि *'आकाश से गिरी तो खजूर पर आकर अटक गयी।* वहॉ भी उसके शरीर के साथ सौदे–बाजी शुरू हुई, एक के बाद एक आक्रमण झेलते–झेलते उसके भीतर भी प्रतिशोधाग्नि धधकने लगी *"विचार बाढ की तरह आते वह डूबने लगती। इसे कब मॉरू और कैसे मारु? सोचने मे ही सारी ताकत जाया हो रही है, बप्पा तुमने क्यो पढाया लिखाया? पढाई–लिखाई सोचने पर मजबूर करती है। यह सोचने का समय नही, मरने–मारने की घडी है। मै सबेरे से सॉझ तक, सॉझ से सबेरे तक कितनी जिदगियॉ जीती हूँ कितनी मौते मरती हूँ बेटासिह, सूरजभान और श्रीराम शास्त्री की फौजे खडी है। मेरे साथ न गोरा, न बदल, न दासी, न सखियॉ, न सौनिक . बदकिलो की बदिनी तुम्हारी बेटी कितनी दीवारे फलॉगे?"*[15]
वह सदैव अपना प्रतिशोध लेने के लिए अबसर तलाशती रहती है और स्वय से ही सवाद करती रहती है– " आप जानते है, मै यहॉ क्यो रूकी हुई हूँ? *आप समझते है कि मै जिदा भी क्यो हूँ ? बडी सीधी सी बात है आप लोगो ने हमारी दुनियॉ उजाडी है मै आपको उजाडे बिना नही मरूँगी। मै सबको बताऊँगी कि पाप कहॉ पलता है?..... मै बहुत समझदार नही पर इतना तो समझती हूँ कि हमारे लिए क्या गलत है, क्या सही ? .. वह अपने पास कभी चाकू रखती तो कभी श्रीराम शास्त्री की पिस्तौल को खँगालती। चाकू से काम अधूरा भी रह सकता है। यह आदमी पूरा नही हुआ तो मकसद आधा ही रह जाएगा"।*[16]

आज की नारी अपने ऊपर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए कमर कस चुकी है। *यदि पुरुष उसे जीने नही देगा तो वह भी उसे मारने से नहीं चूँकेगी। अब वह सिर्फ सहना नही चाहती, बल्कि प्रतिशोध भी लेना चाहती है। मारने का काम कभी बडे*

मजबूत दिल वाले किया करते थे और यह मजबूती किसी और के पास नही, बल्कि पुरूषो के ही पास थी । नारी ने भी, अब अपने को दुर्बलता से मुक्त करने का सकल्प ले लिया है। आखिर कब तक पशुता को सहा जा सकता है एक न एकदिन उसका अत होना ही था। नारी ने अपने भीतर के सुप्त साहस को पहचान लिया है इसलिए वह अब अबला बनकर नही जिएगी। 'अल्मा' नारी के साहासिक रूप का प्रतीक है।

अविवाहित 'नमिता' को जब पता चला कि वह मा बनने वाली है तो वह घबडा गई किन्तु उसने धैर्य से काम लिया और डॉक्टर से अपना गर्भपात करने को कहा। एकबारगी उसका मातृत्व, उसे ऐसा करने के लिए रोकने लगा किन्तु आगत शिशु के कारण उसका कैरियर, उसका चरित्र सब खत्म हो जाएगा,यह सोचकर उसने शिशु की हत्या का मन बनाया– "बच्चा पालने बैठ जाऊँगी तो मै पढ नही पाऊँगी । मै वैसी आधुनिका नही हूँ कि बिना ब्याह के अवैध सतान पैदा कर छद्म–क्राति जिऊँ । *मेरे लिए सतान सामाजिक जिम्मेदारी है। उँगली नही उठा सकता वह मेरी ओर कि मैने उसे उस तरह क्यो पैदा किया, जिस तरह से वो जन्मना नही चाहता था ?'* [17]

'सुगना' का विवाह 'अभिलाख' सिह के पुत्र से तय हो गया। मा– बेटी के विरोध के वावजूद, उसके पिता 'जगेसर' ने यह रिश्ता मजूर कर लिया। अभिलाख सिह पतित व्यक्ति था वह अपने सीधे–साधे लडके के रिश्ते के माध्यम से अपनी वासना की अग्नि शात करना चाहता था। सुगना के विरोध के वावजूद वह उसके घर आने लगा, उसके साथ जोर–जबर्दश्ती करता और मुँह अधेरे चला जाता। परिणामत सुगना गर्भवती हो गयी। सलज्ज नारी, स्वय को अपराधी समझने लगी, उसने सबसे मिलना–जुलना बद कर दिया। जिदगी के प्रति उसका मोह खत्म हो गया और अभिलाख सिह से अपनी अस्मिता का बदला लेने का, विचार गहराने लगा। एक दिन जब वह आकर, बाहर विस्तर पर सो गया, तो उसने बिना समय नष्ट किए, चाकू उठाया और उसके शरीर को घोप–घोप कर उसे मार डाला। तत्पश्चात् अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा लिया।

इस पर उसकी मा ने व्यथा मिश्रित गर्व से कहा –*"नरकिया ने कुंआरी मोडी के सग. बिन्नू, गरभ रह गया! छटपटाती रही मेरी सुगनाऽऽ पर बहादुर कढी मोरी बिटिया । राच्छत को पिरान काढ दिये।"* [18] पूरे गॉव के लोगो ने उसकी बहादुरी की प्रशसा किया और उसकी मृत्यु पर गहरा शोक।

नारी, अपने साथ हुए अत्याचार या बलात्कार को अब एक घटना मानकर भूलना नहीं चाहती बल्कि दुराचारी पुरूष को खत्म कर अपना प्रतिशोध लेना चाहती है। *वह अपने साथ हुए दुर्व्यवहार का बदला लेने के लिए समाज की ओर नही देखती, न्याय के लिए गुहार नहीं लगाती। बल्कि स्वय साहस बटोर कर आततायी का अत करती है। नारी के बदलते हुए मूल्यों में प्रतिशोध की भावना प्रशंसनीय है क्यों कि दूसरो के बल पर अन्याय का विरोध करने के बजाय स्वय अपराधी को दण्डित करना ज्यादा उचित है।* यद्यपि उपन्यासो मे एव समाज के अन्दर, इस प्रकार नारी द्वारा बदला लेने के प्रकरण बहुत कम मिलते है लेकिन जो भी उदाहरण मिल रहे है वह पीडित नारी के मनोबल को बढाने एव उसका मार्ग–प्रशस्त करने के लिए पर्याप्त है। इसलिए स्मिता, अल्मा, सुगना जैसी बहादुर नारिया, नारी की शक्ति एव साहस का प्रतीक है जिनके माध्यम से नारी–समाज मे नवीन–चेतना का सचरण हो सकता है। नारी स्वय बदला लेकर अपने घावो पर मरहम लगा सकती है। आधुनिक नारी का यह कृत्य समाज की पीडित नारी के लिए शुभ सकते है।

बलात्कार ऐसा शब्द है जिसका नाम लेते ही *पुरूष की पाशविक प्रवृत्ति का स्मरण हो जाता है तथा नारी की कॉपती 'रूह' और छटपटाती 'काया' ऑखो के सामने उपस्थित हो जाती है।* यह शब्द और कृत्य दोनो ही नारी को अपनी असहायता का बोध कराते रहते है। समय के साथ समाज मे बहुत से परिवर्तन हो रहे हैं किन्तु आज भी नारी पुरूष के लिए सिर्फ मॉस का पिण्ड ही है इसके सिवाय कुछ भी नही । अपनी इसी कुण्ठित मनोवृत्ति के कारण वह नारी के साथ बलात्कार करने को उद्यत हो जाता है। नारी के भी मूल्य बदले है, वह समाज मे अपनी योग्यता प्रमाणित कर रही है। बौद्धिक स्तर पर उसकी योग्यता को समाज भी स्वीकार करने लगा है, भले ही दबी जुबान से ही सही। लेकिन नारी की भावना को वह आज तक नही समझ सका, अपनी पाशविक प्रवृत्ति के चलते। 'कुनी' एक सम्मानित, अविवाहित लेक्चरर है। अस्वस्थता बस उसे क्लिनिक जाना पडता है। जिस डॉक्टर के पास वह बीमारी के इलाज के लिए जाती है वह कुठित व्यक्ति है। स्पर्श का बहाना लेकर उसके साथ दुर्व्यवहार करता है। वह आक्रोश से भर उठती है किन्तु समाज एव पिता की इज्जत के डर से घुट कर रह जाती है– *'' उस दिन मैने डॉक्टर की जगह एक जॅगली जानवर के पजे अपनी देह पर रेगते महसूस किए। मै झटके से उठकर बैठ गई तो चीख के साथ मेरी ऑखो से आसूॅ निकल पडे . अब मै घर जाऊॅगी उसकी जुबान से मीटे शब्द झर रहे थे पर हाथ मेरे जिस्म के नरम हिस्से तलाश रहे थे। मेरी हडबडी मे उठते समय भी उसने दोनो हाथो से मुझे भीच लिया। "डॉक्टर !" ऑखो से आग बरसने लगी। .... चिल्लाओ नही कुनी। मै कोई भेड़िया नही हूॅ जो खा जाऊॅगा आई लाइक यू* मै उसकी बदतमीजी पर गुस्से से कॉंपती, थर–थराती घर लौटी। मन मे अपने पर भी क्रोध था। मैने चिल्लाकर इस भले आदमी को भरे क्लीनिक मे बेनकाब क्यो नही किया ? बप्पा के कहने के अनुसार यह ऑरथोपेडिक डाक्टर, जिसके

क्लीनिक मे लोग तगडी, फीस देकर भी घटो बैठे दया–दृष्टि का इतजार करते रहते है, उसका मै क्या बिगाड सकती थी? हॉ, मेरे बप्पा का सिर जरूर नीचा हो सकता था, जो मुझे किसी भी हाल मे मजूर नही था, मै उसकी सीमा लॉघने की हरकतो से पहले ही उसकी बोलती खुद बद कर सकती थी। पर उस वक्त बात बढाना मुनासिब नही लगाया। बडी अजीब सी बेचारगी महसूस की थी मैने।" [19]

नारी अपने विचारो एव क्रिया–कलापो मे भले ही आगे बढ रही है किन्तु चरित्र को लेकर आज भी वह प्राय बचाव पक्ष को ही अपनाती है। क्यो कि पुरूष प्रधान भारतीय समाज उसका शोषण भी करता है ओर बेशर्मी से उसे चरित्रहीन भी घोषित कर देता है। यही कारण है कि वह अपने चरित्र पर समाज को उँगली उठाने का मौंका नही देती। एक सीमा तक उसकी जोर जबरदस्ती को बर्दाश्त कर चुप रह जाती है और अपना बचाव करती हुई, उसको यह भी समझा देती है कि अब वह पुरूष की वासना का शिकार नही बनेगी *" बप्पा को आवाज दिया, " बप्पा डॉक्टर साहब आए है।" उनकी उपस्थिति मेरे लिये जरूरी थी क्योकि मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि यह मेरा हाल पूछने नही आया है, बल्कि अपनी जिद पूरी करने के लिए मौका तलाशने की गरज से आ गया है और मै उसे कोई एकात देने के लिए तैयार नही थी। दूसरे की विवशता से फायदा उठाने वाले राक्षसो से पहली बार मेरा पाला पडा था। और मै सतर्क हो उठी थी। नही, इतनी आसानी से मुझे मेरे विरूद्व कोई इस्तेमाल नही कर सकता।"* [20]

नारी अपने आपको किस–किस से बचाती फिरे, बाहर वालो से तो सतर्क भी रह सकती है किन्तु घर मे छिपे भेडियो से कैसे खुद को बचा सकती है ?एक तो वह अत्याचार को झेले दूसरे उसका विरोध भी न करे। क्योकि इससे खानदान की इज्जत पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा, संबधो मे दरार पड जाएगी । यह सब कैसी वर्जनाए हैं जो दोषी को दण्ड नही देती और निर्दोष व्यक्ति अपमान झेलता है। मौसा ने ही उसे दूध बादाम पिलाने के बहाने अपने कमरे मे बुलाया और उसका उत्पीडन किया, साथ मे न कहने का

धौस भी दिया। मा से कहने की हिम्मत जुटायी तो वह भी चेतावनी दे डाली " उसने शक्तिभर उनका हाथ कोशिश की, मगर मौसा जी की ताकत के सामने वह हॉफ गयी।. लग रहा था कि जैसे कोई उसके देह में । .घर आकर उसका बुझा हुआ हौंसला लौटा। सकेत से ही उसने मां को बताया। लेकिन पाया कि मा ने बात भी पूरी नही होने दी। हथेली से उसका मुह चाप दिय। ऑखो से तरेरते हुए उसे चेतावनी दी– " *जो हुआ सो पेट में डाल। पोने की कतई जरूरत नही, वरना मामूली–सी बात जीवन जले बैर हो उठेगी.... ।* " [21] कितनी बडी, विडम्बना है अत्याचार भी सहो ओर चुप भी रहो। और तो और एक नारी भी दूसरी नारी की व्यथा को तनिक सी बात कहकर टाल देती है।

अब नारी 'अहिल्या' की तरह शापग्रस्त होने की बजाय अपने आपको पूर्ववत् स्थिति मे लाने का प्रयास कर रही है। *'करे कोई और भरे कोई' के सिद्वात को नकार रही है जो सर्वथा उचित भी है। बलात्कार की प्रकृति को लेकर वह नये तरीके से सोचने लगी है, वह शरीर की पवित्रता की अपेक्षा मन की पवित्रता को अधिक श्रेष्ठ मानती है। क्योकि बलात्कार शरीर से किया जा सकता है मन से नही। मन पर तो उसका अपना अधिकार रहता है और जब मन अपवित्र नही हुआ तो वह दोषी कैसे हुई?* पूजन के बाद जब ठकुरायन ने उसे कन्या कहकर सबोधित किया तो एक बार वह स्वय को अपराधी समझ बैठी। फिर उसने अपने को 'जस्टिफाई' कर लिया कि वह कन्या ही है– "ठकुरायन यह कहॉ जानती है कि कन्या की जिस परिभाषा को वे जानती है, मन्दाकिनी उसकी कसौटी पर खरी कहॉ उतरती है? वह तो कब की भग हो गयी। कैलास मास्टर के हाथो बिरगॉव मे । सचमुच उसे नही लेने चाहिए थे।" [22] पुन " नही वह कन्या ही है। *मन की पवित्रता पर टिका है कन्या का स्वरूप । देवी की शक्ति और सरस्वती का वरद् हस्त।* वह दृढ हो आयी।" [23]

ड्रिक लेने के बाद नमिता अपने कमरे में जाकर सो गयी। उसके बॉस ने

उपयुक्त अवसर देखकर कमरे मे प्रवेश किया और उसको आलिगन मे कसकर चेहरे–गर्दन आदि पर चुबन टॉक दिये। कसमसा कर जब वह जगी तो उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ, वह दूर छिटक गयी और बोली– *"आपके द्वन्द्वो को मै सहानुभूति से सुनती हूँ तो इसका अर्थ यह कतई नही कि मै किसी अलग भाव से आपको देखने लगी हूँ।"* [24] पुन " बॉथरूम मे जाकर गुनगुने पानी से साबुन लगा अपना चेहरा धोया। उसे नही मालूम–नीद की बेहोसी मे . मुँह धोते हुए वह सोच रही थी। धो लेने –भर से अकित चुबनो के स्पर्श धुल सकते हैं?" [25]

कभी–कभी जब पुरूष नारी से किसी भी तरह नही जीतता तो बलात्कार का हथकंडा अपनाता है। वह अपनी हीन–ग्रथि के माध्यम से अपनी पराजय को विजय मे बदलना चाहता है। मदाकिनी की बुद्वि एव समाज सेवा की सच्ची निष्ठा से पूरा गॉव उसे मानने लगा और उसने हर स्तर पर ग्रामीण लोगो को शोषण से बचाने और शोषण का प्रतिकार करवाने का सकल्प लिया। इसी सिलसिले मे रिपोर्ट लिखवाने थाने गयी तो विकृत मानसिकता वाला दीवान उसे ससम्मान कमरे मे ले गया। रिपोर्ट लिखने के लिए जब वह कुर्सी पर बैठ गयी तो उसने पीछे से पकडकर उसके साथ बदतमीजी करना चाहा। किन्तु मदा सचेष्ट थी उसने उसका जवाब उसे अच्छी तरह से दे दिया– "उसने मदा के होठ पर होठ धर दिये और हाथ कधे के नीचे तडाक! तडाक! तडाक! तीन थप्पडो की तीन हथगोलो की तरह आवाज गयी बाहर दीवान गिरते गिरते बचा, अप्रत्याशित प्रहार के कारण–वह उठी ओर बोली, "महावत सिह, अब मै तभी आऊँगी, जब दरोगा जी आ जायेगे यहॉ। ऑधी की तरह निकल गयी थाने से ।" [26] आज नारी के भीतर इसी साहस ओर सतर्कता की आवश्यकता है।

जब पुत्री का रक्षक ही उसका भक्षक बन जाय तो नारी किससे अपना उत्पीडन कह सकती है? किसके सामने अपनी भावनाए व्यक्त कर रो सकती है ? पिता की मृत्यु पर 'स्मिता' ने राहत की सॉस ली। उसकी बडी बहन लगातार कई वर्षों से पिता द्वारा

बलात्कृत की जा रही थी अनेको विरोध के बाद भी स्थिति नही बदली। अतत वह घुटते–घुटते अर्ध–विक्षिप्त हो गयी। उसे बहुत समझाया गया कि वह निष्कलक है पर उसने अपने को दोष मुक्त नही किया। स्मिता ने 'नमिता' से कहा – *" मै तो कह–कह कर हार गई– तुम वही हो, तुम्हे हुआ क्या है ? जो कुछ हुआ, हो रहा है, तुम दोषी कैसे हो उसके लिए ? निष्फल हुए मेरे सारे यत्न। मगर मैं हार नही मानने वाली। साआले मर्दों को। उनकी मर्दई का सबक न सिखाया तो –– उसके मारे हम रोज मरते रहे, उसके हम अब नई जिदंगी जिएगे––– खुलकर सास लेगे––– घर मे रहते हुए दडबों मे दुबके रहे––– कीडे मकोड़ो की भॉति फडफडाते।"*[27]

बलात्कार का दश नारी के शरीर को ही नही बल्कि उसकी भावना को भी लहूलुहान कर देता है। मानसिक स्तर पर भी, उसे आघात लगता है। पुरूष की कुठित प्रवृत्ति के चलते नारी अपने आपको बचाती फिरती है। कुनी, अपने आप मे एक समर्थ नारी है अपने घर की मुखिया । किन्तु उसका नारी होना अपने आप मे एक कमजोरी है, दूसरे अविवाहित रहना उससे बडी कमजोरी है। समाज नारी की देह को ललचायी नजरो से देखता है, उसकी दृष्टि मे नारी की समस्त विशेषताये गौण है सिर्फ शरीर ही प्रमुख है। नारी इसी कुत्सित दृष्टि के चलते असुरक्षित है। यदि वह अविवाहित हो तो यह खतरा ओर भी बढ जाता है। जब डॉक्टर अविवाहित कुनी को अपने मरीज के रूप मे पाता है तो उसके भीतर का पशु जाग्रत हो जाता है– "वह पागलो की तरह मेरे जिस्म पर जगह–जगह चिकोटियॉ काटने लगा। यू आर ए ब्यूटिफूल वोमेन, उसके शब्द मुझे अश्लील लगे। उसके गदे होठ मुझे छुऍ, इससे पहले ही मैंने उसकी कलाई मे दॉत गाड दिए, "यू बिच––– वह एकदम से छिटक कर अलग हो गया।" [28] अपने ऊपर होने वाले अत्याचारो का विरोध नारी को स्वय करना होगा, अन्यथा उसकी सुरक्षा न तो कोइ कानून कर सकता है और न ही सस्थाए।

यद्यपि यह सच है कि जो नारी बलात्कृत हो जाती है उसके भीतर कही न

कही कुंठा घर कर जाती है। वह भले ही उसे प्रकट न करे किन्तु इसका बोध जीवन भर बना रहता है। 'मदा' इस त्रासदी को झेल चुकी है। रिश्ते मे आने वाले मामा ने उसे बीमारी की हालत मे अकेला पाकर अपना मुह काला कर लिया, और चला गया। परन्तु मदा अपने आपको दोषी समझने लगी। *इस पर उसकी बहन समान भाभी ने समझाते हुए कहा, जिस काम को तुमने किया ही नही उसके लिए अपने को दोष क्यो दे रही हो– "बिन्नू, अपने मन मे तनिक भी भय मत लाना। झिझक–हिचक मे मत रहना। जो हुआ उसे भूल जाना। डर मत मानना कभी। जिन्दगानी मे, इतनी बडी जिन्दगानी मे अच्छा –बुरा घट जाता है बिटिया, उसके कारण मन मे गॉठ लगाने से क्या फायदा? जो तुमने किया ही नही, उसके लिए अपने को दोषी क्यो मानना? उस कुकरम की भागीदार, मदा, तुम तो बिलकुल नही। तनिक देर पहले और आ जाते हम, तो खसिया बना देते नासपिटे की। "* [29]

पुरूष जोर–जबरदस्ती करते समय यह नही सोच पाता कि नारी, शरीर के अलावा मन भी रखती है। वह अपनी कुठित इच्छाए तो पूरी कर लेता है पर नारी के सामने अनेक प्रश्न–चिन्ह छोड जाता है। वह अपने–आपको प्राय यह नही समझा पाती कि वह निर्दोष है, उसने कोई पाप नही किया है। उसे अपनी प्रकृति–प्रदत्त शारीरिक दुर्बलता पर आक्रोश होता है। वह उत्पीडन की स्थिति से स्वय को नही बचा पाती– "विस्तर पलटते ही कबल नाक तक खीच कर सुबक पडी । दु स्वपनो की कोई एक सुरग नही। कई–कई . उसके छोटे से जीवन मे। जिनमे हुए विस्फोटो ने उसके विश्वास को चिधी–चिधी मौत दे हवा मे बिखेर दिया है। अस्तित्व को खडित टुकडो–सा।" [30]

सदियों से नारी को बलात्कृत किया जा रहा है। बलात्कारी समाज मे घूमता है और नारी अभिशप्त जीवन जीती है। एकतो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है दूसरे समाज उससे प्रश्न भी करता है। किन्तु नारी का नजरिया अब बदल रहा है वह बलात्कार का दोष भुगतने को तैयार नही है। उसका स्पष्ट कथन है कि अपराधी वह नहीं बल्कि इसका असली अपराधी बलात्कार करने वाला है जो समय का लाभ उठाकर अकेली नारी

पर जुल्म करता है फिर नारी कैसे अपनी पवित्रता खो बैठी ? वह चरित्र हीन कैसे हो गयी जबकि उसने अपने आप को बचाने के सिवाय कुछ किया ही नही। अपवित्र और चरित्र हीन तो पुरूष हुआ। अपनी जिदगी का निर्णय लेने का अधिकार नारी के पास है। कुठित पुरूष की हॉ मे हॉ मिलाने वाले समाज से, वह अपने अक्षत होने क़ा प्रमाण–पत्र नही चाहती है। निश्चय ही यह विचार धारा नारी के बदलते हुए मूल्यो की ओर इगित करती है। 'कुसुमा भाभी' ने 'मदा' को समझाकर कहा– "अपराधी तो वह है जिसने यह अजस

छल–बल से कुकरम किया, छुतैला और अपवित्र भी वही हुआ। कुढिया कैलास मास्टर और उसकी जात हुई छुतैली, जो हम पर धोखे से करती है हमला। ऐसे मरदो को हम माफ तो नही करेगे बिन्नू! वे कौन होते है इस अनहोनी का फैसला करने वाले ? हमको नीची निगाह से हेरने वाले ? तुम पत्थर न बनो, नोने हॅसो– बोलो। होसला राखो हिम्मत से जियो। वैसे ही, जैसे अब तक रही हो। अपनी जिन्दगानी के सही– गलत का निरनय तो हमे लेना है बिन्नूॅ! काट फेको जीवन से इस कुघडी को। तुम अच्छत हो मदा।" [31]

बलात्कार, नारी की स्वेच्छा से नही होता बल्कि उसके साथ जोर जबर्दश्ती की जाती है। इसमे उसका कोई दोष नही होता वह पूर्णत निर्दोष होती है। ऐसा होने पर भी वह स्वय को दोष–मुक्त नही समझती। बल्कि अपनी शारीरिक प्रकृति के कारण वह घुटती रहती है, न जी पाती है और न मर पाती है। मन्दा बलात्कृत होने के बाद अपने गॉव नही लौटना चाहती, अपनी अस्मिता के नष्ट हो जाने का बोध उसे अपनों से दूर कर देता है। *किन्तु कुसुमा आधुनिक नारी है, जो इस दुर्घटना पर नये तरीके से सोचती है। उसका विचार है– कि मुॅह वे छिपाए जिनकी मुॅह पर कालिख लगी है, जिन पर यह अत्याचार किया गया है वे क्यो समाज से भगें "अरे! श्मामली काहे नही ? किसका डर है वहॉ? किससे झिझक रही हो बिन्नू? किसके जवाब देह है हम ? कुसुमा के होठ कस गये . इतना दु:ख काहे को मदा ? हमने तुम्हे कितना समझाया है, पर तुमने रो–रोकर बुरा हाल कर लिया। ऑखें लाल गुडहल हो गयी। ज्यों रकत भरा हो कोयों में। जो तुमने किया ही*

नही उसका दोष अपने ऊपर क्यो ले रही हो ?"[32]

नौकरी करने वाली या घर से बाहर निकल कर सार्वजनिक स्थानो मे काम करने वाली नारी भी सुरक्षित नही है। जैसे ही उसके अधिकारी या बॉस को अवसर मिलता है वह अपना हाथ साफ कर लेना चाहता है। पुरूष चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित सबमे कुठा भरी रहती है सब मनोविकृति के शिकार है। 'नमिता' एक श्रम–जीवी नारी है जो अपनी योग्यता के कारण शीघ्र ही ऊँचे पद पर पहुँच जाती है। उसका बॉस 'अन्ना साहब' मजदूरों का मसीहा है। एक तरफ वह अधिकारो के लिए सघर्ष करता है दूसरी तरफ अपनी बेटी समान नमिता के साथ कुकर्म करता है। नमिता उसका पुरजोर विरोध करती है किन्तु केबिन के अन्दर उसकी आवाज दब कर रह जाती है और वह लोगो के सामने उसे नगा नही कर पाती । अपनी पीडा को 'स्मिता' के साथ बॉटती है, तो वह उससे प्रतिशोध न ले पाने के कारण कहती है– *" पे–पे छोड? करने से कुछ हासिल नही होने वाला। पे–पे की बजाय उसी समय हिम्मत दिखाती। कुर्सी उठा पटक देती साले हरामी के सिर पर। बहाने गढता फिरता अपने फूटे सिर के पीछे। मजदूर नेता हो या मटका किग सब साले मर्द है कुत्ते ! कटखने ! माफी मॉगने से क्या होता है? और तू क्यो माफ करने लगी ? जिस काम में तू राजी नही, हराम खोर ने तेरा इस्तेमाल किया कैसे?"*[33] पुन कहा– "चुप कर बोमडी। शीलू भग नही हो गया तेरा ! मैं होती तेरी जगह तो साले बुड्ढे से खूब खो–खो खेलती। चल करवाले जो तू करवाता है ।"[34]

बलात्कार ने सदैव नारी को पीडित किया है, इसके कारण उसके अस्तित्व एव उसकी अस्मिता पर प्रश्न–चिन्ह लगता रहा है और इसकी वर्वरता उसे अपनी असहायता का बोध कराती रहती है। किन्तु आज की नारी प्रायः पहले की धारणाओ से (नारी–शुचिता) स्वय को मुक्त करने का प्रयास करने लगी है समाज मे खुलकर जीने लगी है। नारी समुदाय के लिए इस प्रकार का बदलाव एक शुभ संकेत है ।

एक समय था जब विवाहेत्तर – सबधो को अपनाने की छूट सिर्फ पुरूष को थी। क्योकि वह अपनी इच्छा का मालिक था। समाज के समस्त नियम कानूनो का निर्माता और सचालक था। इसलिए वह अपने जीवन को जीने के लिए स्वतत्र था, किन्तु अब जमाना बदल रहा है। नारी के विचारगत – मूल्य भी बदल रहे हैं। अब वह भी इस दिशा मे अग्रसर हो चली है। वह रूढियो को तोड रही है और अपनी अतिरिक्त इच्छाओ की पूर्ति के लिए विवाहेत्तर सबध स्थापित कर रही है। अब विवाहेत्तर सबध को नारी हो या पुरूष दोनों ही सहजता के साथ स्वीकार कर रहे है। *आधुनिक नारी मनसा, वाचा कर्मणा तीनो से किसी एक पुरूष के प्रति समप्रित होने वाली, प्राचीन धारणा से मुक्त हो रही है। वह, यह आवश्यक नही मानती कि जिसे शरीर दिया जायॅ उसे मन भी दिया जायॅ क्योकि कभी–कभी मन कई लोगो के प्रति खिचाव महसूस करता है जबकि शरीर किसी एक का होकर रह जाता है।* 'कुनी' जिससे प्रेम करती है उससे, एक दुर्घटना के कारण विवाह नही हो पाता किन्तु वह अपने प्रेमी को भूल नही पाती । उसका विवाह अन्य पुरूष 'अनिरूद्ध' से हो जाता है। वह प्रेमी और पति दोनो के साथ सामजस्य स्थापित करना चाहती है। प्रेमी के साथ मन से, तो पति के साथ शरीर से– *"अनिरूद्ध यदि पुरी–तट पर घूमने का प्रस्ताव रखता तो जरूर मै वहॉ की रेती पर सिद्धार्थ के पैरो के निशान खोजने लगती। मन को जबरन रोकना मैने छोड दिया है। सिद्धार्थ के बारे में तो यही बात सच है, क्योंकि वह अतरंग मित्र बनकर मेरी यादों में रच गया है, ढेर से हितैषियो की पक्ति मे खडा देह से पार, देह तो मै अनिरूद्ध को सौंप रही हूँ और मन? किसी एक व्यक्ति तक महदूद नही रखा जाता । यह बात मैने समझ ली है।"*[35] 'कुनी' ने एक नयी परिभाषा गढी है, विवाहेत्तर संबध के विषय में।

तथाकथित उच्चवर्गीय समाज मे विवाहेत्तर सबधो को नारी की स्वतत्रता माना

जा रहा है, यानि इसे आधुनिक समाज मे प्रगतिशीलता का मुखौटा पहनाया जा रहा है। जबकि मध्य एव निम्नवर्गीय समाजो मे यह प्राय आवश्यकता के रूप मे उभर रहा है। निराश्रित नारी को पति के उत्पीडन से मुक्ति के लिए पर–पुरूष से सबध बनाना पड रहा है। 'कुसुमा' ऐसी ही एक उत्पीडित नारी है जो बदचलन पति के सारे अत्याचार सहने पर विवश है, पर उसे प्रतिवाद करने का अधिकार नहीं है। वह घर मे पत्नी नही बल्कि दासी बन कर जीवन जीती है, ऐसी स्थिति मे जेठ की सहानुभूति पाकर वह पति से अलग हो जाती है।[36]

घर के लोगो ने 'सोमा' को समझाया कि वह 'सुजीत' के साथ अपने सबधो को खत्म कर दे। इनके कारण खानदान के मान–सम्मान पर बट्टा लग रहा है जो प्रतिष्ठित परिवार की बहू के लिए शोभा नही देता, पर सोमा ने पुन उस घर की वहू बनकर रहना अस्वीकार कर दिया–" *सोमा . वह सुजीत के साथ काफी दूर चली गई है, घर ऑगन की सीमा के पार और अब वापस इस बदीगृह मे लौटना सभव नही। सुजीत को छोडना या उसके वगैर जिन्दगी जीना असम्भव तो नही मगर मुश्किल जरूर है। गौतम ? उसके साथ बिताए गए क्षण। क्या कहा जाए गौतम की हरकतो के बारे मे ? जहाँ न कोई कोमलता मिली और न जीवन का एहसास।* गौतम की अपनी भूख, जो कभी–कभी जगती थी और उस इच्छा की सतुष्टि गौतम की अपनी सतुष्टि थी। गौतम प्रेमी नही मालिक था। सतुष्टि के लिए सोमा का उपयोग करने वाला इसलिए सोमा, गौतम को भूलना चाहती थी। जिसको उसने केवल झेला था, सहन किया था, मगर जिसको कभी जीया नही था।"[37]

विवाहित 'वाना' पाश्चात्य परिवेश मे रहने के कारण आधुनिक विचारो वाली नारी है फिर भी उसमे स्त्रियोचित लज्जा है, वह 'राहुल' से प्यार करती है। किन्तु उससे खुलकर कह नहीं पाती। जब उसके विवाह की बात सुनती है तो व्यथित हो जाती है, उसे अपनी जिंदगी बेमानी लगने लगती है। किन्तु वह, यह बर्दाशत नहीं कर पाती कि राहुल की

जिंदगी मे कोई दूसरी नारी आए–"*राहुल विवाह करेगा, कोई दूसरी स्त्री उसकी जिदगी मे आएगी, जब तक राहुल तपस्वी की तरह रह रहा था, वाना के दिल मे तसल्ली थी कि वह उसका नही तो किसी और का भी नही, वाना पूछना चाहती है– "क्या तुम ऐसे ही नही रह सकते जैसे रहते आए हो, तुम्हे कमी किसकी ? आकाश विकास को तुम उनके बाप से अधिक चाहते हो।. रात के रात वह अपने ठंडे विस्तर पर पडी रहती है। . अभी विवाह मे समय है पर वाना ने अभी से चुपके चुपके रोना आरभ कर दिया है।* कभी–कभी वह राहुल को झकझोर कर कहना चहती है– "तुम यह हरगिज नही कर सकते, मैं करने नही दूँगी– मुझसे बर्दाश्त नही होगा– मैं मर जाऊँगी।" [38]

नारी, बने बनाये प्रतिमानो को *नकार रही है और स्वय नये प्रतिमान स्थापित कर रही है। अतीत की वर्जनाओ पर वर्तमान की आकाक्षा पाल रही है। अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाह रही है। समाज की नजरो मे जो पाप है वह उसके लिए पुण्य है क्योंकि पुरूषो द्वारा निर्मित सस्कारो की जगह वह स्वय एक सस्कार बनाना चाह रही है।* 'सोमा' अपने और 'सुजीत' के संबधो को गलत नही मानती, जबकि समाज की नजरो मे वह गुनाहगार है– *"समाज की नजरो मे सोमा नें गलती की लेकिन क्या यह उसका अपराध था? उसको स्वर्ग नही मिलेगा।" न ही, स्वर्ग क्या नरक क्या ? सोमा की नजरो मे सुजीत स्वर्ग था और गौतम नरक।'* [39]

आज नारी, विवाहेत्तर सबधों की व्याख्या अपने दृष्टिकोण से करने लगी है। उसके लिए शरीर और मन की तृप्ति महत्वपूर्ण है न कि परम्परागत नैतिकताओ का पोषण । 'कुसुमा' ने कहा– *"यह जल निरमल है या मैला ? पवित्तर है या पाप का ? इमरत है कि विस ? नही जानते हम। तुम्हारी रामायन मे लिखा भी होगा तो लिखने वाला यह नही जानता कि आदमी जब प्यासा होता है, प्यास से मर रहा होता है तो कहॉ देखता है, कहॉ सोचता है? कहॉ करता है कोई भेद ? कोई अन्तर?... बिन्नू, सौ बातो की एक बात है नाते सबध का नाम बताये गढे से बेकार है, सॉचा नाता तो प्यास और पानी का है।*

हमारी देह प्यासी थी. कि दाऊ जू का मन अतिरपित था, सो बस कारन जरूर अलग–अलग थे। दादा ने अतिके दुलार मे रख दिया दाऊ जू को विरमचारी। देह रूगैलू थी सो दादा ने सोचा कि इच्छॉए भी बीमार होगी। पर होता है कही ऐसा ?" [40]

'वाना' अपने अविवाहित जीवन से असतुष्ट है, उसका विवाह उसकी कामना के विरूद्ध ऐसे पुरूष से हुआ जिसे वह शरीर तो समर्पित कर पायी पर मन नही। ऐसे मे आकर्षक–व्यक्तित्व वाले 'राहुल' का उसके जीवन में प्रवेश करना, उसकी सुप्त–कामना को जाग्रत कर गया।– *"राहुल को इस तरह उसके परिवेश मे देखकर वाना को महसूस होता है कि राहुल सचमुच एक बहुत ही आकर्षक पुरूष है.. उसकी काली चमकीली ऑखो मे मेधावी होने का प्रमाण है और पूरे मुँह पर एक सहजता राहुल अपने परिवेश मे विश्वविद्यालय, कम्प्यूटर काम मे कितना स्वास्तिपूर्ण कितना सुन्दर दिखता है। राहुल का जादू हो या कस्तूरी मृग जैसे महक, उसे राहुल से अपने को अलग रखना है, उससे दूर रहना है।* यदि वह अपने शरीर अपने मन को, कसी पकड, कडे अकुश मे नही रखेगी तो चारो तरफ की सृष्टि एक हाहाकार बुमुक्षित अग्नि से भस्म हो जाएगी। और उसमे राख होगी तो वह स्वय।" [41]

बर्वर पति द्वारा निरन्तर उत्पीडन का शिकार होने वाली 'कुसुमा' अपने बीमार और अकेले जेठ के प्रति सहानुभूति रखती है। बाद मे दोनो एक–दूसरे के पूरक बन जाते है। 'दाऊ जू' अविवाहित है और कुसुमा विवाहित होकर भी अविवाहित। दोनो एक–दूसरे के दु ख–सुख को अपनाकर बिना विवाह किए ही पति–पत्नी की तरह रहते हैं। पति परित्यक्ता कुसुमा अपनी भावनाए तथा शरीर समप्रित करने के बाद अपनी ननद 'मदा' से कहती है–– "मदा, कोई भरी नदी ज्यों तटबंध तोडकर बह छूटी हो। अथाह जल फैल रहा हो और हम बूड रहे हो उसमे। अपनी इच्छा, से पूरे समरपन मे डूबे जा रहे हैं । "पुन कहा–" अकेले थे हम मदा। निपट अकेले। झुलस–झुलस कर मर रहे थे, प्यासे तडप रहे थे। दाऊ जू आ गये हमारे बीहड मे । सीतल झरना होके बहने लगे उजाड जिन्दगानी के

टूटे–फूटे मंदिर मे ज्यो पिरभू देवता का रूप धरकर खडे हो गए हो। बस सोई हम उनकी सरन मे जा गिरे जोगिन–तपसिन की तरह।" [42]

'सोमा' स्वतत्र विचारों वाली नारी है जो अत्याचारी और समलैंगिकता के शिकार पति को नही झेल पाती। और उससे अलग रास्ता बनाती है। वह विवाहेत्तर–सबध ा स्थापित करके सुख पूर्वक जीना चाहती है। उसके विचार से जब पति–पत्नी का सबध ा भावना के स्थान पर कटुतापूर्ण हो जायॅ तो एक ही छत के नीचे रहने का नाटक करने की अपेक्षा अलग रहना ज्यादा बेहतर है। और एक दिन वह 'सुजीत' से मिलने एव कुछ दिन उसके साथ रहने के लिए मायके जाने के बहाने घर से निकल जाती है। सुजीत के पास दिल्ली आने से पहले वह कह चुकी होती है कि– " *सुजीत! हम लोंग दिल्ली मे मिल सकते है, तुम जहॉ भी ठहरोगे मै आ जाऊॅगी। वहॉ मुझपर कोई बंधन नही होगा। और फिर दिल्ली मे वही हुआ जो एक स्त्री और पुरूष के बीच होता आया है।* क्या इसीलिए दोनो इतने करीब आए? क्योकि सोमा प्यासी थी क्योंकि गौतम का आचरण समाज की नजरो मे अवैध था। सुजीत विवाहित होते हुए भी सोमा को चाहने लगा था। एक होटल के कमरे मे खामोश दीवारो के बीच एक औरत का शरीर एक पुरूष की बॉहो मे पूरी तरह समप्रित हुआ था दिल्ली मे यह केवल एक उसी दिन नही बल्कि उस एक महीने मे ऐसा कई–कई बार घटा।" [43]

आज की नारी, बधी–बधाई लीक पर चलने की बजाय वह स्वय से तर्क–वितर्क करती है, और चली आ रही परम्परा एव रूढियो को लेकर प्रश्न उठाती है। फिर स्व–विवेक से उनका उत्तर खोजती है। और अपने अनुसार जीवन जीती है। विवाहेत्तर–सबध उसके लिए पाप–पुण्य का निर्धारण नही करते बल्कि उसका प्रगतिशील मस्तिष्क स्वय की सतुष्टि को महत्वपूर्ण मानता है। 'कुनी' प्रेमी को शादी के बाद भी स्मृतियों मे सजोये रखती है, उसकी भावात्मक उपस्थिति को जीती है जबकि पति 'अनिरूद्ध' तथा बच्चों के साथ वह खुशहाल जिदगी जीना चाहती है। इस दोहरी भूमिका मे वह घुटन महसूस नहीं करती,

बल्कि सबधो की सार्थकता तलाशती है– " *मन में सिद्धार्थ की यादे लेकर अनिरूद्ध के साथ जीना क्या अपने आप से ही धोखा नही होगा ? मेरे भीतर कई सवाल उठे और मैने उनके जवाब ढूँढने चाहे। क्या एक के साथ सबध जोडने के लिए दूसरे की आत्मीय अतरगता भूल जाना जरूरी है? क्या हर नया रिश्ता पुराने रिश्ते की कब्र पर ही बनता है? . हम क्या इतने ..... कि सही–गलत की मनगढंत परिभाषाओ मे जीने के मकसद को ही भुला दे ? यदि मै अनिरूद्ध से शादी करूँ तो शायद वैसा प्यार न दे पाऊँ ? जो मैने सिद्धार्थ को दिया था पर उसकी साथिन और बच्चो की मा बनकर एक उदास घर मे खुशियों का उजास तो भर सकती हूँ।*' [44]

पति के सत्रास से ऊबकर 'सोमा' नें 'सुजीत' के साथ रहना स्वीकार किया। जब उसने पत्नी के रूप मे सुजीत के सामने समर्पण किया तो उसके मन मे द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हुई, उसने स्वय को समझाते हुए यह स्पष्ट किया कि केवल वह ही विवाहेत्तर–सबध नही बना रही है बल्कि इसके पहले भी हुआ है और इस समय भी हो रहा है, आगे भी यह सबध बनता रहेगा– "*आखिर गलत क्या है ? ऐसा कौन–सा अपराध मै कर रही हूँ? क्या अभी इस वक्त भी दुनियाँ के सैकडो स्त्री–पुरूष एक–दूसरे को प्यार नही कर रहे होगे ? क्या उनका शरीर साथ नही? और सभी पति–पत्नी है ? किसी पराए पुरूष को यदि मै अपनाना चाहती हूँ तो अनोखा क्या है? क्या कभी विवाहित स्त्री ने अन्य विवाहित पुरूष से प्यार नही किया है? फिर यह भय और ग्लानि क्यो ?*" [45]

आधुनिक नारी प्रत्येक सबधो के साथ पूरा–पूरा न्याय करना चाहती है। वह न तो प्रेमी से घृणा करती है और न ही अपने पति के साथ विश्वासघात करना चाहती है। बल्कि इन दोनो छोरो को एक साथ मिलाकर जीना चाहती है। भले ही, एक से दूसरे तक पहुँचने मे उसकी जिदगी, क्यो न पीस जायँ। वह स्वय को दो खानो मे बॉटकर भी दोषी नही समझती, कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि "*एक म्यान मे दो तलवार' फिर भी सतुलित जीवन का प्रयास। 'कुनी' अपने विवाहेत्तर सबंध को खुलकर स्वीकार करती है बिना किसी*

संकोच या कुंठा के– "सिद्वार्थ को मै कभी भूल नही सकती, यह पत्थर की लकीर है, भूलना चाहूँगी भी नहीं। मैने उसी वक्त तय किया था कि मै अनिरूद्व के साथ नया संबंध बनाऊँगी और सिद्वार्थ का सबध उसमे आडे नही आएगा।" [46]

पति की अनावश्यक मार खाने के बाद, 'सोमा' घर छोड कर 'सुजीत' के घर आ गई। वह निरन्तर पति द्वारा उपेक्षा एवं उत्पीडन से तग आ गयी थी। ऐसी स्थिति मे सुजीत द्वारा कहे गए सहानुभूति के शब्द, उसे सजीवनी प्रदान करते थे। वह मन ही मन उन्हे चाहने लगी थी। उसने सुजीत की ऑखो मे सीधे झॉका, उसकी ऑखो मे कही याचना नही थी, 'बल्कि उसकी वे स्पष्ट चमकती हुई विश्वसनीय ऑखे' कच्ची उम्र और भावनाओ के कुँआरेपन के एहसास के साथ धुली शात स्निग्ध आवाज मे कहा– *" सुजीत! मै तुमसे प्यार करती हूँ। मै जानती हूँ तुम विवाहित हो, मैं भी तो विवाहिता हूँ ,और हमारा यह अवैध सबध दुनियॉ क्या कहेगी ? यही न, लेकिन मैं क्या करूँ सुजीत ? सब कुछ समझते हुए भी मै अपने आपको रोक नही पा रही । इसलिए यह सब कह रही हूँ ।'* [47]

इसी प्रकार 'वाना' प्रगति शील विचारो वाली नारी है, वह अत्यधिक महत्वाकाक्षी है। पति 'शिवेश' उसकी आकाक्षाओ को पूरा करने मे असमर्थ है क्यो कि वह आलसी और अयोग्य है। इतना ही नही, वह अपनी पत्नी की भावनाए भी नही समझ पाता। वाना शारीरिक स्तर पर तो उससे जुडी है किन्तु भावनात्मक स्तर पर अपने को अकेला पाती है। अपने पति के दोस्त 'राहुल' की सहानुभूति पाकर वह अपने सबधो की उपयोगिता पर नये तरीके से सोचती है। उसे लगता है जिन सबधो मे आत्मीय लगाव न हो उनको पति–पत्नी बनकर आजीवन ढोते जाना बेवकूफी है । वह अपने जीवन मे राहुल के प्रवेश को उचित मानती है क्योकि जीवन को सतत् प्रवाहशील होना चाहिए अन्यथा उसमें घुटन पैंदा हो जाती है– *" वाना को लगता है सभी के जीवन मे नए मोड, नई गति है।. एक पुरुष या स्त्री का पल्ला पकडकर कौन बैठता है? जीवन में नए–नए उतार चढाव आते रहते हैं, बार–बार प्यार बार–बार जुडना और अलग होना। .. वैसे यह सब वाना किसी से.. . यह*

तो सयोग है, बंधन है, यही भाग्य में है।' 48

'सोमा' अपनी घुटन भरी जिदगी से परेशान हो जाती है। वह किसी ऐसे पुरूष का सानिध्य चाहती है जो उसे सम्पूर्ण–रूप से शुद्ध प्यार दे सके। वह सुख–सुविधाओ से, घुटन भरे कमरे से अब ऊब चुकी है। जहॉ पति का न तो प्यार है और न ही कोई सहानुभूति । वह अपनी दुनियॉ मे मस्त है, सिर्फ अपने कमरे मे सोने के लिए घुसता है बाकी समय घर से बाहर। सोमा इस त्रासदीय–जीवन को झेलती रहती किन्तु 'सुजीत' की उपस्थिति ने उसे जीवन की ओर आकर्षित किया– "सुख–सुविधा, धन का महत्व सब कुछ समझती हूँ, लेकिन इनकी जरूरत किस सीमा तक ? इस बडे घर मे मुझे दो वक्त का अच्छा खाना,कुछ साडियॉ, एक एअर–कंडिशड कमरा। .. ऊँची शाम है। लेकिन मेरी नही। मुझे किसी भी निर्णय का अधिकार नही । मैं यहॉ कुछ भी नही । कुछ भी नही! सुजीत मैं मरना नही चाहती । जीना चाहती हूँ"49

नारी नये मूल्यो की स्थापना के चक्कर मे प्राचीन काल से चले आ रहे नैतिक मूल्यो को भी नकारने लगी है। वर्तमान समय मे विवाहेत्तर–सबधो की बाढ सी आ गई है, क्या नारी क्या पुरूष सभी इस *"बहती गगा' मे अपना हाथ धो लेना चाहते हैं।'* इन्द्रिय–नियत्रण की बात सिर्फ पुस्तको और कहावतो तक सीमित होती जा रही है – " *मन ही मन चाहा है उन्हे। कज्जा मर्द की इच्छा की थी। ऐसा न होता तो मसाराम उस रात अपने खेत मे आसानी से मौज कर पाते?* बॉहो मे बॉह फसाते ही अटपटा सा लगा था। वह जगलिया कबूतरा का अक्खड भिचाव नही था, मुलायम परस और अलग तरह से चूमना.. . औरत पल भर नही लगाती पहचान मे।" 50

'वाना' ने अपने आपको राहुल के सामीप्य से जितना ही रोकना चाहा वह उतना ही बेचैन हो उठी, परिणामत उसके समीप पहुँचती गयी। वह घर मे ही नहीं, ऑफिस मे भी किसी न किसी बहाने चली जाती। उसने कम्प्यूटर सीखने के लिए उसके ऑफिस जाना शुरू किया, पर मन कम्प्यूटर सीखने की बजाय कहीं और खोया रहता . " राहुल के

कम्प्यूटर पर काम करना सीखेगी। राहुल झुका हुआ है, वाना को समझा रहा है। वाना वह राहुल के सामीप्य को पी रही है, नई बौछार की बूँद–बूँद की तरह । " [51] इतजार करती है राहुल का। . राहुल समझा रहा है और वाना का मन हो रहा है कि उसकी सफेद कमीज के बटन खोल दे, जिससे राहुल के शरीर की मादक सुगध उसके रेशे–रेशे को पुलकित कर सके–" क्या मेरी अपनी कोई सुगध, कोई रसायन नही है– वाना सोचने लगती है क्या मेरा कोई आकर्षण नही? क्या मेरा स्त्री अस्तित्व, यह कसी हुई कमर क्या राहुल इतना पत्थर इतना तटस्थ है कि उस पर कोई असर नही होता।" [52]

अपने आप को प्रगतिशील कहने वाली निरन्तर विवाहेत्तर–सबंधों की ओर अग्रसर होती जा रही है। आधुनिक नारी द्वारा अपने जाने वाले विवाहेत्तर–सबंधो के मूल में पति–पत्नी के बीच तनाव तथा कलह की स्थिति, अतिरिक्त इच्छाओ की पूर्ति, नारी पुरूष के बीच बढते सह–सबंध, पति के एकाधिकार को चुनौती देने की चाह प्रमुख कारण है।

इसका मुख्य कारण नारी–पुरूष के बीच चली आ रही विभेद की स्थिति है। क्योंकि समाज ने नारी और पुरूष के लिए दोहरे मापदण्ड बना रखे है। पहले नारी, इसको दबे मन से ही सही पर स्वीकार कर लेती थी किन्तु आज की पढी–लिखी शिक्षित नारी प्राय. इसका विरोध करने लगी है, और बदले की भावना के चलते वह अच्छी–बुरी सभी परम्पराओ एव रूढियो को नकारने लगी है। कभी–कभी स्थानीय सदर्भ भी उसकी इच्छा की पूर्ति मे बाधक बनने लगते है, तो वह उनका भी प्रतिकार करती है। और अपने लिए अलग स्थान का चुनाव कर लेती है। इतना ही नही इसके मूल मे यदा–कदा अतिरिक्त इच्छाए भी पायी जाती हैं, जिनकी पूर्ति के लिए वह समाज के विरोध मे जाकर कार्य करती है।

'स्मिता' को बचपन से ही अपने पिता से प्यार नही बल्कि दहशत और घृणा मिलती है । फलत उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नही हो पाता, प्रत्येक पुरूष को लेकर उसके मन मे घृणा व्याप्त हो जाती है। वह कई पुरूषो के सम्पर्क मे आती है किन्तु उनसे भावात्मक सबध नही रखती, उनके साथ घूमती–फिरती और उनको अपमानित करने के बाद छोड देती है, *वह पुरूष को सिर्फ 'प्रयोग की वस्तु' समझती है और कपडे की तरह एक के बाद एक को बदलती रहती है।* वह अपनी मानसिक–स्थिति का वर्णन करते हुए कहती है– " *अक्सर लगता है कि मै कभी जीवन मे सहज नही हो पाऊॅगी । बाप का बदला मै 'शरत' से लेती रही ऐन मौंके पर लात लगा . . विक्रम भी उसी की कडी हो रहा ।* [53]

पुन वह 'नमिता' से कहती है... " मर्द तो वे हैं जो मुझे पसद हैं ... .झाड –झखाड रहित छाती, मछलियॉ पिचके वाजू , मुछ–मुडे चिकने चेहरे ही मुझे आकर्षित करते है। . *"अब समझ मे आया। तेरी जैसी लडकियॉ, लडको का कनछेदन नहीं करवा*

रही, उनके सिरो पर रग–रगीले चोटीले लटकवा उन्हे मर्द से औरत बनाने पर तुली हुई है। काजल–बिन्दी भर की कसर शेष है। उसमे भी अधिक देर नही लगने वाली।" [54] *अपने दिमाग की साकल कभी छठे–छमासे तो खोल लिया कर। मर्द को आधी औरत बनाए बिना खूखार पर सवारी गॉठना असभव है ?*

'मिसेज मेहता' पति की मृत्यु के बाद, सामाजिक–वर्जनाओं के कारण अपनी इच्छाओ का दमन करती रही किन्तु मन से विरागी न होने के कारण उनकी लालसाए अवसर की तलाश करती रही। बेटे का विवाह करने के बाद, जब बहू घर मे आ गयी और नयी नवेली बहू पति के साथ अपने सुखमय जीवन को जीने लगी तो यह सब देखकर मिसेज मेहता अपनी इच्छाओ को दबा नही सकीं–" *मेहता की वे सारी लालसाए उग्र होकर जाग पडी जिन्हें युवावस्था मे वह दबाए रही।'* [55] वह दवाई के बहाने, डॉ0 सरीन के यहॉ जाने लगी। वह उनके बेटे के उम्र का था किन्तु, वह उससे विवाह की इच्छा व्यक्त करती " *डॉ0 सरीन भले मिसेज मेहता को छोड दे मिसेज मेहता सरीन को भला कहॉ छोडने वाली थी। इस बीच उनकी शादी की लालसा भी जोर मारने लगी अब यह बात उन्होने घर मे भी चला दी।'* [56]

'कुनी' घर की बडी लडकी होने के कारण, स्वय को भाई–बहनो के प्रति उत्तरदायी समझती है। उसके विवाह के लिए पिता जब दहेज के कारण, लडके के पिता के सामने, अपमानित होने लगते है तो वह क्षुब्ध हो उठती है और विवाह करने से अस्वीकार कर देती है बोऊ, वप्पा मेरे लिए उन लोगो का पैर नही छुऍगे। मुझे यह शादी नही करनी है। ना,ना, ऐसा–वैसा कुछ मत सोचो बोऊ मैं तो मति–प्रीति की बात सोच रही हूँ मेरे लिए ही तुम कर्ज–उधार करोगे, तो आगे क्या होगा? नहीं, ऐसी कोई जल्दी नही है बोऊ।" आगे कहती है. " *जीवन मे पहली बार मैंने आवाज निकाली और पहला विरोध प्रकट किया, "पहली बार अपने भीतर आत्म–सम्मान जैसी चीज को उगते देखा और कहा, नही मै बिकाऊॅ नही हूँ । मेरा मोल नही लगेगा।"* [57] इसके बाद क्रमश कुनी के

व्यवहार मे परिवर्तन आता गया और वह पुरूषों के प्रति विद्वेष से भर उठी विवाह के नाम पर उसे नफरत होने लगती, वह अकेलेपन की ओर बढने लगी, अपने–अपको सबसे काट कर रहने की विचार धारा बलवती होने लगी। " *धीरे–धीरे एक अजीब सी सख्ती मेरे व्यवहार मे आती गई। मेरे अन्दर जो पिघलाव हो रहा था, वह जमकर ग्लेशियर बनता गया और उसकी तासीर मेरे चेहरे को भी रूखा और सख्त–सपाट बना गई। मैने आजन्म कुँवारे–पन को स्वीकृति दी और अपने आपको घर से कुछ ज्यादा ही जुडा पाया। कोई कभी शादी की बात करता तो मै गुस्से में भर उठती। शादी का सौदा। ? तन के व्यापार के लिए सामाजिक ठप्पा। नही, मुझे यह सौदा मजूर नहीं था।* बस! मुझे मेरा घर ही भला।" सामाजिक कुरीतियो के चलते, एक अच्छी–भली लडकी, सामान्य–जीवन से इतर हटकर जीवन जीने को बाध्य हो गयी। उसका व्यक्तित्व कुंठित होकर रह गया।

'रजना' आत्मनिर्भर नारी है। पिता की अस्वस्थता और घर मे बडी होने के कारण उसकी अपनी इच्छाए दब कर रह जाती है। अपने छोटे भाई–बहनो और माता–पिता को सरक्षण देने के कारण वह असमय ही अपनी उम्र से ज्यादा बडी हो जाती है। सबकी सुख सुविधाओ का ध्यान रखते–रखते वह स्वय के प्रति लापरवाह हो जाती है। पर एक समय के बाद, उसे अपने ऊपर खीझ आती है कि उसे अपनी भी जिदगी जीनी चाहिए थी "– *मेरे भीतर जो लडकी हुआ करती थी, वह मर चुकी है, अब मै लडकी रह ही नही गई हूँ। कुँवारी औरत बन गई हूँ, भीतर से पकती हुई, कुँद होती हुई। लोच और आर्द्रता खोती हुई ।* अब अपनी उम्र को छिपाने का प्रयत्न करना मेरे लिए और अपमान–जनक लगता है।" [59] परिवार द्वारा अपेक्षित सहानुभूति न पाकर वह कुठा की शिकार हो जाती है। भारतीय परिवार की यह विचित्र स्थिति है। यदि बेटा घर का दायित्व सभालता है तो घर के लोग उसके प्रति कृतज्ञ रहते हैं, वही जब बेटी घर–परिवार के लिए अपनी इच्छा, अपनी भावना, सबका त्याग करके सिर्फ अपनो की होकर रहती है वहॉ भी लोग, उसे समझने की बजाय उसके प्रति संवेदना–शून्य हो जाते हैं, तो वह तिलमिला

उठती है– " जो तुम नही हो, जिस रूप मे विधाता ने बनाया ही नही, वह होने चलो तो यत्रणा और अपमान ही हाथ लगता है। कोई स्त्री होकर पुरूष की जिम्मेदारियॉ सँभालने चले तो वह न स्त्री रहेगी, न पुरूष । दोनो के बीच की होकर रह जाएगी। हिजडा। मैने . . अपने आपको यही बना लिया था। ..विवाह के बाद मै इस घर मे नही रहूँगी। एक लडकी की तरह अपने मायके को छोडकर चली जाऊंगी। बहुत हो गया बडा भाई और बाप बनकर जीने का नाटक। मै इस घर में कभी लौंट कर नही आऊँगी, कोई मरता रहेगा तो भी नही। " [60]

इसी प्रकार 'कुसुमा' पति द्वारा उपेक्षित और अपमानित होने के बाद प्रतिशोध से भर उठती है। वह अब घुटने की बजाय,सुखी, जीवन जीने का रास्ता खोजती है। अपनी रिक्तता के कारण वह 'दाइ जू' के सम्पर्क मे आती है उनसे प्रेम करने लगती है। फलत वह मा बनने की ओर अग्रसर हो जाती है। परिवार के लोग मान–मर्यादा के नाम पर उसके ऊपर अत्याचार करने लगते है। तो वह आक्रोश मे आकर कहती है––" अग्नि साच्छी करके ही आये थे तुम्हारे पूत के सग। सात भॅावरे फिरके । " लिहास रखा उसने? निभाया सबध ? " "दूसरी बिठा दी हमारी छाती पर ।"

ॲधेर पीते रहे तुम लोग। खाक है बूढेपन पर, उस दिन से कोई सबंध, कोई नाता नही रहा हमारा। जो ब्याह कर लाया था उससे ही कोई ताल्लुक नही तो इस घर मे हमारा कौन ससुर और कौन जेठ?" [61] घर के लोगो ने धमकी दी कि यशपाल यह सब बर्दाश्त नही करेगा तो वह बिफर उठी–"पति क्या करेगा? पति कौन –सा दण्ड देगा।" [62] पति द्वारा उसके गर्भवती होने की बात पर हो–हल्ला मचाने एव घर के लोगो के बीच स्पष्टीकरण देने की बात पर वह डरी नही " *सबके सामने कठघरे मे खडी कुसुमा। सबने जवाब मॉगा है जीवन का, उसके चरित्र का, उसके पाप–पुण्य का, उसके सही–गलत का, नाजायज जायज का । कुसुमा किस–किसको उत्तर दे ? किस–किसको हिसाब दे, अपने तरसते–तडपते जीवन का ? किससे डरे?* किससे सहमे ? किससे सच कहे, किससे झूठ?

जैसे ही पूछा कि भाइयों का कौल खाकर बता कुसुमा, यशपाल कबहूँ नही आया तेरे हिरकॉय ? *कुसुमा ने घूँघट मे से एक नजर सास को देखा,फिर सबको निहारा और सिर हिला दिया अर्थात नही, कभी नही। सनाका पड गया।* स्तब्ध रह गये सबके सब । जैसे यह दिन न होकर रात का सन्नाटा सबकी ऑखे फटी रह गयी।[63]

'गौतमी' ने बाल्यकाल मे ही मा को प्रताडित होते हुए देखा था यही कारण है, कि उसके अवचेतन मे भी पुरूष की आक्रामक छवि बस जाती है– " *हर रात उसने क्रूर पिता के उन्मादी बूटो–तले मा को कुचटते देखा था . फटी ऑखो से वह उत्पीडन का नगा नाच देखती रहती।*" [64] बडी होने पर भी पुरूष के प्रति अपनी सोच को बदल नही पाती और अपने पति के साथ भावनात्मक–सबध नहीं रख पाती । उसे पति की आवश्यकता सिर्फ सरक्षण के लिए महसूस होती है बाकी उसके मन मे अपने पति के लिए किसी प्रकार की सवेदना नही रहती– "मा के अलावा घर मे मेरे एक अदद पति है नाम है 'अशोक'। ठीक उसी तरह जिस तरह घर मे अलमारी है, फ्रिज है, वाशिग मशीन है, जितना वो मेरे काम आती है, बदले मे मै उनकी देखभाल करती हूँ अशोक के साथ भी मेरा यही रिश्ता है। घर मेरा है । अशोक को रहना है रहे, न रहना हो छोडकर चला जाए।" [65]

'वर्षा' ने पढ–लिखकर नौकरी करने की, इच्छा व्यक्त की तो मा–पिता,भाई सभी उसके विरोध मे आ गए, क्योकि आजतक उनके खानदान मे किसी लडकी ने नौकरी नही किया था। किन्तु वर्षा पहले आत्मनिर्भर बनना चाहती है फिर विवाह के विषय मे सोचना। –" बी0ए0 कर लूॅ फिर नौकरी करूँगी। " *"हमारे वश मे कभी लडकी ने नौकरी नही की।" पिता बोले "वश मे जो कभी नही हुआ, वह आगे भी न हो, यह जरूरी नही।" वर्षा ने कहा।* [66] परिवार वालो ने विवाह के लिए उस पर बहुत दबाव डाला, यातना दिया किन्तु वह अपने निर्णय से विचलित नही हुई और घर छोड कर चली गयी। काफी सघर्ष के बाद जब वह अपने उद्देश्य मे सफल हो गयी और धीरे–धीरे घर के लोगो का

व्यवहार उसके प्रति बदलने लगा, तो वह अपने पिता को अपने घर मे ले आयी, और उनके साथ रहने लगी। किन्तु एक दिन उसके पिता ने उसे मदिरा–पान करते हुए देख लिया, सस्कारित पिता यह बर्दाश्त नही कर पाए और आवेश मे आ गए.. " *सिलबिल तुम मदिरा–पान भी करती हो ?" शुरूआत जिज्ञासा एव एडबेचर से हुई थी।" वर्षा धीमे स्वर के साथ कठघरे में दाखिल हो गयी। अब तो तुम्हे अनुभव हो चुका है। अब मदिरा क्यो जरूरी है ? " "जरूरी तो नही । पर जब मै थकी हुई या तनाव मे होती हूँ तो रिलैक्स करने मे उससे मदद मिलती है।' "अपनी सात पीढियो मे किसी पुरूष ने भी मदिरा को हाथ नही लगाया होगा . स्त्री की तो बात ही छोडो" . परिवार की सात पीढियो मे किसी स्त्री नें काम भी तो नही किया, पर मै कर रही हूँ।" पिता पल भर उसे देखते रह गये।* [67]

पिता की मृत्यु के बाद, जब क्रिया–कर्म करने की स्थिति आयी तो, रतन को खोजा जाने लगा किन्तु वह विक्षिप्तावस्था के कारण कही और चला गया था . *"रजना सामने आयी कफन के साथ ही उसने मलमल का एक थान मगॉ लिया था। उसका एक भाग वह नीचे साडी के रूप मे लपेटे एक वस्त्र इस तरह खडी थी, जैसे सफेद सगमरमर मे तराशी गई सप्राण प्रतिमा हो। शुभ्र, धवल और शुष्क।'* उसने पडित जी से कहा कि मै सारे सस्कार करूँगी। " यह कैसे हो सकता है? यह काम तो पुत्र का है। आज तक ऐसा कभी नही हुआ। " *"नही हुआ तो अब हो। पिता जी पुत्र का अर्थ बताते थे कि माता–पिता के अशक्य हो जाने पर जो उनका पोषण और रक्षा करता है, उसे पुत्र कहते है। पुष्यति त्रायते च पितरौ इति पुत्र। यह भार मुझ पर है।'* [68] उसकी प्रतिक्रिया . देखकर सभी लोग आवाक् रह गये।

इसी प्रकार मृतक पिता का दाह–सस्कार करने के लिए पडित जी ने बेटे को बुलाने के लिए कहा तो नमिता आगे आ कर बोली–" क्रिया कर्म मैं करूँगी, पंडित जी मुखाग्नि भी मै ही दूँगी । *मै पाडे जी की बडी बेटी हूँ। छुन्नू बच्चा है। बच्चे के हाथ*

क्रिया–कर्म करवाना उचित नही है।" उसकी बात सुनकर सभी स्तब्ध रह गए और मा ने आक्रोश मे आकर प्रतिक्रिया व्यक्त किया – " दिमाग *तो नही चल गया तेरा नागिन, जो बैठे–ठाले अलाय–बलाय बकने लगी ? ...जा पडित जी के पास बैठ छुन्नू।*"[69] *नमिता ने चली आ रही परम्परा को नकारते हुए कहा— छुन्नू नही बैठेगा कह दिया न, मैं बैठूँगी । बाबू जी जिदा थे तो अकसर कहा करते थे मरने पर तू ही मेरा क्रिया–कर्म करेगी। तू मेरी समर्थ बेटी है दस बेटों के बराबर,बताइये पंडित जी मुझे क्या करना है ?*" [70] नमिता की मा बौखला गई और लोगो की तरफ देखकर बोली–"समझाइए इस कुलबोरन को। क्यो खराब कर रही है अपने बाप की मिट्टी । नाटक–नौटंकी का है यह समय ? " [71]

एक समय था जब नारी किसी के क्रिया–कर्म या शवदाह करने के विषय मे सोचा भी नही सकती थी। किन्तु आज समाज एव परम्परा की लाख दुहाई देने के बावजूद वह शास्त्रो को अपने तर्क की कसौटी पर कस रही है। और उनके द्वारा निर्मित विधि–विधानो के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रही है। नमिता की ताई ने जवाब देते हुए कहा—" *जो कभी हुआ नही, वह हो ही नही सकता, जरूरी नहीं । रूढि टूटनी ही चाहिए। बालविवाह हुआ करते थे पहले। लडकियाँ घर मे होती ही नही थी। ऊपर से उन्हे पराया–धन मान लिया जाता था। कमजोर भी। बस हो गया स्त्रियो के लिए मुखाग्नि देना वर्जित। शास्त्रियो ने लिख दिया। पोगा–पथियो ने लगा दिया ठप्पा।*' [72] ताई ने नमिता का पक्ष लेकर उसकी सोच को दृढता प्रदान कर दिया, उसने पिता के समस्त क्रिया–कर्म किए।

आधुनिक नारी चली आ रही सामाजिक वर्जनाओ एव रूढियो को ज्यो का त्यो स्वीकार करने की अपेक्षा समय सापेक्ष उनका विरोध करती रही है और आवश्यकतानुसार नवीन परम्पराओ को मान्यता देकर सदियों से दमित होती नारी की भावना को अभिव्यक्ति दे रही है।

समाज मे एक नया सबध पनपने लगा है, नारी–नारी के प्रति, तथा पुरूष–पुरूष के प्रति आकर्षित हो कर यौन– सबध स्थापित करने लगे हैं। समलिगी नारी–पुरूषों का सबध उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। यद्यपि समाज मे इसे हेय–दृष्टि से देखा जाता है और अनैतिक माना जा रहा है किन्तु यह अबाध गति से फल–फूल रहा है। युवक एव युवतियो के मध्य इसका आकर्षण बढता ही जा रहा है। 'सोनाली' एक सम्पन्न पिता की इकलौती बेटी है और पिता के साथ अमेरिका मे रहती है। पिता ने चाहा कि वह यहीं शादी कर के बस जायॅ किन्तु उसने शादी करने से इनकार कर दिया। क्योंकि शादी के प्रति उसकी धारणा है– " *ऐसी लडकियो से मुझे सख्त नफरत है जो पुरूषो के पीछे कुतिया की तरह भागती फिरती है – बिच* [73] 'सोनाली' और 'रेखा' दोनो एक साथ रहती है। एक दिन रेखा थकान के कारण बेसुध ऑख बद किए अपने बिस्तर पर पडी थी, सोनाली ड्रिक करने के बाद उसके ही बिस्तर पर लुढक गयी "मुझे कस कर दबा लिया था होठो पर होठ रख दिये थे। मेरे सारे अगो पर उसके हाथ साप की तरह रेगते रहे। कितना सुखद था वह स्पर्श कितना मादक उत्तेजक। मै बेहोश सी पडी रही सुख की बेहोशी मे । सुबह ऑखे खुली, तो सब कुछ कितना घिनौना लगा था। हम दोनो के शरीर पर एक भी वस्त्र नही आदम जात नगी , बिछावन पर पडी थी। मेरी ऑखे अपने–आप ही शर्म से बद हो गयी। और फिर यही क्रम बन गया .. रोज का क्रम" [74]

पति की मृत्यु के बाद 'नीलम्मा' मालिश करने का काम करने लगी, इससे जो रूपया मिलता, उसी से वह बच्चो सहित अपना पेट पालती थी । जिसके यहॉ काम करती थी उनकी अतरंग सखी आयी, अत मालकिन के आदेश पर उसने उनकी भी मालिश की ।" *मालिश खत्म होते ही सहेली ने अपनी देह से उसके हाथ अलग न होने दिए. .. बोली– "मालिश तो तूने बडी रेशमी की ,नीलम्मा। पर तेरे हाथ का रोया – रोंया, सिहर देने वाला*

वह पराई औरत की देह को औरत ही पहचानती है।[75] किन्तु उसकी मानसिकता से भिज्ञ होने के बाद नीलम्मा को इस काम से घृणा हो गयी और उसने यह नौंकरी छोड कर बर्तन मॉजने का काम शुरू कर दिया।

'वाना', 'सारिका' की मृत्यु के कारण लगभग विक्षिप्त सी हो गयी। 'शिवेश' ने काफी इलाज कराया तब जाकर उसकी स्थिति में आशा–जनक सुधार हो पाया। डाक्टर ने सलाह दी कि इसे सारिका की स्मृतियो से दूर रखने के लिए, आवश्यक है कि कुछ दिनो के लिए कही अन्यत्र भेज दिया जाय । फलत वह अपनी पूर्व परिचिता 'क्रिस्तीन' के पास चली गयी। क्रिस्तीन ने अपने घर मे उसका स्वागत किया। " *क्रिस्तीन चुपचाप उसके बालो मे उगलियाँ डालकर धीरे–धीरे उसे थपकी देती है । फिर वह वाना के ऑसू हलके से पोछ देती है, उसके होठ वाना के गाल चूमते हैं, फिर होठ। वाना उसकी चाहत महसूस कर रही है, क्रिस्तीन के पतले–पतले होंठ कटार की तरह तीखे होने लगते है। वह दोनो हथेलियो के बीच वाना का चेहरा थामे है और उसे चूम रही है हल्के– हल्के, अतिशय प्यार से। यह चुबन एक दोस्त का भी है और प्रणयी का भी। वाना निरूत्तर उसकी गर्म सासो को गाल पर महसूस करती है, फिर उसका अपना शरीर थरथरा उठता है, और वह क्रिस्तीन के चुबन का उत्तर देती है।* "[76]

एक दिन, 'रेखा' ने 'सोनाली' की आदत से तग आकर कहा कि तुम शादी क्यो नही कर लेती, इस तरह अनैतिक काम क्यों करती हो? इस पर सोनाली ने बेशर्मी से मुस्कराते हुए कहा –"*मेरी शादी तो तुमसे हो गयी डार्लिंग हम लोग जिदगी भर मर्द–औरत की तरह रहेंगे ... आई विल किल यू इफ यू विद् मी .... इफ यू लीव मी अलोन ।* " . .... *औरत का औंरत से प्रेम! रोग नहीं तो क्या है यह ....प्रकृति के विरूद्ध शरीर की जितनी क्रियाए होती हैं, सब रोग ही तो है।*"

समलिगी यौन–संबंध इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि अब यह शहरों से गॉवो की ओर भी जाने लगा है। इसकी चपेट में देश, शहर, प्रात सभी धीरे–धीरे आते जा रहे

हैं। युवा वर्ग, विशेष कर अकेले रहने वाले लडके–लडकियॉ इससे अधिक प्रभावित हो रहे है। आंरम्भ मे कौतुहलवश युवा–वर्ग इस मनोविकृति को अपनाता है फिर क्रमश इसका अभ्यस्त होता चला जाता है। ऐसे युवक–युवतियॉ सदैव किसी न किसी समलिगी की तलाश में भटकते रहते है। यह विकृति समाज का ही पतन नही करती बल्कि स्वय व्यक्ति के व्यक्तित्व को भी दुष्प्रभावित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

क्रम सं0	ग्रन्थ	लेखक	पृष्ठ सं0
1	अपनी सलीवे	नमिता सिह	90
2	ऑवा	चित्रा मुद्गल	300
3	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	255
4	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	44
5	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	
6	ऑवा	चित्रा मुद्गल	503
7	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	255
8	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	273
9	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	253
10	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	97
11	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	61
12	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	78
13	ऑवा	चित्रा मुद्गल	516
14	ऑवा	चित्रा मुद्गल	372– 74
15	अल्मा कवूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	367
16	अल्मा कवूरती	मैत्रेयी पुष्पा	370–71
17	ऑवा	चित्रा मुद्गल	521–523
18	इदन्नमम्	मैत्रेंयी पुष्पा	362
19	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	69
20	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	69
21	ऑवा	चित्रा मुद्गल	303
22	इदन्नमम्	मैत्रेंयी पुष्पा	175
23	इदन्नमम्	मैत्रेंयी पुष्पा	175
24	ऑवा	चित्रा मुद्गल	300
25	ऑवा	चित्रा मुद्गल	300

26	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	292
27	ऑवा	चित्रा मुद्गल	371
28	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	70
29	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	94
30	ऑवा	चित्रा मुद्गल	300
31	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	95
32	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	94
33	ऑवा	चित्रा मुद्गल	278
34	ऑवा	चित्रा मुद्गल	278
35	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	200
36	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	81
37	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	245
38	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	183
39	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	243
40	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	82
41	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	155
42	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	81
43	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	241
44	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	193
45	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	242
46	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	193
47	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	241
48	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	191
49	पीली ऑधी	प्रभा खेतान	241
50	अल्मा कबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	37
51	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	157
52	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	157
53	ऑवा	चित्रा मुद्गल	373
54	ऑवा	चित्रा मुद्गल	256
55	उन्माद्	भगवान सिह	81

56	उन्माद्	भगवान सिह	81
57	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	54
58	अपने–अपने कोणार्क	चद्रकाता	54
59	उन्माद्	भगवान सिह	248
60	उन्माद्	भगवान सिह	312
61	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	146
62	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	120
63	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा	122
64	ऑवा	चित्रा मुद्गल	323
65	ऑवा	चित्रा मुद्गल	361
66	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	525
67	मुझे चॉद चाहिए	सुरेन्द्र वर्मा	525
68	उन्माद्	भगवान सिह	344
69	ऑवा	चित्रा मुद्गल	400
70	ऑवा	चित्रा मुद्गल	400
71	ऑवा	चित्रा मुद्गल	400
72	ऑवा	चित्रा मुद्गल	400
73	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	79
74	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	79–80
75	ऑवा	चित्रा मुद्गल	515
76	अर्न्तवशी	उषा प्रियवदा	99
77	एक अलग शुरूआत	जवाहर सिह	82

उपसंहार

उपसंहार

पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि *''कोई देश कितना सभ्य है, इसे दो बातो से जॉचा जा सकता है। एक तो वहॉ नारी का स्थान और दशा क्या है, दूसरे उसकी औद्योगिक प्रगति कितनी है?* उपरोक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि किसी भी देश की वास्तविक प्रगति का आकलन उस देश की नारी के विकास की स्थिति को लेकर ही किया जा सकता है। क्योकि समाज की 'आधी आबादी को उपेक्षित करके कोई भी समाज अपना विकास नही कर सकता। तत्कालीन समय मे वैश्वीकरण की क्रिया के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व, नारी की स्थिति मे उत्तरोत्तर विकास के लिए चितनशील है। सभी यह मान रहे है कि समाज एव राष्ट्र की उन्नति के लिए नारी एक महत्वपूर्ण घटक है। अत उसके अस्तित्व को किसी भी तरह से नकारा नही जा सकता।

समाज और साहित्य दोनो एक दूसरे से प्रभावित होते है। अत यह स्वाभाविक ही है कि समाज मे जो घटित हो रहा है उसे साहित्य मे उल्लिखित किया जाय। यद्यपि समाज के परिवर्तित मूल्यो से समस्त साहित्यिक विधाए प्रभावित होती है, किन्तु उपन्यास अपने विस्तृत फलक के कारण इन घटनाओं को समेटने मे अधिक सक्षम है। क्योकि जो बाते कहानी एव कविता मे सक्षिप्त रूप मे व्यक्त की जाती है उन्हे औपन्यासिक कृत्तियो के माध्यम से उपन्यासकार सहज ही विस्तार दे देते है। इसी कारण अन्य विधाओ की अपेक्षा उपन्यास विधा अपने आकार प्रकार की विविधता के साथ अधिक समृद्ध हुई - विशेषकर 1980 के दशक से। अत इस समय नारी के विभिन्न रूपो को अनेक सदर्भो के माध्यम से प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया गया। किन्तु नारी के बदलते मूल्यो को विभिन्न स्तरो पर समझने से पूर्व उसकी प्रारभिक स्थिति को ज्ञात करना अति आवश्यक है।

नारी के महिमामय विराट व्यक्तित्व को आचार्यो ने उसे व्याकरण की सीमा मे आबद्ध करने का प्रयास किया। नारी अपने प्रारभिक काल मे सम्माननीय थी, किन्तु सामाजिक गतिशीलता और परिस्थितियो के कारण उसकी स्थिति मे अवमूल्यन आया और क्रमश समाज मातृ-सत्तात्मक समाज से पितृ-सत्तात्मक समाज मे परिवर्तित हो गया। पुरुष प्रधान समाज की स्थापना के साथ ही नारी के जीवन मे उत्तरोत्तर ह्रास आता चला गया। वैदिक काल से बौद्ध काल तक की दूरी तय करते-

करते उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई।

समाज सुधारको एव महान पुरुषो के सद्प्रयास से नारी की सुप्त-चेतना जागृत हुई और वह अपने अधिकारो को समझने लगी। उसने राष्ट्रीय स्वतत्रता के साथ ही अपनी मुक्ति के लिए भी सघर्ष आरभ किया। किन्तु नारी बदलते-स्वरूप को उस समय के सनातन-पथी साहित्यकारो ने स्वीकार नही किया। इसीलिए 1882-1917 तक के उपन्यासो मे किसी न किसी रूप मे नारी के पारम्परिक रूप को ही मान्यता दी गई।

1917-1936 के मध्य साहित्यकारो ने नारी के बदलते स्वरूप को क्रमश उपन्यास का विषय बनाया और प्रेमचद सहित अनेक उदारवादी लेखको ने नारी की पीडा को समझा ही नही प्रत्युत और उसको लेकर समाज मे व्याप्त विषमता को उद्घाटित करने का प्रयास किया।

1936-1980 के मध्य नारी-विषयक उपन्यास सर्वाधिक मात्रा मे लिखे गए। समाज मे नारी उपन्यासकारो, का अस्तित्व ही नही आया बल्कि वह लेखन के क्षेत्र मे शीर्षस्थ मानी जाने लगी।

यही वह समय है जब नारी मे आतरिक एव वाह्य दोनो स्तरो पर उत्तरोत्तर परिवर्तन आया। अब उसने सिर्फ घर की शोभा बनने से इनकार कर दिया। तमाम अवरोधो के बावजूद उसने घर से ऑफिस तक की दूरी को नाप लिया। वह अपने पारपरिक रूप, से इतर व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए तत्पर हुई। अब वह पुरुष की आश्रिता बनने की जगह उसकी सहयोगिनी यनने के लिए आगे बढी। नारी के अपने जुझारू प्रवृत्ति के कारण चितन के स्तर पर समाज दो वर्गो मे विभक्त हो गया। एक ने उसके बदलते मूल्यो का समर्थन किया तो दूसरे ने जमकर विरोध। किन्तु नारी सहसी नही वह सामाजिक चुनौती को स्वीकार कर आगे बढती रही।

नारी की दृढ इच्छा शक्ति और वैचारिक परिवर्तन को उपन्यासकारो ने प्रत्येक स्तर पर उभारा। 'शेखर · 'एक जीवनी' (अज्ञेय) की शशि के रूप मे उसने सामाजिक पम्पराओं को अस्वीकार करने की पहल की वह 'आपका बटी' (मन्नू भडारी) तक होती हुई विभिन्न पड़ावो के बाद भी जारी है।

1980-2000 की औपन्यासिक यात्रा मे नारी के जीवन मे अनेक उतार-चढाव आए। इस काल की औंपन्यासिक कृत्तियो मे नारी को लेकर नया अध्याय जुडा। अब नारी की इच्छाए छोटी-छोटी उपलब्धियो तक सीमित नही रह गयी, वह बराबरी का हिस्सा ही नही मॉगती बल्कि उसकी महत्वकाक्षाए असीमित होती जा रही है। उसे अपनी योग्यता और अपनी प्रभुता को विस्तार देने के लिए सिर्फ धरातल ही नही चाहिए वल्कि उन्मुक्त गगन की भी आवश्यकता महसूस होने लगी। वह स्पष्टत कहने लगी कि -''मुझे चाद चाहिए'' (सुरेन्द्र वर्मा)। वह सामाजिक क्रिया कलापो की आहुति बनने को तैयार नही है बल्कि वह स्वेच्छानुसार स्वय को ''इद्न्नमम्'' (मैत्रेयी पुष्पा) कहने की स्थिति मे रही है।

वह 'अपने-अपने कोणार्क' (चद्रकाता) बनाने लगी है और 'ऑवा' (चित्रामुद्गल) बनकर समाज की मानसिकता को परखने लगी है। आर्थिक स्वतत्रता ने उसके पैरो मे पख लगा दिए है। आत्म सम्मान से दीप्त नारी अपने ऊपर होने वाले अत्याचारो के प्रति चौकन्नी है'। वह अब यातना को चुपचाप सहती ही नही है बल्कि समय आने पर उसका बदला भी लेती है। किन्तु उचित-अनुचित का विचार किए बिना जीवन की दिशा तय करने के कारण वह प्राय नकारात्मक मूल्यो की ओर भी अग्रसर हो रही है।

प्रत्येक वर्ग की नारी मे सामाजिक वर्जनाओ को तोडने की ललक बढती जा रही है। वह मान्यता एव रूढियो को उफनती हुई नदी की भॉति रौद रही है। वह अपने जीवन मे किसी भी प्रकार की वर्जना का तटबध नही चाहती बल्कि उन्मुक्तता की आकाक्षी है। जिसके कारण उसके जीवन मे एक भटकाव की स्थिति बनती जा रही है। वह समाज से प्रतिशोध लेने के लिए प्रत्येक स्तर पर अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन कर रही है। जिसके कारण विवाहेत्तर सबंध, अविवाहित सह-जीवन अविवाहित मातृत्व, समलैगिक सबध आदि अनैतिक एव अमर्यादित कृत्यो को बढावा मिल रहा है। वह समस्त परम्परागत नियमो को नकारने के जुनून मे स्वस्थ एव नैतिक मूल्यो का भी विरोध कर रही है। एक प्रकार से वह अपने लिए आत्मघाती परिवेश का जाल बुन रही है जिसमे स्वय भी उलझकर जी रही है और दूसरो को भी उसमे उलझने के लिए आमत्रित कर रही है।

आज तथाकथित स्वतत्रता-प्रेमी नारियो का एक वर्ग बनता जा रहा है। जो पुरुष की तरह ही स्वेच्छाचारी जीवन को अपना रही है और इसे आधुनिक नारी की विशेष उपलब्धि मानकर गौरवान्वित हो रही है। नि सदेह 1980-2000 तक का समय नारी के जीवन मे नकारात्मक एव सकारात्मक दोनो दृष्टियो से मूल्यगत परिवर्तन का है।

सहायक ग्रंथ–सूची

क्रम सं0	ग्रंथ	लेखक
1.	अधखिला फूल	अयोध्या सिह 'हरिऔध'
2.	अपने-अपने कोणार्क	चन्द्रकाता
3.	अजय की डायरी	डॉ0 देवराज
4.	अग्निबीज	मार्कण्डेय
5.	अन्तरॉल	मोहन राकेश
6.	अपनी सलीवे	नमिता सिह
7.	अपने पराये	शशि भूषण सिहल
8.	अल्माकबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा
9.	अधेरे बन्द कमरे	मोहन राकेश
10.	ऑवा	चित्रा मुद्गल
11.	आदर्श हिन्दू	मेहता लज्जाराम शर्मा
12.	अर्न्तवशी	ऊषा प्रियवदा
13.	अगूठी का नगीना	---
14.	ऐलान गली जिन्दा है	चन्द्रकाता
15.	इन्द्रधनुष	अनन्त गोपाल शेवडे
16.	इदन्नमम्	मैत्रेयी पुष्पा
17.	उग्रतारा	नागार्जुन
18.	उन्माद्	भगवान सिह
19.	उसकी पचवटी	कुसुम असल
20.	एक इच मुस्कान	राजेन्द्र यादव व मन्नू भण्डारी

22.	कनक कुसुम वा मस्तानी	प0 किशोरी लाल शर्मा
23.	कुछ विचार	मुशी प्रेमचद
24.	ककाल	जय शकर प्रसाद
25.	कथा अनता	काति द्विवेदी
26.	कल्याणी	जैनेन्द्र
27.	गोदान	मुशी प्रेमचद
28.	गवन	मुशी प्रेमचद
29.	गर्म राख	उपेन्द्र नाथ अश्क
30.	गले-गले पानी	राम कुमार 'भ्रमर'
31.	गुनाहो का देवता	धर्मवीर भारती
32.	गैडा	शिवानी
33.	घरौदे	रागेय राघव
34.	चित्रलेखा	भगवती चरण शर्मा
35.	चलते-चलते	भगवती प्रसाद वाजपेयी
36.	छिन्नमस्ता	प्रभा खेतान
37.	जाडे की धूप	रजनी पनिक्कर
38.	झूठा सच	यशपाल
39.	टेढे मेढ रास्ते	भगवती चरण वर्मा
40.	ठेठ हिन्दी का ढाठ	अयोध्या सिह 'हरिऔध'
41.	डूबते मस्तूल	नरेश मेहता
42.	तितली	जयशकर प्रसाद
43.	त्यागपत्र	जैनेन्द्र
44.	तत्सम्	राजी सेठ
45.	द वूमैन्स मूवमैण्ट	बारबरा डैकर्ड

47.	दहकन के पार	निरूपमा सेवती
48.	दादा कामरेड	यशपाल
49.	निर्मला	मुशी प्रेमचद
50.	नये मोड	उदय शकर भट्ट
51.	हिन्दी उपन्यास, एक अर्न्तयात्रा	डॉ0 राम दरश मिश्र
52.	नदी के द्वीप	अज्ञेय
53.	न आने वाला कल	मोहन राकेश
54.	पुनर्जन्म वा सौतिया डाह	प0 किशोरी लाल शर्मा
55.	पतिता की साधना	भगवती चरण वर्मा
56.	पथ की खोज	डॉ0 देवराज
57.	पीली ऑधी	प्रभा खेतान
58.	प्रेत और छाया	इलाचद जोशी
59.	पत्थरो का शहर	सुरेश सिन्हा
60.	प्रथम फाल्गुन	नरेश मेहता
61.	पत्थर युग के दो बुत	आचार्य चतुरसेन
62.	फ्रीलान्सर	शभ्रा वर्मा
63.	बूद और समुद्र	अमृत लाल नागर
64.	बलचनमा	नागार्जुन
65.	बीज	अमृत राय
66.	बाहर भीतर	डॉ0 देवराज
67.	बद अन्धेरे कमरे	मोहन राकेश
68.	भारतीय सस्कृति	राम जी उपाध्याय
69.	मुझे चॉद चाहिये	सुरेन्द्र वर्मा
70.	मछली मरी हुई	राजकमल

72.	रेखा	भगवती चरण वर्मा
73.	लोक परलोक	उदय शकर भट्ट
74.	वूमेन इन पास्ट, प्रजेण्ट एण्ड फ्यूचर	ऑगस्ट बेबल
75.	विदा	प्रताप नारायण श्रीवास्तव
76.	शोले	भैरव प्रसाद
77.	सुशीला विधवा	मेहता लज्जाराम शर्मा
79.	सगम	वृन्दावन लाल वर्मा
79.	सन्यासी	इलाचद जोशी
80.	स्त्री उपेक्षिता	सीमोन द वोडवार
81.	सात आसमान	असगर वजाहत
82.	हिन्दी उपन्यासो मे नायिका की परिकल्पना	डॉ0 सुरेश सिन्हा
83.	नारी प्रश्न	सरला महेश्वरी (राधा कृष्ण प्रकाशन, नय दिल्ली)

सहायक - पत्रिकाए

1.	सोशल साइटिस्ट	अक 4 , न0 दि0, 1975
2.	हस	जुलाई - 1996
3.	वागार्थ	जून - 1998
4.	यग इण्डिया	15 दि0 - 1921
5.	कल्याण	नारी अक - प्रका0, 2000